XEN(C) Ajmer's Stall

वाणी

शान्ति विशेषांक

विलास

वर्ष 1986



राजभाषा पत्रिका, पश्चिम रेलवे, अज


अजमेर की मशहूर
शंकर छाप बीड़ी पीजिये
शंकर छाप बीड़ी
SHANKER-CHHAP
Raju
फोन नं०
दुकान: 24170
निवास: 24024
फैक्ट्री: 20381
निर्माता:— शंकरसिंह एण्ड संस
नसीराबाद रोड़, अजमेर-305001.

राजभाषा - हिन्दी की ओर अग्रसर अजमेर कारखाना का एक और



* विशेष कदम *

भावुक जन से ही महत्त कार्य होते हैं,
ज्ञानी तो संसार असार मान रोते हैं।

*   *   *

मैं नहीं स्वर्ग से कोई संदेश लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

* श्रद्धा - सुमन *

सर्व विदित है कि राष्ट्र कवि (स्व.) मैथली शरण गुप्तजी का महामहीम व्यक्तित्व और कृतित्व--भारतीयता की पहचान, भारत की शान और समूची मानवता का गौरव स्थल है। आज सारा भारतवर्ष उनकी जन्म-शताब्दी मना रहा है। इस जन्म-शताब्दी के पावन-वर्ष के उपलक्ष में प्रकाशित और सादर समर्पित

कारखाना राजभाषा-पत्रिका
वाणी-विलास

का पंचम व षष्ठम अंक

शान्ति-विशेषांक

प. रे. हिन्दी समिति (का.शा) अजमेर

की

— पत्रिका प्रबन्ध समिति —

※ अरुणेन्द्र कुमार, अध्यक्ष एवं उप मु यां. इंजी (डीजल)

※ रामप्रकाश मलिक, सदस्य एवं स. का. अधि. (का)

※ आर. के. तलगेरी, सदस्य एवं स. का. प्र. (संकेत)

※ मूलचन्द गोयल, सदस्य एवं शोप अधीक्षक कै 28

※ प्रेम राज जोशी, सचिव एवं हिन्दी सहायक ग्रेड I

※ मंसूर अली बोहरा, सदस्य एवं मु. लि. लोको स्था. I

※ श्यामलाल दायमा, सदस्य एवं प्र.लि. हिन्दी कक्ष(लोको)

※ मदनसिंह चौहान, सदस्य एवं लि (संकेत)

सम्पादक मण्डल

सरंक्षक, प्रकाशक एवं

मुख्य सम्पादक

गगन प्रकाश हांडा

अध्यक्ष, प.रे. हिन्दी समिति (का.शा.)

राजभाषा अधिकारी एवं अपर मु.यां. इंजी.(का)

सम्पादक

प्रेम राज जोशी

एम. ए., एल एल. बी. एवं

लेबर लॉज (हि स. ग्रेड I)

सह सम्पादक

मदनसिंह चौहान

संयुक्त सचिव, वेद संस्थान

लि. (संकेत कारखाना)

श्याम लाल दायमा

एम. ए, एल एल बी.

प्र. लि., हिन्दी कक्ष (लोको)

— परामर्श —

नरेन्द्रनाथ मल्होत्रा
वरि. हिन्दी अधिकारी

नैंपालसिंह
उप. मु. यां. इंजी. (लोको)

अरुणेन्द्र कुमार
उप मु. यां. इंजी. (डीजल(

विशेष सूचना : इस पत्रिका में छपी रचनाओं आदि में व्यक्त विचार, दृष्टिकोण आदि तत्सम्बन्धित रचनाकारों (लेखकों, कवियों और प्रस्तुतकर्ताओं) के निजि हैं। यह आवश्यक नहीं है कि उक्त विचार, दृष्टिकोण आदि रेल प्रशासन, भारत सरकार अथवा सम्पादक-मण्डल के विचारों, दृष्टिकोणों अथवा नीतियों के अनुरूप ही हों।

(निशुल्क वितरण के लिए)

कारखाना राजभाषा पत्रिका
पश्चिम रेलवे, अजमेर

अर्द्ध वार्षिक

वर्ष : 3
अंक : 5 व 6

शान्ति विशेषांक

25 दिसम्बर 1986
क्रसमस-दिवस : 4 पौष शक् 1908

इस अंक में–

(क) एकता की कड़ी – हिन्दी

(ख) आपका आनन्द

(ग) नियमों की छाँव

(घ) सुना आपने ?

सम्पादकीय

अपनों से अपनी बात

हर्ष का विषय है कि हमारी पत्रिका "वाणी विलास" के चारों अंकों को सुविज्ञ पाठकों का विशेष अनुग्रह प्राप्त हो चुका है । अतएव, पत्रिका के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है ।

आज केवल हम ही नहीं अपितु समूचा विश्व जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है, वैसी विकट और भयावह परिस्थितियां सम्भवतः पहले कभी नहीं रही हैं । मानव-मात्र ही नहीं अपितु समूचे प्राणी-जगत के अस्तित्व को ही निगल जाने के लिए, हिंसक-जन्तु यत्र-तत्र-सर्वत्र मुँह बाँये खड़े हैं । इन्हीं विकराल परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 1986 को शान्ति-वर्ष घोषित किया है और सभी राष्ट्रों से अपील की है कि वे अपने देश में, पास-पड़ौस में और समूचे विश्व में अशान्ति के कारणों को दूर करने के हर संभव प्रयास करें ।

अतएव, आज मानव-मात्र को शान्तिपूर्ण वातावरण तैयार करने में जुट जाने की जरूरत है । हमने भी इन्हीं प्रयासों की शृंखला में एक कड़ी जोड़ने की चेष्टा की है जिसके फलस्वरूप यह "शान्ति-विशेषांक" आपकी सेवा में सादर समर्पित है ।

मुख कवर पृष्ठ का चित्र "शान्ति-विशेषांक" के लिए भी उपयुक्त है । इसीलिए इसे नहीं बदला गया है । इस चित्र में यही दर्शाया गया है कि हिंसक और बर्बर दरिन्दों द्वारा थोपे गये युद्ध की विभिषिकाओं में किस प्रकार महारानी पद्मावती के साथ असंख्य ललनाएं चित्तौड़-दुर्ग में अपने प्राणों की आहूतियां देने पर विवश हुई थीं । मानों यह चित्र कह रहा है—"ए हिंसा के दरिन्दों – तुम मानव जाति के कलंक हो – तुम्हें ईश्वर और इतिहास कभी माफ नहीं करेगा । ओ हिंसावृत्ति की पोषक नई पीढ़ी—हमें देखो और जरा विचार करो कि हमारी यह कैसी हृदय विदारक कुर्बानी है ? तूम इन्सान बनो, हिंसा की प्रवृति छोड़ो, हिंसा से बढ़कर और कोई अधर्म नहीं है । दुनियां का कोई भी मजहब हिंसा की इजाजत नहीं देता, अपने मज़हब को बदनाम मत करो ।हिंसा के पाप से मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च और अपने मन-मन्दिर को अपवित्र मत करो ।"

इसी भाव की मुख्य धारा के साथ-साथ अन्य स्थायी स्तम्भ भी यथावत रखे गये हैं और इस बार भी आपके लिए कुछ नई विशेष उपयोगी सामग्री जुटाई गई है, यथा—जीवनदर्शन, ज्योतिष, जादू, होम्योपेथी आदि—ईत्यादि ।

इस प्रकार यह पत्रिका बहुमूल्य एवं उपयोगी सामग्री लेकर आपकी सेवा में आ रही है , मैं उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने विचारों को कलमबद्ध किया ।

यह पत्रिका उन महानुभावों की भी आभारी है जिन्होंने अपने विज्ञापन देकर इसके प्रकाशन और छपाई में आर्थिक सहयोग दिया । मैं उन्हें भी साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने विज्ञापनदाताओं से सम्पर्क किया और विज्ञापन लाकर इस पत्रिका की छपाई सुलभ की । इस संदर्भ में श्री आर. के. तलगेरी, स. का. प्र. (संकेत), श्री मदनसिंह चौहान, लिपिक (संकेत), श्री एन. आर. नम्बियार व. चार्जमैन (डीजल), सुश्री इन्दिरा माथुर, व. टंकक (लोको उत्पादन) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी, माननीय रेल मंत्री जी, राजस्थान के मुख्यमंत्री जी, शिक्षा मंत्री जी, विधायक जी, एवं रेल प्रशासन के सभी शीर्षस्थ अधिकारियों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने पत्रिका के लिए अपने शुभकामना-संदेशों और आशीर्वचनों से हमें उपकृत किया है ।

आप सब महानुभावों का सहयोग सद्भाव ही इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु किये गये प्रयत्न को सफलता की ओर अग्रसारित करेंगे ।

प्रेम राज जोशी
सम्पादक

गगन प्रकाश हांडा
मुख्य सम्पादक

मदनसिंह चौहान
सह सम्पादक

श्यामलाल दायमा
सह सम्पादक

सन्देश



मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के अवसर पर लोको रेल कारखाना, अजमेर द्वारा कारखाना राजभाषा पत्रिका—"वाणी-विलास" का शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

शान्ति विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

राजीव गांधी
प्रधानमन्त्री

शिव सागर मिश्र,
निदेशक, राजभाषा

भारत सरकार
परिवहन मंत्रालय, रेल विभाग
(रेलवे बोर्ड)

अ.स.पत्र सं हिन्दी86/रा.भा 2/7/5
नई दिल्ली, दिनांक 28-8-86

प्रिय भल्लाजी,

आपकी रेलवे के कारखाना यूनिट, अजमेर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-7-86 को सम्पन्न बैठक का कार्यवृत्त बोर्ड कार्यालय में प्राप्त हुआ है।

कार्यवृत्त की समीक्षा से स्पष्ट है कि कारखाने द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की विभिन्न मदों में वार्षिक कार्यक्रम के सभी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिए गए हैं तथा अनेक मदों में उपलब्धि लक्ष्य से भी अधिक है।

यह उपलब्धि उत्साहजनक है। निःसंदेह, हिन्दी के प्रयोग-प्रसार में कारखाना यूनिट, अजमेर का योगदान अनुकरणीय है। यहां के सभी कर्मचारी/अधिकारी बधाई के पात्र हैं। शुभ कामनाओं सहित,

आपका
ह. **शिव सागर मिश्र**

श्री एच डी. भल्ला,
महाप्रबंधक,
पश्चिम रेलवे, चर्चगेट, बम्बई

सुगनचन्द भाटिया,
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य कार्मिक अधिकारी
अ.स.पत्र संख्या जी 379/13/5/12 भाग 2

प्रधान कार्यालय
पश्चिम रेलवे
चर्चगेट, बम्बई–400020
दिनांक 12-9-1986

प्रिय हांडा,

विषय :—अजमेर कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-7-86 को सम्पन्न बैठक।

संदर्भ :—निदेशक राजभाषा रेलवे बोर्ड का दिनांक 28-8-1986 का महाप्रबन्धक, पश्चिम रेलवे के नाम अर्द्ध सरकारी पत्र।

1. निदेशक (राजभाषा), रेलवे बोर्ड का महाप्रबन्धक जी को संबोधित अर्द्ध सरकारी पत्र की प्रतिलिपि सूचना के लिए संलग्न है।

2. कृपया सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी ओर से बधाई दें तथा उन्हें निदेशक (राजभाषा) रेलवे बोर्ड के उद्‌गारों से अवगत करा दें।

3. मुझे पूरी आशा है कि इस उपलब्धि को केवल बनाए ही नहीं रखा जाएगा, अपितु उसमें और भी सुधार किया जाएगा।

शुभ कामनाओं सहित।

संलग्न: उपर्युक्त

भवदीय,
ह. **सुगनचन्द भाटिया**

सेवा में,
श्री गगन प्रकाश हांडा, राजभाषा अधिकारी एवं
अपर मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (का), अजमेर।

सन्देश



रेल राज्य मन्त्री, भारत
नई दिल्ली

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के उपलक्ष में लोको रेल कारखाना, अजमेर अपनी नियमित पत्रिका "वाणी विलास" का शान्ति विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। पिछले वर्ष इस पत्रिका का युवा-विशेषांक प्रकाशित किया था। निश्चय ही यह एक गतिशील एवं जागरूक पत्रिका है जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सामयिक परिस्थितियों से निपटने के लिए अच्छा वातावरण तैयार करने में बहुमूल्य योगदान कर रही है।

इस प्रयास की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

माधव राव सिन्धिया

मुख्य राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय, चर्चगेट, द्वारा किए गए निरीक्षण की रिपोर्ट

मैंने तारीख 30-5-86 को अपर मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (का.), अजमेर के कार्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित बातें पाई गई :—

1. इस कारखाने को पिछले दो वर्षों से हिन्दी का अच्छा कार्य करने के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त हो रही है।

2. कारखाना में राजभाषा-पत्रिका वाणी-विलास का प्रकाशन किया जाता है।

3. मैंने इस कार्यालय के अनुशासन, स्थापना-2 अनुभाग, इन दो अनुभागों का निरीक्षण किया। अनुशासन अनुभाग में प्रारूप लेखन, चार्जशीट के सम्बन्ध में पत्राचार, व्यक्तिगत अनुशासनिक कार्यवाही के सम्बन्ध में फाइलों पर कामकाज हिन्दी में हो रहा है। पास-पी. टी. ओ. हिन्दी में बनाए जाते हैं। अनुभाग में रखे गये सभी रजिस्टर हिन्दी में रखे गये हैं।

   स्थापना-2 प्रभाग में कार्य करने वाले लगभग सभी कर्मचारियों की टेबलों पर रखी सभी फाइलों में हिन्दी में कार्यवाही की जा रही है लेकिन कहीं-कहीं अधिकारियों द्वारा अंग्रेजी में टिप्पणी आदि लिखी गई है।

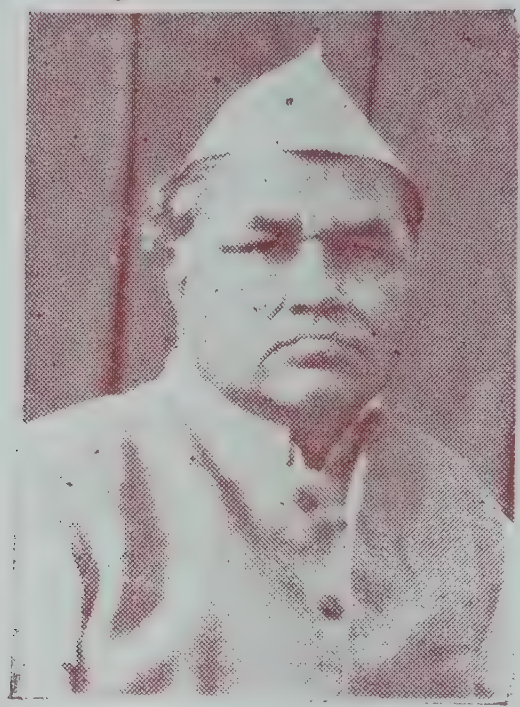
4. रेलवे क्वार्टर आवंटन, पदोन्नति, पदावनति, स्थानान्तरण, दुर्घटना, भविष्यनिधि एवं अन्य अग्रिम, अनुकम्पा के आधार पर नियुक्तियां, अपरेंटिसों की भर्ती, कर्मचारी हित निधि, वेतन निर्धारण, आदि सभी कार्य का विस्तारपूर्वक निरीक्षण किया और यह पाया कि सभी कार्य हिन्दी में हो रहे है।

5. इस कार्यालय में मैंने यह पाया कि हिन्दी का काम काफी संतोषजनक रूप से चल रहा है।

जी 379/16/8 तारीख 24-6-1986

ह.
(सुगनचन्द भाटिया)
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य कार्मिक अधिकारी

सन्देश



सत्यमेव जयते

मुख्य मन्त्री, राजस्थान
जयपुर

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि पश्चिम रेलवे, अजमेर कारखाना की हिन्दी छः माही पत्रिका "वाणी विलास" का शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1986 को शान्ति वर्ष घोषित किया है। विश्व शान्ति के प्रयासों की सफलता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना ही इस वर्ष का पुनीत उद्देश्य है।

शान्ति, सद्भाव और लोक कल्याण भारतीय संस्कृति के सनातन सन्देश हैं। भारत ने अपने राष्ट्रीय नेताओं— गांधीजी, नेहरूजी, शास्त्रीजी तथा इन्दिरा जी के नेतृत्व में विश्व शान्ति के प्रति चेतना जागृत करने के लिए सदैव अहम् भूमिका अदा की है। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की अगुवाई में भारत आज भी विश्व में तनाव कम करने, शस्त्रों की होड़ को रोकने एवं शान्ति की स्थापना के लिए अपने गुरूत्तर दायित्व का निर्वहन कर रहा है।

मुझे आशा है कि इस विशेषांक में भारत द्वारा विश्व शान्ति स्थापित करने के लिए किए गए कार्यों पर आधारित सामग्री का समावेश किया जायेगा।

मैं "वाणी विलास" के शान्ति विशेषांक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

हरिदेव जोशी

सन्देश



शिक्षा मन्त्री, राजस्थान
जयपुर

हर्ष का विषय है कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित शान्ति वर्ष 1986 के अवसर पर पश्चिमी रेल्वे कारखाना, अजमेर द्वारा "वाणी-विलास" का शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। विश्व में शान्ति बनाये रखने के प्रयासों को सफल बनाने में हम हमेशा प्रयत्नशील रहे हैं और स्व. पं. जवाहरलालजी नेहरू के पंचशील के सिद्धान्तों और स्व. इन्दिराजी द्वारा किये गये प्रयासों की अन्यराष्ट्रों ने भी प्रशंसा की है। रेल द्वारा यात्रियों को बहुत बड़ी संख्या में एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया ले जाया जाता है। मैं आशा करता हूँ कि शान्ति प्रयासों के प्रचार प्रसार में रेल्वे का योगदान महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा।

शान्ति विशेषांक के प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हीरालाल देवपुरा

सन्देश



अध्यक्ष रेलवे बोर्ड
एवं
पदेन प्रमुख सचिव, भारत सरकार,
रेल मन्त्रालय,
नई दिल्ली

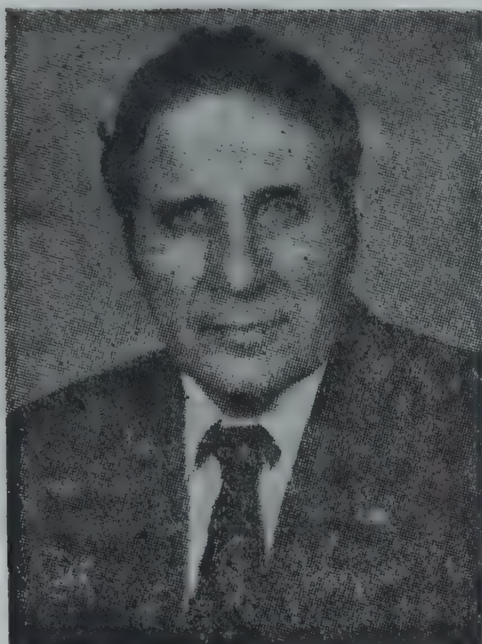
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के उपलक्ष में लोको रेल कारखाना, अजमेर द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संलग्न उनकी नियमित पत्रिका 'वाणी-विलास' का शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए जहाँ यह पत्रिका रचनात्मक साधन है, वहीं यह सामयिक आवश्यकताओं के प्रति भी एक सजग प्रहरी है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आह्वान पर पिछले वर्ष इस पत्रिका का युवा-विशेषांक प्रकाशित किया गया और इस वर्ष शान्ति विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरी शुभकामना है कि प्रस्तुत विशेषांक से हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ शान्ति का मार्ग प्रशस्त हो।

प्रकाश नारायण

सन्देश



कार्मिक एवं यान्त्रिक सदस्य,
रेलवे बोर्ड एवं पदेन सचिव,
भारत सरकार, रेल मन्त्रालय,
नई दिल्ली

हर्ष की बात है कि अजमेर कारखाना की राजभाषा पत्रिका "वाणी-विलास" का शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के शान्ति प्रयासों के समर्थन में प्रस्तुत यह विशेषांक एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। आज हमारे देश पर ही नहीं अपितु समूचे विश्व पर हिंसा के ऐसे प्रलयंकारी बादल गहराए हैं कि मानवमात्र को इस दिशा में अपनी ओर से कुछ न कुछ योगदान करने के लिए अग्रसर हो जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि विशेषांक के माध्यम से इस दिशा में सार्थक प्रयास किया जाएगा।

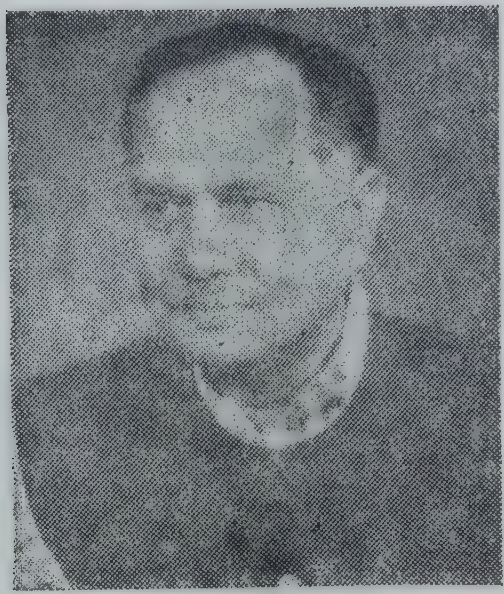
शान्ति विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

एम. एल. खन्ना

सन्देश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
निदेशक, राजभाषा
परिवहन मन्त्रालय,
रेल विभाग (रेलवे बोर्ड)
नई दिल्ली



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अजमेर कारखाना इस वर्ष अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के उपलक्ष्य में कारखाना राजभाषा पत्रिका "वाणी-विलास" का शान्ति विशेषांक निकालने जा रहा है।

आज के वैज्ञानिक युग में भौतिक दृष्टि से मानव काफी आगे बढ़ चुका है। जल, थल और वायु पर इसका समान अधिकार है। आज इसे चाँद तक जा पहुँचने में भी कोई विशेष कठिनाई नहीं है। यहां तक कि यह कम्प्यूटर और "रोबोट" के रूप में नई सृष्टि करने के अनुसन्धान में व्यस्त है। राम जाने, यह वैज्ञानिक मानव कहां पहुंच कर दम लेगा। अपनी अपूर्व उपलब्धियों पर इसे गर्व होना स्वाभाविक है; किन्तु मात्र भौतिक उपलब्धियां अहंकार की जननी है। अहंकार और अधिकार भावना समानार्थक शब्द हैं। अहंकार मानवीय मूल्यों का नाश कर देता है और तब वैज्ञानिक शक्ति के सहारे संहार लीला आरम्भ होते देर नहीं लगती। आज यही हो रहा है। आज का मानव मन की शांति से कोसों दूर है। सर्वत्र अशान्ति का वातावरण व्याप्त है। समाज में ईर्ष्या, द्वेष, खून-खराबा, एक दूसरे को नष्ट कर आगे बढ़ने की होड़ मची हुई है। न जाने कब कहां से कोई परमाणु बम आ गिरे और प्रलयंकारी तूफान के झंझावात में पड़कर यह पृथ्वी तिनके की तरह खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाये। फिर कहाँ रहेगी वैज्ञानिक उपलब्धियां और कौन भोगेगा भौतिक ऐश्वर्य ! यही कारण है कि आज के कुछ प्रबुद्ध, उदात्त, संवेदनशील विश्वनेता अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर शान्ति-स्थापना की महत्ता को स्वीकार करने लगे हैं।

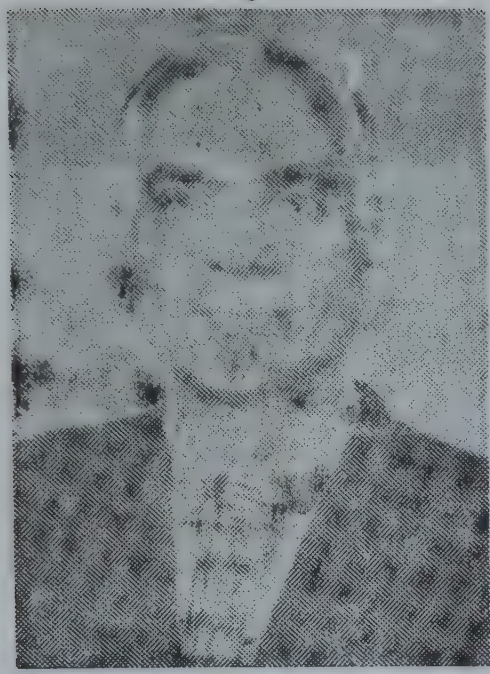
भारत में शान्ति का महत्व प्राचीनतम काल से स्थापित रहा है। यह भाव व्यक्ति और समाज के जीवन का मूल मन्त्र बनकर हमें अनुप्रेरित करता है। महात्मा बुद्ध, तीर्थंकर महावीर आदि की शिक्षा का प्रभाव देश-विदेश की जनता पर भी पड़ा। आज भी उनके उपदेश, शिक्षा आदि का पालन करने से व्यक्ति, समाज और देश में अमन-चैन स्थापित हो सकता है। इस बात को सभी स्वीकारते हैं कि मानव आपसी मेलजोल, भाई-चारा आदि को बढ़ावा दे तो आपसी वैमनस्य दूर हो सकता है। वह किसी प्रकार का भेदभाव न रखे चाहे धर्म का हो, जाति का हो, पंथ या राष्ट्र का हो। संसार को स्वार्थ, अहंकार और विनाशकारी युद्ध से बचाना है। विनाशकारी हथियार जैसे एटम, हाइड्रोजन बमों का निर्माण बन्द हो अन्यथा सर्वनाश के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

शांति स्थापना का उत्तरदायित्व साधु-सन्तों, विचारकों के अलावा राजनैतिक नेताओं और प्रबुद्ध चेतन मनुष्यों पर भी है। वे सभी आपस में मिलजुल कर रहें, विनाशकारी शस्त्रास्त्रों को नष्ट करें तभी इस पृथ्वी पर सहयोग, सद्भाव, दृढ़-विश्वास और श्रद्धा का वातावरण पैदा हो सकता है और सभी का जीवन सुखमय और आनन्द-मय होगा। सर्व प्रथम हम व्यक्ति के नाते अपने मन में शान्ति का दीप प्रज्वलित करें। आशा है, इस विशेषांक द्वारा शांति के प्रचार-प्रसार में काफी सफलता मिलेगी।

"वाणी-विलास" के शान्ति विशेषांक के प्रकाशन की सफलता के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता हूं।

शिवसागर मिश्र

सन्देश



मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
मुख्य कार्मिक अधिकारी
पश्चिम रेलवे
चर्चगेट, बम्बई

प्रसन्नता की बात है कि अजमेर कारखाना राजभाषा पत्रिका वाणी-विलास के "शान्ति विशेषांक" का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अन्तरराष्ट्रीय शांति वर्ष में ऐसे विशेषांक का विशेष महत्व है।

अजमेर कारखाना यूनिट हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित है और उसमें कार्यरत कर्मचारियों को न केवल हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान है अपितु उनमें हिन्दी के प्रति अत्यधिक उत्साह और सुरुचि भी है। फलस्वरूप उन्हें लगातार दो वर्षों से कारखाना राजभाषा शील्ड प्रदान की जाती रही है।

इस समय देश-विदेश में सर्वत्र हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। मानवता और राष्ट्रीयता की भावनाओं का लोप-सा हो रहा है, कुल मिलाकर आज देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है उसमें शान्ति विशेषांक का विशेष महत्व है। आज जरूरत है देश के जन-मानस की उद्वेलित भावनाओं को निकट से समझने की, विभिन्न भाषायी क्षेत्रों के लोगों को राष्ट्रीय भावना के सूत्र में गूँथने की और उन्हें अहिंसा और शान्ति का मूल्य समझाने की। इस दृष्टि से आपका यह प्रयास स्तुत्य है।

उल्लेखनीय है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के निवासियों को दोहरी भूमिका निभानी है, एक तो संविधान की आकांक्षाओं के अनुरूप हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना है और दूसरे यह ध्यान रखना है कि भाषा जोड़ने का माध्यम है, तोड़ने का नहीं। अतएव शान्ति और सौमनस्य के सहारे हमें विभिन्न भाषा-भाषियों में स्वभाषा और फिर राजभाषा के प्रति चेतना उत्पन्न करनी है।

मैं, अजमेर कारखाने के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को उनके हिन्दी के उत्तम कार्य के लिए तथा शान्ति प्रयास में इस योगदान के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के सन्दर्भ में किए जा रहे प्रयासों की शृङ्खला में यह विशेषांक एक सुदृढ़ कड़ी प्रमाणित होगी। इसके लिए अनुरोध है कि सभी कर्मचारी तथा उनके परिवारगण आपके इस प्रकाशन का लाभ लेते हुए इसमें वर्णित जीवन मूल्यों का चिन्तन और विश्लेषण करें तो निश्चय ही इस दिशा में बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

मैं आपके इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

एस. सी. भाटिया

सन्देश



मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
पश्चिम रेलवे
चर्चगेट, बम्बई

यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि अजमेर कारखाना से एक नियमित अर्द्ध वार्षिक पत्रिका 'वाणी विलास' का प्रकाशन किया जाता है और इस वर्ष उसका 'शान्ति-विशेषांक' निकाला जा रहा है।

हिन्दी की नियमित पत्रिका का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि अजमेर कारखाना में हिन्दी के प्रति विशेष प्रेम और पर्याप्त उत्साह है।

नियमित पत्रिका का प्रकाशन न केवल हिन्दी के प्रचार-प्रसार का सबल साधन है बल्कि, कर्मचारियों को बहुउपयोगी जानकारी प्राप्त करने का भी उत्तम साधन है। साथ ही इसमें प्रतिभासम्पन्न कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर भी मिलता है। निश्चय ही यह कार्य जितना उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है, उतना ही कठिन है।

अतएव, जो कर्मचारी इस कार्य में संलग्न हैं, मैं उनकी सेवाओं की सराहना करते हुए इस प्रकाशन की सफलता एवं सार्थकता की कामना करता हूँ।

एस. सी. हथी

सन्देश



मुख्य कारखाना इंजीनियर
पश्चिम रेलवे
चर्चगेट, बम्बई

मुझे खुशी है कि अजमेर कारखाना अन्तरराष्ट्रीय शान्ति-वर्ष 1986 के उपलक्ष में अपनी नियमित पत्रिका 'वाणी-विलास' का 'शान्ति-विशेषांक' प्रकाशित कर रहा है।

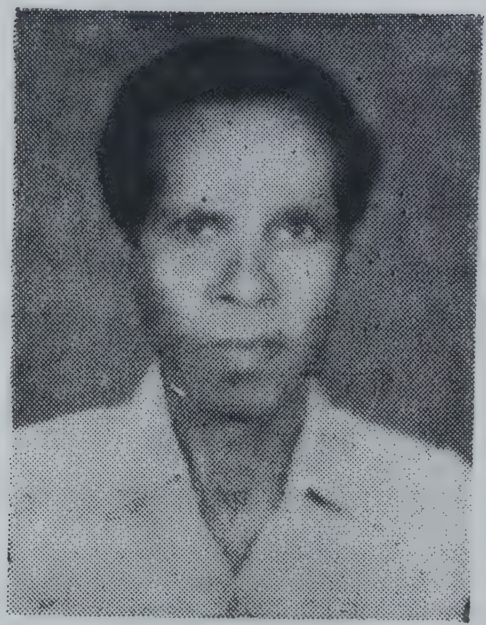
मेरा अजमेर कारखाना से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। मुझे मालूम है कि वहां कर्मचारियों/अधिकारियों में हिन्दी के प्रति गहरी दिलचस्पी है और वहाँ हिन्दी की प्रगति बेमिसाल है जिसके परिणाम स्वरूप पिछले दो वर्षों से लगातार पश्चिम रेलवे कारखाना शील्ड, अजमेर कारखाना को दी जाती रही है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 86 को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष घोषित किया है। आज समूचे विश्व में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। आज शान्ति की जितनी आवश्यकता है, उतनी शायद पहले कभी अनुभव नहीं हुई। इसलिए, आज यह और भी अधिक जरुरी है कि हर स्तर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ के शान्ति प्रयासों को सबल समर्थन दिया जाए, शान्ति का वातावरण निर्मित करने में विशेष योगदान दिया जाएं। अतएव, अजमेर कारखाना का यह कदम स्तुत्य है।

इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

एच. एल. खेमानी

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष सन् 1986



△ गगन प्रकाश हांडा

अध्यक्ष, प. रे. हिन्दी समिति (का. शा.) तथा
राजभाषा अधिकारी व अपर मुख्य यांत्रिक इंजी. (का)
एवं संरक्षक, प्रकाशक व
मुख्य सम्पादक—'वाणी विलास'

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा रचनात्मक कार्यों का सराहनीय क्रम सन् 1983 में घोषित "विकलांग वर्ष" के साथ आरम्भ हुआ। सन् 1984 को "महिला वर्ष" एवं सन् 1985 को "युवा वर्ष" के रूप में मनाया गया।

संयुक्त राष्ट्र ने 24 अक्टूबर सन् 1985 को विश्व में व्याप्त तनाव को दूर करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से यह प्रस्ताव पारित किया कि वर्ष 1986 को 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष" के रूप में मनाया जाये, अर्थात् विभिन्न देशों में हो रहे अनेकानेक संघर्षों, मतभेदों को समाप्त कर विश्व में शान्ति-स्थापना के प्रयत्न किये जायें।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की आवश्यकता क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें केवल अपने आस-पास नजर दौड़ाने भर की ही आवश्यकता है। चारों ओर गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अज्ञान, अशिक्षा, विभिन्न प्रकार से मानव की विवशताओं और तज्जन्य जघन्य अपराधों की भरमार देखने को मिलती है। किसी भी दैनिक समाचार-पत्र को पढ़ लीजिये, उसमें दिल को दुखी करने वाले दर्जनों समाचार रोजाना पढ़ने को मिलेंगे। अपवाद स्वरूप इक्का-दुक्का सुखद् समाचार शायद ही कभी-कभी मिलेगा, वह भी रोजाना नहीं। मानव-कृत कुकृत्यों के दुखद् समाचारों के अतिरिक्त भरमार मिलेगी—दुर्घटना, बाढ़, सूखा, भू-स्खलन, अतिवृष्टि या फिर अनावृष्टि आदि समाचारों की चारों ओर ऐसी परिस्थितियां देखकर किस मानव का हृदय दुखी न होता होगा?

यही परिस्थिति किसी एक देश में ही नहीं, परन्तु कहीं कुछ कम : कहीं कुछ अधिक, सारे विश्व के देशों में व्यापक रूप से देखने को मिलती है।

मानव-मात्र का मुख्य उद्देश्य और इच्छा होती है कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करे, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हो, सबका व्यवहार प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य हो और सब लोग उन्नति करें। परन्तु इच्छा और वास्तविकता में आकाश-पाताल का अन्तर रहता है।

गरीबी, अशिक्षा, अज्ञान, भुखमरी, रहने के आवास आदि कमियों को दूर किया जा सकता है यदि इन कार्यों के लिए पर्याप्त धन और साधन उपलब्ध हो सकें। मुश्किल यह है कि ऐसे कार्यों के लिए धन, साधन और संसाधनों की अत्यन्त कमी है। अतः इस प्रकार के कार्य या तो शुरु ही नहीं हो पाते, या अधूरे रह जाते हैं या फिर ठीक समय पर सम्पन्न नहीं हो पाते और मानव की समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रह जाती हैं।

उपरोक्त अच्छे कार्यों के लिए धन, साधन आदि की कमी विश्वभर में क्यों दूर नहीं हो पाती? इस प्रश्न का उत्तर हमारे सामने ही है। विश्वभर के देशों में अस्त्र-शस्त्र एकत्रित करने की होड़ लगी हुई है।

साम्राज्यवाद की प्रवृति शस्त्रों की प्रतिस्पर्धा, अमेरिका व रूस जैसी महाशक्तियों की आपसी परमाणु होड़, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और शक्ति संतुलन की लालसा में महाशक्तियों द्वारा अन्य देशों में सैनिक अड्डों की स्थापना, अंतरिक्ष युद्ध की तैयारियाँ, रंगभेद की नीति, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता एवं आतंकवाद आदि विश्व अशान्ति के मुख्य तत्व हैं । अस्त्र-शस्त्रों की होड़ को पूरा करने के लिए धन और साधन-रूपी समुद्रों को सूखा कर दिया जाता है, विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा लगभग समस्त उपलब्ध साधन, संसाधन और धन खर्च कर दिये जाते हैं । इस अस्त्र होड़ को पूरा करने में, अस्त्र-स्पर्धा में उत्तरोत्तर एक देश द्वारा दूसरे देशों को नीचा दिखाने में, अस्त्र और संभावित भावी युद्धों की तैयारी में ही सारा धन खर्च हो जाता है । ऐसी हालत में व्यक्तिगत, शारीरिक और आत्मिक उन्नति और सामाजिक उन्नति के लिए कुछ भी तो धन-साधन शेष नहीं रहते । यदि संभावित भावी युद्धों की तैयारी में 10000 इकाई धन-साधन खर्च होते हैं तो भुखमरी आदि दुखों को दूर करने में लगभग केवल 3 इकाई की ही आवश्यकता है । विडम्बना तो यह है कि मानव 10000 इकाई धन-संसाधन मजबूरी से व्यय करता है, परन्तु वास्तविक उन्नति के लिए मात्र 3 इकाई धन-संसाधन जुटा पाने में अपने आपको असमर्थ पाता है । समर्थ हो भी कैसे ? जो कल-कारखाने अस्त्र-शस्त्र बनाने के लिए विकसित देशों में लग चुके हैं और जिन पर विकसित देशों के लाखों व्यक्तियों के रोजगार और रोजी-रोटी निर्भर है, उन कल-कारखानों में बनने वाले साज-सामान, अस्त्र-शस्त्र आदि की बिक्री यदि बन्द हो जाये तो फिर उन कल-कारखानों में निहित स्वार्थों का क्या होगा ? अर्थात् "न नौ मन तेल : न राधा नाचे" वाली कहावत चरितार्थ होती है । जब अस्त्र स्पर्धा में 10000 इकाई धन अपर्याप्त सिद्ध हो तो भुखमरी से विकास-शील देशों के मानव के लिए 3 इकाई धन कहां से बचे ? न अस्त्र स्पर्धा समाप्त हो, न भुखमरी मिटे ।

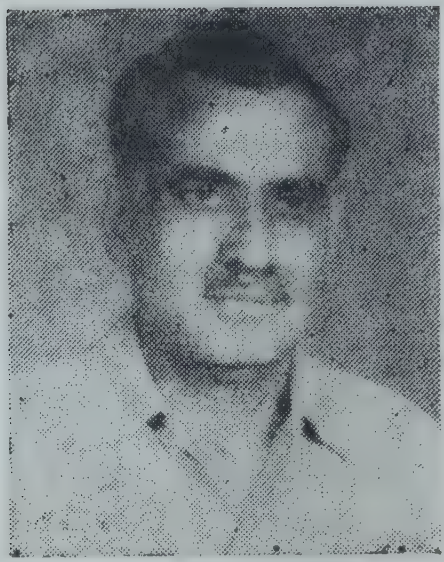
ऐसी भयानक परिस्थिति से कैसे निपटा जाये ? स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा था : "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए; किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।" अपनी स्वयं की उन्नति के लिए हर व्यक्ति, हर समाज, हर मनुष्य-वर्ग, हर प्रान्त, हर देश प्रयत्नशील रहता है । परन्तु दूसरे व्यक्तियों, दूसरे समाज अथवा भिन्न मनुष्य-वर्ग, दूसरे प्रान्त और अन्य देशों की उन्नति में कुछ भी रूचि नहीं रखता और नही योगदान देता । यदि दूसरों की उन्नति के लिए हम में से प्रत्येक यथाशक्ति योगदान करें और ऐसा अभियान पहले व्यक्तिगत स्तर पर चले, फिर मुहल्ला-समाज और शहर स्तर पर, फिर प्रान्त-देश शहर और विश्व स्तर पर चलाया जाये तभी अन्ततः, अस्त्रों की होड़ और निहित स्वार्थों की होड़ समाप्त की जा सकती है । तभी विश्व के विकसित राष्ट्रों की सरकारों को मजबूर किया जा सकता है । 10000 इकाई धन-साधनों में से मात्र 3 इकाई धन-साधन बचाकर उसे विकासशील देशों की जनता में व्याप्त गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी और सिर ऊपर छत का अभाव जैसी परिस्थितियों को दूर करने में व्यय किया जा सकता है । इतने से ही करोड़ों इंसानों को राहत मिल सकती है और बीमारी भुखमरी, नग्नता, अज्ञान, असहाय-स्थिति से छुटकारा मिल सकता है ।

स्पष्ट है कि चन्द हिंसा प्रिय व्यक्तियों ने विश्व की आधे से अधिक जनसंख्या को भुखमरी, अशिक्षा और बेरोजगारी के चंगुल में फसा रखा है । इतना ही नहीं वे तो अब समूची मानव जाति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगाने पर आमादा हैं ।

ऐसी भयावह परिस्थिति में शान्ति प्रिय भारत कैसे चुप रह सकता है । इतिहास साक्षी है कि गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने में जितना काम किया है उसका दूसरा उदाहरण ढूंढ़ना मुश्किल है । पण्डित जवाहरलाल तो विश्व में शान्ति के मसीहा ही माने गये थे । इसी सुदृढ़ परम्परा के निर्वाह में श्री राजीव गांधी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

अजमेर कारखानों का आधुनिकीकरण : एक परिचय



/\ बी. डी. चड्डा
मुख्य परियोजना प्रबन्धक (आधुनिकरण)

अरावली पर्वत श्रेणियों से घिरे, ऐतिहासिक स्मारकों एवं तीर्थ स्थलों का रमणीक अजमेर नगर जिसमें जहां एक ओर समस्त धर्मों के सह-अस्तित्व की मधुर गूँज है, वहीं दूसरी ओर रेल कार्यालयों और कारखानों की झन-झनाहट और ठोकापीटी की ध्वनियों से आपूरित यह नगरी देश-विदेश के पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। यहां का पुष्कर मेला और ख्वाजा का उर्स विश्व-विख्यात है।

हिन्दुओं का तीर्थगुरु पुष्कर, मुसलमानों की विश्व विख्यात ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, ईसाइयों के प्रमुख गिरजाघरों व सिक्खों के गुरुद्वारों सहित, आर्यसमाज का केन्द्र बिन्दु—यह सुरम्य अजमेर नगर भौगोलिक दृष्टि से भारत के हृदय में स्थित है।

इस विविध महत्व की ऐतिहासिक व धार्मिक नगरी में स्थित अजमेर कारखानों के आधुनिकीकरण की जानकारी से पूर्व इन कारखानों के वर्तमान स्वरूप का संक्षिप्त परिचय देना अप्रासंगिक न होगा।

तत्कालीन रेल कम्पनियों द्वारा की गई अजमेर कारखाना समूह की स्थापना लगभग 100 वर्षों से भी पहले की है। इनमें मीटर लाइन के सभी प्रकार के चल स्टॉक का काम किया जाता था। इन कारखानों में निरन्तर नानारूपकरण एवं परिवर्तन होते रहे हैं। मरम्मत कारखाना से प्रारम्भ होकर 1895 तक यहां रेल इंजन भी बनने लगे थे।

इस समय, इन कारखानों में मुख्यतः पश्चिम रेलवे के मीटर लाइन के रेल इंजनों तथा सवारी व माल डिब्बों की ओवरहालिंग और मरम्मत का काम किया जाता है और मीटर लाइन के मण्डलों पर स्थित शेडों और डिपो को इनकी मरम्मत के लिए पुर्जे भी बनाकर सप्लाई किये जाते हैं। पिछले 6 वर्षों से यहां डीजल इंजनों का काम भी शुरू हो गया है। इन प्रयोजनों की पूर्ति के लिए यहां सहयोगी इकाइयों के रूप में विद्युत, संकेत, सी. एम. टी., भंडार एवं लेखा विभाग भी मौजूद हैं।

इन कारखानों ने कई सराहनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं किन्तु जिस तेजी से हम स्टीम से डीजल और डीजल से विद्युतिकरण की दिशा में अग्रसर हैं, उसके अनुरूप इन कारखानों की 100 वर्ष पुरानी व्यवस्था में यथा, मशीने-संयंत्र, इमारतें, शैड, ले-लाउट, फ्लो पेटर्न, तकनीक आदि में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हो पाया था जिससे कि बढ़ते हुए कार्यभार, बढ़ी-चढ़ी उत्पादकता एवं गुणवक्ता में सुधार आदि की तेजी से बढ़ती हुई मांग की पूर्ति की जा सके। अतएव अजमेर कारखाना समूह का आधुनिकीकरण बहुत समय से आवश्यक और अपरिहार्य हो चुका था।

तदनुसार, आधुनिकीकरण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए रेल मंत्रालय ने जुलाई 1986 में 23.51 करोड़ की योजना स्वीकार की है। इस परियोजना की 1990 तक पूर्ति करने का प्रस्ताव है।

आधुनिकीकरण योजना के उद्देश्य :—

- ※ आई. सी. एफ. और आई. आर. एस. अभिकल्प के सवारी डिब्बों की मरम्मत की समय तालिका में 21 से घटाकर 14 दिन करना।
- ※ फ्रेट माल डिब्बों की मरम्मत की समय तालिका में साधारण मरम्मत के लिए 6 से घटाकर 4 दिन करना तथा भारी मरम्मत के लिए 10 से घटाकर 8 दिन करना।
- ※ समस्त रेलों पर आधारित रेलवे बोर्ड द्वारा आबंटित मासिक कार्यभार में 222 से बढ़ाकर 300 चौपहिये सवारी डिब्बों का आउटटर्न करना।
- ※ वर्तमान नियोजित क्षमता में प्रतिमास 3 से बढ़ाकर 6 डीजल इंजनों के ओवरहॉल का आउटटर्न करना।
- ※ डीजल इंजनों की आवधिक ओवरहॉल की समय तालिका में 47 से घटाकर 18 दिन करना।
- ※ पश्चिम रेलवे (बड़ी लाईन-मीटर लाइन) पर रखे गये डीजल इंजनों तथा उत्तर, पूर्वोत्तर और उत्तर सीमान्त रेलों के मीटर लाइन के इंजन फ्लीट की विद्युत संचालित मशीनों के रिवाइंडिंग की सुविधा स्थापित करना।

यह तो आपको विदित ही है कि मैंने इस परियोजना के मुख्य प्रबंधक का दायित्व ग्रहण कर लिया है और इसका काम तेजी से शुरू हो चुका है। जैसे ही निर्माण कार्य प्रारम्भ होगा, वैसे ही इसके काम में और भी अधिक तीव्र गति आवेगी।

यह आशा की जाती है कि जिस दिन यह योजना पूरी होगी उस दिन अजमेर कारखाना समूह की शान ही कुछ और होगी।

※ ※

—करते हैं सुबह का स्वागत सभी खुशी-खुशी,
यह कौन सोचता है, सुबह किस तरह हुई।

(पृष्ठ 2 का शेष)

का व्यक्तित्व भी पर्याप्त मुखर है। पण्डित नेहरू के पंचशील सिद्धान्त से उत्पन्न गुट निरपेक्ष आन्दोलन अब जोर पकड़ रहा है। हाल ही में, हरारे में हुए निर्गुट देशों के शिखर सम्मेलन में श्री राजीव गांधी ने शान्ति के लिए विश्व जनमत तैयार करने की दिशा में जो काम किया है उसकी समूचे विश्व में चर्चा है।

निस्सन्देह, हम यह देख भी रहे हैं कि समूचे विश्व में व्यापक नाश करने वाले अस्त्रों की होड़ और रंगभेद के विरुद्ध काफी सशक्त स्वर उभरने लगा है।

ईश्वर करे विश्व जनमत इतना प्रबल हो उठे कि हमारी विश्व शान्ति की आकांक्षाएँ शीघ्र पूरी हों।

इस सन्दर्भ में एक सूत्र हमारे अपने जीवन में शान्ति कायम रखने के लिए याद रखना परम आवश्यक है, वह यह कि—"बैर, बैर से शान्त नहीं होता, अवैर से ही शान्त होता है।" शत्रुता से शत्रुता समाप्त नहीं होती, क्रोध से क्रोध समाप्त नहीं होता, घृणा से घृणा नहीं मिटती, ईर्ष्या से ईर्ष्या नहीं हटती, अपितु बढ़ती जाती है। घृणा, ईर्ष्या आदि नकारात्मक भावनाएं जितनी बढ़ती हैं उतना नर्क निर्मित होता है। यदि 'आँख के बदले आँख' के सिद्धान्त को अपनाया जाए तो समस्त संसार ही धीरे-धीरे अन्धा हो जायेगा। नर्क कोई भौगोलिक जगह नहीं है, न ही स्वर्ग कोई भौगोलिक स्थान है। सब हमारी मनोदशाएँ हैं, स्व-निर्मित। शत्रुता मन में रखेंगे तो शत्रुओं से घिरे रहेंगे—बस हो गया नर्क-वास। मित्रता का भाव रखेंगे, मित्रों के मध्य रहेंगे। बन गया स्वर्ग इसी धरती पर।

※※※

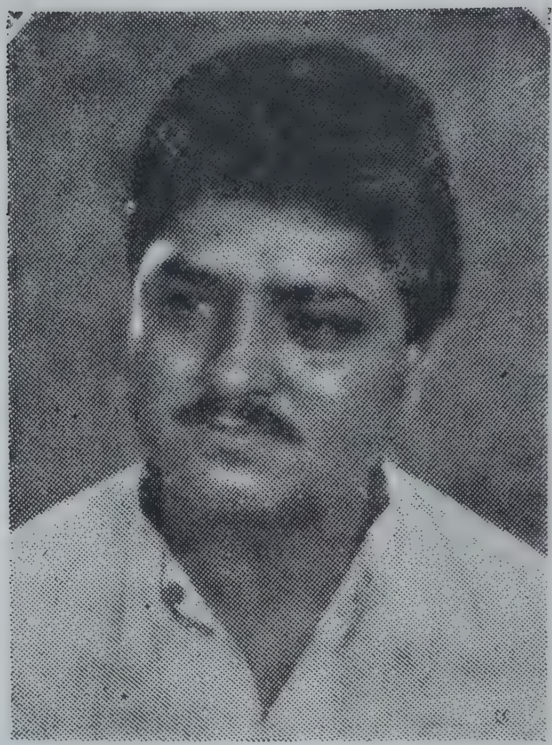
—दुश्मनी जम कर करो, मगर यह गुंजाइश रहे,
जब कभी दोस्ती हो, शरमिन्दगी न रहे।

※ ※

—क्यों फितरते जहाँ का तू ए दिल गिला करे,
लाजिम नहीं की हर कोई तुझसे वफा करे।

स्वराज्य से सुराज्य की ओर

△ विधायक ललित भाटी
बी-कॉम. एल एल. बी.



श्री ललित भाटी राज विधान सभा के युवा सदस्य हैं। अजमेर के दैनिक पत्र रोजमेल के प्रधान संपादक हैं, साथ ही प्रसिद्ध उद्योगपति भी हैं। 'वाणी-विलास' को विज्ञापन, लेख, सन्देश व अन्य प्रकार के सहयोग आप प्रदान करते रहे हैं। प्रस्तुत लेख में आपने निर्भीकता से अपने विचार व्यक्त किए हैं- —सम्पादक

अखबार में पिछले दिनों पढने में आई, उत्तरप्रदेश के बस्ती नामक कस्बे में कुछ लोगों ने 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर जुलूस निकाला, पाकिस्तान का झंडा लिए हुए, पाकिस्तान जिन्दाबाद का नारा लगा रहे थे। पिछली बार ख्वाजा साहब के उर्स पर आए पाकिस्तान के मुख्य लोगों ने यहीं अजमेर में पाकिस्तान का झंडा-मार्च निकाला और भारत विरोधी वक्तव्य दिए धर्म का नाम लेकर राष्ट्रगान न गाना आदि कुछ ऐसी बातें सामने आ रही है जिससे लगता है कि देश में भीतर ही भीतर बडा षड़यत्र देश के खिलाफ चल रहा है।

देश इतने अधिक संकटों से घिरा हुआ है, कि यदि समय रहते उपाय न किए गए तो इसकी एकता अखडता खतरे में पड़ती ही चली जायेगी।

देश की सीमाओं पर घुस पैठ पड़ोसी देशों द्वारा जारी है। पाकिस्तान प्रशिक्षण व हथियार देकर आतंकवादियों को भेज रहा है। पूर्वांचल में भी बांगला देश से भारतीय सीमा में घुसपैठ होती जा रही है। बर्मा की सीमा से विद्रोही नागा प्रशिक्षण प्राप्त कर भारत आ रहे है। इनके पास से चीनी हथियार तक बरामद हुए हैं। चीन की नीयत साफ सामने है। देश बाहर व भीतर के शत्रुओं से घिरा हुआ है।

राष्ट्र के हर भाग में देशद्रोहियों की भरमार बढ़ती जा रही है। हमारे अपने ही देशवासी बन्धु चन्द सिक्कों के लिए देश को बेच रहे हैं। भारत जिसे हम माँ कहते है, उसके सौदे कर रहे हैं उसके पूत कूमर नारायण रामस्वरूप और सेना से सेवानिवृत, तमगे प्राप्त लारकिन्स भाईयों ने गोपनीय दास्तावेज अनेक देशों को बेच दिये। ये सब कोई भूखे-नगे लोग नहीं हैं, समृद्ध लोग हैं। कभी पंजाब के मुख्यमत्री रहे प्रकाशसिंह बादल के विचार अब कैसे बदले-2 आ रहे हैं। असम, पंजाब, नागालैंड में जो हो रहा है वह क्या किसी से छुपा हुआ है।

आजादी से पूर्व का भारत याद आता है। हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई सबने मिलकर अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ, गुलामी के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। हजारों शहीद हुए, फांसी चढे। अपना सब कुछ अपने प्यारे वतन पर न्यौछावर कर दिया था। देश का विभाजन स्वीकार किया था भाईयों की तरह हम अच्छे पड़ौसी बनकर रहेंगे। एक दूसरे की उन्नति में बाधक नहीं सहायक बनेंगे। देश हमारा सुखी सम्पन्न होगा, आत्म निर्भर बनेगा। गाधी के सपनों का राम-राज्य आयेगा। स्वतन्त्रता तो आई सुतन्त्रता अभी कोसों दूर है।

15 अगस्त 47 को देश स्वतंत्र हुआ। परतन्त्रता समाप्त हुई। पहले 'पर' का तन्त्र था। अब 'स्व' का तन्त्र आया। लेकिन क्या हम अपने 'स्व' की रक्षा कर पा रहे हैं? 40 बर्षों में हम 'स्व' भाषा को नहीं अपना पाये। अभी भी 'पर' की भाषा के अधीन हैं। गांधीबाबा

ने 'पर' के वस्त्रों की होली जलवाई थी 'स्व' देश के बने कपड़ों की सार्थकता समझाई थी। आज जब देश में सुई से लेकर जहाज बन रहे हैं फिर भी विदेशी वस्तुओं के प्रति हमारा मोह बना हुआ क्यों है, 'स्व' की संस्कृति के बजाए हम पाश्चात्य नकल में लगे हुए हैं। संगीत, कला, साहित्य हर बात में हमारा 'स्व' हल्का है। हमारे देश की भूमि के एक बड़े हिस्से पर आज भी चीन का कब्जा है। कश्मीर में पाकिस्तान का अधिकार है। हम अपनी स्व-भूमि को कब 'स्व' कह पायेंगे।

यह ठीक है हमारे देश ने बहुत तरक्की की ही है। बड़े-2 कल-कारखाने खड़े किए हैं। अनाज के भण्डार हैं हमारे पास। फौज हमारी मजबूत है। लोकतन्त्र है, धर्म निरपेक्ष है। विज्ञान के जरिये सुख-सुविधाएं बढ़ी है। गाँवों के विकास हुए हैं। शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ हैं। साथ ही यह भी उतना ही बड़ा सत्य ही, कहिए कटु सत्य है भाई भतीजावाद बढा है। भ्रष्टाचार बढा है। मिलावट बढ़ी है, लूट-खसोट, खून-खराबा, साम्प्रदायिकता बढ़ी है। दहेज के नाम आत्म हत्याओं की सख्या बढी है। बलात्कार बढ़े हैं। लाटरी-जुआ बडे हैं। गो-वध व शराबखोरी बढ़ी है। और इनसे बढ़कर देश में कुर्सी-दौड़ बढ़ी ही है। गद्दारी बढ़ी है।

क्या घट गया है देश में! घट गया है राष्ट्रीय भाव राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रप्रेम, देश भक्ति। ये जो किसी देश के प्राण होते हैं, उसकी श्वास होती है। जिसके सहारे देश जिन्दा रहता है। वह कमजोर क्षीण हो रहा है। किसी देश का सब कुछ नष्ट हो जाए लेकिन राष्ट्रीय भाव बचा रहे वह देश मर नहीं सकता, फिर खड़ा हो जायेगा। जर्मन जापान की मिसाल सामने है। ये देश टूट गये थे, इनका बहुत कुछ नष्ट कर दिया गया था लेकिन थोड़े ही अर्से मे ये फिर खड़े हो गये और आज ससार के सामने विकास की होड़ में आगे है। इन देशों के नागरिकों ने राष्ट्रीय भाव को नष्ट नहीं होने दिया। कितनी ही बड़ी-बड़ी योजनाएं क्यों न बनाली जाएं बिना राष्ट्रीय भाव के सब व्यर्थ हो जाती है। होलेन्ड के साहस के आगे हिटलर भी कांप गया था, उसने अपनी डायरी में लिखा था-"जो लोग अपने देश के लिए मरने को तैयार है उन्हें गुलाम नहीं बनाया जा सकता।"

कैसे जगाएं यह भावना? इसके लिए क्या उपाय है? एक तो यह है कि आरम्भ से यह शिक्षा दी जाए कि देश हमारे लिए पहले है। भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय, धर्म सब बाद में। देश के हित को पहले रखें, व्यक्तिगत स्वार्थ बाद में। इसके लिए पाठ्य पुस्तकों में एक पृथक विषय हो। सब धर्मों के मूल तथ्य, जो प्रायः समान है, उनकी जानकारी दी जाए। देश प्रेमी शहीदों के जीवन प्रसंग पढ़ाये जाएं। कूट-कूटकर यह भावना हर बालक के दिल दिमाग में समा जाए कि उन्हें अपने देश के लिये तैयार होना है। सेना में जाएं तो नौकरी मुख्य लक्ष्य न हो: देश की हिफाजत का भाव प्रमुख हो। व्यापारी बने तो देश की सेवा का भाव हो: धन कमाना गौण बात हो। इसी प्रकार से प्रत्येक क्षेत्र में जाने वालो के मन में यह भाव हो कि मैं देश के लिए हूं। देश को ध्यान में रख कर चलूंगा।

दूसरे, जो लोग देश द्रोह का कार्य करते हैं उनके लिए कठोर से कठोर सजा हो। तुष्टीकरण की नीति न हो। ऐसे लोग जो देश का अहित सोचते हों, करते हों उनके साथ क्या समझौता, क्या वार्ता, क्यों उनकी नाराजगी से डरे? और ऐसे लोग तो कतई बरदाश्त नहीं किए जाने चाहिए जो रहते यहां हैं, खाते कमाते यहाँ हैं और इस देश के पतन तथा दूसरे देश की बेहतरी के लिए काम करते हैं। ऐसे लोगों को प्रचार के साथ सख्त सजायें दी जायें।

हम स्वतन्त्र तो हो गये हैं, स्व राज्य आ गया है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। हमें स्व राज्य के साथ-साथ सु राज्य लाना है। तभी हम सही माने में पूरे स्वतंत्र होगे। आजादी के सुफल से सारा देश चमकेगा महकेगा।

***

(शेष पृ. 16 का)
फूटी आँखों नहीं सुहाती थी। अतः उन्होंने विष्णु की सहायता से दैत्यों की सारी संपदा एवं रत्न भंडार छीन लिये। बस यहीं से देव और दैत्यों का सतत संघर्ष शुरू हुआ। उसी युद्ध में एक दिन देवों ने दैत्यों से लंका छीन ली और दैत्य सुमाली वहाँ से भाग कर पाताल में चला गया।

समय के साथ सुमाली वृद्ध हुआ। फिर भी अपनी प्रिय नगरी छोड़ने का उसके मन में बड़ा दुःख था। लंका की याद उसे बार बार सताती रही। उसे पता था कि विश्रवा का बेटा विश्रवण कुबेर लंकाधीश बना है और असंख्य यक्षों के साथ राजसुख प्राप्त कर रहा है। अतः वह यही सोचा करता था कि अपनी प्रिय लंका कैसे प्राप्त करे। उसने एक उपाय ढूढ़ निकाला। अपनी पुत्री कैकसी को बुला कर उसने कहा, 'बेटी, अब तुम विवाह योग्य हो चुकी हो। तुम्हारे लिए एक श्रेष्ठ वर मैंने देखा है। तुम मुनिवर विश्रवा (विश्रवण के पिता) को जाकर कहो। उनसे तुम्हें सूर्य समान पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी।'

केकसी विश्रवा के पास गयी। उस समय में वे अग्निहोम कर रहे थे। वह सीधी विश्रवा के सामने नत-मस्तक खड़ी हो गयी। विश्रवा ने पूछा, 'तुम कौन हो? कहाँ से आयी हो? क्या चाहती हो?'

केकसी ने उसे प्रणाम करते हुए कहा, 'मुनिवर! आप स्वयं मेरे आने का कारण जानने में समर्थ हैं। फिर भी मैं इतना ही निवेदन करती हूँ कि मैं अपने पिता के कहने पर आयी हूँ। मेरा नाम केकसी है। शेष आप स्वयं समझ सकते हैं।'

विश्रवा अधेड़ आयु के थे। परन्तु वे तपोमूर्ति थे। मुखमण्डल पर कांति, तेज व पुरुषत्व देदीप्यमान था। कैकसी समान अति सुन्दर व लावण्यमयी युवती को देख कर वे मौहित हो गए। उन्होंने उसे वरण कर लिया। उसी वन में ही एक सुरम्य नगरी बसायी और पूर्ण वैभव के साथ भव्य राजप्रसाद में उन्होंने दांपत्य जीवन प्रारम्भ किया। लावण्यमयी सुन्दरी कैकसी से चार सन्तानें हुई– रावण, कुम्भकर्ण व विभीषण नामक तीन पुत्र और चन्द्रनखा नामक एक अति सुन्दर पुत्री।

रावण एक अत्यन्त सुन्दर, वीर और विद्वान् था। तपस्या की अद्भुत शक्ति उसके पास थी। कहते हैं कि एक बार बचपन में वह दर्पणमाला पहने था। विश्रवा ने देखा कि दर्पणमाला में बालक रावण की अनेक आकृतियां उभर आयी हैं और उससे बालक रावण और भी सुन्दर लग रहा है। दर्पणमाला में रावण की दस आकृतियां देखकर उसने अपने लाडले को 'दश शीश' सम्बोधन से पुकारा और तभी से रावण का उपनाम 'दसशीश' प्रचलित हो गया।

अनेक इतिहासकारों व पुराणकारों ने रावण को कुरूप एवं दस सिर वाला चित्रित किया है, किन्तु यह काल्पनिक हैं। रावण अत्यन्त सुन्दर पुरुष था। उसकी मनमोहक सुन्दरता पर मयपुत्री मन्दोदरी मौहित हो गयी थी। विद्वान् पिता के सान्निध्य में रहकर रावण ने सभी विद्याओं पर अपना वर्चस्व जमा लिया था। रावण स्वयं सभी विद्याओं का ज्ञाता था। उसका विवाह भी एक विदुषी कन्या के साथ हुआ। रावण ने किसी भी युवती के साथ जोर-जबरदस्ती से विवाह नहीं किया। वाल्मीकि ने स्पष्ट लिखा है कि जब हनुमान लंका में गए तब उन्होंने रावण के महल में या अन्तःपुर में किसी भी 'अन्यकामा' (अन्य से प्रेम करने वाली) या 'पूर्वकामा' (विवाहिता) स्त्री को नहीं देखा।

रावण के व्यक्तित्व में तीन संस्कृतियों का समावेश था। पितृकुल से आर्य संस्कृति, मातृकुल से दैत्य संस्कृति एवं बहिष्कृत ब्रात्य संस्कृति। अपने बुद्धिबल एवं साहस के कारण ही वह अंश का अधिपति बना और समस्त 'राक्षस संस्कृति' का प्रणेता भी। अपने पराक्रमों से उसने दिग्पालों को हराया और विंध्य के दक्षिण में राक्षस संस्कृति का विकास किया। उत्तर भारत के दण्डकारण्य और नैमिषारण्य में उसकी सैनिक छावनियां थी। रावण की बहन चंद्रनखा स्वयं दंडकारण्य क्षेत्र की महिषी थी। जब हनुमान ने रावण की राजधानी लंका को देखा तो हतप्रभ से हो गए थे। प्रातःकाल की वेला में जब हनुमान

सीता की तलाश में निकले तो उन्हें नगरी के प्रत्येक गृह में वेदमंत्रों की ध्वनि सुनाई दी।

रावण केवल योद्धा ही नहीं था। वह भावुक-भक्त-संगीतकार भी था। उसने पंचम्वेद की रचना की थी जो कृष्ण यजुर्वेद के नाम से प्रख्यात है।

वह व्यवहारकुशल तथा एक सच्चा प्रजातांत्रिक था। राम से युद्ध करने से पहले उसने अपनी संसद की जो बैठक बुलाई थी, उसमें एक मंत्री ने किसी बात पर असहमति प्रकट की। रावण ने बैठक स्थगित कर दी, क्योंकि मंत्रिमण्डल का एक सदस्य उससे असहमत था।

लक्ष्मण ने रावण की बहन चंद्रनखा (शूर्पनखा) के साथ जो व्यवहार किया था उसी के प्रतिशोध स्वरूप रावण ने सीता का हरण किया लेकिन उसने उन्हें रनिवास अथवा अन्तःपुर में नहीं रखा। वह अपने मंत्री माल्यवान से कहता है, 'मैंने सीता का अपहरण कर राम को चुनौती दी है, शूर्पनखा की नासिका काटे जाने का प्रतिकार किया है। राम के व्रत-पितृवचन के पालन से मुझे वैर नहीं है। मैं उनके व्रतपालन में बाधा नहीं डालूंगा। सीता राम की अर्धांगिनी है, यदि उसे नगर में रखा गया तो राम का वनवास खण्डित होगा। सीता को अशोकवाटिका में रखने का निर्णय मैंने इसीलिए किया है।'

सीता के अपहरण के कारण ही रावण निंदा का पात्र बना है। यदि उसने सीताहरण न किया होता तो शायद आज हमें रावण का अलग ही स्वरूप देखने को मिलता।

रावण की प्रजा उसे अत्यधिक चाहती थी। जब लंका के लोगों ने अपने प्रिय राजा रावण को युद्धस्थल पर घायलावस्था में देखा तो वे सभी नर-नारी आबाल-वृद्ध शोक-विकल हो उठे थे। प्रजा का करुण-क्रन्दन, मर्मांतक प्यार तथा रावण को आहत देखकर स्वयं उसका शत्रु भाई विभीषण भी फूट-फूट कर रो पड़ा था।

रावण जब मरणासन्न था तब राम ने उसके पास लक्ष्मण को राजनीति के सूत्र जानने के लिए भेजा था। रावण ने उसे सभी नीति-सूत्र प्रेमपूर्वक सिखाये थे। तभी तो स्वयं वाल्मीकि ने रावण की कई बार प्रशंसा की है।

***

शेर—1 या तो दीवाना हंसे या जिसे तू तोफीक दे,
वरना, इस दुनिया में आकर मुस्करा सकता है, कौन ?

2 अब हमें खुदा के सिवा कुछ भी नजर नहीं आता,
बहुत दूर निकल गए हैं; जुस्त-जू से हम।

3 किसी दुनियाँ की ख्वाहिश ने है, बन्दा कर दिया मुझको,
वरना, हम खुदा थे, गर दिले बे आरजू होता।

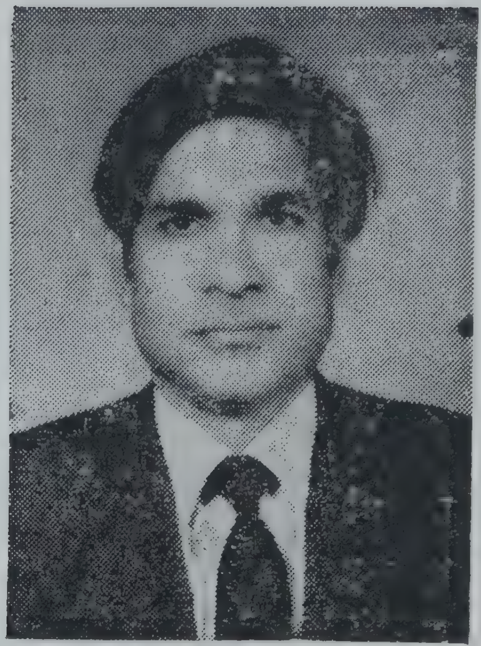
सूरज ने अस्त होते हुए पूछा था के है कोई जो मेरे पीछे मेरा काम सम्भाल सके ?
एक छोटे-से माटी के दिये ने सर उठा कर कहा—मैं कोशिश करूँगा ?

* गृहस्थ आश्रम एक तपोवन है—जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

* ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है जिस तरह लकड़ी को दीमक।

* बिना सोचे विचारे बोलना और बिना निशाने गोली मारना एक समान है।

इक्कीसवीं सदी में भारतीय रेलों का प्रारूप



△ **नैपाल सिंह**
उप मुख्य यांत्रिक इंजी. (लोको)

भारतीय रेल देश की जीवन रेखा और यातायात का प्रमुख साधन है। भारतीय रेलों का एशिया महाद्वीप में प्रथम स्थान है और विश्व में दूसरा। 31 मार्च, 1985 के आंकड़ों के अनुसार प्रतिदिन 1150 रेलगाड़ियां 91.3 लाख मुसाफिरों को 7093 स्टेशनों से होती हुई 61,850 किलो मीटर लम्बे रास्ते पर चलती हैं। अनुमानतः प्रतिदिन पूरा आस्ट्रेलिया भारतीय रेलों में यात्रा करता है। प्रतिदिन 2648 लाख टन माल ढ़ोया जाता है। यह सब काम 10,128 इन्जनों, 38,583 सवारी एवं दूसरे यानों और 3,65,390 मालडिब्बों की मदद से 16,03,200 कर्मचारियों के हाथों द्वारा होता है।

आज़ से लगभग 133 वर्ष पूर्व 16 अप्रेल, 1853 को जब पहली रेलगाड़ी ने 14 चौपहियों के साथ बम्बई और थाणा के बीच की 34 किलो मीटर की दूरी 1 घंटा 15 मिनट में तय की थी तो किसी ने सोचा भी न था कि भविष्य में भारतीय रेलों का जाल देश में इतना फैल जायेगा कि वह विश्व में अपना एक विशिष्ठ स्थान बना लेगा।

रेल किसी भी देश की प्रगति का प्राण होती है। भारत जैसे विकासशील देश में यातायात की आवश्यकताओं को पूरा करने में रेलों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हमारे पास न केवल डीजल और विद्युत इन्जन, सवारी डिब्बे और माल डिब्बे बनाने के कारखाने हैं बल्कि उनको अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के साथ निर्यात करने की क्षमता भी है। इस स्थिति तक पहुंचने के लिये भारतीय रेलों को बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा है, तकनीकी और आर्थिक कठिनाईयों को पार करते हुए एक लम्बा रास्ता तय किया है।

पिछले 3–4 दशकों में इन्जीनियरी और तकनीकी क्षेत्रों में आशातीत प्रगति हुई है और उसका प्रभाव रेलों पर भी पड़ा है। 21वीं सदी के आरम्भ में भारतीय रेलों का क्या प्रारूप होगा, इसका निर्णय करना कठिन है। क्योंकि जिस अनुपात से जनसंख्या और यातायात आवश्यकतायें बढ़ रही हैं, उस अनुपात में रेल सेवाएं नहीं बढ़ पा रही हैं। यदि आवश्यकताएं पूरी न हुई तो हो सकता है कि यातायात का कोई दूसरा साधन रेलों का स्थान ले ले। भविष्य की कुछ योजनाएं भी इस बात को ध्यान में रखकर बनाई जा रही हैं कि यातायात आवश्यकताएं स्वयं ही नियन्त्रित हो जायें। बहरहाल यह निश्चित है कि रेलों में तकनीकी विकास और आधुनिकरण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जायेगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए रेल प्रणाली के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता है।

1–**कर्षण**:—21वीं सदी के आने से पहले ही वाष्प इन्जन समाप्त हो जायेंगे और प्रमुख मार्गों के लिये विद्युत इंजन और बाकी सेवाओं के लिए डीजल इन्जन का प्रयोग होगा। अतः रेलवे के लिए कोयले का लदान और ढ़ोना बंद हो जायेगा। वाष्प-इंजन मरम्मत कारखाने, डीजल/विद्युत कारखानों में

बदल दिये जायेंगे । डीजल और विद्युत इंजन कारखानों का विकास होगा, इनकी क्षमता बढ़ेगी और इन इंजनों के कलपुर्जे रि-क्लेम करने वाले कारखानों का जन्म होगा। तकनीकी क्षेत्र में नानारूपकरण होगा और विशिष्ट इकाइयों के विनिर्माण हेतु भिन्न-भिन्न कारखाने जन्म लेंगे । उदाहरणत: डीजल अवयव कारखाना पटियाला, स्प्रिंग कारखाना भोपाल, पहिया और धुरी कारखाना बैंगलोर आदि की क्षमता और बढ़ेगी। इसी प्रकार एक्सल बॉक्स या रोलर बियरिंग कारखानों का अभ्युदय होगा । डीजलीकरण और विद्युतिकरण के कारण चालकों की संख्या में कमी होगी । पानी की आवश्यकता कम होगी । डीजल और बिजली की आवश्यकता बढ़ेगी । नये बिजली घर बनाये जायेंगे । इंजनों की देखरेख के लिये और ज्यादा डीजल और विद्युत शेड खोले जायेंगे । स्टीम शेड बन्द हो जायेंगे या फिर वे डीजल/विद्युत शेडों में बदल दिये जायेंगे। वातावरण में प्रदूषण कम होगा । डीजल और विद्युत इंजन होने से गाड़ियों की गति और माल ढ़ोने की क्षमता बढ़ जायेगी । इंजन इतने शक्तिशाली होंगे कि 9000 टन का भार खींच सकेंगे । सवारी गाड़ी और मालगाड़ियां ज्यादा लम्बी होंगी और प्लेटफार्म भी लम्बे होंगे । हो सकता है गाड़ी को खींचने के लिये 'मैगनेटिक लेविटेशन' काउपयोग हो जिससे पहियों की जरूरत ही न रहेगी और पहियों पर घिसावट की पूरी समस्या ही समाप्त हो सकेगी ।

2. सवारी डिब्बे

सवारी डिब्बों का डिजाइन ऐसा होगा कि वे ज्यादा से ज्यादा मुसाफिरों को समा सकें । ये डिब्बे स्टील के स्थान पर अल्यूमिनियम या एफ. आर. पी. के होंगे ताकि इनका वजन भी कम हो और इनमें जंग भी न लगे जिससे मरम्मत का खर्च कम होगा । ये डिब्बे कम से कम 200–250 कि. मी. प्रति घन्टा की रफ्तार से दौड़ने के उपयुक्त होंगे । अन्दर लगने वाली लकड़ी का स्थान प्लास्टिक ने ले लिया होगा । ये डिब्बे ऐसे होंगे जिनके रख-रखाव की बहुत कम जरूरत पड़ेगी। ज्यादातर ये वातानुकूल होंगे । देख-रेख का तकनीकी स्तर ऊंचे दर्जे का होने की जरूरत होगी । ये ज्यादा आराम-दायक और देखने में अच्छे होंगे । द्वितीय दर्जे के सभी यानों में गद्देदार सीटें होंगी और हाथ-पैरों की सुविधा के लिए ज्यादा जगह होगी । दुमंजिले यानों का प्रचलन भी अधिक होगा । आज के प्रथम श्रेणी के यानों का स्थान द्वितीय श्रेणी के वातानुकूल शयनयानों ने ले लिया होगा । इनमें पानी पीने और संगीत सुनने की व्यवस्था होगी । सभी यान रोलर बियरिंग के साथ होंगे ताकि सफर थकावट रहित हो । तीव्र गति के कारण ब्रेक वायु-दबाव से संचालित होंगे । कोचिंग डिपो कम कर दिये जायेंगे । परन्तु इनमें आधुनिक उपकरण होंगे ताकि यान कम से कम समय में मरम्मत होकर सेवा योग्य हो सके ।

3. मालडिब्बे

मालडिब्बे भारी-भरकम (बल्की मूवमेंट) यातायात के लिए ही प्रयोग में लिये जायेंगे । चौपहिये मालडिब्बे करीब-करीब समाप्त हो जायेंगे, जो रहेंगे वे रोलर बियरिंग के होंगे और इसकी गति 100 कि मी. से ऊपर होगी। ज्यादातर मालवाहक चपटे (कण्टेनर फ्लैट) होंगे। ब्रांच लाइन यातायात बहुत कम होगा जो सड़क द्वारा ढ़ोया जायेगा । मार्शलिंग यार्डों की जरूरत को कम करने के लिये ये वैगन-रैक लिंक में चलेंगे और शन्टिंग को कम करने के लिये इन गाड़ियों का रख-रखाव भी रेक में ही होगा । देख-रेख डिपो कम कर दिये जायेंगे । देख-रेख का तकनीकी स्तर ऊंचा उठेगा ।

डिब्बों का डिजाइन ऐसा होगा जो सीमित लम्बाई में ज्यादा से ज्यादा माल भर सके यानि ऊंचाई ज्यादा होगी और लम्बाई कम । सभी डिब्बे स्वयं जुड़ने वाले और स्वयं खुलने वाले होंगे । सभी डिब्बे रोलर बियरिंग के और वायुदाब से रुकने वाले होंगे । गार्ड के डिब्बे भी बड़े होंगे ताकि उनकी वजह से गाड़ी की गति कम न हो ।

4. संकेत (सिगनल)

आज के "आर्म टाईप" के यांत्रिक संकेत समाप्त हो जायेंगे । सभी संकेत रंगीन प्रकाश के या आटोमेटिक टाइप के होंगे । कुछ 'केब" सिगनल भी होंगे जिनको ड्राइवर अपने इन्जन के केबिन में ही देख सकेगा । सुरक्षा की दृष्टि से और ज्यादा से ज्यादा यातायात पार करने के लिये पेनल इन्टर लोकिंग, रूट रिले इन्टरलोकिंग, सी.टी सी. प्रस्थापित किये जायेंगे और मार्शलिंग यार्डों

का यांत्रिकीकरण हो चुका होगा ताकि जिस लाइन पर गाड़ी पहले ही से खड़ी हो उस पर दूसरी गाड़ी को लेने के लिये संकेत न दिया जा सके।

"ग्रोटोमेटिक वार्निंग सिस्टम" या "ग्राग्जीलरी वार्निंग सिस्टम" के द्वारा यदि संकेत न दिया हो तो ड्राइवर को सूचना मिलेगी और गाड़ी के ब्रेक स्वतः लग जाएँगे, यदि चालक कुछ क्षण बाद ब्रेक नहीं लगाता है।

इस प्रकार मानवीय भूलों का खातमा ही हो जायेगा और यात्राएँ सुरक्षित होंगी।

दूरभाष के लिए नये प्रकार के यन्त्र प्रयोग में लाए जाएँगे। माइक्रोवेव कम्यूनिकेशन और रेडियो कम्यूनिकेशन का बोलबाला होगा।

5 इंजीनियरी विभाग :

आज बड़ी लाइन 54% और मीटर लाइन 39% है। अगली शताब्दी के मोड़ तक सकरी लाइनों को या तो समाप्त कर दिया जायेगा या उनको बड़ी लाइन में बदल दिया जायेगा। आशा है 75% तक बड़ी लाइनें हो जायेंगी। दुहरी लाईन जो आजकल केवल 21% है, बढ़ेगी।

शक्तिशाली डीजल और विद्युत इंजनों, लम्बी, ज्यादा और तीव्र गति वाली गाड़ियों यानि भारी घनत्व वाला यातायात और ज्यादा ऐक्सल लोड के कारण मोटी और मजबूत ट्रेक संरचना और उनकी देखभाल के आधुनिक तरीकों का प्रचलन होगा। आजकल की 60 कि.ग्रा. प्रति मीटर वाली रेलें जो केवल 160 कि.मी प्रति घण्टा गति और 20 जीटीएम घनत्व के लिए उपयुक्त हैं, बदल दी जायेगी। बड़े मार्गों पर 2 किमी. से ज्यादा लम्बे वेलडिड पेनल बिछे होंगे। इससे यात्रा आरामदायक और फिश प्लेट लगाने का खर्चा समाप्त होगा। कास्ट आयरन स्लीपर बन्द हो जाएँगे। स्टील और लकड़ी के स्लीपर जो दुर्लभ हैं, कम हो जाएँगे और फिटिंग्स के साथ प्रीस्ट्रेस्ड कंकरीट स्लीपर या प्लास्टिक स्लीपर ही प्रयोग होंगे।

लाइनों के रख-रखाव के लिए "डाईरेक्टिड ट्रेक मेन्टीनेंश" और "मेजर्ड शावेल पैकिंग" तरीकों का और "आन-ट्रेक" टाई टेम्पर जैसी मशीनों का प्रयोग होगा जिससे कार्य की गुणवत्ता और उत्पादकता बढ़ेगी।

1,13,462 पुलों में से जो सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त न होंगे उनको गिराकर नये पुल बनेंगे।

41 946 समपार फाटकों में से 36.5% ही समानस हैं। रेल दुर्घटनाओं को कम करने के लिए समानस समपार फाटकों का विकास होगा। जहाँ यातायात अधिक है वहाँ "रोड-ओवर" और "रोड-अण्डर" पुल बनेंगे। लाइनों के निरीक्षण के लिए मशीनों का बड़े पैमाने पर उपयोग होगा।

6 गाड़ी सचालन :

तकनीक प्रगति के कारण संचालन में काफी सुधार होगा। मार्शलिंग यार्ड कम होंगे। बड़े यार्डों का आधुनिकीकरण होगा। "पूर्ण संचालन सूचना" कम्प्यूटर द्वारा किसी भी वैगन का पूर्ण विवरण बटन दबाकर मिल सकेगा। बड़े और मध्य दर्जे के शहरों में आरक्षण भी कम्प्यूटर द्वारा होगा। मालगाड़ियों में न गार्ड के डिब्बे न गार्ड होंगे। बिना टिकट यात्रा करना कठिन होगा।

7 मेट्रो रेलवे :

कलकत्ता में 3.5 कि.मी. की अन्तर्भूमि सेवा पिछले वर्ष से आरम्भ हो चुकी है। इसका विस्तार होगा। कलकत्ता मे 18.5 कि.मी. की वृतीय रेल सेवा पूरी हो चुकी होगी। इस प्रकार की सेवाएँ बम्बई और मद्रास में पूर्ण हो चुकी होंगी।

8 कम्प्यूट्रीकरण :

बड़ी मात्रा में कम्प्यूटरों और माइक्रो प्रोसेसर का प्रयोग होगा। इनका प्रयोग गाड़ी संचालन (ट्रेन आपरेशन) के लिए, भण्डार विभाग में इंवेन्टर कन्ट्रोल के लिए, स्थापना विभाग के वेतन बिल अनुभागों और वाणिज्य विभाग में आरक्षण कार्यालय आदि में होगा। उत्पादन इकाइयों में भी बड़े स्तर पर कम्प्यूटरों का प्रयोग होगा। कारखानों में ओटोमैट्स, एनसी, और सीएनसी मशीनों का प्रचलन होगा।

उपरोक्त से प्रतीत होता है कि आगे आने वाले समय में रेल तन्त्र में एक बड़ा परिवर्तन आने वाला है। यह रेलवे के लिए एक जोखिम भरी चुनौती है जो अवश्यंभावी है। प्रत्येक रेल कर्मचारी को इसके विषय में सोचना होगा और अपने को इसके अनुकूल बनाने का प्रयत्न करना होगा।

साहित्य-रत्नों की खान : श्रीराम चरित मानस

△ मुरलीधर कक्कड़
भू. पू. उ. मुख्य इन्जी. (अ. एवं सं.)



अधिकांश व्यक्तियों की धारणा है कि राम चरित मानस केवल एक धार्मिक ग्रन्थ है।

इससे बढ़कर गलत धारणा या गलत-फहमी शायद ही कोई और हो। यदि एक बार भी साहित्यिक दृष्टिकोण से या नीति, भक्ति, स्नेह, वात्सल्य, प्रेम या शान्ति के दृष्टिकोण से इस ग्रन्थ का अध्ययन किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि रामचरित मानस केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं वरन् एक अनमोल साहित्यिक-रत्न है। लेखक यह नहीं कहना चाहता है कि उसने रामचरित मानस को अच्छी तरह समझ लिया है या अच्छी तरह से एक बार पढ़ ही लिया है। मानस को पूरा पढ़ लेना ही इतना दुष्कर कार्य है जो बहुत कम व्यक्ति कर सके हैं और इसके अर्थ को समझना, इसके मर्म को जानना तो और भी कठिन है। जितनी बार भी मानस को पढ़ा जाए, हर बार कुछ न कुछ नया अर्थ समझ में आता है। मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों से इस विषय में चर्चा कर चुका हूं, जिन्होंने विश्व की कई भाषाओं का साहित्य अच्छी तरह से पढ़ा है। एक मित्र का कथन मैं भूल नहीं सकता जो आजीवन विदेशी-साहित्य के दीवाने थे। जब उन्होंने मानस पढ़ी तो कहने लगे कि मैंने शैक्सपीयर, गोर्की, जार्ज बर्नार्ड शा और लियो टॉल्सटॉय सभी पढ़ डाले लेकिन जो बात मानस में मैंने पाई, विश्व के किसी और काव्य या ग्रन्थ में नहीं।

आखिर मानस में ऐसी क्या बात है? क्या मानस मात्र कविता है? या धार्मिक ग्रन्थ या इतिहास का एक अध्याय?

मेरे विचार में मानस इन सबसे इतर है। मानस में धर्म है और राजनीति भी, भक्ति है और शिक्षा भी, प्रेम है और रस भी, स्नेह है और अलंकार भी, युद्ध है और शान्ति भी।

वात्सल्य रस में डूबी हुई ये पंक्तियां देखिए—

'भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥'
[बालकाण्ड]

"माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥"
[बालकाण्ड, श्रीराम का जन्म]

प्रयण के क्षेत्र से भी तुलसीदास बहुत दूर नहीं रहे, यद्यपि मानस में प्रणय-रस का उल्लेख कहीं-कहीं ही दिखाई देता है। जैसे कि वह दृश्य जब रामचन्द्र और सीता एक-दूसरे को पहली बार देखते हैं—

'कंकन किंकिनि नुपूर धुनि सुनि।
कहत लखन सन रामु हृदय गुनि॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही।
मनसा बिस्व विजय कहँ कीन्ही॥'

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा।
सिय मुख ससि भए नयन चकोरा॥
भए बिलोचन चारू अचंचल।
मनः सकुचि निमि तजे दिगंचल॥'

इन दो पंक्तियों में निहित विशेष अर्थ दृष्टव्य है—

अर्थ:—ऐसा कहकर श्रीरामजी ने फिरकर उस ओर देखा। श्रीसीताजी के मुखरूपी चन्द्रमा (को निहारने के लिए) नेत्र चकोर बन गए। सुन्दर नेत्र स्थिर हो गए मानोनिमि (जनकजी के पूर्वज ने) जिनका सबकी पलकों में निवास माना गया है, लड़की-दामाद के मिलन-प्रसंग

को देखना उचित नहीं, इस भाव से (सकुचाकर पलकें छोड़ दी) जिससे पलकों का गिरना रुक गया।

'देखि सीय सोभा सुखु पावा।
हृदय सराहत बचनु न आवा॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई।
बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई॥

विरह रस से तो अरण्यकाण्ड, किष्किधाकांड एवं सुन्दरकांड ओत-प्रोत है—श्रीराम का हनुमान के द्वारा सीताजी को भेजा गया सन्देश—

'कहेऊ राम बियोग तब सीता।
मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥
नव तरू किसलय मनहुँ कृसानू।
कालनिसा सम निसि ससि भानू॥
कुबलय बिपिन कुन्त बन सरिसा।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा॥
जे हित रहे करत तेहि पीरा।
उरग स्वास सम त्रिविध समीरा॥'(सुन्दरकाण्ड)

विरह रस का ऐसा वर्णन बहुत कम पढ़ने को मिलता है। इसीलिए तो लगभग इन्हीं शब्दों को फिल्मी कवियों ने बार-बार कई गीतों में प्रस्तुत किया है।

'आग बनी सावन की बरखा, फूल बने अंगारे।
नागन बन गई रात सुहानी, पत्थर बन गए तारे॥'

श्रीराम अपने सन्देश में आगे कहते हैं—

"कहेहू तें कछु दुख घटि होई।
काहि कहों यह जान न कोई॥
तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा।
जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥
"सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं।
जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥ (सुन्दरकांड)

करूण रस से सम्पूर्ण मानस जगह-जगह पर ओत-प्रोत है। उदाहरणार्थ—

"सीता के अति बिपति बिसाला।
बिनहि कहें भलि दीन दयाला॥"

सौन्दर्य रस—पुष्प वाटिका में राम-लक्ष्मण को झाड़ी की ओट में से देखकर सीता ने अपनी सखी से पूछा कि दोनों राजकुमार देखने में कैसे हैं? तो सखि ने कहा—

"स्याम गौर किमि कहौं बखानी,
गिरा अनयन नयन बिनु बानी।"

और अब देखिए कि इसी भाव को 20 वीं सदी के फिल्मी गीतकार ने किस प्रकार से प्रयुक्त किया है—

"तुझको देखा है मेरी नज़रों ने।
तेरी तारिफ हो मगर कैसे॥
के बने ये नजर जुबाँ कैसे।
के बने ये जुबाँ, नजर कैसे॥
न जुबाँ को दिखाई देता है।
न निगाहों से बात होती है॥"

गोस्वामी तुलसीदास साहित्य के सभी रसों के प्रकाण्ड पण्डित थे—हनुमान के बूटी लाने पर लक्ष्मण की मूर्छा के कारण करूण रस में डूबे हुए राम और उनकी वानर सेना में कैसे साहस का संचार हो गया, इसका वर्णन देखिए—

"प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करूना महुँ बीर रस॥
(लंकाकाण्ड)

दर्शन के क्षेत्र में तो तुलसीदास का कोई सानी हो नहीं। निर्गुण ब्रह्म के भी मानस में कई जगह उल्लेख हैं। राम-लक्ष्मण पम्पा सरोवर के निकट पहुंचे तो सरोवर की सुन्दरता का बखान श्रीराम ने कुछ इस प्रकार किया—

'पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म।
मायाछन्न न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म॥"

अर्थ—कमल के पत्तों की आड़ में जल का जल्दी पता नहीं मिलता। जैसे माया से ढके रहने के कारण निर्गुण ब्रह्म नहीं दीखता।

इसी पम्पा सरोवर का आगे वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने लिखा है—

'कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं।
सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं॥' (अरण्यकाण्ड)

पाठक ग़ौर करें कि इन्हीं शब्दों से एक बहुत सुन्दर मिल्मी गीत इस शताब्दी में रचा गया—'कुहू-कुहू बोले कोंयलिया।'

अलंकारों से पूरा मानस ऐसा भरा है जैसे तरह-तरह के रत्न समुद्र के तल पर बिखरे हुए हैं। कहीं अनुप्रास है तो कहीं उपमा, कोई भी दोहा सोरठा चोपाई देख लीजिए, उनमें अलंकार रूपी रत्नों की निराली छटा देखने को मिलेगी। कुछ उदाहरण देखिए—

(शेष पृष्ठ 15 पर)

दो भ्रान्तियां

△ राकेश मेहरोत्रा
भू. पू. अपर मुख्य यां. इंजी. (लोको)



दो कोटि के व्यक्ति होते हैं । एक ऐसे अज्ञानी-जनों की कोटि है जिनको यह ख्याल है कि वे सदा रहेंगे, ऐसे जीते हैं जैसे वे कभी मरने वाले नहीं । दूसरे ऐसे ज्ञानी-जन हैं, जो जानते हैं कि हम सदा रहने वाले नहीं हैं, सब अनित्य है, परिवर्तनशील है । अज्ञानियों के जीने का एक ढंग है, वे अहंकार को लेकर जीते हैं जबकि ज्ञानी-जन अहं-शून्य भाव से जीते हैं ।

जो लोग इस भ्रांति में रहते हैं कि वे सदा रहेंगे, वे पाप करने में कतई नहीं झिझकते । रावण, कंस हिरण्य-कश्यप को भी यह वहम् था । सिकन्दर, हिटलर, चंगज भी इस भ्रान्ति में थे । लेकिन मौत आई और एक क्षण में सारी हेंकड़ी समाप्त होगई । नेपोलियन कहता था, असम्भव शब्द मूर्खों के शब्द-कोष में है किन्तु मौत ने आकर यह बता दिया कि अमरता असम्भव है ।

क्षण-भंगुर है जीवन । "पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात", श्वांस आई-आई, न आई न आई, खेल खत्म । जिसको समझ में आ गया कि ओसकी बून्द जैसे है जीवन, अब गिरी, तब गिरी, भोर को तरैया है, अब डूबी, तब डूबी, क्षण भर का खेल है जो ऐसा जान लेता है फिर किसको क्यों दु:ख देना । किससे छल-कपट करना, साथ कुछ जाना नहीं, शरीर तक छूट जाना है, फिर काहे की हाय-हाय ।

दो भ्रान्ति में मनुष्य जीता है; एक यह कि वह सदा रहने वाला है, मौत सदा दूसरे को आती है, मुझे थोड़े ही आएगी । दूसरी भ्रान्ति है कि यदि यहां से जाना भी पड़ा तो सब धन-पूंजी साथ जाएगी, इसके कारण उसमें अकड़ आ जाती हैं और जीवन को धन एकत्र-एकत्र करने में लगाए रहता है । इस संदर्भ में एक दृष्टांत देखिए—

राजा भोज के पिता जब मरणासन्न स्थिति में पहुंचे तब भोज अबोध बालक थे । उन्होंने भोज को अपने लघु भ्राता सिंधुराज को सौंपते हुए कहा भोज के पालन-पोषण का जिम्मा अब तुम पर छोड़ता हूँ, तब तक राज्य को भी तुम्ही सम्भालना, जब भोज युवा हो जाए, राज्य उसे सौंप देना" यह कहकर राजा ने शरीर त्याग दिया । कुछ दिनों बाद सिन्धुराज के मन में लोभ जागा, क्यों न भोज को अभी ही समाप्त करवा कर सदा के लिए मैं ही राजा बना रहूँ ।

अपने एक विश्वास-पात्र सेवक को राजा ने कहा, तुम भोज को निर्जन-वन में ले जाकर इसकी गर्दन काट देना तथा बतौर सबूत के इसकी आँखें निकाल कर लाना । राजा का हुक्म था, जंगल में ले जाकर उसने भोज से कहा, तुम्हारे चाचा की आज्ञा से तुम्हें मार रहा हूँ, मरने को तैयार हो जाओ । भोज अपने चाचा को बहुत चाहता था । यह जानकर उसे बड़ी पीड़ा हुई कि राज्य के लिए मुझे चाचा मरवा रहे हैं ।

भोज ने कहा, ठहरो । मैं कुछ पंक्तियां लिख लूं । भोज ने एक पत्ते पर कुछ लिख कर दिया और कहा मुझे मारने के बाद मेरी आँखों के साथ यह पत्र भी चाचा को दे देना ।

पंक्तियों को पढ़कर हत्यारे का स्वयं हाथ रूक गया, उसने भोज को छोड़कर एक शिशु हिरन की आँखें निकाल कर रख लीं और राजा सिन्धुराज को जाकर कहा—"लो ये भोज की आंखें साथ में भोज ने यह पत्र मरने से पूर्व आपके लिए दिया है ।"

पत्र में लिखी पंक्तियों को पढ़कर राजा चौंक पड़ा। जैसे बेहोशी टूट गई रो पड़ा, विलाप करने लगा, पश्चाताप की आग से जलने लगा। उसने कहा ये मैंने क्या पाप कर डाला, भोज। तूने मेरी आंखें खोल दीं, मुझे क्षमा करना-यह कह कर उसने सन्यास की तैयारी कर ली, सेवक ने उसे रोक कर बताया भोज जिन्दा है।

पाठक सोच रहे होंगे ऐसा क्या लिख दिया भोज ने? तो सुनिए—भोज ने भगवान गौतम बुद्ध की इसी कल्याणी वाणी को लिख दिया था, भाव इस प्रकार था—चाचा बड़े-बड़े आए चले गए, पर लगता है आप नहीं जाएंगे, या फिर ये धन-धरती, राज्य आपके साथ जाएगा।

जो जान लेता है कि जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है शाश्वत सत्य है, कभी भी कहीं भी घट सकती है, ऐसे व्यक्ति के अंहकार विसर्जित हो जाते हैं, शत्रु भाव मिट जाते हैं। कल्याण भाव जग जाते हैं। जो सतत् इसका स्मरण रखते हैं उनका जीवन जल में कमलवत् हो जाता है, मन में निर्मलता आती है। कर्म में शुद्धता और भाव में पवित्रता आ जाती है, उसके कलह शान्त हो जाते हैं।

इसके विपरीत जो सोचते हैं, मानते हैं, उनके जीवन में कलह-तनाव-दुःख भरा ही रहता है। ऐसे लोग सदा घमण्ड, लोभ, वासना और क्रोध भरा जीवन जीते हैं, अपने आस-पास अपना नरक तैयार कर लेते हैं।

हम इस संसार में सदा नहीं रहेंगे, ये शरीर मिट ही जाना है जो ऐसा मानते हैं, जानते हैं उनके कलह शान्त हो जाते हैं तथा जो इसके विपरीत मानते हैं ऐसे लोग कलह का जीवन जीते हैं और वे ही अशान्ति के कारण हैं। परोक्ष में ये ही दो भ्रान्तियां अशान्ति की पोषक हैं।O

(शेष पृ. 13 पर)

'संत हृदय जस निर्मल बारी।
बांधे घाट मनोहर चारी ।। (अरण्यकाण्ड)

जहं तहं पिअहिं बिबिध मृग नीरा।
जनु उदार गृह जाचक भीरा ।।

'जरत जंतु जलनिधि जब जाने।' (अनुप्रास)

'निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु,
(उपमा)

'सो सुख सुजसु सुलभ मोहि स्वामी।
सब सिधि तव दरसन अनुगामी ।। (अनुप्रास)

शांत रस—स्थान स्थान पर तुलसीदास ने भगवान राम को 'शान्तं शास्वतम्प्रमेय मनघं' कहा है। लंका जीतकर भी उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं चाहा, केवल अपनी सीता को गृहण किया। लंका जैसी थी वैसी ही विभीषण को दे दी। लंका में प्रवेश तक नहीं किया। इससे पूर्व भी पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए शान्तिपूर्वक राज छोड़कर वन में चले आये।

बालि का वध करके न केवल सुग्रीव की युद्ध में सहायता की बल्कि वह राज्य भी सुग्रीव को दे दिया। सत्य तो यह है कि बालि और रावण जैसे अत्याचारियों से सम्पूर्ण भारत एवं विश्व की शान्ति को खतरा था, इन दोनों अत्याचारियों का वध करके राम ने सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना की।

राजनीति की शिक्षा भी मानस के इतस्तहः मिल ही जाती है यथा—

'सचिव बैद गुरु तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होई बेगिहीं नास ।।
(सुन्दर काण्ड)

नीति : (1) तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला इक अंग। तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग।

(2) जौ आपन चाहै कल्याना, सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना। सो परनारि लिलार गुसाईं तजऊ चौथ के चन्द की नाईं।

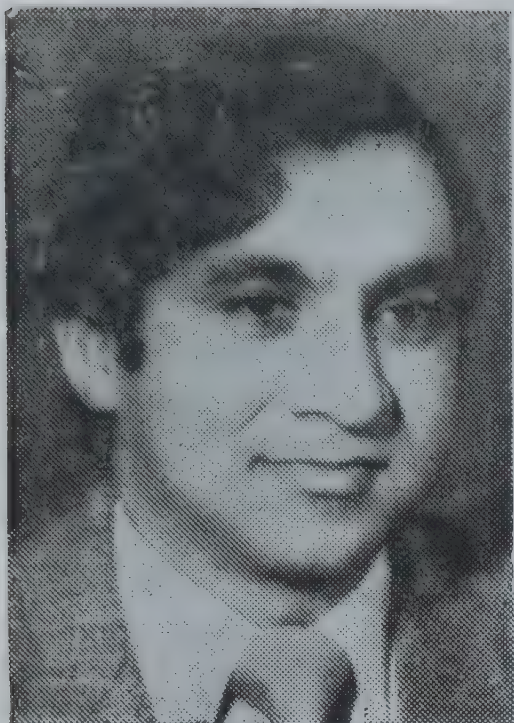
(3) बरू भल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देइ बिधाता। (सुन्दर कांड)

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानस में जीवन की सर्वांगीणता का सांगो-पांग निर्वाह हुआ है। इसमें प्रयुक्त नाम अवश्य हिन्दू हैं किन्तु, यह ग्रन्थ किसी व्यक्ति, व्यक्ति समूह, सम्प्रदाय, राष्ट्र, या धर्म विशेष के लिए नहीं, अपितु, मानवमात्र के लिए सर्वोत्तम जीवनदर्शन का ग्रन्थ है। राम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। वस्तुतः राम चरित मानस समूचे विश्व में दुर्लभ ग्रन्थ है।

राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त के शब्दों में भी श्री राम के विश्वातमा स्वरूप की पुष्टि देखिए :

मैं नहीं स्वर्ग से कोई संदेशा लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

**



रावण में मुखरित : दैत्य-दानव और देव

/\ श्री अरूणेन्द्र कुमार
उप मु. यां. इंजी. (डीजल)

यह आश्चर्यजनक है कि दैत्य, दानव और देव का वंश एक ही है और रावण की उत्पत्ति इसी वंश से है। अतएव यह स्वाभाविक ही है कि उसमें तीनों रूप देखने को मिलते हैं। रावण के व्यक्तित्व की ठीक-ठीक जानकारी आदि कवि वाल्मीकि की रामायण में उपलब्ध है।

रामायण भारत का एक सांस्कृतिक ग्रंथ है, लोगों के मार्गदर्शन के लिए लिखा गया ग्रंथ है। 'सांस्कृतिक' का मतलब क्या ? नाच, गाना, नाटक, सिनेमा आदि को आज सांस्कृतिक कार्यक्रम कहा जाता है। बड़ी व्याप्ति के महान शब्दों को हम क्षुद्र और छोटा करने की मानो प्रतिज्ञा लेकर ही बैठे हैं। 'सांस्कृतिक' शब्द के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। जिस कृति के पीछे स्वार्थ न हो, जो सबके लिए हो, सम्यक हो, उसे सांस्कृतिक कहते हैं। रामायण की इस दिव्यता से प्रभावित हो कर बाद में अठारह संस्कृत रामायणों की रचना हुई। प्राकृत भाषाओं में कितनी होगी, कौन जाने। सभी रामायणों को अच्छी तरह पढ़ना चाहिए, परन्तु सर्वोत्कृष्ट, मूलभूत ऐतिहासिक एवं प्रमाणभूत रामायण तो केवल वाल्मीकि रामायण ही है और हमारी इस चर्चा का विषय भी इसी रामायण पर आधारित है।

भारत का कण-कण राम की अजर-अमर स्मृति से ओतप्रोत है। जब कभी राम का गुणानुवाद होता है, तब रावण का भी स्मरण सहज ही हो जाता है। मानसपटल पर राम की छवि के साथ-साथ रावण की विकराल आकृति भी साकार हो उठती है। राम के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना जागृत होती है जबकि रावण घृणा व अनादर का पात्र बनता है। किसी भी नैतिक सीमा या आदेश को स्वीकार न करने वाला, अनेक दोषों का भागी एवं इतना असहनीय था रावण कि ब्रह्मा को उसका नाश करने के लिए राम जैसे महान व्यक्ति को उद्भूत करना पड़ा। पर यह सब दैवी प्रक्रिया थी या इसके मूल में जगत के सामान्य नियम कार्य कर रहे थे ? इसका उत्तर स्वयं महाकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के उत्तरकांड में वर्णित विवरण से प्राप्त हो जाता है।

उत्तरकांड के अनुसार प्राचीनकाल में लंका दैत्यवंश की नगरी थी। उन दिनों ब्रह्मा के पुत्र मरिचि का उस पर शासन था। मरिचि की तेरह पत्नियाँ थीं। उनमें तीन प्रमुख थीं: दिति, अदिति एवं दनु जिनसे दैत्य, देव और दानव की उत्पत्ति हुई। उन दिनों हेति व प्रेहित नामक दो दैत्य लंका का शासनभार संभाल रहे थे। माली-सुमाली व माल्यवान हेति के पौत्र थे। एक बात विशेष विचारणीय है कि शुरू से ही देवों और दैत्यों के बीच वैरभाव रहता था। दैत्यों को अपने बाहुबल का अभिमान था तो देवों को अपनी बुद्धिमत्ता पर मिथ्याभिमान था। उस समय केस्पियन समुद्र पर बसे दैत्यों का परिवार बहुत ही सुखी, समृद्ध व साधन-संपन्न था। हिरण्यकशिपु उनका राजा था। उसके पास अपार समृद्धि थी, रत्नों का मूल्यवान भंडार था। देवों को यह बात

(शेष 7-8 पर)

भविष्य निधि योजना

△ **बी. पी. तोलानी**
उप मुख्य लेखा अधिकारी
(का. व भं.) अजमेर



1. मनुष्य जब जवान हो जाता है तो जीवनयापन के लिए सेवा या व्यापार के जरिये कमाने की सोचने लगता है। यदि वह सेवा पर आ जाता है तो वह यही नहीं सोचता कि उसको प्रति माह वेतन तथा भत्तों के रूप में कितना मिलेगा, बल्कि यह भी कि उसके वृद्ध और सेवा निवृत्त होने पर और क्या मिलेगा।

2. विभिन्न नियोक्ता अपने कर्मचारियों को सेवा निवृत्ति लाभ के रूप में पेन्शन, सेवा निवृत्ति उपदान, सामूहिक बीमा अथवा एक मुश्त भुगतान जैसे विभिन्न प्रकार के लाभ प्रदान करते हैं।

3. इस सम्बन्ध में सरकार के भी कुछ नियम बनाए हुए हैं, उनमें से एक भविष्य निधि योजना है। इसके अन्तर्गत कुछ नियत प्रतिशत, वेतन के 6 प्रतिशत से 10 प्रतिशत के अन्तराल में, हर माह कर्मचारी के वेतन से कट जाता है तथा उसके भविष्य निधि खाते में जमा कर दिया जाता है।

4. **अभिदान**—भविष्य निधि अधिनियम 1925 द्वारा अधिशासित भविष्य निधि योजना रेलवे में अनिवार्य है। किसी भी कर्मचारी को जिसने एक वर्ष का सेवा काल पूरा कर लिया है, भविष्य निधि में रकम जमा करानी पड़ती है। एक माह के अभिदान की रकम उस माह के उसके वेतन का 1/12 वां भाग होती है।

5. **अभिदाताओं की किस्में**—रेलवे में दो तरह के अभिदाता हैं। पहले वे जो 16-11-1957 से पहले नियुक्त हुए हैं तथा पेन्शन योजना के लिए विकल्प नहीं दिया और दूसरे वे जो इस तारीख के बाद नियुक्त हुए हैं तथा पेन्शन स्कीम द्वारा नियोजित हैं।

6. **सरकारी अंशदान**—वे कर्मचारी जो दिनांक 16-11-57 से पहले नियुक्त हुए हैं और पेन्शन योजना के लिए उन्होंने विकल्प नहीं दिया है, अर्द्ध वर्ष के अन्त में, अर्थात् 31 मार्च व 30 सितम्बर को उनके अभिदान के बराबर सरकारी अंशदान लेने के पात्र हैं। दिनांक 16-11-57 को या उसके बाद जो कर्मचारी नियुक्त हुए हैं और पेन्शन योजना के अन्तर्गत आते हैं उनको ऐसा अंशदान देय नहीं है। दोनों प्रकार के कर्मचारी, तथापि, भविष्य निधि के विशेष अंशदान अथवा मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान लेने के पात्र हैं।

7. **ऐच्छिक अंशदान**—उपर्युक्त बताए हुए अनिवार्य अंशदान के अलावा वित्तीय वर्ष के दौरान किसी भी दर से जो कि केवल पूरे रुपयों में हो और जो दर वर्ष के प्रारम्भ में ही बदली जा सकती है, इस शर्त के साथ कि यह दर सरकार को देय आवश्यक कटौतियों के बाद उसको मिलने वाले वेतन (मंहगाई वेतन रहित) से अधिक नहीं होगी, कर्मचारी अपनी इच्छा से यह अभिदान कर सकता है। इस रकम पर कोई सरकारी अंशदान देय नहीं होता है।

8. **कोर्ट अटैचमेंट से मुक्त**—भविष्य निधि में अनिवार्य जमा राशि किसी भी न्यायालय के आदेश/डिक्री के द्वारा अटैच होने योग्य नहीं है।

9. **आयकर से राहत**—भविष्य निधि में जमा राशि, आयकर एक्ट के अन्तर्गत कर योग्य आय की गणना करते समय, कुछ निश्चित सीमा तक, आय में से घटा दी जाती है।

10. **ब्याज**—सरकार द्वारा निश्चित दर से प्रत्येक वर्ष कर्मचारी के खाते में ब्याज को जमा कर दिया जाता है। 86-87 वर्ष के लिए ब्याज की दर 12 प्रतिशत रखी गई है।

11. **निकासी**—विशेष परिस्थितियों में अभिदाता को सेवाकाल के दौरान अस्थाई/स्थाई निकासी की अनुमति है।

12. **अस्थाई निकासी**—(1) कर्मचारी या उसके किसी परिवार सदस्य या उसके आश्रित सम्बन्धियों के चिकित्सा व्यय, (2) अभिदाता या उसके आश्रित, जो उसी पर आश्रित हों, की उच्च शिक्षा, (3) उसके स्वयं या उसके बच्चों या उस पर आश्रितों के आवश्यक वैवाहिक-व्यय के भुगतान करने हेतु अस्थाई निकासी की अनुमति है, जिसे किश्तों में लौटाना है।

13. **स्थाई निकासी**—स्थाई निकासी की कर्मचारी को अनुमति है यदि कर्मचारी के सेवानिवृत्ति आयु प्राप्त करने में 10 वर्ष शेष हैं अथवा उसने 20 वर्ष का सेवाकाल पूरा कर लिया है।

(1) उचित मकान की अवाप्ति अथवा तामीर के लिए,
(2) मकान-भूमि की अवाप्ति के लिए,
(3) बच्चों के वैवाहिक-व्यय के लिए,
(4) अभिदाता या उसके बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए,
(5) अभिदाता अथवा उस पर आश्रित किसी भी संबंधी के चिकित्सा-व्यय के लिए,

ऐसी निकासी की अनुमति प्रदान की जाती है।

14. **निकासी पर ब्याज की कटौती**—ऐसे मामलों में जहाँ किसी वित्तीय वर्ष में स्थाई निकासी की जाती है, निकाली गई राशि के एक प्रतिशत के बराबर की रकम भविष्य निधि में जमा होने वाले ब्याज से काट ली जाती है।

15. **भविष्य निधि का भुगतान**—सेवा निवृत्ति के समय अथवा सेवा छोड़ने पर अभिदाता के खाते में पड़ी हुई राशि का भुगतान कर दिया जाता है। सेवा काल के दौरान मृत्यु होने पर यह राशि उस के कानूनी वारिस या नामितों को देय हो जाती है।

16. **नामांकन**—मृत्यु के समय उसके भविष्य निधि खाते में पड़ी पूरी या आंशिक रकम को देने के लिए अधिकार प्रदान करने हेतु भविष्य निधि अभिदाता नामांकन कर सकता है। अभिदाता अपने नामांकन में अपनी इच्छानुसार नामितों में रकम को बांट सकता है। नामितों के अधिकार भविष्य निधि एक्ट 1925 में बताए गए हैं।

17. **भविष्य निधि विवरण पत्र**—प्रत्येक वर्ष के खाते बन्द होने के बाद, यथा सम्भव :—

1. वर्ष के प्रारम्भ में अवशेष रकम को,
2. वर्ष में कुल जमा राशि व नामे राशि के योग को,
3. वर्ष के अन्त में जमा की गई ब्याज की राशि को,
4. तथा, वर्ष के अन्त में अवशेष राशि को,

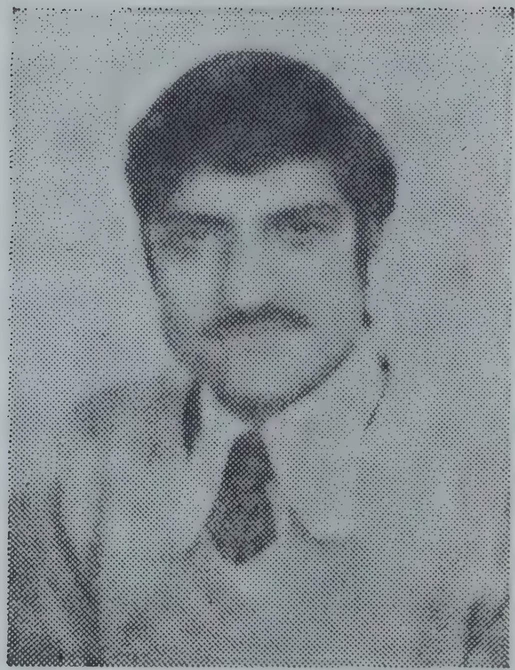
दर्शाते हुए भविष्य निधि विवरण पत्र, लेखा अधिकारी प्रत्येक अभिदाता को भेजता है।

18. प्रत्येक अभिदाता को चाहिए कि इस विवरण पत्र की भली प्रकार जांच कराए और उसमें पाई गई त्रुटियों को, यदि कोई हों तो, तुरन्त ठीक कराएँ।

19. क्योंकि भविष्य निधि की रकम सेवा निवृत्ति के पश्चात काम में लाने के लिए है। इसलिये यह राय दी जाती है कि कर्मचारी जहाँ तक सम्भव हो इसमें से निकासी न करे।

20. रेलवे कर्मचारी पेन्शन, सामूहिक बीमा और दूसरी सुविधाओं के पात्र हैं। इन को किसी दूसरे अवसर पर बताया जाएगा।

एक और प्रदूषण - कम वोल्टेज



△ **विपिन झा**
उप मु. बि. इंजी. (का.)

साधारणतया उपभोक्ता ये अवश्य अनुभव करते होंगे कि अक्सर उनके घरेलू उपकरण जैसे रेफ्रिजरेटर, मिक्सी, पंखे, ग्राइन्डर और रूम कूलर इत्यादि अपनी पूरी उपयोगिता देने से पूर्व ही जलकर खराब हो जाते हैं। इसी प्रकार यह भी देखने में आया होगा कि कम वोल्टेज के कारण ट्यूब लाईट जल नहीं पाती या पंखा पूरी तरह से गति नहीं ले पाता। कई व्यक्तियों का यह अनुभव भी है कि ट्यूब लाईट और बल्ब बार-बार फ्यूज हो जाते हैं।

यदि अन्य कारण जैसे कि घटिया क्वालिटी अथवा बनावट को छोड़ भी दें तो घरेलू उपकरणों के जल जाने व खराब होने का एक प्रमुख कारण वोल्टेज का कम अथवा अधिक होना भी है। इसी प्रकार से उद्योगों में मशीनों आदि की कार्य क्षमता पर भी बेढ़ंगी सप्लाई, वोल्टेज और फ्रीक्वेन्सी का बुरा असर पड़ता है।

1. सही वोल्टेज का मान—

भारतीय मानक संस्थान के अनुसार एक व तीन फेज पर प्रमाणित वोल्टेज क्रमश: 240 और 415 वोल्ट है। भारतीय विद्युत धारा नियम 56 के अनुसार सप्लाई कम्पनी को वोल्टेज, प्रमाणित वोल्टेज (240 वोल्ट/415 वोल्ट) से 16 प्रतिशत के अन्दर ही रखने होते हैं। इसके अनुसार प्रत्येक उपकरण प्रमाणित स्थिर वोल्टेज 240±6 प्रतिशत पर कार्य करने के आशय से तैयार किये जाते हैं अतः विद्युत बोर्ड की सप्लाई कन्जूमर को 225 से कम और 255 वोल्ट से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार सप्लाई फ्रीक्वेन्सी की प्रमाणित 50 साइकल प्रति सैकिण्ड से ± 3% के अन्दर रखनी होती है।

2. कम वोल्टेज का प्रभाव —

(अ) घरेलु सामान पर :

इसलिये यदि विद्युत वितरण ठीक न होने के कारण से वोल्टेज 225 से हमेशा कम ही रहेगा तो घरेलु उपकरण जैसे पंखा, रूम कूलर, मिक्सी, ग्राइन्डर, एयर कण्डीश्नर इत्यादि अवश्य जलेंगे, क्योंकि उपकरण अधिक करेण्ट लेगा जिससे अधिक गर्मी आने के कारण उसकी इन्सूलेशन खराब हो जायेगी। कम वोल्टेज के ही कारण अक्सर ट्यूब लाईट नहीं जल पाती।

(ब) उद्योगों पर प्रभाव :

उद्योग धन्धों में उपकरणों के कार्य करने का समय घरेलू उपकरणों के मुकाबले में कहीं अधिक होता है। अत: वोल्टेज का उतार-चढ़ाव यदि अधिक समय तक रहता है तो इसके गम्भीर प्रभाव होते हैं और मूल्यवान मोटरें जल जाती हैं और परिणाम स्वरूप उत्पादकता में कमी आती है।

अधिकतर कम वोल्टेज के साथ-साथ कम फ्रीक्वेन्सी का अनुभव किया गया है। कम फ्रीक्वेन्सी से चुम्बकीय सर्किट में फ्लैक्स का घनत्व (Density) अधिक हो जाता है और चुम्बकत्व करेन्ट बढ़ता है। जिसकी वजह से और

गर्मी पैदा होती है, जो उपकरणों की क्षमता से कहीं अधिक होती है जिससे उपकरण खराब हो जाते हैं।

3. अधिक वोल्टेज का प्रभाव—

यदि वोल्टेज प्रमाणित वोल्टेज से बहुत अधिक हो जाते हैं तो उपकरण के इन्सूलेशन पर दबाव पड़ता है और वो खराब हो सकते हैं। इसी प्रकार से बल्ब का फिलामैंट भी अधिक वोल्टेज के कारण अधिक करेन्ट बहने से फ्यूज हो सकता है।

4. कम वोल्टेज होने के कारण—

विद्युत बोर्ड कन्जूमर को + 6% की प्रमाणित सीमा के अन्दर वोल्टेज देने के लिए उत्तरदायी है। उद्योगीकरण व घरेलु उपकरणों के बढ़ते हुए प्रयोग को देखते हुए सप्लायर को चाहिए कि वह समय से पूर्व प्रयत्न करे और नई लाईनें, केबिल बिछाये व नये ट्रांसफारमर लगाये। विद्युत सप्लायर को पर्याप्त धन लगा कर अपनी विद्युत वितरण प्रणाली को सही रूप में रखना चाहिये तथा समय से पूर्व भविष्य में आने वाले विद्युत लोड के लिये योजना बनानी चाहिये।

इसी के साथ-साथ कन्जूमर भी कम वोल्टेज के लिए उत्तरदायी है। सप्लाई लेने से पूर्व और नये उपकरणों को खरीदने व लगाने से काफी समय पहले उसे सप्लायर को अपने उपकरणों और मशीनों के विषय में सूचित करना चाहिये। जिससे विद्युत वितरण प्रणाली में योजनाबद्ध तरीके से वृद्धि की जा सके।

पिछले कुछ वर्षों में लाखों टी. वी. सेट्स, पंखे, रूम कूलर इत्यादि बिके और घरों में आये। इसी प्रकार दूसरी संस्थायें तथा उद्योगों ने भी विद्युत लोड लगातार बढ़ाया है। क्या हम सोच सकते हैं कि किसी भी कन्जूमर ने विद्युत सप्लायर को अपने विद्युत उपकरणों में वृद्धि के विषय में कभी सूचित किया होगा। इस तरह यदि प्रत्येक कन्जूमर अपनी स्थापित विद्युत लोड में बिना विद्युत बोर्ड को सूचित किये कुछ सौ वाट्स की वृद्धि करता जायेगा तो विद्युत बोर्ड को वोल्टेज सही रखने में बेहद मुश्किल होगी और कम वोल्टेज की समस्या बनी रहेगी।

वोल्टेज स्टेबलाईजर का प्रयोग—

बड़े पैमाने पर होने वाले वोल्टेज के घटाव-बढ़ाव को सही करने के लिये और अत्यधिक मूल्यवान घरेलू उपकरणों को जलने से बचाने के लिये पूरे देश में अब यह रीति-सी हो गयी है कि वोल्टेज स्टेबलाईजर खरीद कर लगाया जाये जिससे कि प्रत्येक बहुमूल्य उपकरण जैसे रेफ्रीजरेटर, एयर कण्डीश्नर, टी. वी. इत्यादि सुरक्षित रहें।

एक छोटा स्टेबलाईजर तकरीबन 400/- से 1000/- रुपये तक के मूल्य का होता है जो कि उपकरण की क्षमता के ऊपर निर्भर करता है। सामान्यत: स्टेबलाईजर 180 से 260 के बीच की वोल्टेज को सही करता है।

यदि विद्युत बोर्ड अपना कार्य व्यवस्थित रूप से करे तथा सही वोल्टेज रखे तो प्रत्येक कन्जूमर का वोल्टेज स्टेबलाईजर खरीदने का बेशुमार बेकार का खर्च बचाया जा सकता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि स्टेबलाईजरों का कम से कम अनुमानित खर्चा जो किसी बम्बई जैसी नगरी के कन्जूमर वहन कर रहे 80 से 200 करोड़ रुपये तक होगा।

यदि विद्युत बोर्ड किसी भी कारणवश नियमानुसार सही वोल्टेज नहीं रख सकते तो अब समय आ गया है कि सरकार इसमें दखल दे और बोर्डों पर सही वोल्टेज रखने के लिये दबाव डाले अन्यथा इसके विकल्प के रूप में भारतीय मानक को तदनुरूप बदला जाय जिससे उपकरण बनाने वालों को निर्देश दिये जा सकें कि वे उपकरणों को कम वोल्टेज पर भी सुचारू रूप से कार्य कर सकने योग्य बना सकें। कन्जूमर को इस तरह के प्रदूषण को दूर करने के लिए चेतना जगनी होगी।

उपसंहार :

1. यह विद्युत बोर्ड का उत्तरदायित्व है कि वह बिजली की वोल्टेज सही रखें। सरकार को चाहिये कि वह उन पर दबाव डाले जिससे वे आवश्यक कदम उठायें और खर्च करके अपने विद्युत वितरण प्रणाली में सही रूप से वृद्धि करें।

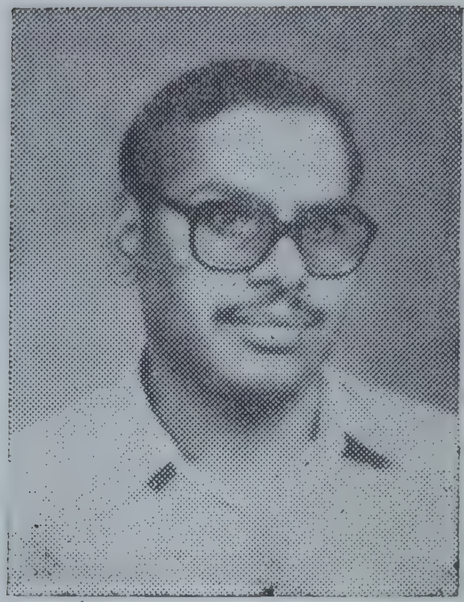
2. कन्जूमर्स की भी बराबर जिम्मेदारी है कि वे विद्युत सप्लायर को अपने विद्युत लोड की वृद्धि बतायें जिससे कि बोर्ड भविष्य की माँग के लिये योजना बना सके।

3. प्रत्येक कन्जूमर के द्वारा अपने-अपने वोल्टेज स्टेबलाईजर का प्रयोग असाधारण खर्चीला तरीका है और विद्युत बोर्ड को चाहिए कि सही रूप से धन लगा कर कन्जूमर के व्यर्थ के खर्चे को बचायें।

शाँत

● एम. राय

उप भंडार नियंत्रक



महान न्यूटन का
गति का तीसरा नियम कहता है—
"हर क्रिया की होती समान प्रतिक्रिया"
तब निश्चय ही,
शाँति पाने के लिये
हमें करनी होगी 'युद्ध-क्रिया'
सच तो है,
इतिहास भी गवाह है
कि जब भी हुआ है कोई महायुद्ध
तब-तब छाई है शाँति,
निविड़ शाँति
तात्कालिक ही सही, पर
मृत्यु को प्राप्त जन मानस को "चिर शांति"
तो आओ चलो
शाँति की तलाश में
हम रचा लें एक 'तारक-युद्ध'
अन्यथा भी तो 'आसन्न युद्ध' की आशंका से
हमारा मन अभी भी,
सदैव ही अशांत है।
ऊपरी तौर पर दिखते
भले ही शाँत हैं। □□

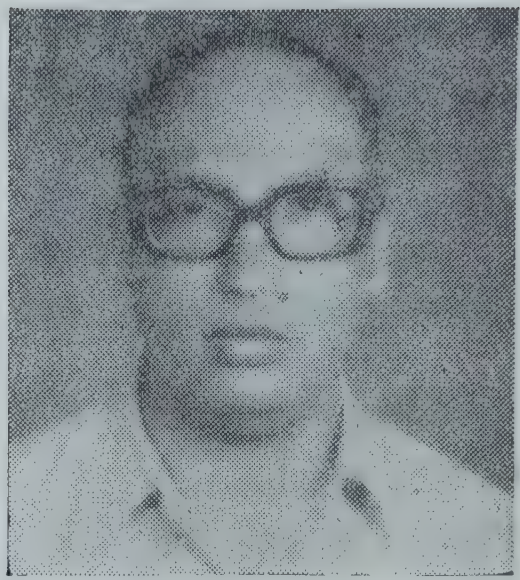
ऋषि वाणी—**क्रोध की पहचान**

उत्तमे क्षण कोपस्यात्, मध्यमे घटिका द्वयम् ।
अधमेस्या दहोरात्रम्, पापिष्ठे मरणांतकम् ।।

वैर अवैर से शान्त होता है न कि वैर से

● बी. आर. मोंगा

उप मु. यांत्रिक इंजी. (आधुनिकीकरण—निर्माण)



इतिहास इस बात का साक्षी है कि वैर अवैर से शान्त होता है न कि वैर से। उदाहरणार्थ—

एक पति की दो पत्नियाँ थीं—सौतिया डाह से ग्रस्त। अनेक जन्मों तक प्रतिशोध चलता रहा। भगवान बुद्ध के काल में दोनों का जन्म हुआ—यक्षिणी और कुल कन्या के रूप में। प्रतिद्वन्द चलता रहा और यक्षिणी, कुलकन्या के बच्चों को हड़पती रही। तीसरी बार कुलकन्या ने एक बालक को उसकी मां के घर जन्म दिया और जब बालक थोड़ा बड़ा हुआ तो उसे लेकर अपने ससुराल जाते समय, कुलकन्या विश्राम करने हेतु जेतवन महाविहार के निकट बैठकर जैसे ही बच्चे को दूध पिलाने लगी—यक्षिणी विकराल रूप धार कर बच्चे को हड़पने के लिए आगे बढ़ी। ऐसा देख कुलकन्या भागी और सौभाग्य से महात्मा बुद्ध के पास पहुँची जो कि वहीं समीप में ठहरे थे। उनके चरणों में पुत्र को रख कर अपनी करुणा-गाथा कहकर पुत्र का जीवन दान मांगने लगी।

भगवान बुद्ध ने यक्षिणी को बुलाकर समझाया और कहा—"तू ऐसा क्यों कर रही है? यदि तुम दोनों मेरे सन्मुख न आतीं तो यह शत्रुता जन्मों—जन्मों चलती रहती। क्यों वैर के प्रति वैर रखती हो? वैर, वैर से शान्त नहीं होता, शान्त होता है—अवैर से"। भगवान के उपदेश सुनकर यक्षिणी शान्त हुई। उसे सही मार्ग का दर्शन हुआ और वह भगवान के कहने से कुलकन्या के घर गई। वहां पर कुलकन्या ने यक्षिणी का खूब स्वागत-सत्कार किया। इसके उपरान्त जन्मों-जन्मों का प्रतिशोध खत्म हुआ।

महावीर ने कहा है, मेरी मित्रता सबसे है, वैर किसी से नहीं। महावीर को बहुत सताया गया लेकिन महावीर ने यही कहा—मेरा कोई शत्रु नहीं—उनका हिसाब वे ही जाने, मैं तो उन्हें भी मित्र मानता हूँ। उनका कहना था : शत्रुता से शत्रुता समाप्त नहीं होती, क्रोध से क्रोध शान्त नहीं होता, घृणा से घृणा नहीं मिटती, अपितु बढ़ती है।

वेद में मन्त्र है "त्रिस्यां चक्षुषा समीक्षा महिं सर्वे भूतानी"—यानि सारे जगत को मैं मित्र दृष्टि से देखूं। सब प्राणी मेरे मित्र हैं। वेदों का कहना है जो तुमसे द्वेष भाव रखे, तुम उसके प्रति भी मित्र भाव बनाये रहो।

स्वामी दयानन्द ने, अपने नाम स्वरूप, दया का जो उदाहरण दिया है, अमिट है। उन्होंने उस व्यक्ति को, जिसने उन्हें जहर देकर मारने की कोशिश की,

रुपये देकर नेपाल भगा दिया और उसके प्राणों की रक्षा की। ईसा मसीह को जिन्होंने सूली पर चढ़ा दिया, उनके प्रति, उनके अन्तिम वचन थे—हे भगवान इन्हें क्षमा करना, ये नहीं जानते, ये क्या कर रहे हैं ? वैर रखने वालों के प्रति क्षमा भाव। जीसस जानते थे कि वैर से वैर समाप्त नहीं होता।

सन्त कबीर का कहना है—जो तोकू कांटा बोए, वाको बोय तू फूल, तोकू फूल के फूल है, वाको हैं त्रिशूल।

हज़रत मोहम्मद साहब ने सबके प्रति शान्ति भाव रखा और मित्रता बनाये रखने के लिए कहा। इस्लाम का अर्थ है, शान्ति के लिए शान्ति में प्रवेश। शान्ति मेरा पेगाम, यही मोहम्मद साहब का जगत को संदेश रहा।

ऐसा ही उपदेश सिखों के धर्म गुरुओं ने दिया। गुरु ग्रन्थ साहब में लिखा है "जो तैं मारन मुक्कियां तिनां न मारी घुम्म। घर तिनां के जाईके पैर तिनां दे चुम्म"। जिसका अर्थ है—जो तुमको मुक्के मारे उसको घूसे नहीं मारना। अपितु उसके घर जाकर उसके पैर चूमना।

सभी धर्मों का एक ही सन्देश रहा है कि वैर अवैर से शान्त होता है न कि वैर से।

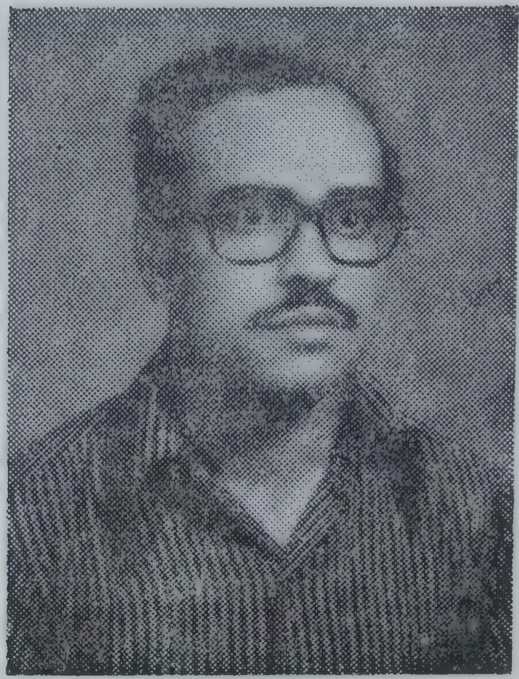
गांधी जी का अहिंसा का सन्देश भी इसी बात का द्योतक है। इकबाल ने ठीक ही लिखा है—

"मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना,
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।"

शेरः— वहंगो (हाथी) अजदहाओं (अजगर)
शेर नर मारा— तो— क्या मारा.
नफ्से अमारा (मन) को गर
मारा-तो-बड़े मूंजी को मारा।

□□

अशान्ति का निदान और उपचार



● मधुसूदन शर्मा

उप. मु. यां. इंजी. (म. एवं सं.)

सारे विश्व में अशान्ति, असन्तोष, भय–आतंक व असुरक्षा का भाव व्याप्त है। विकसित, विकासशील व अविकसित सभी राष्ट्र इस भय-भाव से भयभीत हैं। सभी को खतरा साफ-साफ अहसास हो रहा है। अपने–अपने भय को छुपाने की चेष्टा में एक दूसरे को भयभीत बनाए रखने का कुचक्र चलाए जा रहे हैं। विनाशक सामग्री इतनी अधिक बमों, अणु बमों के रूप में तैयार है कि आठ बार सारी पृथ्वी को प्राणी शून्य बनाया जा सकता है। लड़ाई के लिए पृथ्वी काफी नहीं है, इसलिए अन्तरिक्ष को अखाड़ा बनाने के साधन भी तैयार हैं। इस कदर इन सब पर दौलत खर्च की जा रही है कि जिसका कोई हिसाब नहीं। ये सब पैसा यदि सुख-शान्ति से रहने पर खर्च किया जाये तो सारी दुनिया में खुश–हाली हो सकती है। कोई भुखमरी-अकाल-अभाव के कारण मौत के मुंह में नहीं जा सकता। इसी अशान्त माहौल को बदलने के लिए एक प्रयास इस 1986 के वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष के रूप में मनाने का है। इसी हेतु ' वाणी-विलास'' का यह विशेषांक भी एक लघु किन्तु उदात्त भाव लिए सहयोग शान्ति प्रयास हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। आइये ! इस सन्दर्भ में विचार करें।

वनस्पतियां शान्त हैं, पशु-पक्षी शान्त हैं, द्योलोक शान्त हैं, सारी प्रकृति शान्त है। अशान्त है तो यह अपने आपको परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति कहने वाला मनुष्य अशान्त है। इसने ईजाद की अशान्ति, सारा वातावरण अशान्त कर दिया है। व्यक्ति की अशान्ति के जो कारण हैं, वृहद्‌रूप में विश्व की अशान्ति के भी यही कारण हैं।

अशान्ति के कारण क्या हैं ? थोड़ी देर को छोड़ दे दुनिया की अशान्ति को। परिवार, समाज राष्ट्र और विश्व आखिर है क्या ? व्यक्ति समाज के जोड़ का नाम ही तो हैं। अतः व्यक्ति महत्वपूर्ण इकाई है विश्व की। मनुष्य शान्त हो जाए तो राष्ट्र-अन्तर्राष्ट्र भी शान्त हो सकता है। क्योंकि विश्व रंगमंच पर भी लोभ-अहंकार के नगाड़ों के शोर में शान्ति की आवाज कोई नहीं सुन पा रहा है। साम्राज्यवाद [शक्ति संतुलन] यानी सर्वोपरि होने का लोभ अथवा अहंकार ही शान्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। अशान्त व्यक्ति ही अशान्ति फैलाता है। बड़े-बड़े राष्ट्राध्यक्ष भी न केवल व्यक्ति हैं अपितु अशान्त व्यक्ति हैं। इसलिए बात को ठीक से समझने के लिए व्यक्ति पर विचार करना अधिक उपयुक्त है।

मनुष्य की अशान्ति का प्रमुख कारण है- पाप का बाप लोभ। लोभवश मनुष्य चैन–सुख को बैचेनी और

दु:ख में बदल लेता है। जैसे एक सीमित मात्रा में घी–दूध सुख शक्ति प्रदान करता है। लेकिन स्वाद के लोभ-वश अथवा मुफ्त का माल समझकर अधिक खा लें तो दु:खदायक हो जायेगा। लोभ चाहे पद का हो, धन का हो, जन का हो, चाहे यश का हो, मानसिक शान्ति को छीन ही लेता है। इसलिए संतोष को परम धन माना गया है। "जब आए संतोष धन सब धन धूरि समान।"

लोभ से बचने का उपाय क्या है? दानशीलता, अपरिगृह। अपनी आवश्यकता से अधिक की कामना हमें दु:ख में, बैचेनी में ले जाती है। मनुष्य की आवश्यकता तो थोड़ी सी है। इसके आगे आवश्यकता इच्छा का रूप धर लेती है और इच्छाएं हैं– अनन्त, असीम। ये होना चाहिए वह होना चाहिए, चाहिए–चाहिए की इस दौड़ में आदमी धन के पीछे भागता है। धन पा लेता है: मानसिक शान्ति खो बैठता है। अमरीका बड़ा धनी देश है और मानसिक रूप से विक्षिप्त (पागल) लोग भी सबसे ज्यादा वहीं हैं। वहीं अधिक हत्यायें, आत्महत्याएं भी होती हैं। ऐसा क्यों? लोभ और संग्रह की अन्धी दौड़ जिस-जिस में भी होगी वह शान्त रह नहीं सकता। बुद्ध, महावीर, ईसा के चित्रों को देखें, कितने शान्त हैं। जब-जब भी हम अशान्त होते हैं अपने चेहरे को भी आईने में देख लें। लोभ से अहंकार आता है, उसमें जब कोई बाधा आती है तो क्रोध आता है, क्रोध बुद्धि का नाश करता है और उससे उत्पन्न होती है, अशान्ति।

सब कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में पर
क्या गजब है होता नहीं है आदमी इंन्सा।

व्यक्ति बालक के रूप में आता है कितना शान्त–निष्पाप-निर्मल, पवित्र। फिर कुछ सीखता-समझता है। लोभ जागता है, अहंकार बढ़ता है, क्रोध उग्र होता है और परिणाम होता है अशान्त–दिल–दिमाग और उससे भी जो आचरण आयेगा दूसरों को भी अशान्त ही करेगा बस समझो सागर की लहर आरंभ हो गई बहुत दूर तक यह लहर यात्रा करेगी।

वास्तविक सुख आन्तरिक शाँति में हैं और शान्ति मन की विकार-विहीनता में है, मन की निर्मलता में है। शान्ति कहीं बाहर दुकान पर नहीं मिलेगी। शान्ति का स्थान तो पवित्र चित्त और स्वस्थ्य मस्तिष्क में है। अपने साफ मन से मस्तिष्क से जो आचरण आता है उसी का नाम धर्म है, शुभ कर्म है, सदाचार है, चरित्र है। विकृत मन से जो भी आयेगा वह अशान्ति का कारण होगा ही।

प्रकृति कार्य कारण नियम से चलती है। वह कोई देश, जाति, धर्म का लिहाज नहीं करती। ऐसा-ऐसा करेंगे तो ऐसा-ऐसा परिणाम आयेगा, ऐसा-ऐसा नहीं करेंगे तो ऐसा-ऐसा परिणाम नहीं आयेगा।

हिन्दु हो, बौद्ध हो, मुस्लिम हो या जैन।
जब-जब मन मैला करे, तब तब हो बैचेन॥

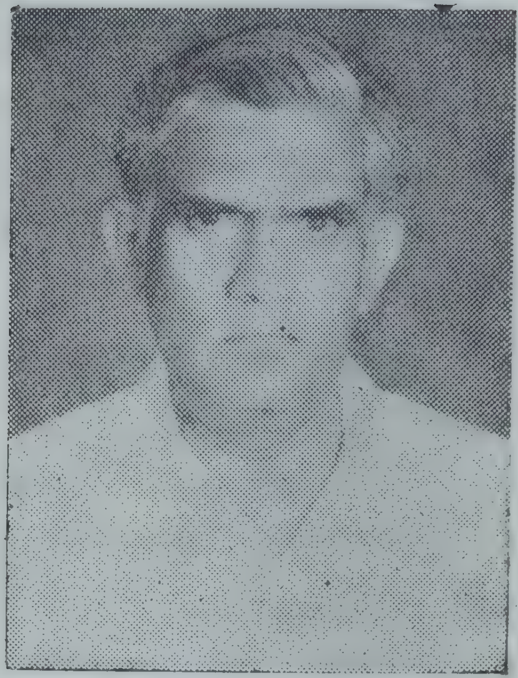
संसार के सारे झगड़े-फसाद की जड़ है विकृत मन और दूषित विचार। मन को कैसे निर्मल कर लें? विचार को कैसे शुद्ध–सात्विक कर लें? इसके अनेक उपाय समय-समय पर सन्तों–धर्म प्रवर्तकों ने बताए हैं। जिसको जो जच जाये, उसी के अनुसार साधन-रत हो ले। इससे व्यक्ति के निजी जीवन में तो शान्ति आयेगी ही, वह अन्यों के लिये भी शान्ति सहायक कार्य करेगा। उससे सत्कर्म होंगे। सत्कर्म समाज में, राष्ट्र में शान्ति की लहर प्रवाहित करेंगे। इसी में व्यक्ति के लिए समाज, राष्ट्र और विश्व की शान्ति निहित है। इसी बीज से विकसित होगा शान्ति का वट-वृक्ष जिसकी शीतल छांव में सब स्नेह से संगठित होकर सुख शान्ति में रह सकेंगे।

हमको तो मोहब्बत है, हर एहले गुलिस्ता से
गुलची का जो दुश्मन हो, गुलशन से निकल जाए।

एक दिव्य नारी ?

● निरंजनलाल तिवारी

उप मु. यां. इंजी. (कैरिज)



हममें से कई लोग आर्य सम्राट दशरथ के भव्य व्यक्तित्व से जितने अपरिचित हैं उससे कहीं अधिक कैकेयी के महामहीमामयी स्वरूप से भी अनभिज्ञ हैं। मानव का यह स्वभाव है कि जब वह किसी से स्नेह करता है तो वह उसके गुणों को बटोरता है और जब किसी से रुष्ट होता है तो उसके गुणों पर भी कालिख पोत देता है। उसकी अच्छाई के बारे में जानने की जिज्ञासा ही समाप्त कर देता है। वैसे भी मानव-मन ही कुछ ऐसा है कि उसे परछिद्रान्वेषण एवं परनिन्दा में बहुत आनन्द आता है।

कैकेयी के जीवन में यही एक मात्र दाग नहीं होता तो आज उसकी ख्याति विश्व की सभी वीरांगनाओं में अव्वल होती। "सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ। हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ" की उक्ति किसी व्यक्ति विशेष के जीवन में चरितार्थ हो या न हो किंतु कैकेयी के जीवन में अक्षरशः घटित हुई है। कैकेयी के महामहिमामयी जीवन की निम्नांकित झलक से आप भी मेरी तरह इस तथ्य के प्रति श्रद्धावान अवश्य हो जायेंगे कि राम के वन-गमन में कीर्ति-पताका कैकेयी का कोई दोष नहीं हो सकता।

तो लीजिए, कैकेयी का व्यक्तित्व आपके मनोविश्लेषण के लिए प्रस्तुत है:-

आर्य-संस्कृति ने आर्यावर्त के रूप में अपनी भौगोलिक परिधि का निर्माण कर लिया था। देवासुर-संग्रामों की परम्परा अपने निर्णय के निकट पहुंच रही थी। उत्तर में पांचाल प्रजापति दिवोदास के पराक्रम से आर्य-सभ्यता को निर्विघ्न उर्वरता प्राप्त हो गयी थी। उत्तर कौशल में सूर्यवंशी राजा दशरथ राज्य करते थे और शौर्य एवं रणकौशल के लिए विख्यात थे।

किंतु दक्षिणांचल में आर्य प्रतिरोधी संस्कृतियों के सुदृढ़ गढ़ थे। दैत्यवंश और दानवों के भी शक्तिशाली राज्य थे। दानवेन्द्र वचिन के आक्रमणों से आर्यकुल सभीत रहता था। लंका में सप्तद्वीप सम्राट रावण की अजेय सत्ता थी। आर्यावर्त को पराभूत करने के लिए वह दण्डकारण्य तक चला आया था। किन्तु इन सब में प्रबल प्रतिरोधी था-वैजयन्ती का असुर सम्राट शम्बर। मन्दोदरी की बड़ी बहन माया का उससे विवाह हुआ था। बलवान वह इतना था कि एक बार रावण को भी उसने बाँधकर अंधे कुएं में डाल दिया था।

शम्बर आर्यावर्त पर लगातार आक्रमण कर रहा था। उसके आतंक से सारा आर्यावर्त कांप उठा था।

दिवोदास ने मुनि अगस्त्य की प्रेरणा से इस राष्ट्रीय संकट को परखा और अनार्यो से त्रस्त पराजित राजाओं का एक संयुक्त मोर्चा बनाया। देवराज इन्द्र के परामर्श से उन्होंने अयोध्या नरेश दशरथ को भी सहायतार्थ आमंत्रित किया। आर्यवंश के जीवन मरण का प्रश्न था।

महाराज दशरथ ने अपनी चतुरंगिनी सजायी। अपने कुल पुरुष इक्षवाकु का छत्र धारण कर अपने दादा रघु का वह खड़पग कमर में बांधा, जिससे उन्होंने दिग्विजय किया था। वीरवेश में सुसज्जित वे राजमहर्षियों से विदा लेकर अन्तःपुर में पहुँचे, तो वहां सैन्य वेश में सजी कैकेयी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। महाराज अपलक उसे देखते रहे। प्रमोद के साथ भय का भी मन में संचार हुआ। कैकेयी की हठ से वे परिचित थे। कहीं वह युद्ध में चलने का आग्रह न कर बैठे। कैकेयी ने महाराज मान्धाता का विश्वविजयी धनुष महाराज के कन्धे पर टांगा और स्वयं के शिरस्त्राण को कसते हुए बोली–चलिए, शीघ्रता कीजिए देव। पुरोहित वासदेव स्वस्त्ययन के लिए हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दशरथ ने प्रेमानुनय के साथ कहा–आर्ये! यह हठ का समय नहीं है। मानिनी का मानस्थल प्रेमागंण ही होना चाहिए, रणागंण नहीं। यह वीर बेश उतारो और रघुकुल की वधू की शृंगार-सज्जा में रणपूजा की विधि सम्पन्न करो।

सुमन्द हास्य के बीच भ्रू-परिचालन करते हुए कैकेयी बोली आर्येन्द्र। क्या रघुकुल में आर्यवधु का सम्मान अन्तःपुर तक ही है, उससे बाहर नहीं। मेरे पितृदेश में तो ऐसा नहीं है। मैं तो अपने पिता के साथ युद्ध में भी जाती थी।

दशरथ ने उसे निरुत्साहित करने के लिए विविध प्रयत्न किए, किन्तु कैकेयी तो वज्रसंकल्पा थी। नहीं मानी। अपने आग्रह की पुष्टि में कहने लगी–मानवेन्द्र, आर्यनारी प्राचीनकाल में पति के साथ युद्ध में जाती थी–देव–पत्नी विशपला ने देव दानव युद्ध में पति के साथ अपने रणकौशल का परिचय दिया था। स्वयं अश्विनीकुमार उसके शौर्य के साक्षी हैं। —मैंने निर्णय कर लिया है, मैं भी आपके साथ युद्ध में चलूंगी।

अब दशरथ के सम्मुख कोई विकल्प नहीं था। कैकेयी के साथ अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए वे दण्डकारण्य के निकट गिरिव्रज में पहुँचे जहाँ पांचाल-नरेश दिवोदास अपनी अजेय वाहिनी के साथ पड़ाव डाले हुए थे।

असुरेन्द्र शम्बर की सेना आंधी प्रताड़ित मेघ-माला की भांति आर्यावर्त की ओर बढ़ रही थी। उसने अर्द्ध चन्द्र व्यूह बनाकर सिंहदष्ट्र को दक्षिण भाग, धूम्रकेतु को बामभाग और प्रकम्पन को मध्यभाग का सेनाध्यक्ष बनाया। देव-आर्य सेना के संचालक आर्य सम्राट दशरथ थे। उनके एक ओर सहस्त्रायुमुत शतानिक, दूसरी ओर विक्रसदंष्ट्र गन्धर्व तथा पीछे स्वयं दिवोदास थे।

शंख बज उठे। सर्प नकुल की तरह दोनों सेनाएं परस्पर युद्ध करने लगी। घमासान युद्ध छिड़ गया। बाण वर्षा स आकाश छा गया। घोड़ों की टापों से धूल चारों दिशाओं में ऐसी गहरी छा गयी कि दोपहर भी संध्या लगने लगी। महाराज दशरथ की घनघोर बाण बर्षा ने असुर सेना को व्याकुल कर दिया। अपनी सेना को विचलित देख शम्बर बाज की तरह देवसेना पर झपटा।

देव सेना की यह दुर्गति देख दशरथ ने शम्बर को ललकारा। उनके पराक्रम से असुरों में भगदड़ मच गयी। वे सिंह की भाँति असुर व्यूह में घुस गये। असुरों के साथ महारथियों ने उन्हें घेर लिया और उनके रोम-रोम को बाणों से छेद दिया। पार्श्व से पति को इस प्रकार विवश देख कैकेयी सिंहनी की तरह आगे बढ़ी और उन सात महारथियों से अकेले युद्ध करने लगी। दायें हाथ से खड्ग चलाते हुए उसने बायें हाथ से दशरथ को उठाया और उन्हें रथ में बैठाकर वह शत्रु सेना को विदीर्ण करने लगी।

मूर्च्छित आर्येन्द्र को प्राप्त करने के इस अलभ्य अवसर को असुर खोना नहीं चाहते थे। ग्यारह यूथपति

कैकेयी पर झपटे और बांयी ओर से शम्बर ने उसे बाण वर्षा से आच्छन्न कर दिया। किन्तु कैकेयी के सामने उनकी एक न चली। पहर भर तक कैकेयी प्रचंड युद्ध करती रही। इस बीच दिवोदास शम्बर तक बढ़ आए और उन्होंने उसे धराशायी कर दिया। शम्बर के मरते ही असुरों ने हथियार डाल दिये। कैकेयी ने विजय शंख फूंका और देव आर्य सेना के जय जयकार के बीच मूर्च्छित दशरथ को लेकर वह अयोध्या लौट आयी।

इतना ही नहीं, कैकेयी का स्वभाव भी उदात्त था। राम के प्रति उसका प्यार कौशल्या से कम नहीं था। चाहे रामायण हो या रामचरित मानस, एक अपराध को छोड़कर सर्वत्र उसके देव-दुर्लभ सौन्दर्य, शौर्य और गुणों का उल्लेख है। इस एक अपराध के लिए भी सभी जगह यही लिखा है कि जिस प्रकार कोई कम्प्यूटर में कोई अपशब्द भर दे तो लोग कम्प्यूटर को दोषी नहीं कहेंगे, उसे फीड करने वाले को ही दोषी कहेंगे, उसी प्रकार कैकेयी के प्रकरण में भी कैकेयी दोषी नहीं थी, स्वार्थी देव समाज का षड़यन्त्र था; राम वन-गमन के अलावा देवों की रक्षा का कोई उपाय ही नहीं था और इस कारण ही मां सरस्वती ने दासी मन्थरा के माध्यम से कैकेयी से यंत्रवत वह सब कराया जो वह अपनी साधारण स्थिति में कभी नहीं करती।

अजस पिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि।

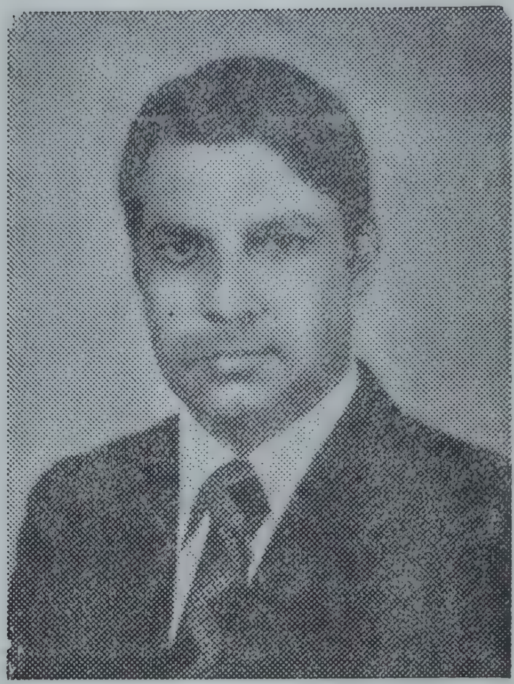
यह सब जानकार भी यदि कोई कैकेयी को दोषी कहे, तो उसे आप क्या कहेंगे? वस्तुतः कैकेयी का व्यक्तित्व उत्कृष्ट था। वह एक दिव्य नारी थी। □□

ए देखने वालों, मुझे यूँ हँस हँस के न देखो,
वरना तकदीर कहीं तुम्हें भी मुझसा न बना दे।

योरोप के विचारक एडवर्ड बर्क और पादरी

● वी. एन. जैतली

मुख्यालय राजभाषा अधिकारी एवं
महाप्रबन्धक के सचिव



एडवर्ड बर्क और पादरी के प्रसंग की पूर्व पीठिका में यह जान लेना जरुरी है कि धार्मिक किसे कहते हैं ? धार्मिक का क्या अर्थ लें ? पूजा-पाठ, प्रार्थना, कीर्तन-भजन, जप-तप आदि करने वाला ? नहीं। धर्म कहते हैं-शाश्वत नियम को, जो इस कार्य-कारण नियम को समझकर उसके अनुकूल जीवन जीये, वह है धार्मिक। ऐसे धार्मिक-उपासक के कर्म पुण्य होंगे ही। मरकर वह तुषित देवलोक को जाता है। जहां अशान्ति-असंतोष नहीं है, ऐसे दिव्य लोक में जाता है। दिव्य लोक कोई भौगोलिक स्थान नहीं है, अपितु, सब कुछ यहीं है। वह सब हमारी मनोदशा/चित्तवृत्ति की स्थितियां हैं जो इसी जगत से संबंधित हैं। परलोक इसी जगत का विस्तार है एक ही नदी के दो किनारे हैं. एक ही डोर के दो छोर हैं-जैसे वर्तमान ही भूत हो जाता है अथवा भविष्य वर्तमान हो जाता है। बीज वृक्ष बन जाता है। इसी तरह यह लोक ही परलोक बन जाता है। स्वर्ग-नर्क भेजने वाला कोई नहीं है। हमारे कर्म ही हमारे स्वर्ग-नर्क को भेजने वाले हैं। कुकर्म दुर्भावना ही हमारे दुःख का कारण है, दुःख जब घना हो जाता है हम नर्क का जीवन जीते हैं। इसी प्रकार सुकर्म-सुभावना हमें सुख में ले जाती है। सुख की सघनता स्वर्ग निर्मित करती है। सुख का अर्थ है हमारी इन्द्रियों को जो अच्छा लगे, दुःख का मतलब है जो बुरा लगे। हम कितना ही तटस्थ रहें, निर्लिप्त रहें, अनुभूति तो होगी ही-सुख की अथवा दुःख की। शास्वत सुख का नाम ही आनन्द है।

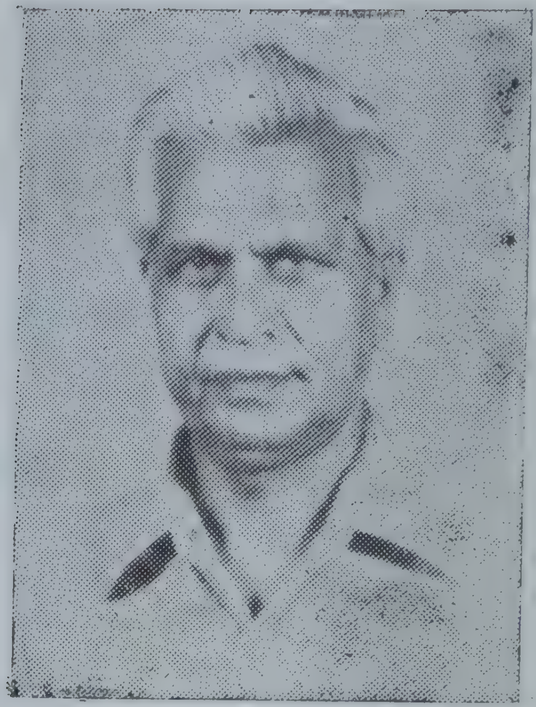
विशुद्ध कर्मो का व्यक्ति मुदित रहता है। पहली बात, विशुद्ध कर्म विशुद्ध चिंतन मन के द्वारा ही होते हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि मन मस्तिष्क मलीन हो जाएं, कर्म पुण्य हो जाएं। ऐसा भी नहीं होता कि मन निर्मल हो और कर्म पापमय हो जाएं। असली बात मन की निर्मलता और मस्तिष्क की स्वच्छता की है। जिनके दिल दिमाग साफ होते हैं वे मुदित होते हैं। मुदित यानी आनन्दित, खिले हुए जैसे पुष्प खिलता है, ऐसे खिल जाते हैं। खिलना यानी फैलना। सुखी, खुश—आदमी विकसित होता है। अपने सुख में सबको साथ कर लेना चाहता है। सिद्धार्थ जब दुःख से भरे तो जंगल चले गए एकान्त वास किया। जब सम्यक सम्बुद्ध हुए, खुशी से भर गए तो बस्ती में आए, आनन्द बांटने के लिए। ऐसी ही जीवनी महावीर, दयानन्द आदि सन्तों की भी रही दुःखी आदमी सिकुड़ता है। मर जाना चाहता है। दुःख जब घना हो जाता है तो लोग आत्महत्या करते हैं।

विशुद्ध कर्म, व्यवहार, मनन, चिन्तन से व्यक्ति धार्मिक होता है, पुण्यात्मा होता हे, जिसके पुण्य कर्म हैं, उसके लिए दोनों लोकों में मुदिता हो मुदिता है। हमारे कर्म ही हमारे विधाता हैं। कर्म ही भगवान हैं। हमारे कर्म ही उबारने वाले, डुबोने वाले होंगे। भगवान ने मनुष्य से ऊपर कोई सत्ता नही स्वीकारी है। हमारा पुण्यात्मा होना पर्याप्त है।

योरोप के एक विचारक-एडवर्ड बर्क ने अपने जीवन में एक प्रसंग में लिखा है-चर्च का पादरी प्रतिदिन कहता था-जो पुण्यात्मा हैं और परमात्मा में विश्वास करते हैं, वे स्वर्ग जाते हैं। बर्क ने प्रश्न किया जो पुण्यात्मा हैं और परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, वे कहां जाएंगे? यदि वे स्वर्ग जाएंगे तो पुण्यात्मा होना काफी है। ईश्वर विश्वास की क्या आवश्यकता? और जो परमात्मा में भरोसा करते हैं लेकिन पुण्यात्मा नहीं हैं तो वे कहां जाएंगे? यदि वे स्वर्ग जाएगे तो परमात्मा में विश्वास करना काफी है। पुण्यात्मा होने के चक्कर में क्यों पड़ना। पादरी ईमानदार था चुप हो गया। सोचकर फिर कभी उत्तर देने को कह दिया। पादरी के उत्तर का पता नहीं। किन्तु बुद्ध के उत्तर का पता है। बुद्ध कहते हैं तुम पुण्यात्मा बनो। बस इतना पर्याप्त है। ईश्वर है तो भी शुभ का फल शुभ होगा, नहीं है तो भी शुभ का शुभ और अशुभ का अशुभ फल होगा। ईश्वर विश्वासी भी इतना तो मानते ही हैं. परमात्मा न्यायकारी है। न्याय तो यही होगा-जैसी करनी वैसी भरनी।

इसलिए, चाहे गृहस्थी:चाहे साधु, विशुद्ध कर्म से ही पुण्यात्मा बन सकता है और पुण्यात्मा बनना पर्याप्त है।

□□



शब्द

● मुरारी लाल गुप्ता

वरि. हिन्दी अधि. I चर्च गेट

शब्द,
जिनमें कोमलता,
कठोरता, मादकता, मृदुता,
प्रयोग से आती है,
जिनमें बाण जैसी तीक्ष्णता,
नव-यौवना जैसी चपलता,
मधु जैसी मधुरता,
प्रसंगवश आ जाती है
शब्द,
जो अकेले में खोये रहते हैं,
साथ में बजने लगते हैं।
कभी धीमे, कभी तेज,
कभी कटार कभी फूल बन,
मन में उतरते हैं।
शब्द,
जिन्हें लेखक, अपनी लेखनी से,
कागज पर उतारते हैं,
अर्थ देते हैं,
भाव देते हैं,

पर क्या वे जानते हैं कि,
उनकी लेखनी जिन शब्दों को,
कागज पर उतार रही हैं,
वे किसी के लिए,
वरदान है. किसी के लिए अभिशाप,
क्या वे यह जानते हैं कि उन्होंने,
केवल उन्हें बांधा है,
अर्थ दिया है किसी प्रसंग में,
पर क्या वे यह भी जानते हैं ?
कि शब्द स्वतन्त्र हैं,
उनका अपना इतिहास है,
अपने अर्थ हैं,
अपना काल है,
काल बोध के अनुसार उनका
अर्थ बदलता रहा है, और बदलता रहेगा।
शब्द,
कभी परतन्त्र नहीं होंगे,
चाहे उन्हें कितना ही,
क्यों न बांधा जाए।

□□

शाहिस्तगी तेहज़ीब की जाँ होती है।
फूल हँसते हैं तो आवाज कहाँ होती है॥

भारत सरकार की राजभाषा नीति तथा उसका कार्यान्वयन



● नरेन्द्र नाथ मल्होत्रा

वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, अजमेर

राजभाषा संबंधी सवैधानिक और कानुनी व्यवस्थाओं का अनुपालन करने तथा संघ के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने के लिए गृह मंत्रालय के अधीन जून, 1975 में एक स्वतंत्र विभाग के रुप में राजभाषा विभाग की स्थापना की गयी थी। राजभाषा विभाग संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए राजभाषा संबंधी नीती निर्धारित करने, उसे कार्यान्वित करने, हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को सेवाकालीन हिन्दी प्रशिक्षण दिलाने, राजभाषा नीती के अनुसार विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों में कार्यान्वयन समितियां गठित करने तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरों के माध्यम से संहिताओं, नियम पुस्तकों तथा नये अन्य साहित्य का अनुवाद कराने का व्यापक कार्य करता है। राजभाषा विभाग इन कार्यों को सुचारु रुप से निष्पादित करने के लिए हर वर्ष राजभाषा की प्रगति के संबंध में वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है तथा कार्यक्रम का अनुपालन करने के लिए मंत्रालयों तथा विभागों के साथ समन्वय स्थापित करता है तथा उनका मार्गदर्शन करता है। संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए राजभाषा नियम 1976 के अनुसार नीति निर्धारण तथा उसके कार्यान्वयन की जिम्मेदारी भी इसी विभाग की है। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के प्रति सरकारी कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए इस विभाग द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनायें चलायी जा रही है।

1. रेल्वे बोर्ड में अलग राजभाषा निदेशालय का गठन—

भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी व्यवस्थाओं, सरकार की राजभाषा नीति तथा आदेशों को रेलों पर लागू करने के लिए रेलवे बोर्ड में एक अलग राजभाषा निदेशालय स्थापित किया गया है। यह निदेशालय निदेशक, राजभाषा के नियंत्रण तथा मार्गदर्शन में कार्य करता है।

2. राजभाषा संबंधी नियमों तथा आदेशों का कार्यान्वयन—

राजभाषा संबंधी आदेशों तथा नियमों आदि के कार्यान्वयन का कार्य मुख्यत: निम्नलिखित तीन विधाओं में विभाजित किया गया है—

(1) प्रशिक्षण (2) अनुवाद (3) कार्यान्वयन

इन तीनों विधाओं के अन्तर्गत किये जा रहे कार्यों का नीचे संक्षेप में उल्लेख किया गया है—

3. प्रशिक्षण—

(क) हिन्दी भाषा

(i) प्रबोध : यह प्रारम्भिक पाठ्यक्रम है और खास तौर पर उन कर्मचारियों के लिए जिन की मातृभाषा कोई दक्षिण भारतीय भाषा या अंग्रेजी है।

(ii) प्रवीण : यह माध्यमिक पाठ्यक्रम है जो लगभग मिडिल स्कूल के स्तर का होता है। यह पाठ्यक्रम उन कर्मचारियों के लिए है जिनकी मातृभाषा मराठी, गुजराती, बंगला, उड़ीसा, असमिया, सिन्धी या उनसे सम्बद्ध भाषा है।

(iii) प्राज्ञ : यह अन्तिम पाठ्यक्रम है जो लगभग हाईस्कूल के स्तर का होता है। यह उन सभी कर्मचारियों के लिए है जिनकी मातृभाषा पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी या इससे सम्बद्ध भाषा है।

(ख) हिन्दी टाइपिंग एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण

राष्ट्रपति के अप्रैल, 1960 के आदेशों के अनुसार हिन्दी टाइपिंग तथा आशुलिपि का सेवाकालीन प्रशिक्षण उन सभी पात्र अवर श्रेणी लिपिकों, टाइपिस्टों, आशुलिपिकों के लिए अनिवार्य कर दिया गया जिनकी आयु 1-1-61 को 45 वर्ष से कम थी। हिन्दी टाइपिंग की अवधि 6 महीने की है और आशुलिपि के प्रशिक्षण की अवधि एक वर्ष की है।

(ग) रेलवे बोर्ड की विभागीय हिन्दी शिक्षण योजना—

यद्यपि कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने का कार्य गृह मंत्रालय द्वारा किया जाता है फिर भी रेलवे विभाग एक बहुत बड़ा विभाग होने के कारण रेलवे बोर्ड द्वारा गृह मंत्रालय के अनुमोदन से अपनी विभागीय प्रशिक्षण योजना भी चलायी गयी है। रेलवे के जिन कार्यालयों स्टेशनों पर गृह मंत्रालय के प्रशिक्षण केन्द्र काम नहीं कर रहे हैं वहां रेलवे विभाग द्वारा विभागीय प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिए जाने की व्यवस्था है। यह प्रशिक्षश केन्द्र गृह मंत्रालय की हिन्दी शिक्षण योजना के अनुरूप ही होते हैं तथा इसमें वे सभी सुविधायें दी जाती हैं जो गृह मंत्रालय की शिक्षण योजना के अधीन देय हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र रेलवे विभाग द्वारा चलाये जाते हैं।

4. प्रशिक्षण संबंधी प्रोत्साहनः—

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षण पाने तथा निर्धारित परीक्षा पास करने पर निम्नलिखित प्रोत्साहन दिया जाता है—

(क) वैयक्तिक वेतन (12 महीने के लिए एक वेतन-वृद्धि के बराबर)

(1) अराजपत्रित कर्मचारियों को प्राज्ञ परीक्षा पास करने पर।

(2) जिन अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए प्रवीण या प्रबोध की परीक्षा ही अन्तिम परीक्षा है, उक्त परीक्षाएं पास करने पर।

(3) राजपत्रित अधिकारियों को अंतिम परीक्षा के रूप में प्रवीण या प्राज्ञ परीक्षा पास करने पर।

(4) जहाँ हिन्दी शिक्षण योजना केन्द्र नहीं है, वहाँ के कर्मचारियों को स्वेच्छिक संगठनों की मैट्रिक या उससे उच्च स्तर की मान्यता प्राप्त हिन्दी परीक्षा पास करने पर।

(ख) नकद पुरस्कार (विशेष योग्यता के साथ परीक्षा पास करने पर)

(5) प्रवीण और प्राज्ञ। प्रबोध

प्रवीण प्राज्ञ	प्रबोध	
300 रु.	200 रु.	70 प्रतिशत या अधिक अंकों पर
200 रु.	100 रु.	60 प्रतिशत या अधिक अंकों पर
100 रु.	50 रु.	55 प्रतिशत या अधिक अंकों पर

(ग) एक मुश्त पुरस्कार (निजी प्रयत्नों से परीक्षा पास करने पर)

(6) परिचालन कर्मचारियों तथा उन कर्मचारियों को जो ऐसे स्थानों पर नियुक्त हैं, जहां हिन्दी प्रशिक्षण योजना के केन्द्र नहीं है—

प्राज्ञ	प्रवीण	प्रबोध
300 रुपये	250 रुपये	250 रुपये

(7) मद 4 में लिखी योग्यता वाले कर्मचारियों को 300 रुपये।

(घ) टाइपिंग व आशुलिपि परीक्षा पास करने पर प्रोत्साहन

(क) वैयक्तिक वेतन (12 महीने के लिए एक वेतनवृद्धि के बराबर)

(1) अराजपत्रित कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग। हिन्दी आशुलिपि की परीक्षा पास करने पर।

(2) राजपत्रित आशुलिपिकों को भी हिन्दी आशुलिपि परीक्षा 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक लेकर पास करने पर।

विशेष : जिन आशुलिपिकों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, उन्हें आशुलिपि की परीक्षा पास करने पर पहले 12 महीनों के लिए दो वेतनवृद्धि के बराबर और दूसरे वर्ष पहली वेतनवृद्धि के मिला दिये जाने पर केवल एक वेतनवृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

(च) नकद पुरस्कार

(विशेष योग्यता के साथ परीक्षा पास करने पर)

(3) **राशि**	**हिन्दी टाइपिंग**	**हिन्दी आशुलिपि**
300रु.	97 प्रतिशत	95 प्रतिशत अंकों पर
200रु.	95 प्रतिशत	92 प्रति. या अधिक पर
100रु.	90 प्रतिशत	88 प्रति. या अधिक पर

(छ) एक मुश्त पुरस्कार (निजी प्रयत्नों से परीक्षा पास करने पर)

(4) उन कर्मचारियों को जो ऐसे स्थानों पर नियुक्त हैं, जहां हिन्दी टाइपिंग तथा आशुलिपि सिखाने के केन्द्र नहीं खोले गये हैं—

हिन्दी आशुलिपि	**हिन्दी टाइपिंग**
500 रुपये	250 रुपये

5. हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन विभागीय हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना—

जो कर्मचारी हिन्दी की निर्धारित परीक्षा पास कर लेते है अथवा जो कर्मचारी प्रशिक्षण पा रहे होते हैं उनका हिन्दी भाषा का ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रमुख कार्यालयों में विभागीय हिन्दी पुस्तकालय स्थापित किये गए हैं। इन पुस्तकालयों के लिए हर वर्ष नयी पुस्तकें खरीदी जाती है।

6. अनुवाद

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में हिन्दी केन्द्रीय सरकार की राजभाषा हो जाने के परिणाम स्वरूप केन्द्रीय सरकार की सभी संहिताओं, नियमावलियों, नियम पुस्तकों, असांविधिक नियमों के साथ-साथ संसद पारित सभी अधिनियमों तथा राष्ट्रपति द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सभी अध्यादेशों का अधिकृत हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराना अनिवार्य हो गया। यह अपने आप में बहुत बड़ा तथा श्रम-साध्य काम है। भारत सरकार द्वारा यह अनुवाद कार्य निम्नलिखित संगठनों को सौंपा गया-

(1) **विधायी विभाग**—इसका गठन विधि मंत्रालय के अधीन किया गया है। विधि संबंधी सभी संहिताओं के अतिरिक्त अधिनियमों अध्यादेशों तथा नियमों, उपनियमों का अनुवाद कार्य इस विभाग को सौंपा गया है।

(2) **केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो**—असांविधिक नियमावलियों, नियम पुस्तकों, नियमों, उपनियमों तथा आदेशों का अनुवाद कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया है जो गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

(3) **रेलवे बोर्ड क्षेत्रीय रेलवे के प्रधान कार्यालयों में अनुवाद की व्यवस्था**—

यद्यपि सभी मंत्रालयों की असांविधिक नियमावलियों, नियम पुस्तकों आदि का अनुवाद केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा किया जाता हैं तथापि रेलवे बोर्ड की संहिताओं के अनुवाद का कार्य रेलवे बोर्ड द्वारा स्वयं किया जाता है। क्षेत्रीय रेलों द्वारा जारी की जाने वाली नियम पुस्तकों आदि का अनुवाद क्षेत्रीय रेलों द्वारा किया जाता है।

(4) **फार्मों का अनुवाद**—रेलवे विभाग में प्रयोग में लाये जाने वाले सांविधिक फार्मों का अनुवाद रेलवे बोर्ड द्वारा तथा मानक फर्मों का अनुवाद क्षेत्रीय रेलवे स्तर पर किया जाता है।

(5) **राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के कागजात द्विभाषी रूप में जारी करनाअनि वार्य है जिनका अनुवाद स्थानीय स्तर पर किया जाता है।**

(6) **संसद के पटल पर रखे जाने वाले दस्तावेज दोनों भाषाओं में प्रस्तुत करना अनिवार्य है।**

(7) **कार्यान्वयन**—जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है राजभाषा के संबंध में संविधान के उपबंधों, राष्ट्रपति द्वारा तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये आदेशों के कार्यान्वयन का दायित्व गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) को सौंपा गया है।

कार्यान्वयन संबंधी कार्यों को मुख्यत: निम्नलिखित शीर्षों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) वार्षिक कार्यक्रम।

(2) प्रोत्साहन योजनाये।

(3) हिन्दी सलाहकार समितियों तथा कार्यान्वयन समितियों का गठन।

(4) हिन्दी कार्यशालायें।

(5) संपर्क अभियान।

वार्षिक कार्यक्रम—इस विषय पर पत्रिका के पिछले अंकों में विस्तार पूर्वक चर्चा की जा चुकी है।

(8) **प्रोत्साहन योजनाये**—राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा अन्य उपायों के साथ-साथ कई प्रोत्साहन योजनायें चालू की गयी हैं जो इस प्रकार है—

(1) राजभाषा शील्ड, ट्राफी तथा पदक प्रदान करने की योजना।

(2) सबसे अच्छा काम करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पुरस्कार देने की योजता।

(3) हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए प्रोत्साहन।

(4) रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत पुरस्कार योजना।

(5) रेलवे बोर्ड की सामूहिक पुरस्कार योजना।

(6) हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता।

(7) आशुलिपिकों तथा टाइपिस्टों को प्रोत्साहन भता।

नोट—उपर्युक्त सभी प्रोत्साहन योजनाओं की पूर्ण जानकारी के लिए पाठक गण अपने-अपने कार्यालय के हिन्दी कक्ष से सम्पर्क कर सकते हैं।

(9) **सलाहकार समितियों तथा कार्यान्वयन समितियों का गठन**— हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में

हिन्दी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है। इन सभी समितियों में सर्वोच्च समिति प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में काम करने वाली केन्द्रीय हिन्दी समिति है। इस सलाहकार समितियों के अतिरिक्त विभिन्न विभागों, कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का भी गठन किया गया है जिनका उल्लेख संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है—

(1) **केन्द्रीय हिन्दी समिति** – माननीय प्रधान मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। सचिव, राज—भाषा विभाग एवं भारत सरकार के हिंदी सलाहकार इस समिति के सदस्य सचिव है। इस समिति में केन्द्रीय सरकार के कुछ मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, संसद सदस्य, उच्च कोटि के साहित्यकार आदि शामिल हैं। यह समिति हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए राष्ट्रीय नीति निर्धारित करती है तथा दिशा निर्देश देती है।

(2) **हिन्दी सलाहकार समितियां**—विभिन्न मंत्रालयों, विभागों में सम्बन्धित मंत्री की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है। ये समितियां अपने-अपने मंत्रालयों, विभागों, उप-क्रमों में हिन्दी के प्रयोग की समीक्षा करती है। ये समितियां लगभग सभी मंत्रालयों में स्थापित की गयी है। रेलवे बोर्ड में स्थापित हिन्दी सलाहकार समिति, रेल मंत्री जी की अध्यक्षता में काम करती है। अध्यक्ष रेलवे बोर्ड, रेलवे बोर्ड के अन्य सदस्य तथा सचिव रेलवे बोर्ड इस समिति के सदस्य हैं। विभिन्न निदेशालयों के निदेशक तथा क्षेत्रीय रेल के मुख्य राजभाषा अधिकारी भी इस समिति के सदस्य हैं। निदेशक (राजभाषा) रेलवे बोर्ड, इस समिति के सदस्य सचिव है। यह समिति रेलों पर हिन्दी की प्रगती की समीक्षा करती है तथा रेलों पर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नीति निर्धारित करती है।

(3) **केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति**—यह समिति गृह मंत्रालय में गठित की गयी है। भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार इस समिति के अध्यक्ष हैं। यह समिति केन्द्रीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की प्रगति की समय-समय पर समीक्षा करती है।

(4) **नगर राजभाषा कार्यान्वय समितियां**—देश के सभी प्रमुख नगरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों तथा उपक्रमों के अध्यक्ष इस समय इस समिति के सदस्य होते हैं तथा नगर का वरिष्ठतम अधिकारी इसका अध्यक्ष होता है। इस समय देश भर में 65 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां काम कर रही हैं।

(5) **विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियां**—विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित की गयी है जो सम्बन्धित मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों के

अध्यक्ष की अध्यक्षता में काम करती है। इन सभी कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में कार्यालयों में हिन्दी की प्रगति की समीक्षा की जाती है।

(10) **हिन्दी कार्यशालायें**—अन्य उपायों के साथ-साथ, सभी मंत्रालयों, विभागों में हिन्दी में काम करने के लिए कर्मचारियों तथा अधिकारियों की झिझक को दूर करने के लिए हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। ऐसी कार्यशालाओं में कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता है।

(11) **संपर्क अभियान**—हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी साप्ताह, की दिवस, के आयोजन सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि गोष्ठियों के आयोजन तथा स्मारिकाओं को विज्ञान के साथ-साथ समय-समय पर संपर्क अभियान चलाये जाते हैं। इन अभियानों के दौरान उन कर्मचारियों से संपर्क किया जाता है तथा उनकी कठिनाइयों का निराकरण किया जाता है। जिन्हें हिन्दी में काम करने में कठिनाई होती है उनकी टेबल पर जाकर उनके प्रतिदिन के काम में आने वाली शब्दावलियों का ज्ञान कराया जाता है तथा उन्हें हिन्दी में लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

□□

घरेलू बचत

● चन्द्र मोहन भटनागर

धातु कर्म. एवं रसायन अधिकारी



इस विशेषांक में शान्ति, अहिंसा, आत्मज्ञान, ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, नियम, उप-नियम, साहित्यिक मनोरंजन आदि विविध विषयों पर प्रचुर सामग्री है। अतएव, मैं अपने लिए विषय चुनने में कई दिन खोया रहा। पिछले अंक में भी, मैंने कई दिन सोचकर आपके पर्यटन को सस्ता और सुगम बनाने की दृष्टि से समूची भारतीय रेलों पर 'होलिडे—होम' की जानकारी को अपने लेख का विषय बनाया था। इस बार भी मैं ऐसी ही कुछ नूतनता (नोवेल्टी) के साथ उपयोगिता का मेल कराने की उधेड़-बुन में लगा रहा।' क्योंकि आपने मेरे पिछले लेख को संग्रहणीय कह कर मेरी कठिनाई और भी बढ़ा दी है। मैंने अपने में फिर एक लेखक प्रगट करने की लाख कोशिश की किन्तु मुझ में जब कोई भी लेखक पनप नहीं पाया तो मैं सच कहता हूं, मेरी मदद की श्रीमति भटनागर ने। तो लीजिए, प्रस्तुत है—घरेलू बचत के कुछ उपायों की जानकारी—

बर्तन साफ करने का पाउडर

विधि 1.

राख	—	3 किलो
कपड़े धोने का सोड़ा	—	½ किलो
निरमा या सर्फ पाउडर	—	¼ किलो
सोप स्टोन पाउडर	—	1¼ किलो
	कुल वजन—	5 किलो

राख को मैदा छानने की चलनी से छान लें। कंडे की राख उपयुक्त होती है। छनी हुई राख में उपरोक्त अन्य चीजें मिला दें। इस मिश्रण को दुबारा चलनी से छान कर प्लास्टिक की थैलियों में पैक कर लें और आवश्यकता अनुसार उपयोग में लायें।

विधि 2.

मारबल स्टोन पाउडर (जी 3) 500 मेश	—	3½ किलो
डोलोमाइट पाउडर या सोप स्टोन पाउडर	—	1 किलो
लिसापोल या लिक्युड (5 एल)	—	½ किलो

उपरोक्त तीनों चीजों को मिला लें और मैदा छानने की चलनी से छान लें। इसको प्लास्टिक की थैली में भर कर रख लें व प्रयोग में लायें।

उपरोक्त सामग्री आपके शहर अजमेर में गणेश कलर कम्पनी, प्रहलाद कलर कम्पनी, लादुराम एण्ड कम्पनी, नया बाजार अजमेर एवं ऐसी ही अन्य दुकानों पर मिलती हैं।

कपड़े धोने का पाउडर

विधि –1

1 कपड़े धोने का सोडा	—	4 किलो
2 ऐसिड सिलेरी	—	½ किलो
3 लिसापोल	—	½ किलो
4 नील रोबीन बल्यु	—	1 चाय का चम्मच
5 ऐसेंस नींबू या केरी का	—	1 चम्मच

विधि—2

1 कपड़े धोने का सोडा	—	7 किलो
2 ट्राई सोडियम फोस्फेट	—	½ किलो
3 ऐसिड सिलेरी	—	1 किलो
4 लिसापोल	—	½ किलो
5 फोम बुस्टर	—	250 ग्राम
6 सी. एम. सी. पाउडर	—	100 ग्राम
7 नील	—	50 ग्राम
8 ऐसन्स केरी का	—	2 चम्मच

उपरोक्त सामान को अच्छी तरह मिलाकर पानी का छींटा देते जायें ताकि नम हो जाये। मिश्रण को सुखा कर बारीक चलनी से छान लें। अन्त में ऐसेन्स की बूंदे ड़ाल कर मिलालें और प्लास्टिक की थेली में पैक कर लें।

कपड़े धोने का साबुन

पाम आयल	—	1 किलो
कास्टिक सोडा	—	250 ग्राम
लीसापोल	—	250 ग्राम
बेसन	—	100 ग्राम

लोहे की कढ़ाई में 2 कि. ग्रा. पानी लेकर कास्टिक सोड़ा घोल लें। इसे 24 घन्टे के लिए रख दें। मिश्रण को हिलाने के लिए लकड़ी की वस्तु काम में ली जाये। 24 घन्टे बाद कास्टिक सोड़े के घोल में बेसन व लीसापोल डाल कर हिला लें। अब धीरे-धीरे लकडी की वस्तु से हिलाते हुऐ तेल डालते जायें। इस क्रिया में कम से कम एक घण्टा लगायें। सारे घोल को एक सांचे में डाल कर 12 घन्टे सुखा कर काट लें।

कागज चिपकाने का गोंद

स्टार्च या अरारोट	—	1 किलो
केलशियम क्लोराइड	—	2 0 ग्राम
पानी	—	आवश्यक्तानुसार

केलशियम क्लोराइड को पानी में घोल लें और स्र्टाच में धीरे-धीरे चला कर मिला लें और प्लास्टिक की शीट पर सुखा लें। आवश्यकता अनुसार पानी में घोल कर काम में लें।

दाग छुड़ाने के उपाय

1. **नीली स्याही के दाग** : दाग पर नींबू और नमक को लगा कर रगड़िये और धूप में रख दीजिये। थोड़ी देर बाद साबुन से धो डालिये।
2. **लाल स्याहो के दाग** : दाग पर अन्डे की सफेद जर्दी लगा कर रगड़िये और साबुन से धो डालिये।
3. **बॉलपेन स्याही या तेल के दाग** : निथिलेटेड स्प्रिट से भिगोइये, फिर साबुन व पानी से धो ड़ालिये।
4. **नेल पालिस के दाग** : ऐसिटोन से साफ हो जाते हैं।
5. **काफी और चाय के दाग** : तीस ग्राम बोरेक्स को आधा लीटर पानी में डाल कर दाग को भिगो लीजिये, फिर उस जगह को साबुन व पानी से धो डालिये।
6. **पान के दाग** : ताजे पान के दाग पर नींबू रगड़ें। कपड़े के नीचे सफेद ब्लाटिंग पेपर या सफेद पुराना कपड़ा रखें। फिर उस जगह को पानी से धो दें। इस क्रिया को 2 या तीन बार करने से पान का दाग साफ हो जाता है।

   पुराने पान के दाग को हल्का किया जा सकता है—रसायनिक क्रिया द्वारा। इसके लिए एक कप पानी में एक चाय का चम्मच भर ओगस्कीक ऐसडि के दाने मिला लें और रूई द्वारा प्रयोग में लायें। कपड़ों को व हाथों को अच्छी तरह पानी से धो लें।

विश्व शांति में भारत का योगदान

● श्री पी. के. ठवरे

व. का. अधि. (का.)



दूसरे महायुद्ध के साथ-साथ दुनियाँ दो भागों में बट चुकी थी; एक को लोकतांत्रिक गढ़ माना जाता था जिसकी बागडोर अमरीका के हाथों में थी और पश्चिमी यूरोप के अधिकतर देश उसके सदस्य थे। दूसरे गढ़ की बागडोर रशिया के हाथ में थी और पूर्व यूरोप के अधिकतर देश उसके सदस्य थे।

दूसरे युद्ध की सबसे बड़ी घटना अमेरिका द्वारा अणुबम का निर्माण और हिरोशिमा और नागासाकी नगरों का विनाश। जिसकी कहानी जापान के बड़े-बूढ़े आदमी-औरत बच्चे सभी को जबानी याद है। मानव जाति पर लगा यह कलंक कभी भी धुल नहीं सकेगा।

हैवानियत के इसी कलंक को दृष्टिगत रखते हुए महाशक्तियों ने यह निश्चय किया कि पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधने के लिए एक संगठन बनाया जाना चाहिए, जहाँ मानव जाति की भलाई और उज्जवल भविष्य के लिए विचार विनियम किया जा सके और शांतिपूर्ण सह-अस्तिव की भावना को दृढ़ता प्रदान की जा सके। फलस्वरूप 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की नींव पड़ी।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी 41 वीं वर्ष-गाँठ मनाई है। इस दीर्घ अवधि में संयुक्त राष्ट्र संघ की उपलब्धियों पर कई प्रश्न चिह्न लगे हुए हैं किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि इन 41 वर्षों में कोई अणु परमाणु शस्त्रों का विनाशकारी प्रयोग अथवा महायुद्ध टला रहा।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी कई रचनात्मक गति-विधियों के साथ-साथ वर्ष 1986 को अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष घोषित किया है। आज उसके सामने सबसे बड़ी समस्या मानव जाति के संहार की है।

शांतिवर्ष की उद्घोषणा का विशेष अनुकूल प्रभाव दृष्टिगत नहीं हो रहा है बल्कि ऐसा अनुभव हो रहा है कि जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ महाशक्तियों के हाथों में एक खिलौना हो अथवा परिवार में जिस प्रकार नादान बच्चे या एकदम अशक्त-अपाहिज बूढ़े की कोई परवाह नहीं करता; उसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ की इस अपील की भी सर्वत्र अवमानना देखने को मिल रही है। आज महाशक्तियों के राजनैतिक षड़यन्त्र, शक्ति संतुलन और साम्राज्यवाद के फन्दे में पड़ी मान-वता बिलख रही है और उसके अस्तित्व पर ही जैसे प्रश्न चिह्न उभरता जा रहा है। तथापि कई देश विश्व शांति का वातावरण तैयार करने में जुटे हुए हैं।

भारत शांति प्रिय देश है। शांति हमारे जीवन-दर्शन का लक्ष्य है। इस धरा पर जहाँ प्राचीनकाल में

महामानव गौतम बुद्ध, महावीर आदि अवतरित हुए हैं वहीं आधुनिक युग में भी वीर जवाहर, महात्मा गाँधी जैसे कई शाँति के मसीहा आए और दुनियाँ को शांति का मार्ग दिखा चुके हैं। भारत ने ही दुनियां को पंच-शील और गुटनिरपेक्ष आन्दोलन जैसे शांतिरथ के लिए पहीये दिये और शांतिमार्ग मेंबाधक रंग भेद और शस्त्रा-शस्त्र की होड़ को समाप्त करने का स्वर बुलन्द किया है। इस संदर्भ में हमारे प्रिय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी की निर्भीक भूमिका की समूचे विश्व में चर्चा है।

यही कारण है कि भारत की वाणी समूचे विश्व में ध्यान से सुनी जाती है। भारत के विचारों का सर्वत्र सम्मान है। तीसरी दुनियाँ का विकासशील देश होने तथा गुट निरपेक्ष आन्दोलन का अगुवा होने के कारण दुनियाँ में हमारी काफी साख है।

पिछले महीने आईसलैण्ड रिग्जाविक में दो महा-शक्तियों के राष्ट्राध्यक्षों की बातचीत सफल नहीं हो सकी किन्तु जैसा कि कहा गया कि असफलता ही सफलता की कुञ्जी है ; इससे इतना तो लाभ हुआ ही है कि दोनों महाशक्तियों ने यह तो हृदयंगम कर ही लिया है कि दुनियाँ में शांति के लिए निरस्त्रीकरण के सिवा अन्य उपाय नहीं है। निस्संदेह इस शिखर सम्मेलन से शांति का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

इसी प्रकार रंगभेद भी विश्व-अशाँति का बहुत बड़ा कारण है। दूसरे महा-युद्ध के बाद एशिया और अफ्रीका खण्डों में कई देश स्वाधीन हुए किन्तु दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया का भविष्य अभी भी उलझा हुआ है। हमने उनके पक्ष में विश्व-जनमत तैयार करने में काफी प्रयास किया है और यह स्पष्ट स्वर दुनियाँ को बता दिया है कि जब तक इन दो देशों को स्वाधीनना प्राप्त नहीं होती तब तक विश्व में शांति स्थापित होना संभव नहीं है।

इसी प्रकार हम बहुत पहले से दुनियाँ में शांति के मूलमंत्र "शांतिपूर्ण सहअस्तित्व" के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने में संग्लन हैं। इस श्रद्धा के अभाव में जो कुछ हो रहा है वह तो हम देख ही रहे हैं; इरान-इराक युद्ध, अरब-इज्रायल युद्ध आदि और खुद भारत के पड़ौसी देशों में जो हो रहा है, उसकी कहाँ तक अनदेखी की जा सकती है। हम शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के प्रबल हिमायती हैं किन्तु जो इसमें विश्वास नहीं करते हैं, उनके कारण आज हमें भी बहुत परेशानी उठानी पड़ रही है। इसीलिए, हम दुनियाँ को साफ-साफ बता चुके हैं कि एक-दो, दस-बीस नहीं; दुनियाँ का प्रत्येक राष्ट्र जब तक शांतिपूर्ण, सह-अस्तित्व के सिद्धान्त में अपना विश्वास दृड़ नहीं करेगा तब तक विश्व में शांति नहीं; तब तक सम्यक् विकास भी संभव नहीं हो सकेगा और न ही मानव जाति का अस्तित्व सुरक्षित रह सकेगा।

इस प्रकार भारत बहुत पुराने जमाने से दुनियाँ में शांति कायम रखने में निरन्तर एवं भरपूर सहयोग करता आ रहा है। सन्तोष का विषय है कि हमारी इस ऐतिहासिक परम्परा के निर्वाह में–यथा, गौतम-बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू आदि की पंक्ति में हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी भी प्रकाश स्तम्भ की भाँति खड़े है। काश, मानव के अस्तित्व की चिन्ता इन महाशक्तियों को भी प्रभावित करे।

□□

अंग्रेजी हमें श्रद्धा से नहीं मजबूरी में पढ़नी पड़ी है, अफसोस कि "मजबूरी" आज भी जारी है।

—ज्ञानी जैलसिंह

"हिन्दी विरोधी आन्दोलन से तमिल जनता की सुरक्षा संभव नहीं है। यह मानकर चलना हैं कि हिन्दी उत्तर भारतीयों की भाषा है और तमिल दक्षिण भारतीयों की ; गलत है। बल्कि सबको राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के विकास के लिए एक भावना के सूत्र में बंध-कर कार्य करना है। हमारी भाषा की हिन्दी कोई दुश्मन नहीं हैं। हिन्दी सीखना हर तमिल के लिए अच्छा है।"

—भक्त वसलम

भारतीय रेलों में लेखा विभाग का महत्व

● तुलसीराम रिजोनिया

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (का.)



रेलवे विभाग विविध भागों में विभक्त है, जैसे, इंजीनियरिंग विभाग का काम रेल की पटरी बिछाना और भवन निर्माण करना: यांत्रिक विभाग का काम है सवारी भवन एवं माल डिब्बों तथा इंजिनों का रख रखाव करना; सिगनल विभाग का कार्य सिगनलों को ठीक करना इत्यादि। इसी प्रकार लेखा विभाग भी रेलवे का लेखा-जोखा रखने का काम करता है। इस विभाग के कार्य संक्षिप्त में निम्न प्रकार के हैं—

(1) लेखा कार्यालय में जो भी बिल भुगतान के लिये आते हैं चाहे वह स्टॉफ के भुगतान के बिल हों या बाहर के व्यक्तियों एवं संस्थाओं के बिल हों उनका आन्तरिक चैक इन्टर्नल चैक लेखा विभाग में किया जाता है। इस के अलावा आय सम्बन्धी रिटर्न जो स्टेशन मास्टर भेजता है उसका भी चैक लेखा विभाग में किया जाता है।

(2) आय या व्यय सम्बन्धी बिलों को बहियों में इन्द्रराज करना एवं उस के आधार पर रेलवे बोर्ड को मासिक एव वार्षिक आय व व्यय का ब्यौरा अकाउन्ट करेन्ट के रूप में भेजना।

(3) समस्त अधिकारियों को वित्तीय मामलों में सलाह देना।

(2) इन कार्यों को लेखा विभाग किस प्रकार करता है, उसका विवरण निम्न प्रकार से है—

लेखा विभाग में तीन तरह के कार्यालय हैं—

(1) जनरल लेखा विभाग,

(2) यातायात लेखा विभाग,

(3) कारखाना एवं भण्डार लेखा विभाग।

(3) जनरल लेखा विभाग में जो व्यय के बिल आते हैं उन का चैक बिलों के साथ आये बिलों के आधार पर किया जाता है। जो बिल लेखा विभाग में नहीं आते हैं उन का चैक एग्जिक्यूटिव कार्यालय में निरीक्षण के दौरान किया जाता है। यह निरीक्षण इंजिनियरिंग विभाग में प्रत्येक वर्ष किया जाता है, जबकि दूसरे विभागों में यह निरीक्षण दो वर्ष के अन्तराल पर किया जाता है।

(4) प्रत्येक स्टेशन मास्टर सवारी यातायात एवं माल-खाता यातायात की बेलेन्सशीट यातायात लेखा विभाग में भेजता है जिस में आय एवं उस आय की राशि को कैसे जमा किया गया है बताया जाता है। बेलेन्सशीट को स्टेशन मास्टर द्वारा भेजी गई रिटर्नो से चैक करते हैं। स्टेशन पर जो रिकार्ड रखा जाता है यातायात लेखा निरीक्षण उस का चैक स्टेशन मास्टर पर जाकर

करता है। उस में यह देखा जाता है कि स्टेशन मास्टर ने जो बेलेन्सशीट भेजी है वह सही बनाई है या नहीं।

(5) कारखाना एवं भण्डार लेखा विभाग में भी जो बिल लेखा विभाग में आते हैं उन का चैक उसी तरह से किया जाता है जैसा जनरल लेखा विभाग में होता है। इस विभाग के अधीन भण्डार नियन्त्रक होते हैं जो समस्त प्लान्ट होल्डर्स एवं जिनके पास भंडार होता है उन का सत्यापन करना उनकी टेलीबुक से वास्तविक भण्डार का मिलान करता है और यदि कोई फर्क या अनियमितता होती है तो उसको स्टॉक शीट में दर्शाता है।

(6) आय एवं व्यय के बिलों को पास कर के उनका रोकड़ बही, जरनल व लेजर में इन्दराज किया जाता है और उस के आधार पर मासिक एवं वार्षिक अकाउन्ट करेन्ट बना कर रेलवे बोर्ड में भेजा जाता है। अकाउन्ट करेन्ट में विविध श्रोतों से आय एवं विविध मदों में व्यय दर्शाया जाता है। ये रैवेन्यू एवं कैपिटल के लिए अलग अलग बनाया जाता है।

(7) वित्तीय मामलों में लेखा विभाग समस्त अधिकारियों को सलाह देता है। लेखा विभाग प्राक्कलन को चैक कर के उचित सलाह देता है।

(8) इनके अलावा पदों के सृजन में भी लेखा विभाग की स्वीकृति की जरूरत होती है। लेखा विभाग बजट बनाने में भी समस्त अधिकारियों की मदद करता है।

(9) विविधि बिलों में लेखा विभाग में निम्नलिखित बातें देखी जाती हैं—

(1) प्रत्येक बिल स्याही से बना हैं या टाइप किया है? पेन्सिल से बना बिल स्वीकृत नहीं किया जाता है।

(2) सही प्रोफोर्मा में बिल बना है ?

(3) बिल में दिखाई गई राशि के लिए बजट में प्रावधान है ?

(4) प्रत्येक बिल किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित है?

(5) जिस कार्य/सेवा के लिए बिल बना है वह कार्य हो गया है ?

(6) सक्षम अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त है?

(7) बिल उसकी अवधि में ही पेश किया गया है, अर्थात् टाइम-बार्ड नहीं है ?

(8) किसी नियम का उल्लंघन तो नहीं हुआ है ?

(9) व्यय एलोकेशन ठीक दिया है ?

(10) बिल हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में ही बनाया गया है ?

(11) पूर्व निर्धारित कार्यवाही की हुई है, जैसे प्राक्कलन बनाना इत्यादि।

(12) जरुरी प्रमाणपत्र बिल के साथ भेजे हैं ?

(10) उपरोक्त बातें चैक करना जरुरी है। इससे अनियमितताएं नहीं होती हैं और आय के लीकेज की सम्भावना कम रहती है। □□

खंजर से अधिक गहरी मार



● रो. मि. वेल्पडेल,

जि. बि. इंजि. (उत्पादन)

मैं यहाँ अपनी ओर से कुछ नहीं कहकर शांति की दिशा में दो कदम स्वरूप निम्न प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है मेरी तरह आपको भी यह बहुत रूचिकर लगेगा।

रामू और श्यामू एक दूसरे के पैदाइशी जानी-दुश्मन थे और इस घात में रहते थे कि कब एक दूसरे को मौत के घाट उतार दें।

समय व्यतीत होता गया। स्यामू किसी आर्थिक अपराध में पकड़ा गया, मुकदमा चला और सात वर्ष का कारावास हो गया।

कुछ समय बाद जब रामू को पता चला कि उसके दुश्मन स्यामू को सजा हो गई है, तो वह न्यायालय पहुंचा और स्यामू की जमानत की अर्जी दी। न्यायालय ने रामू की सम्पत्ति का जायजा लेकर स्यामू की जमानत मंजूर कर ली।

रामू जमानत देकर वापस घर आ गया। स्यामू को जेल-अधिकारी ने बुलाया और यह कहा कि तुम्हारी जमानत हो गई है, तुम घर जा सकते हो।

स्यामू विस्मय में पड़ गया कि आखिर उसकी जमानत किसने दी और क्यों दी? और जमानत देने के बाद जमानती रूपोष (अप्रकट) क्यों है?

अतः वह न्यायालय पहुंचा और यह पता लगाने लगा कि उसकी जमानत किसने दी है?

यह पता लगने पर कि रामू चुपचाप उसकी जमानत देकर घर चले गये हैं, वह प्रेम विभोर होकर, बजाय अपने घर जाने के सीधे रामू के घर पहुंचा और भाव विभोर अवस्था में रामू के पैरों में गिर गया और गद्‌गद् होकर कहने लगा कि आप महान हैं ... आप साधु पुरुष हैं ... आप देवता हैं।

रामू इन्कारी में सिर हिलाता रहा और कहने लगा-देखो रामू! मैं और तुम दोनों ही बुढ्ढे हो चले हैं, उस पर तुम्हें और सात साल की सजा, पता नहीं इस दौरान हममें से यदि कोई मर जाता तो हमारी दुश्मनी का क्या होता? इसलिये तुम्हें छुड़ाकर लाया हूं।

श्यामू पैरों में पड़ा-पड़ा गिड़गिड़ा रहा था, भैया अब दुश्मनी कहाँ, अब तो तुम मेरे बड़े भाई हो और मैं तुम्हारा सेवक।

रामू कहने लगा, देख स्यामू, मैने तो दुश्मनी निकाली है। आज दुश्मन मेरे पैरों में पड़ा है। देखा मेरा वार: खंजर से गहरी मार। है न अधिक गहरी मार, है न ... अधिक गहरी है न ... कहते कहते रामू स्वयं गद्‌गद् हो गया। रामू का स्वर सूख गया, उसकी आंखों में आँसू भर आये और उसने श्यामू को खींचकर अपनी छाती से लगा लिया।

□□

चाँद और रोटी

● सत्यनारायण बीजावत

शॉप अधीक्षक

कैरिज (उत्पादन)

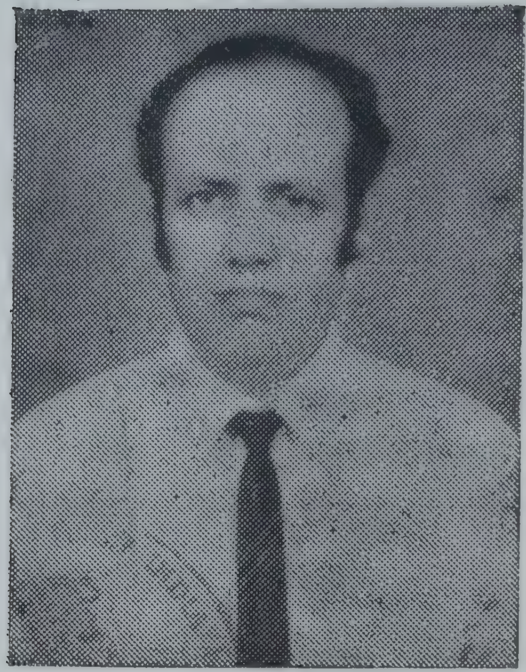
कविता

इक्कीसवीं सदी का बाल-गोपाल रोया ।
माँ ! वो गोल-गोल थाली सा चाँद ही लूँगा ।
माँ बोली, पगले ! वह चाँद तो प्रतीक है,
थाली का, रोटी का, रॉकिट का, रुखसार का !
बोल क्या लेगा ?
वो गोपाल तो महाभारत काल का था,
जिसे तूने परात भर पानीं में उतार कर,
बहला दिया था ।
मैं बिम्बों से बहलने वाला नहीं हूं ।
मैं वास्तविकता के धरातल पर खड़ा हूं,
बादल के पंखों पर बैठ परी कथा में उलझा
पलकों में सपने पालने वाला नहीं हूँ,
वह देख ! माँ वह खाली थाली
कब से रोटी का इन्तजार कर रही है,
कितनी पंचवर्षीय योजनाएँ,
इस थाली की रोटी के लिए बीत गई।
सातवीं पंचवर्षीय योजना का अंत निकट है,
उस मंजिल तक पहुँचने के लिए पता नहीं
कितने जंगल पार करने होंगे ।
वो देख ! मेरा पिता,
श्रम का देवता !
आज कितनी सदियों से
अडिग हिमालय की तरह
पसीने की गंगा बहा रहा है,
जिसमें नहा कर कई भिखारी मालामाल हो गए,
भाषण झाड़ नेता सचमुच निहाल हो गए,
हिमालय वहीं का वहीं है,
गंगा निकलती है, बहती है और बह कर
करोड़ों सागर पुत्रों के शव साथ ले
समुद्र में समा जाती है,
मेरा पिता भी वहीं का वहीं है,
उसके कंधों पर बहुमंजिले महल खड़े हैं,
उसके सिर पर रॉकिट उड़ते हैं,
उसी के पेट पर कम्प्यूटर चलते हैं,
और उसके पाँवों पर कारें दौड़ती हैं ।
रही रुख़सार की बात ! तो
रुख़सार की रौनक भी रोटी से होती है,
ख़ाली पेट तो नज़र भी ऊपर नहीं उठती,
इसलिए माँ-मैं तो वही
थाली जैसा चाँद लूँगा,
शायद, उस थाली में रोटी हो ।

कर्म की वाणी

● आर. के. तलगेरी

स. नि. प्र.



स्वेन ऋतुना सं वदेत ऋग्वेद 10-31-2

अपने कर्म से सम्यक् बोलें—

बोलना मनुष्य का सहज स्वभाव है, बिना बोले मनुष्य का रहना असंभव है। कोई और न मिले बोलने सुनने को तो, मनुष्य पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, यहां तक की पत्थरों से ही बात करने लगता है, मूर्तियों से ही प्रार्थना करता है, बोलता है, यदि किसी तरह इन सब से बोलने से मुक्ति पा भी ले तो स्वयं से तो बच ही नहीं सकता, अपने आप से बातें करता है, अपने मन से बातें करता रहता है। चुप रहना इसके स्वभाव के विपरीत है।

बोलना मनुष्य के लिए वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है. अन्य पशु-प्राणियों को ये वरदान बहुत थोड़ा, सीमित प्राप्त है। इसलिए बेचारे अपनी भूख-प्यास, दुख-बेदना को कहां ठीक से कह पाते हैं, विचार, भाव, अनुभव की अभिव्यक्ति का सबल साधन मात्र मनुष्यों को ही उपलब्ध है। यह मनुष्य की एक अलग विशेषता है। परमात्मा और प्रकृति की अनुठी देन है।

बोलना वरदान तो है परन्तु नासमझी से अभिशाप भी बना लेते हैं लोग, बोलने की कुशलता यश दिला सकती है तो अकुशलता से अपयश। मधुर वाणी से स्नेह बरसता है तो कटु वाणी से विष बिखरता है, सत्य वाणी से विकास होता है, असत्य से ह्रास होता है, इसी वाणी से मित्र बना सकते हैं। दुरुपयोग करें तो शत्रु भी बना सकते हैं। विनम्र वाणी मोह लेती है। अंहभरी वाणी हमें अकेला बना देती है, ये हम पर निर्भर है कि वाणी में क्या घोलें। रस या विष ? हम काम की बात करें या व्यर्थ-बकवास ? वाणी तो साधन है और हमें पूरी स्वत्रंता है, इस के उपयोग की। वाणी व्यापार के बिना मनुष्य का व्यवहार चल नहीं सकता है, वाणी खबर देती है-आदमी के सोच की, समझ की।

वाणी दो प्रकार की होती है। एक चर्म की, एक कर्म की। जीभ से बोलना चर्म की वाणी, तथा अपने कर्म से बोलना कर्म की वाणी। जीभ से जो बोलते हैं उसका अपना महत्व है, उसके अपने सु व दुप्रभाव हैं, लेकिन कर्म की वाणी का विशेष महत्व होता है क्योंकि उसका खास असर होता है।

परमात्मा कर्म की वाणी ही देखते हैं, कर्म की भाषा ही समझते हैं, उसी के अनुसार फल भी देते हैं। कितनी भाषाएँ हम जानते हैं, कैसा शुद्ध उच्चारण करते हैं, कैसी शैली में बोलते हैं, ये सब गौर्ण बातें हैं, असल बात यह है कि हमारे कार्य क्या हैं, बाबा तुलसीदास साफ-साफ कह गए—

"कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करहिं तस फल चाखा

बुद्ध कहते हैं आप क्या जानते हैं वो इतना महत्व का नहीं है, महत्व का तो वो है कि आप क्या करते हैं। इसी बात को सन्त विनोबा ने यूँ कहा-"हजारों मन तर्क की अपेक्षा तोला भर आचरन अधिक मूल्यवान है" समर्थ गुरु रामदास ने भी कहा कि, "बोले तैसा चाले, त्याची वंदावी पाउले" जो जैसा बोलता, वैसा ही आचरण करता है, वह पूज्यनीय है।

बचपन में एक कहानी पढ़ी थी, प्रसंग में उसका उल्लेख सटीक लग रहा है–सुनिए-भाव को पहचानिए-

परमात्मा ने अपने विशेष दूत से कहा कि जाओ पृथ्वी पर, और देखो कौन मेरा सबसे अधिक भजन करता है और कौन सब से कम ? दूत ने घूम फिर कर बड़ी मेहनत से एक सूची बनाई सबसे ऊपर उस पुजारी का नाम लिखा जो दिन में 16 घन्टे परमात्मा के नाम का जाप करता था तथा सबसे नीचे एक गरीब का नाम था जिसे परमात्मा के नाम लेने की ना फुर्सत थी ना सुध-समझ थी

परमात्मा ने कहा, इन दोनों के बारे में थोड़ा विस्तार से बताओ, दूत ने कहा, पुजारी जी की सेवा में दस जने लगे रहते हैं, कोई स्नान कराता है, कोई भोजन व्यवस्था करता है, कोई पंखा झलता है आदि-आदि, दस से सेवा लेकर बैठे-बैठे नाम जपते हैं, तोंद बढ़ गई है, चर्बी छागई है पूरे शरीर पर, दूसरा ये गरीब है फटे हाल दिन भर दूसरों की सेवा में लगा रहता है, सब के काम दौड़-दौड़ कर करता है, सेवा ही धर्म है, कर्म है, जाप है, भजन है इसके लिए, जो मिल जाता है उसे खाकर संतोष कर लेता है,

भगवान ने कहा ये कर्म से मेरा जाप करता है। अतः ये गरीब ही श्रेष्ठ भक्त है। क्योंकि केवल वो मेरा नाम लेता है जबकि ये मेरा काम करता है।

" काम आ खल्के खुदा के
कि इससे बढ़ कर कोई इबादत नहीं।"

अब समझें वेद की सूक्ति को 'स्वेन ऋतुना सं वदेत' है तो मंत्र का एक अंश लेकिन अपने आप में पूर्ण है, अर्थ है अपने (स्वेन) कर्म से (ऋतुना) सम्यक् (सं) बोले (वदेत), यहां जुबान से बोलने के बजाय कर्म से बोलने की बात वेद में कही गई है, तीन प्रकार से कर्म होते हैं:-मन से, वचन से, कर्म से-तीन ही प्रकार से वाणी अभिव्यक्त होती है-मनो-भाव से वाणी-विलास से और कर्म-व्यवहार से, तीनों में भेद नहीं हो अपितु एक रसता हो जो मन में है वही वचन में हो जो मन वचन में है वैसा ही कर्म हो-वचन और कर्म का सहचार परम आवश्यक है, कर्म विहीन वाणी अनास्था, अविश्वास व अनैतिक्ता बढ़ाने वाली होती है, कर्मोपेत वाणी आस्था, विश्वास और सदाचार की अभिवृद्धि करती है।

गुलाब को कहना नहीं होता, उस की सुगन्ध कहती है जैसे हीरा मुख से कब कहे लाख हमारा मोल, उसी की तरह श्रेष्ठ पुरुषों के कर्म ही उनकी सम्यक् वाणी होती हैं, सच्चे इन्सान की यही पहचान है कि वो जैसा कहता है वैसा करता है, वैसा ही बोलता है, करने और बोलने की अभिन्नता उसमें विश्वास बढ़ाती है, पाखंडी इन्सान कहेगा कुछ, करेगा कुछ, बोलने में मीठा, कर्म में कड़ुवा-तुलसीदास जी ने ऐसे लोगों के लिए कहा है—

पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
जे आचरहीं ते नर न घनेरे।

गांधी जी जैसा बोलते थे वैसा करते थे, राम जैसा कहते थे वैसा करते थे या जैसा करते थे वैसा ही बोलते थे, इसके विपरीत जो आचरण होता है उसे ही पाखंड़ी कहते हैं, वही कदाचार है।

कथनी और करनी उसी की समान होगी जो निरीक्षण करेगा-अपने कर्म का और अपने वचन का। बुद्धि की तराजू के दोनों पलड़ों में कर्म और वचन को रखकर समता लायेगा, ऐसे व्यक्ति के जीवनकर्म में भी और वचन में भी प्रभाव होगा, जो भीतर है वही बाहर प्रकट करेगा वचन से कर्म से, ऐसे व्यक्ति के

जीवन में सत्यता होगी, सुगन्ध होगी । वह नाटकीय या नारकीय जीवन नहीं जियेगा, वह सरल और सहज होगा, इसी से बनता है चरित्र और जिनके चरित्र उज्ज्वल होते हैं, उनके चित्र भी पूजे जाते हैं ।

एक सूफी कहानी है—एक मां का बेटा गुड़ बहुत खाता था, वह फकीर के पास लेकर गई, फकीर ने एक माह बाद बुलाया, फिर बड़े प्यार से बच्चे को कहा-बेटा अधिक गुड़ खाना बहुत हानि कर है, बच्चे पर प्रभाव हो गया । माँ ने कहा ये बात तो आप एक माह पूर्व ही कह सकते थे । फकीर बोला, तब में स्वयं गुड खाता था मुझे अधिकार नहीं था, अब मैंने एक माह में स्वयं गुड़ त्याग दिया है, अधिकार पूर्वक कहना चाहता था ताकि असर हो ।

मनुष्य अपनी जुबान से ही नहीं अपने कर्म से भी बोले । यही वेद-वचन 'स्वेन ऋतुना सं वदेत' यही सम्यक् वाणी है और यही है कर्म की वाणी ।



अमन चैन की अर्थी

● आर. एस. भृगु
मुख्य लिपिक
उप. मु. बि. इंजी. (का.)

दुनिया की हर चीज बदलती जा रही ।
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

यू. एन. ओ. ने मानव हित का काम किया,
वृक्ष लगा कर 'विश्व शान्ति वृक्ष' नाम दिया ।
उसी वृक्ष की पत्ती-पत्ती हिंसा से कुम्हला रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

धनी देश मिलकर कुचक्र चलाते हैं,
निर्धन भूखे देशों को भड़काते हैं ।
मानव जाति मानव को ठुकरा रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

कहीं भूखा कहीं प्यासा मानव भटक रहा,
पाने को जीवन, पैरों को पटक रहा ।
काल चक्र की आँधी उड़ती आ रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

सोचा था बागों में फूल खिलायेंगे,
नदी दूध की घर घर हम ले जायेंगे ।
नदी के बदले जनता खून बहा रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

आजादी की रक्षा पर मिट जायेंगे,
जाति भाषा धर्म के सारे भेद भुलायेंगे ।
पर आपस की फूट हमहीं को खा रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

मार्ग अहिंसा का बापू ने हमें दिया,
नेहरू जी ने पंच शील का उदय किया ।
पर ये दुनिया हिंसा को अपना रही,
अमन चैन की अर्थी उठती जा रही ।।

वचन वाटिका

पुस्तोता : **बद्रीनारायण पुरोहित**
व. लि. स्था : 2 (लोको)

1. हमें अपने आपको सिर्फ हिन्दू या मुसलमान या सिख, या पारसी या ईसाई या यहूदी आदि ही नहीं मानना है। हमें अपने-अपने धर्म के प्रति निष्ठावान रहते हुए भी यह कभी नहीं भूलना है कि हम सबसे पहले भारतीय हैं और अन्त तक भारतीय ही रहेंगे।
2. यह सुनहरा नियम है कि प्रत्येक बात तर्क और अनुभव की कसौटी पर परख लेनी चाहिये। इसका महत्त्व नहीं है कि वह बात किसके द्वारा कही गई।
3. मैं नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों ओर दीवारें खड़ी कर दी जाएं और मेरी खिड़कियाँ बन्द कर दी जायं। मैं तो यह चाहता हूं कि सभी देशों की संस्कृतियां मेरे घर के आस-पास स्वच्छन्ता पूर्वक विचरण करती रहें। किन्तु मैं किसी को भी यह अनुमति नहीं दूंगा कि वह मेरे देश की संस्कृति के ही पाँव उखाड़े।

—महात्मा गाँधी

1. जैसे हम होंगे वैसा ही हमारा भारत होगा। हमारे विचारों और कार्यों के अनुभव से ही भारत की शक्ल बनेगी। अगर हम महान होंगे तो हमारा भारत भी महान बनेगा। और यदि हम छोटे मन और संकीर्ण दृष्टिकोण वाले हुए तो हमारा भारत भी वैसा ही होगा।
2. सह-अस्तित्व का विकल्प केवल एक ही है—सामूहिक विनाश।
3. हम सफलता को अपनी बपौती तो नहीं मान सकते; किन्तु सफलता अकसर मिलती उन्हीं लोगों को है जो साहसपूर्वक लगन से कार्य करते हैं। सफलता उन लोगों को नहीं मिलती जो सम्भावित परिणामों से हमेशा भयभीत रहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरु

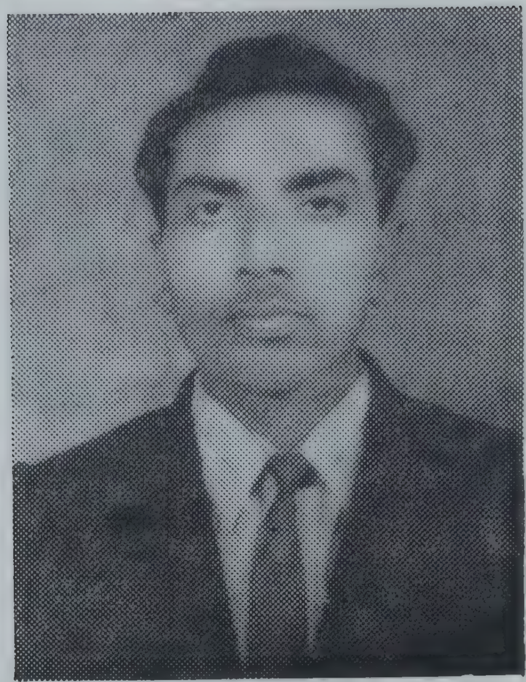
1. साम्प्रदायिक भावनाएं व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के लिए अभिशाप हैं, जो व्यक्ति से व्यक्ति को दूर करती हैं और समाज को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करती हैं। साम्प्रदायिक भावनाओं से हमें सावधान रहना है।
2. खून मत बहाइये, घृणा को भगाइये।

—इन्दिरा गाँधी

स्काउटिंग : बेहतर संसार

● आर. पी. मलिक

स. का. अधि. (का.)



आज के इस निराश स्वार्थी, आपाधापी, खींचा-तानी, धन-लोलुप तथा गलाकाट प्रतियोगिता के इस जगत में, जो अशाँति व उदासी छायी है, जो अंधकार फैला है, उसके लिये स्काउटिंग एक स्तम्भ का कार्य कर सकती है। आज का सारा विश्व ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां सच्चाई का अभाव, निकम्मांपन, बिना मेहनत किये फल को चाहना सर्वोपरी ध्येय बन गया है। कितनी ही संस्थाएं उभरी और लुप्त हो गईं परन्तु स्काउटिंग अभी तक सम्पूर्ण जगत में सक्रिय है। कारण यह एक ऐसा आन्दोलन है जो शैक्षिक, है और राजनीति की दलदल से दूर नि:स्वार्थ एवं आत्मतुष्टि का साधन है। स्काउटिंग मानव में मानवता तथा व्यक्ति में व्यक्तित्व अर्थात जीवन का सर्वांगीण विकास करती है। स्काउटिंग के निम्न गुणों द्वारा हम जीवन जीने की कला को सुन्दर सुखमय और सौहार्दपूर्ण बना सकते हैं।

1. **चरित्र निर्माण:**—स्काउटिंग में दार्शनिकता, नैतिकता तथा चरित्र निर्माण के अनन्त अवसर हैं। स्काउट नियम व प्रतिज्ञाएं, शिविर जीवन, हाइकिंग, स्काउट प्रार्थना, टेलीविधि, प्रार्थना सभा, खेल आदि ऐसे साधन हैं, जिनके माध्यम से बच्चे के चरित्र को निखारा जा सकता है।

2. **सुनागरिकता.**—किसी भी देश की स्काउटिंग हो, बालक को गुडटर्न के माध्यम से सुनागरिकता की डगर पर सुगमता से चलने की प्रेरणा प्रदान करती है। देश समाज के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा को जागृत करने का काम स्काउटिंग करती है।

3. **आस्तिकता**:—स्काउट्स के इस व्यापक परिवार में आने के लिये सर्वप्रथम ईश्वर में आस्था अनिवार्य है। वही बालक समस्त प्राणी मात्र को उसी परमात्मा का अंश मानकर गहन आस्था के साथ पर-सेवा, परोपकार-हित अपना तन-मन-धन अर्पित कर सकता है। नास्तिक कभी भी समस्त धरा के लोगों को अपनत्व की भाव धारा में बहता हुआ अनुभव नहीं कर सकता।

4 **विश्व बन्धुत्व**:—"वसुधैव कुटुम्बकम्" का लक्ष्य यूं तो भारतीय संस्कृति का स्तम्भ रहा है। परन्तु स्काउट नियम का चौथा पहलू समस्त संकीर्णता की जंजीरें तोड़कर सारे जगत को एकता के सूत्र में बांधता है। अखिल विश्व जम्बूरियां इसी बात का प्रमाण है। यही कारण है कि आज स्काउटिंग एक सौ चौपन देशों में अपने प्रेम, एकता और बन्धुत्व का संदेश दे रही है। नीला गगन जहां तक फैला है—वहीं तक स्काउटिंग इसी भावधारा को विकसित कर रही है।

5. आत्म-निर्भरताः—स्काउटिंग में दक्षता के बैज, बालक को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाते हैं। इससे उसके अन्दर छुपी अभिरुची जागती है। उनके विकास के साथ-साथ नौकरी के लिये सुनिश्चित चुनाव करने में मदद मिलती है। बालक अपने जीवन में जहाँ स्वयं अपनी सहायता करता है, वहां वह दूसरों की भी सेवा बखूबी कर सकता है।

6. बेहतर समझदारीः—स्काउटिंग में सहनशीलता के साथ कुछ समस्यात्मक खेलों के द्वारा बालक के अन्दर दूसरों को समझने तथा परिस्थितियों में एडजस्ट होने का अभ्यास कराया जाता है। जीवन के प्रति "तैयारी" तथा "कोशिश" करने की सुविधाओं के अनुसार बालक पहले दूसरों के पीछे स्वयं को रखकर विनम्रता व त्याग द्वारा दूसरों के दिल को जीत लेता है। यही कारण है कि बालक किसी प्रकार के झगड़े, द्वन्द या चिन्ता में नहीं पड़ता। हर समस्या का समाधान वह सहज भाव से खोज लेता है।

7. सुख और शान्तिः—जब बालक में यह समझ पैदा हो जाती है कि सारा जगत अपना है, एक ही भाईचारे का केन्द्र है, तो बड़ा होने पर वह द्वेष, स्वार्थ, अहंकार की संकीर्णता से दूर रहेगा। आज जो संसार में संघर्ष व झगड़े तथा अशान्ति का बोलबाला है, यह इसी कारण है कि वहां स्काउटिंग का प्रभाव नहीं है, बन्धुत्व का अभाव है। विश्व बन्धुत्व स्काउटिंग के द्वारा ही सम्भव है।

8. राष्ट्र-प्रेमः—स्काउटिंग, व्यक्ति की सीमा से परे अपने देश के प्रति न्योछावर होने की प्रेरणा भी देता है। जब हम मिलकर समूहगान गाते हैं, अपने देश की गरिमा व संस्कृति के भावभीने दृश्य अचेतन मन में उतारते हैं, आजादी के दीवानों के चरित्र पढ़ते व सुनते हैं, देश के प्रति वफादारी की शपथ लेते हैं, तब हम उनकी प्रत्येक वस्तु, उसके प्रत्येक रहस्य को सुरक्षित रखने का संकल्प करते हैं।

9. सामुदायिक विकासः—आज हम बीस सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में जो तत्परता दिखा रहे हैं उसके पीछे वह समाज का ऋण है जिसके द्वारा हम जिन्दा हैं। कोई भी व्यक्ति समाज के सहयोग के बिना सुखद् जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। कोमल पद से लेकर राष्ट्रपति स्काउट तक तथा ट्रुप स्तर पर प्रधानमंत्री शील्ड प्रतियोगिता का उद्देश्य भी यही है—जिस समाज में हम रहते हैं उसका समुचित विकास करना। वह हमारी योग्यता के अनुसार ही संभव है। जो लोग पिछड़े हैं, निरक्षर हैं उनको आगे बढ़ाना, उनको साक्षर बनाना हमारा पुनीत कर्त्तव्य हैं। इस प्रकार यदि हम समाज में अपना सेवादान, श्रमदान, शुभ विचार दान करेगें तो हमारा परिवेश विचारों से तथा हरियाली से सुखद् बन पड़ेगा।

10. सौन्दर्य बोध :—स्काउटिंग केवल कला के प्रति ही जागरूक नहीं करती वरन् बालक के अन्दर सौन्दर्यबोध का भी ज्ञान कराती है। शिविर में बालक जाता है तो रहने का सही तरीका सीखता है, कौनसी वस्तु कहां होनी चाहिये, उसे जानता है, वर्दी को सही ढंग से पहनना सीखता है। उपयोग में आने वाली वस्तुओं को, कम स्थान होते हुए भी किस तरीके से रखा जाये, ड्राइंगरूम की तरह वह प्रत्येक वस्तु को सुरक्षित व सुंदर ढंग से रखना सीखता है।

11. जिम्मेदारी निभाना—स्काउटिंग में टोली विधि ऐसी व्यवस्था है जिसमें हर बालक अपने लिये कुछ न कुछ जिम्मेदारी धारण करता है, उसे वह अपनी टोली की खातिर पूरा करता है। प्रत्येक बालक में कुछ न कुछ गुण होता है। सामाजिकता के परिवेश में उसमें त्याग, परोपकार आदि की भावनाएँ जागृत होती हैं।

12. प्रजातांत्रिक वातावरणः कितनी सुन्दर व्यवस्था है स्काउटिंग। मनोविज्ञान के अनुसार किशोरों को उन्हीं की स्वतंत्र व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया जाता है। वास्तव में 'टोली-विधि" जो स्काउटिंग की रीढ़ है, इसी व्यवस्था पर आधारित है। यह एक आदर्श व्यवस्था है।

13. साहसिक जीवनः—स्काउटिंग में हाइक, दक्षता-बैज पर कार्य, पर्वतारोहण, अश्वारोहण, धनुर्विद्या

आदि अनेक साहसिक कार्य-कलाप हैं जो स्काउट में उत्साह, जोखिम, आत्मविश्वास आदि को पैदा करने में समर्थ हैं। वीरता, धैर्य, आदि गुणों को भरने के लिये स्काउटिंग अनुपम सहयोगी है।

14. **स्वास्थ्य निर्माण:**—स्काउटिंग के मूलभूत आधारों में बालक के स्वास्थ्य को व्यायाम, ड्रिल, खेल-खिलाडी, तैराकी, हाइक, गेम्स लीडर आदि कार्य कलापों के द्वारा विकसित किया जाता है।

15. **समय का सदुपयोग:**—स्काउटिंग बालक की शक्ति को व्यर्थ में बहजाने से रोकती हैं। उसमें लगन भरती है कि वह अपने "टेस्टों" में व्यस्त रहे। अच्छे ही कार्यों की तरफ वह मुड़ा रहे, इसके लिये कार्यक्रमों को जुटाती है। उसकी शक्ति को विकसित करती है। उसमें सेवाभाव जगाकर उसकी शक्ति को सकारात्मक बनाती है।

16. **मनोरंजन:**—स्काउटिंग में स्वस्थ मनोरंजन प्रदान किया जाता है। हाइक, शिविर, कैम्प-फायर, संस्कार (दीक्षा), बैज प्रदान करना, अभिभावक संध्या आदि अनेक गतिविधियों के अतिरिक्त जम्बूरी, रास्ते की खोज, वाइडगेम, खेल-सिंहनाद आदि मनोरंजन के साधन हैं जो कि स्काउट की चेतना को विकसित कर क्षितिज में विचरण का आभास कराते हैं।

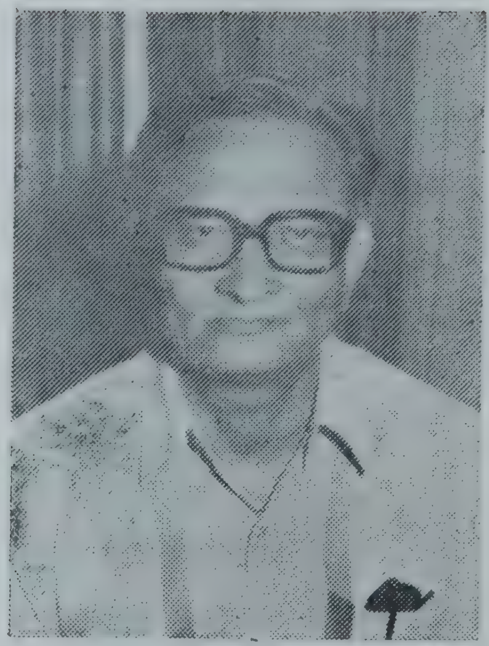
अतः इन्हीं की अद्भुत शृंखला में व्यतीत सुखद स्मृतियों के वशीभूत कहा जा सकता है कि "स्काउटिंग" से स्वस्थ तन व बेहतर इन्सान बनता है। बेहतर इन्सानों से बेहतर समाज और बेहतर समाज से बेहतर संसार का निर्माण होता है। आवश्यकता इस बात की है कि यदि सच्ची भावनाओं (स्काउट स्प्रिट) से ओत्-श्रोत् स्काउट हो तो अच्छे स्काउटों का निर्माण हो सकता है, अन्यथा यह कोरी कल्पना ही होगी। वस्तुतः ट्रूप संचालन एक साधन है, कर्मयोग है, पारिवारिक विकास है, सेवा भावना का क्रियात्मक रूप तथा जीवन जीने की सुन्दर कला है। आईये—

स्काउटिंग के पथ पर चलकर,
जीवन को हम सुखद बनाएँ।
करूणा को रोपें धरती में,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ॥

सुन्दर बन

● आर. सी. गुप्ता

(उत्पादन इंजी. लोको)



सुन्दर बन, कौन सुन्दर बनना नहीं चाहता ? सब चाहते हैं, सभी सौन्दर्य के उपासक हैं, कुरूपता विकृति, असुन्दरता कोई नहीं चाहता, लेकिन ये सुन्दरता है क्या ? क्या मापदंड हैं सौन्दर्य के ?

एक तो सुन्दरता होती है तन की, वह स्वस्थता और सुडौलता पर निर्भर करती है, रूप रंग पर कम आधारित होती है, मिसाल के तौर पर प्राय: गौरा रंग अच्छा मानते हैं, लम्बे घने काले केश हमारे यहां सुन्दर समझे जाते हैं, अफ्रीका में जितना काला रंग उतना ही सुन्दर रंग तथा छोटे-छोटे बाल पसन्द हैं, यूरोप में भूरे रंग के केश अच्छे माने जाते हैं, अर्थात् रूप रंग देखने वाले के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। मजनू को काली लैला सुन्दर दिखती थी, माँ को अपने बच्चे सुन्दर लगते हैं, फिर चाहे जैसा रंग रूप हो। कहने का तात्पर्य है कि सुन्दर लगना देखने वाले के मनोभाव पर अधिक निर्भर करता है, लेकिन स्वस्थ और सुडौल देह सबको अच्छी लगती है।

गांधीजी गुरुदेव रविन्द्रनाथ टेगौर के यहां ठहरे हुए थे। प्रात:भ्रमण दोनों का नियम था, एक प्रातः गांधीजी बाहर खड़े गुरुदेव की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब बहुत देर हो गई तो गांधीजी अन्दर कमरे में गए, देखते क्या हैं कि टेगौर आदमकद शीशे के सामाने खड़े लम्बे शुभ्र केश संवारने में लगे हुए हैं—काफी देर तक इस केश-सज्जा को निहारने के बाद कहा, गुरुदेव ! इस बुढ़ापे में इतने सजने-संवरने का क्या मतलब ? गुरुदेव ने कहा, गांधी ! बुढ़ापे में ही तो संवारना आवश्यक है, यौवन तो अपने आप में ही सुन्दर होता है, मैं नहीं चाहता कि मुझे देखकर लोगों को बुरा लगे–इससे उन्हें दुख होगा, ये हिंसा हो जायेगी, इसलिए सजता हूँ कि देखने वालों को देखकर खुशी हो, सुन्दर बनना, रहना अहिंसा है, असुन्दर रहना हिंसा है।

ये तो बात हुई देह की सुन्दरता की, जो कि गौण बात है, तो प्रधान बात क्या है ? प्रधान बात है असली सौन्दर्य की और वह है आत्मा का सौन्दर्य ! 'चारुरेधि' का अर्थ है अपने आत्म सौन्दर्य को विकसित करो, 'सत्यम् शिवम् सौन्दर्यम् में इसी 'सौन्दर्य' का संकेत है, पतंजलि के यम में जो 'शौच' शब्द है उसका भी अर्थ है बाहर भीतर की पवित्रता, भीतर यानि मन-चित आत्मा की पवित्रता।

सुकरात अपने समय का देह दृष्टि से कुरूप व्यक्ति था। फिर भी ज्ञानियों ने उसे अपने समय का

सबसे सुन्दर व्यक्ति बताया है। सन्त सती सुन्दर ही होते हैं। दुर्जन और वेश्या असुन्दर ही होते हैं। गांधी और लाल बहादुर निःसंदेह सुन्दर व्यक्ति थे।

कबीर के शब्दों में—

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवे काज।
हाड़ न बने आभूषण, त्वचा न बाजे बाज॥

मनुष्य के गुण बड़े होते हैं, वही उसका सौन्दर्य है। इसी में उसका बड़प्पन है। गुण ही तो मनुष्य के गहने हैं।

मनुष्य का सबसे मूल्यवान होता है, उसका चरित्र, चरित्र ही उसकी कसौटी है। धरोहर है। कहावत है धन खो जाए तो कुछ नहीं खोया, स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया, यदि चरित्र खोया तो सब कुछ खो दिया। चरित्र ही मनुष्य की वास्तविक सुन्दरता है—हजार जौहर हों आदमी में, लेकिन चरित्र नहीं तो कुछ भी नहीं। सौन्दर्य सिर्फ चरित्र का होता है, अन्यथा शरीर तो गन्दगी का ढेर है। जन्म ही गन्दगी से होता है। चरित्र ही आत्मा का सौन्दर्य है।

व्यक्ति का चरित्र सर्वोपरि है, इसी से परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का चरित्र बनता है, इस चरित्र का क्या माप दंड? किन गुणों को कहें चरित्र? आप्त वचन है—

मातृवत परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पश्यति॥

पहली बात पराई स्त्री को मां की तरह देखना, बलात्कार होते ही तब हैं जब पराई स्त्री मां-बहन-बेटी जैसी नहीं दिखती, राम की दृष्टि में मन्दोदरी मां जैसी थी, रावण की दृष्टि में सीता बहन-बेटी जैसी नहीं थी तब ही अपहरण किया। कोरे वेद के विद्वान होने से क्या होता है, रावण के पास चरित्र नहीं था, राम चरित्र के धनी थे।

दूसरी बात पराये धन को मिट्टी समझो। ये समझ जाग जाए मनुष्य की तो चोरी डाके लूट हो नहीं सकते। आदमी धोखा छल फरेब करता ही तब है जब उसे दूसरे का धन ललचाता है। राम ने तो लंका जीत कर भी विभिषण को सौंप दी, उपनिषद् में वचन 'कस्य धनम मा गृधः, कि सका है धन ललचामत। अपनी मेहनत पसीने और ईमान की कमाई ही मनुष्य का धन है, शेष सब पराया है, ये भाव चरित्र के अंग हैं।

तीसरी बात आत्मवत् सर्वभूतेषु, अपना जैसा सबको जानो, ईसा का वचन है, दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा दूसरे से तुम अपने लिए चाहते हो। मनुष्य दूसरे को अपने जैसा नहीं समझता, तब ही हिंसा-हत्या करता है। देवदत्त ने हंस को तीर मारा सिद्धार्थ ने उस तीर को निकालकर स्वयं को चुभा कर देखा पीड़ा हुई, तो जाना पर पीड़ा क्या होती है, बस पर पीड़ा मिटाने में जीवन लगा दिया, यही सिद्धार्थ आगे चल कर बुद्ध बने, तुलसी दास कहते हैं।

पर धन को माटी गिने, पर तिरिया मात समान।
ता हूं ते हरि ना मिले; तुलसीदास जमान॥

आज राष्ट्रीय चरित्र के अभाव की बात महसूस की जाती है। अन्याय, शोषण, रिश्वत, हिंसा, बलात्कार लोभ, बेईमानी फल फूल रही, कारण एक ही है मनुष्य के नैतिक चरित्र का ह्रास। चरित्रहीन व्यक्ति जहां भी जिस क्षेत्र में, जिस पद पर होगा अनैतिक कार्य करेगा, इसके विपरीत जहां नैतिक चरित्र के व्यक्ति होंगे वहां काम न्यायपूर्ण ढंग से अनुशासित होगा। वहीं कार्य कुशलता भी होगी।

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए वह सुन्दर बने, सज्जन बने, भला मानुष बने, यही जीवन का लक्ष्य है। इसी से व्यक्ति, समाज देश और विश्व का कल्याण होगा। और इसी से परमात्मा की भी प्राप्ति हो सकेगी सुन्दर बन। शीलबान बन॥ धर्मवान बन—

□□

केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण अधिनियम-1985

● विनोद प्रकाश मिश्र,

प्रधानाचार्य, प्रणाली तकनीकी विद्यालय, अजमेर



सरकार के सामने सरकारी कर्मचारियों के भर्ती एवं सेवा शर्तों के सम्बन्ध में विवाद और शिकायतों को शीघ्र और सुगमता से सुलझाने का प्रश्न बहुत दिनों से विचारधीन था। अतः प्रथम चरण में 27 फरवरी, 1985 को भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण अधिनियम—1985 को अपनी स्वीकृति प्रदान की। इसी अधिनियम के अन्तर्गत प्रशासनिक न्यायाधिकरणों की स्थापना की गई है जो केन्द्र और राज्यों के कार्यों से सम्बन्धित पदों तथा लोकसेवाओं पर नियुक्त व्यक्तियों की भर्ती और सेवा शर्तों के सम्बन्ध में शिकायतों और विवादों पर शीघ्र और सस्ते निर्णय करती है।

इस एक्ट के अनुसार केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण की मुख्य पीठ दिल्ली में रखी गई है और इसकी अतिरिक्त पीठें अन्य बड़े शहरों में स्थापित की गई। प्रारम्भ में ये अतिरिक्त पीठें इलाहाबाद, बंबई, बैंगलोर, कलकत्ता, गोहाटी, मद्रास, व नागपुर में रखी गई किन्तु फिर आवश्यकता होने पर अहमदाबाद, जोधपुर, जबलपुर आदि जैसे अन्य बड़े शहरों में भी स्थापित की गई हैं। मुख्य पीठ दिल्ली के साथ-साथ अन्य अतिरिक्त पीठें 2 अक्टूबर, 1985 से स्थापित की गई तथा इस तिथि से देश के सभी न्यायालयों के वे अधिकार भारतीय संविधान की धारा 136 के अन्तर्गत [उच्चतम न्यायालय को छोड़कर] भर्ती व सेवा शर्तों के बारे में सभी भारतीय सेवाओं के कर्मचारियों के विषय में ट्रिबुनल को स्थानांतरित हो जायेंगे। अर्थात् 2 अक्टूबर, 1985 के बाद से देश के अन्य सभी न्यायालयों [भारतीय संविधान की धारा 136 के अन्तर्गत उच्चतम न्यायालय को छोड़कर] को भारतीय सेवाओं के भर्ती व सेवा शर्तों से सम्बन्धित शिकायतों तथा विवादों का निर्णय करने का अधिकार नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस विषय के सभी मुकदमें या इस प्रकार की जो भी कार्यवाही न्यायालयों में विचारधीन होगी। [उच्च न्यायालय अथवा उच्चतम न्यायालय के विचाराधीन अपीलों को छोड़कर] वे सब ट्रिबुनल को स्थानांतरित हो जायेगी।

इस न्यायाधिकरण [ट्रिबुनल] के अधिकार क्षेत्र से निम्न विभागों के कर्मचारी बाहर रखे गए हैं:—

[क] थल सेना, वायु सेना, नेवी व अन्य केन्द्रीय सेना के कर्मचारी।

[ख] औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 के अन्तर्गत आने वाले कर्मचारी।

[ग] उच्चतम अथवा उच्च न्यायालयों के अधिकारी व कर्मचारी ।

[घ] पार्लियामेन्ट के दोनों हाउस [राज्यसभा व लोकसभा] के सैक्रेटेरिएट के कर्मचारी । विधानसभा के सैक्रेटेरिएट तथा केन्द्र शासित प्रदेश का यदि कोई विधान मण्डल है तो उसके कर्मचारी ।

जो व्यक्ति किसी आदेश के कारण कष्ट में है अथवा जिससे कोई अन्याय के कारण दुखी है और यदि वह आदेश न्यायाधिकरण के क्षेत्र में आता है तो वह व्यक्ति न्यायाधिकरण के समक्ष उस आदेश के विषय में प्रार्थना कर सकता है जिससे कि उस आदेश पर पुन: विचार-विमर्श किया जा सके । इस प्रार्थना-पत्र को एक निर्धारित रूप से तैयार किये गये प्रोफार्मा के रूप में प्रस्तुत करना होगा । उस प्रार्थना—पत्र को रजिस्ट्री के द्वारा डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से अथवा किसी वकील जो कि इस न्यायाधिकरण के कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित हो तथा उस न्यायाधिकरण की पीठ के कार्यक्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत हो जहाँ पर वह व्यक्ति कार्यरत हो, प्रस्तुत किया जा सकता है और यदि कर्मचारी चाहे तो वह दिल्ली की प्रमुख पीठ में भी आवेदन कर सकता है । इन विभिन्न पीठों का कार्यक्षेत्र निम्न प्रकार से विस्तृत किया गया है:--

क्रम सं.	पीठ का स्थान			वर्तमान/पता प्रस्तावित	पीठ का अधिकार क्षेत्र
1.	नई दिल्ली [मुख्य पीठ]			मुख्य ब्रांच, फरीदकोट हाउस, कोपरनियस मार्ग, नई दिल्ली-110001	देहली के अन्तर्गत केन्द्रीय शासित सीमा ।
2.	अहमदाबाद [अति. पीठ]			अहमदाबाद बेंच, ईडी पटेल हाउस, सरदार पटेल कॉलोनी के पास, उस्मानपुरा, अहमदाबाद ।	गुजरात राज्य
3.	इलाहाबाद [अतिरिक्त ,,]			इलाहाबाद बेंच, 23-अ, थोर्नाहिल रोड, इलाहाबाद 220021	उत्तरप्रदेश
4.	बेंगलोर	,,	,,	बेंगलोर बेंच, कार्माशियल काम्पलैक्स, [बी. डी. ए.] इन्दिरा नगर, बंगलोर 560038	कर्नाटक राज्य
5.	कलकत्ता	,,	,,	कलकत्ता बेंच, सीजीओ काम्पलैक्स निजाम पैलेस कम्पान्ड, आचार्य जे सी बोस रोड, कलकत्ता-700020	पश्चिमी बंगाल, सिक्किम, तथा अंडमान व निकोबार के केन्द्रीय शासित प्रदेश
6.	चण्डीगढ़	,,	,,	चण्डीगढ़ बेंच, बिल्डिग नं. 102/103, सैक्टर नं. 34-ए, चण्डीगढ़ ।	जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा चण्डीगढ़ का केन्द्रीय शासित प्रदेश ।
7.	कटक	,,	,,	कटक बेंच, डोलामुंडाई,	उड़ीसा राज्य
8.	गोहाटी	,,	,,	गोहाटी बेंच, राजगढ़ रोड, भवनगढ़ रोड, गोहाटी-781005 ।	आसाम, मनीपुर, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा तथा अरूणाचल प्रदेश व मीजोरम के केन्द्रीय शासित प्रदेश

9.	हैदराबाद	अति. पीठ	हैदराबाद बेंच, न्यू इन्शोरेंस बिल्डिग काम्पलैक्स, आविद, तिलक रोड, हैदराबाद ।	आन्ध्र प्रदेश ।
10.	जोधपुर	,, ,,	जोधपुर बेंच, प्लाट नं. 170, मसूरिया, शास्त्री नगर के पास, जोधपुर ।	राजस्थान राज्य ।
11.	जबलपुर	,, ,,	जबलपुर, बेंच, क्रिश्चियन एसोसियेशन फोर रिडियो एण्ड विज्युअल सर्विस, 15, सिविल लाइण्स, जबलपुर ।	मध्य प्रदेश राज्य
12.	मद्रास	,, ,,	मद्रास बेंच, तमिलनाडू टैक्सबुक सोसाइटी बिल्डिग, डी पी.आई. कम्पाउण्ड, कालेज रोड नुंगाबंरवम, मद्रास–600 006 ।	तमिलनाडू तथा पांडेचेरी के केन्द्रीय शासित प्रदेश ।
13.	न्यू बम्बई ।	,, ,,	न्यू बोम्बे बेंच, सीजीओ काम्पलैक्स कोन्कण भवन के पास, सी.बी.डी. न्यू बम्बई–700 020 ।	महाराष्ट्र-राज्य दादरा व नगर हवेली तलागोवा, दमन व दियू के केन्द्रीय शासित प्रदेश ।
14.	पटना	,, ,,	पटना बेंच, बी. एम. ऐन्टर प्राइज, 88-ए, श्रीकृष्ण नगर, पटना ।	बिहार राज्य ।
15.	अरनाकुलम बेंच	,, ,,	अरनाकुलम बेंच, कन्दन कुलाढी टार्बस् एम. जी. रोड–अरनाकुलम ।	केरल राज्य व लक्षद्वीप के केन्द्र शासित प्रदेश ।
16.	नागपुर	,, ,,	— —	महाराष्ट्र के अकोला, अमरावती, भंडारा, बुलदाना, चान्दा, नागपुर, वर्धा, योतमान तथा गढ़चिरोली के जिले ।

कर्मचारियों को अपने प्रार्थना-पत्र के साथ 50/- रूपये की निर्धारित फीस बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर के द्वारा भेजनी होगी ।

10 [1[कर्मचारियों को अपने प्रार्थना-पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेजों की छः प्रतिलिपियां पेपर बुक के रूप में जो कि सब प्रकार से पूर्ण विवरण के साथ स्पष्ट हों, के साथ सम्बन्धित अतिरिक्त पीठ में प्रस्तुत करना होगा ।

[क] उस आदेश की प्रमाणित कापी जिसके विरुद्ध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

]ख] उन सभी लिखित कागजों की प्रमाणित प्रतिलिपि जिनका कि कर्मचारियों ने अपने प्रार्थना-पत्र में उल्लेख किया है और जिन पर कि उसका प्रार्थना-पत्र आधारित होगा ।

[ग] रूपये 50/- के डिमांड ड्राफ्ट या पोस्टल आर्डर के रूप में जो फीस देय है और प्रार्थना-पत्र के साथ भेजी जा रही है, उसका विवरण ।

[घ] जो भी लिखित कागजात प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उनकी विस्तृत सूची ।

[II] उपरोक्त परिच्छेद 10 [I[में उल्लिखित सभी दस्तावेजों को साफ-सुन्दर अक्षरों में डबल स्पेसिंग में कागज के एक ओर टाइप या प्रिंटेड किये जाने चाहिए और क्रम से लगे हुये होने चाहिये तथा किसी गजटेड अधिकारी द्वारा प्रमाणित किये हुए होने चाहिए।

[III] यदि दावे [सूट] या कार्यवाही [प्रोसिडिंग्स] को किसी [एजेन्ट अभिकर्त्ता] के द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा हो तो उस अभिकर्त्ता का भी उस प्रार्थना-पत्र में उल्लेख होना चाहिए। यदि अभिकर्त्ता एक कानूनी वकील आदि है तो उसे उस प्रार्थना-पत्र के साथ निर्धारित वकालतनामा भी प्रस्तुत करना होगा जिससे उसे उस कर्मचारी की ओर से केस की पैरवी करने का अधिकार प्राप्त हो। यदि कोई चाहे तो वह किसी एजेन्ट या वकील के भी अपना प्रार्थना-पत्र स्वयं प्रस्तुत कर सकता है।

इस प्रकार के मामलों को शीघ्र निपटारे के लिए एक विशेष प्रणाली का उपयोग किया जायेगा जिसका विस्तृत विवरण केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण अधिनियम [पद्धति] नियम 1985 में उपलब्ध है। कर्मचारी के लिए यह देख लेना अति आवश्यक होगा कि उसका प्रतिवेदन निर्धारित प्रोफार्मा के अन्दर है और उसमें उल्लिखित सभी दस्तावेजों को ठीक से प्रस्तुत किया गया है। केस सम्बन्धित कागजातों की जांच करने व रजिस्टर होने पर यह न्यायाधिकरण के सम्मुख प्रस्तुत किया जायेगा। न्यायाधिकरण उस प्रार्थना-पत्र तथा उसके साथ संलग्न दस्तावेजों को देखकर और यदि आवश्यक होगा तो न्यायाधिकरण दोनों पार्टियों के मौखिक प्रश्नोत्तर व वार्तालाप के आधार पर अपना निर्णय देंगी। अतः कर्मचारी के लिए यह परम हितकर होगा कि वह यह सुनिश्चित कर लेवे कि केस संबंधित दस्तावेजों सहित पूर्ण विवरण के साथ प्रस्तुत किये गये हों। इस अधिनियम के अन्तर्गत निश्चित अवधि के अन्दर प्रार्थना-पत्र न्यायाधिकरण के सम्मुख प्रस्तुत करना आवश्यक है। साधारणतया किसी आदेश के विरूद्ध कर्मचारी को अपना प्रार्थना-पत्र न्यायाधिकरण के सम्मुख एक वर्ष के भीतर कर देना चाहिये, तभी न्यायाधिकरण उस पर कार्यवाही करेगी। फिर भी इस अधिनियम के खण्ड 21 [2] के अन्तर्गत उसे यह अधिकार दिया गया है कि वह ऐसे केसों को भी विचारार्थ स्वीकार कर सकती है जो कि तीन वर्ष के अन्दर या उससे अधिक समय का हो गया है तथा कर्मचारी उस आदेश की निर्धारित तिथि के अन्दर किन्हीं विशेष परिस्थितियों के कारण प्रतिवेदन नहीं कर सका है और उन कारणों से न्यायाधिकरण संतुष्ट हो जाती है।

न्यायाधिकरण के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह सिविल प्रोसिजर कोड 1908 में उल्लिखित पद्धति को अपनायें किन्तु वह स्वाभाविक न्याय के सिद्धान्तों तथा भारत सरकार द्वारा प्रचलित नियमों को ध्यान में रखते

हुए भारतीय पेनल कोड की धारा धारा 198, 210 व 228 के अनुसार कार्यवाही कर सकती है। इस न्यायाधिकरण को उच्च न्यायालय के अधिकार व क्षमता प्राप्त है।

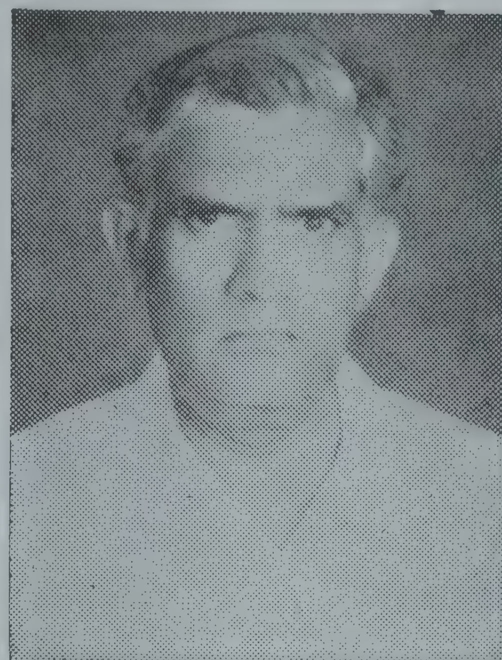
भारत सरकार की ओर से प्रत्येक न्यायाधिकरण के सम्मुख सरकार की ओर से केस की पैरवी करने के लिए सलाहकार नियुक्त किये गये हैं जो कि सरकारी पक्ष की ओर से केस लड़ेंगे। इस अधिनियम की धारा 23 [2] के अन्तर्गत भारत सरकार किसी भी व्यक्ति को (यह आवश्यक नहीं हैं कि वह एक कानूनी वकील हों) उसकी ओर से केस प्रस्तुत करने के लिए नियुक्त कर सकती है। विभिन्न मंत्रालय से एक या दो वरिष्ठ अधिकारी जो कि विभिन्न विभागों से उनके पदानुसार व आवश्यकतानुसार विभिन्न न्यायाधिकरण के सम्मुख सरकार की ओर से केस प्रस्तुत करने के लिए मनोनीत किये जाते हैं।

प्रशासनिक न्यायाधिकरणों द्वारा दिये गये निर्णय अन्तिम निर्णय होंगे जो दोनों पार्टियों को मानने होंगे। न्यायाधिकरणों द्वारा दिये गये निर्णयों को उनके आदेशों में बतलाये समयानुसार कार्यान्वित करने होंगे या जिन आदेशों में समय का उल्लेख नहीं होगा उन आदेशों को अधिक से अधिक छः माह में कार्यान्वित करने होंगे।

इस प्रकार सस्ता और शीघ्र न्याय प्राप्त कराने की दिशा में यह क्रान्तिकारक कदम है जिसका अधिक से अधिक लाभ लिया जाना चाहिए।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित—

एन. एल. तिवारी



ए. रिगो
सचिव

कमल सिंह
कोषाध्यक्ष

कैलाश सिंह चौहान
उपाध्यक्ष

कैरिज स्पोर्ट्स क्लब अजमेर

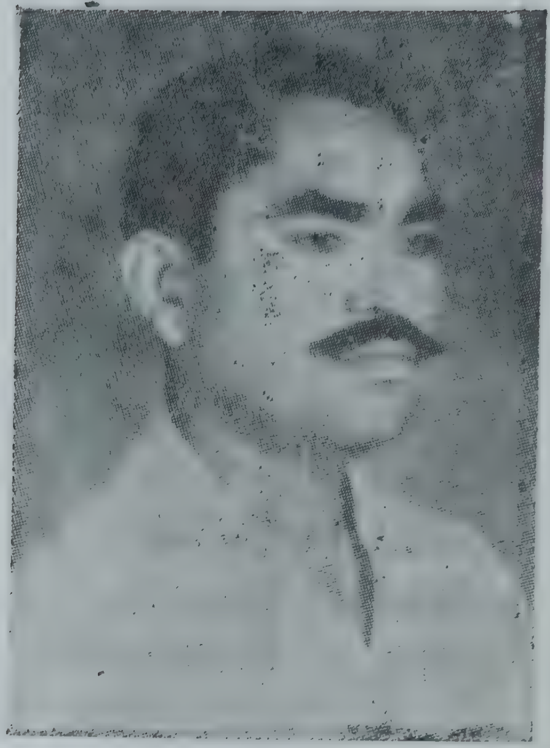
में

आपका हार्दिक स्वागत है ।

विश्व शान्ति

● शिवराज शर्मा

लेखा अधिकारी (का. व. भ.)



पिछले कुछ समय से प्रत्येक वर्ष को राष्ट्र संघ द्वारा किसी न किसी उद्देश्य से सम्बन्धित कर के मनाये जाने की घोषणा करने की प्रथा चल निकली है। इसी श्रृंखला में वर्ष 1986 को शान्ति वर्ष के रूप में मनाये जाने की घोषणा भी की गई। उद्देश्य पूर्ति में कहां तक सफलता मिली यह एक विचारणीय विषय है। लेकिन हां, शान्ति वर्ष मनाये जाने के उपक्रम में "शान्ति" शब्द का प्रयोग तथा उच्चारण विभिन्न देशों में विभिन्न अवसरों पर अनेकों बार हुआ है। यदि और कोई उपलब्धि न भी हुई हो तो यह भी एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

2. शान्ति वर्ष मनाये जाने की आवश्यकता इस बात को सिद्ध करती है कि हम इस समय कितनी भीषण अशान्ति के वातावरण में रह रहे हैं। यह बात दूसरी है कि प्रचुर मात्रा में होने के कारण हमें अशान्ति का इतना अहसास नहीं होता है। विश्व की दो महाशक्तियां एक दूसरे पर श्रेष्ठता प्रमाणित करने की होड़ में लगातार अशान्ति के सृजन में निमग्न हैं। बात भूतल व महासागरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि 'स्टार वार' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समस्त अन्तरिक्ष को अशान्त बनाने का प्रयास पुरजोर पर है। एक राष्ट्र दूसरे पर खार खाये हुए है। चाहे अफ्रीका हो या एशिया, यूरोप हो अथवा अमरीका सब जगह एक ही स्थिति है। कहीं जाति व रंग के नाम पर अशान्ति है तो कहीं धर्म के नाम पर, कहीं राष्ट्रीयता को लेकर कलह है तो कहीं स्वायत्तता को लेकर।

3. लोकतन्त्र में जहां कई अच्छाइयां हैं, एक बुराई जो पनपी वह है येन केन प्रकारेण सत्ता में घुसने का प्रलोभन। हो भी क्यों नहीं—जो इसमें घुसता है मदमस्त हो जाता है तथा साम, दाम, दण्ड भेद से वापिस बाहर नहीं निकलता है। सहजता से सत्ता तक न पहुँच पाने पर उत्पन्न होता है आक्रोश, ईर्ष्या व द्वेष, जिसने जन्म दिया है उग्रवाद व आतंकवाद को। आज हमारे जीवन में जितनी अशान्ति इस आतंकवाद से पैदा हुई है उतनी किसी भी काल में अन्य कारण से लगभग नहीं रही। मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उठता जा रहा है। बाड़ खेत को खाने लगी है। चारों ओर आपाधापी मची हुई है। महंगाई सुरसा की तरह मुंह बाँये चली आ रही है। गरीब और अधिक गरीब व लाचार होता जा रहा है।

4. ऐसे समय में राष्ट्रसंघ ने शान्ति की बात की। वर्ष भर शान्ति को याद करते रहने का अवसर प्रदान

किया तदनुरुप पहल भी हुई। भारत सहित छः राष्ट्रो ने निरस्त्रीकरण की मुहिम छेड़ी। रुस व अमरीका के शासनाध्यक्ष पहली बार परमाणु-युद्ध की विभीषिका को शान्त करने के प्रयास में आमने-सामने बैठे। भारतीय प्रधान मन्त्री के सद्प्रयासों से गुट-निरपेक्ष आन्दोलन को सक्रिय बनाने के प्रयत्न हुए। आतंकवाद का दृढ़ता से मुकाबला करने का संकल्प दोहराया गया। पहल हुई, प्रयत्न किये जा रहे हैं परन्तु कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आ रहे हैं। समस्या वहीं कि वहीं। कदाचित और अधिक विकराल रूप धारण करें। आज आवश्यकता है गम्भीरता से विचार करने तथा मूल कारणों का पता लगा कर समुचित समाधान ढूँढ़ने की।

5. वैज्ञानिक प्रगति के इस युग ने जहां भौतिक सुख-सुविधाओं की भरमार पैदा की है वहीं मानसिक अशान्ति को बढ़ाया है। भौतिक सुविधाओं का कोई अन्त नहीं है और इस अन्तहीन मरीचिका को पाने में मनुष्य कपने चतुर्दिक अशान्ति का वातावरण निर्मित करता चलता है। यहीं से सिलसिला प्रारम्भ होता है अशान्ति का। भौतिक उपलब्धियों की क्रिया-प्रक्रिया में मनुष्य लिप्त होता जाता है। जिसे दो घड़ी शारीरिक विश्राम के लिए फुरसत नहीं है वह मानसिक विश्राम के बारे में तो सोच ही नहीं सकता। परिणाम-स्वरुप मानसिक तनाव, घृणा, विद्वेष, छल-कपट, दम्भ व मोह के कुचक्र में फंस जाता है। मानसिक तनाव से घिरे व्यक्तियों से जिस समाज की संरचना होती है तथा जिस राष्ट्र का निर्माण होता है वह समाज अथवा राष्ट्र किस प्रकार अशान्ति से बचा रह सकेगा।

6. इस विवेचन को दृष्टिगत रखते हुए मूल विषय पर लौटें तो हम पाते हैं कि विश्व शान्ति या राष्ट्र शान्ति का मूल श्रोत व्यक्ति की शान्ति में है। व्यक्ति यदि भौतिकता की चकाचौंध में आकर मानसिक तनाव का शिकार न बने तो उद्विग्नता व अशान्ति का प्रादुर्भाव नहीं होगा। वस्तुतः हमने हमारी प्राचीन संस्कृति के पोषक मनीषियों व ऋषि मुनियों के बताये मार्ग को छोड़ दिया है। चौबीस घंटों में से कुछ भाग यथा लगभग एक घंटा (प्रातः-सायं मिला कर) हमें ईश्वर-चिन्तन अथवा चित्त की एकाग्रता में लगाना अपेक्षित है। ईश्वर चिन्तन अथवा विचार शून्यता आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ मानसिक विश्राम भी उपलब्ध कराती है। मानसिक विश्राम ही शान्ति का सृजन करता है।

7. हमारे आर्षग्रन्थ वेद में आध्यात्मिक, आधिदेविक व आधि-भौतिक शान्ति की कामना की गई है। शान्ति की कामना करते हुए वेद-मन्त्र केवल व्यक्ति विशेष या क्षेत्र विशेष की शान्ति नहीं चाहता है वरन् सम्पूर्ण अन्तरिक्ष की शान्ति के लिए आह्वान करता है। वेद के इस शान्ति मन्त्र का हम हमारे जीवन में समावेश करें व उसके अनुरुप शान्ति की कामना ही न करें वरन् "मनसा वाचा कर्मणा" इस के सन्देश को अपने जीवन में ढालें। यही एक मात्र मार्ग है जो चतुर्दिक अशान्ति के अन्धकार में शान्ति की आशा-किरण की झलक दिखाने में सक्षम है। शान्ति पाठ के इस निम्नलिखित वेद मंत्र में ही विश्व शान्ति निहित है–

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
ओम् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।



ढाई अक्षर

● ए. ए, रामन

स. का. प्रबन्धक (संयंत्र) (लोको)

प्राय: ग्रन्थपाठियों [ज्ञानियों-विद्वानों] को अहंकार हो जाता है। जानने को ही वे सब कुछ मान लेते हैं। बुद्ध कहते हैं कि–इस बात पर खास ध्यान मत रखो कि तुम जानते क्या हो ? यह देखो कि तुम करते क्या हो। तुम्हारी करनी ही तुम्हें पार लगाएगी। संत तुलसीदास जी ने भी कर्म को ही प्रधान माना है। गीता में श्री कृष्ण ने भी कर्मयोग की ही प्रधानता बताई है। आचार्य विनोबा ने भी यही कहा था कि मण भर ज्ञान से रत्ती भर अमल बेहतर है। स्वामी दयानन्द ने कहा था कि कोई बहुत से ग्रन्थ याद ही क्यों न कर ले किन्तु यदि वह उनके अनुसार आचरण नहीं करे तो वह वैसे ही है जैसे किसी गधे पर ग्रन्थों का बोझ लाद दिया गया हो।

दो गृहस्थ आपस में मित्र थे। बुद्ध का उपदेश सुनकर गृहस्थी छोड़कर भिक्षु हो गए। गृहस्थी का अर्थ है। घर में जिसकी स्थिति हो, जो घर से बंधे हुए हों–गृह का अर्थ है जो ग्रहण करें, पकड़े, खींचे। 'स्थ' से अर्थ है–रूके, ठहरे, अर्थात् जिनका ठहरने–रुकने का नियत स्थान होता है, वे गृहस्थ ही हैं चाहे पत्नि-बच्चे न भी हों। जिनका कोई घर नहीं, किसी स्थान विशेष से कोई लगाव नहीं, वे गृहस्थ नहीं कहे जा सकते। बुद्ध को लाखों लोगों ने सुना पर सभी ने तो घर नहीं छोड़ा। सुनने-सुनने में अन्तर है। इन्होंने पूर्ण मनोयोग से सुना तो "वसुधेव कुटम्बकम् की दृष्टि बनी और सारा संसार ही घर हो गया।

भिक्षु होकर एक ने साधना पर विशेष ध्यान दिया और वह शीघ्र ही अर्हन्त पद को प्राप्त हुआ। दूसरे ने खूब स्वाध्याय किया, अनेकानेक ग्रन्थ पढ़े और वह आचार्य हो गया। किन्तु श्रवण का अधिकारी नहीं बन सका। दोनों की गति-स्थिति में बड़ा अन्तर हो गया, एक मंजिल के समीप जा पहुंचा, दूसरा रास्ते में ही रह गया। ऐसा क्यों हुआ ? यह पूछने पर बुद्ध ने बताया कि ग्रन्थवाचक उस ग्वाले के समान है जो दूसरे की गायें गिनने में लगा है तथा साधना-रत्त रहने वाला स्वामी के समान होता है। चाहे कोई कितने भी ग्रन्थ पढ़ने वाला हो लेकिन प्रमादवश यदि उसके अनुसार आचरण नहीं करता है तो सब व्यर्थ है। जानने से पुण्य नहीं होता करने से होता है।

आज हम ग्रन्थों को लेकर विवाद करते हैं। आर्य, वेद को भगवान की वाणी मानते हैं। मुसलमान, कुरान को खुदा का हुक्म मानते हैं। बौद्ध, त्रिपिटिक को श्रेष्ठ मानते हैं। किन्तु उन पर आचरण कोई नहीं करता। संत तुलसीदास जी ने कहा था—

" पर उपदेश कुशल बहुतेरे
जे आचरहीं, ते नर न घनेरे।

वस्तुत: हममें से अधिकतर लोगों ने ग्रन्थों को पढ़कर अपने में ग्रन्थियां पैदा कर ली हैं। अहंकार पैदा किया है, स्वार्थपरता और संकीर्णता पैदा कर ली है। अमर्यादित-उच्छृंखल एवं हिंसक मनोवृत्ति पैदा कर ली है। कम से कम काम और अधिक से अधिक दाम,चाहे लूट-खसोट, शोषण, भ्रष्टाचार, चोरी-बेईमानी का ही सहारा क्यों न लेना पड़े, चाहे व्यक्ति, समाज संस्कृति और राष्ट्र का कितना ही नुकसान क्यों न करना पड़े, हमने तो अपने में भोग-विलास और एश्वर्य जुटाने की प्रवृत्ति पैदा कर ली है। एक शब्द में यह कहना पर्याप्त होगा कि आप बड़े से बड़े जिस किसी भी पाप की कल्पना कर सकते हैं ; आप आये दिन उससे भी बढ़े-चढ़े कुकृत्यों के बारे में सुन सकते हैं। इसीलिए तो कहा है—

**पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा पण्डित भया न कोय
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ें सो पण्डित होय।**

□□



लग रहा अनजान सा अपना ही ये घर

श्रीमती मालती तिवारी

हिन्दी सहायक

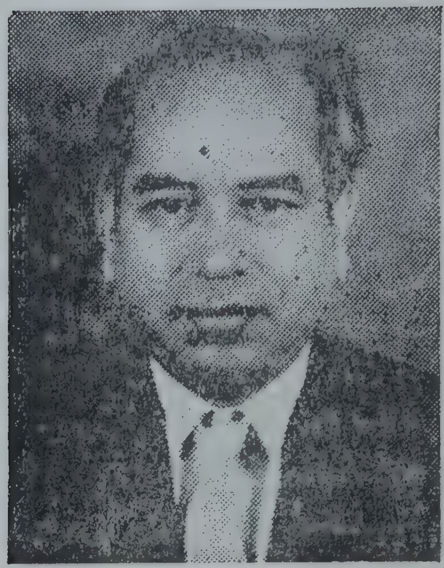
जख्मे जिगर पर आज तुम मरहम लगादो,
स्नेह का प्याला अधर तक आज लादो,
खून के कतरे बहाये बहुत लेकिन,
प्यार की अब तो मधुर गंगा बहादो।
चीखता है कौन यह आवाज किसकी ?
घुट रही है श्वांस लेता कौन सिसकी ?
जिंदगी है मौत के आधीन किसकी ?
गंध घुलती है हवा में आज विषकी।
इन हवाओं में मधुरता आज लादो,
क्लेश के परचम पे चिंगारी लगादो,
द्वेष की अग्नि जलाई बहुत लेकिन,
प्यार के अब तो मधुर झरने बहादो।
ये क्यों दिखाई दे रहा है आज मंजर,
भाई ने भाई पे ताना है क्यों खंजर,
दोस्त देखो दोस्त से हैं क्यों रहा डर,
लग रहा अंजान सा अपना ही ये घर।
विश्वाश को सब के दिलों में फिर जगादो,
अविश्वास की छाया दुनिया से मिटादो,
छा गई है जो दिलों में कालिमा सी,
प्रेम का दीपक जलाकर हटादो।
गर्दनें कटने को तो बनती नहीं हैं,
अस्मते लुटने को तो बनती नहीं है,
मुट्ठियां भाई पे तो तनती नहीं हैं
नाश हित मातायें सुत जनती नहीं हैं।
लाश के सौदागरों को अब मिटादो,
खून के धब्बे धरा से सब हटादो,
जो चाहता हे मुल्क का गौरव मिटाना,
नामों निशा उसका धरा से तुम मिटादो।

उत्तमम् स्वार्जितम् वित्तम्, मध्यमम् पितुरार्जितम्।
अधमम् भ्रातृ वित्तंच, स्त्रीवित्त मधमाधम्।

एक पी–एचडी कन्या

● आर. एच. गुरुस्वामी,

स.का.प्र (डीजल)



यह सुनी-सुनाई बात नहीं हैं। हम स्वयं खुली आखों से हर समय देख रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं कि कम पढ़े-लिखे भारत की बनिस्पत आज का ज्यादा पढ़ा-लिखा भारत अधिक अशान्त है। कम पढ़े लिखों की बनिस्पत अधिक पढ़े-लिखों में अपराधवृति का बाहुल्य है और उनके अपराध भी नृशंस और घिनौने हैं। हिंसा-रक्तपात. कालाबाजारी, दो नंबर के धंधे, लूट-खसोट, बेईमानी, धोखा-धड़ी, असहिष्णुता एवं अमानवीयता का आचरण सर्वत्र व्याप्त है और उनके पीछे तथाकथित पढ़े-लिखों का ही अधिक हाथ देखा गया है।

हम देखते हैं कि जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता गया वैसे-वैसे अशान्ति भी बढ़ती हुई पाते हैं। गंवार अशिक्षित लोग कम अशान्त थे। अब जो विज्ञान ने तरक्की की उससे एक तरफ सुख-सुविधा बढ़ी है तो दूसरी तरफ आधुनिक अस्त्र-शस्त्र भी ऐसे-ऐसे बने हैं कि चन्द क्षणों में लाखों-करोड़ों को मौत की नींद सुलाया जा सकता है। आज शिक्षित आदमी अधिक नये-नये तरीकों से ठगी बेईमानी करने में पारंगत हो गया है, जबकि गांव का आदमी आज दो जून रोटी के लिए दिन भर कड़ी मेहनत करता है। लगता है शिक्षा के नाम पर चालाकी बढ़ गई हैं, स्वार्थ बढ़ गया, हिंसा बढ़ गई है, अहंकार बढ़ गया है। स्नेह विनम्रता, परहित भाव घट रहा है।

इसका यह अर्थ नहीं कि शिक्षित होना बुरा है अथवा अशिक्षित रहना अच्छा है। शिक्षा तो जीवन है। कहा भी हैं-"शिक्षा विहीना पशुभीः समाना" इसके साथ यह भी कहा गया है कि" विद्या ददाति विनयम्, विनयम् ददाति पात्रताम्" यह कैसी विडम्बना है कि शिक्षा प्राप्त नर, पशु से भी निकृष्ट व्यवहार कर रहे हैं, विनम्र व्यवहार का तो प्रश्न ही नहीं है। तो फिर कहां चूक है ? आज की शिक्षा में स्वार्थ और लोभ से ऊपर उठाने का कोई आधार नहीं है। सम्भवतः शिक्षा की इमारत की, नींव में ढ़ाई अक्षर (प्रेम/त्याग) की भरत नहीं है। इसका एक छोटा-सा उदाहरण इसलिए प्रस्तुत कर रहा हूँ कि आज के तथाकथित पढ़े-लिखे लोग यह विचार तो कर सकें कि कहीं वे ऐसे ही पढ़े-लिखे तो नहीं हैं, जैसी कि यह पी-एचडी कन्याः—

एक कन्या ने अंग्रेजी में पी-एचडी किया था। उसका विषय था "लिव एण्ड लेट लिव"। कालान्तर में उसका विवाह हो गया और वह मां बनने वाली

थी। उसे अस्पताल ले जाया गया। वह प्रसव पीड़ा से कातर हो उठी। उसका धैर्य टुट गया। साहस और धैर्य का जब बांध टूटा तो विवेक खो गया और वह अपने पति को अनर्गल गालियां देने लगी। पुत्र का जन्म भी हो गया किन्तु उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका चीखना-चिल्लाना जारी रहा। इससे परेशान होकर डाक्टरों ने उसे मारफिया जैसी औषधि देकर सुला दिया। पर इससे डाक्टरों की परेशानी चिन्ता में बदल गई। तीन रोज हो गये वह उठने का नाम ही न ले और उधर बच्चा भूख से बिलखने लगा और उसके प्राण पखेरु उड़ने की स्थिति आ गई। डाक्टरों ने उसे खूब डांट-फटकार दी। इस पर वह कहने लगी कि वह बे-पढ़ी-लिखी नहीं है। वह पी-एचडी है, ऐसे डरने वाली नही है। उसे डिस्टर्ब न किया जाये अन्यथा वह सबको जेल भिजवा देगी। वह डाक्टरों को यह कहकर फिर सोगई कि सुनो मैने, "लिव एण्ड लेट लिव" में पी-एचडी किया है जिसका अर्थ है-जियो और जीने दो, इसलिए मुझे सोना है, सोने दो और उसे रोना है, रोने दो।

□□

शेर: बस इसी धुन मे रहा-मर के मिलेगी जन्नत,
तुझको ए शेख। जीने का करीना न आया



● **प्रेम सक्सेना**

डिपो भण्डारी

राधा गोरी:. कृष्ण काले क्यों ?

एक दिन राधिका सों पूछन कन्हाई लागे
काहे तेरो रंग गोरो मेरों रंग कारो है ।
एक धाम, धरती, धरम के हैं हम दोनो
एक धूप छांव ने उजारो है पजारो है ।।
मुसकाय बोली राधा कान्हा ऐसे लोग कहें
मन को यो दर्पन आनन हमारो है ।
मेरो मन साफ याते तन हू है साफ मेरो
तेरो मन कारो याते तन तेरो कारो है ।।
बोले कान्ह मानों न बुरो तो कहों सांच-सांच
जैलों रह्यो जसुदा की गोद भोरो भारो थो ।
ग्वाल बाल संग जो लौं कर्यो हुड़दंग तौलों
माखन सो मन दधि जैसो तन म्हारो थो ।।
सुनि तेरे रूप को बखान गोरी चोरी-चोरी
थाह लेन तन तेरे मन लौं उतारो थो ।
काजर की कोठरी थी जाने कोयले की खान
जान तो न पायो पर निकसो तो कारो थो ।।

मुक्तक

कभी करते रहे दिन रात जो रस रंग की बात ।
किसी से प्यार की बातें, किसी से जंग की बातें ।।
फिर मद-मस्त होकर जो मतंग जैसे जवानी में ।
बुढ़ापे में वोही करते मिले सत्संग की बातें ।।

जो कभी भाया न मन को उसको जबरन खोजते हैं ।
एक जरूरत पर जमाने भर की कतरन खोजते हैं ।।
इतना नंगा कर दिया बढ़ती हुई महंगाई ने ।
अपना तन ढ़कने को हम, गैरों की उतरन खोजते हैं ।।

वो भी तो मातायें थीं जिन्होंने मुंह चीर,
दांत गिनने को शेरों के थे छौने दिए बेटों को
किन्तु कहा कहें उन माताओं को जिन्होंने-
चाटिवे को सड़कों के दोने दिए बेटों को ।।

प्यार दो दुलार दो खुशियों का द्वार दो
फूलों से भरी काटों को सेज मत दीजिए
पढ़ाने या लिखाने में या नौकरी कराने में
कभी परहेज या संकोच मत कीजिए
पैसे से प्यार करें, दौलत से देह तोलें
ऐसे साँपों का जहर और तेज मत कीजिए
लड़की को देना है तो तीर तलवार दो
बरछी कटार दो, दहेज मत दीजिए ।

साथ में जिनके हाली मवाली चले,
तोड़ते जाम ठुकराते प्याली चले ।
हमने देखा है उनको भी, चलते हुए,
जब यहां से चले, हाथ खाली चले ।।

□□



धर्म युद्ध

● मोहनलाल तंवर

(सब हैड का. लेखा कार्यालय)

उज्वल ललाट पर माँ,
किसने निगाहें डाली,
यह कौन आया पापी,
छाया पड़ी क्यों काली ?

गौतम की गोद तेरी,
आंचल में खेला गाँधी,
हिंसा के दोनो दुश्मन,
आयी कहां ये आंधी ?

इस आंधी ने तो अब तक,
सारा चमन उजाड़ा,
धरती को रोंद डाला,
चैनो अमन को मारा।

मानव धर्म जो मानो,
तो है यही अहिंसा,
ईश्वर का कर्म मानो,
तो है यही अहिंसा।

कुदरत का मर्म जानो
तो है यही अहिंसा,
सब एक स्वर में बोलो,
मिट जाय जग से हिंसा,

अहिंसा सत्य के ये धारक,
योद्धा कहां पे सोये ?
जागो हे वीर जागो।
मानव धरा पे रोये।

तुम नींद त्याग देखो,
अब दुर्दशा अमन की,
अब लाज हाथ में है
तेरे इसी चमन की।

हिंसा के पक्षपाती,
धरती पे टिक न पावें,
रण भेरी सत्य की हो
बैरी का दिल हिलावे।

समता का शंख फूंको,
कायर का दिल जलादे,
भाई से भाइयों को
सुनकर गले मिलादे।

इस युद्ध में अहिंसा
फिर क्यों न जीत पावे ?
सुख शान्ति मय सुशासन
धरती पे क्यों न आवे ?

□□

बदले परिवेश में ट्रेड यूनियन लीडर की भूमिका

● मूलचन्द गोयल

शॉप अधीक्षक (कै. 28)
सदस्य—प. रे. हिन्दी समिति (का.)
एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
अध्यक्ष—वे. रे ए. यूनियन (कैरिज शाखा)



विश्व के मानचित्र पर भारत की तस्वीर विकासशील देशों की गिनती में है। शिकागो की खूनी क्रांति के उपरान्त अन्यान्य देशों ने चाहे वे पूंजीवादी हों अथवा समाजवादी इस तथ्य को स्वीकारा है कि शोषण की अथ व्यवस्था देश को विकास के मार्ग पर नहीं ले जा सकती। उसमें आवश्यकता है उस समन्वय की जिसमें देश के विकास के दायित्व का निर्वाह करने वाले का शोषण न हो और उसे अपने राष्ट्र के प्रति बढ़ती जिम्मेवारी का आभास कराया जा सके।

ट्रेड यूनियनों की उक्त समन्वय में महत्ती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। विश्व में ऐसे विकसित देश हैं जहाँ ट्रेड यूनियनें उत्पादन में वृद्धि का आश्वासन दे मजदूरों के अधिलाभ का समझौता करती हैं जिससे न केवल देश का उत्पादन बढ़ता है किन्तु उस देश के सर्वहारा मजदूर का आर्थिक—सामाजिक विकास होता है।

अब जानना ये आवश्यक है कि ट्रेड यूनियनों में लीडर-शिप कैसी हो। लीडर वह माना जाता है जो नियंत्रण कर सके, नेतृत्व कर सके एवं जिसके बर्ताव का प्रभाव दूसरों पर हो। 'हेड-शिप' एवं 'लीडर-शिप' में बहुत अन्तर है। जहाँ एक लीडर अपने व्यक्तित्व के आधार पर होता है वहाँ 'हेड-शिप' के अधिकार या उसका व्यक्तित्व संस्थागत होता है। 'लीडर' अपने साथियों से सामाजिक दूरी नहीं रखता जहाँ 'हेड-शिप' में इसके विपरीत सामाजिक दूरी होती है। लीडर अपने मन्तव्य प्राप्ति हेतु सभी साथियों से सहयोग जुटाने के प्रयत्न करता है किन्तु हेड कुछ चुने हुए लोगों से ही मंत्रणा करता है। लीडर अपने सारे साथियों के कल्याण का ध्यान रखता है किन्तु 'हेड' के लिए संस्थागत लाभ की प्रधानता ज्यादा है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि नेता एवं उनके साथियों का निरन्तर विचारों का आदान-प्रदान ही कुशल नेतृत्व दे सकता है। यहाँ यह कहना अनुचित न होगा कि जहाँ सामूहिक लाभ की परिधि से हट कर नेता अपने आत्म प्रदर्शन की कामना या व्यक्तिगत सरचना या लाभ में पड़ जाता है वहीं उसका ह्रास होता है। वाक् पटुता के आधार पर कुछ लोग 'लीडर' बनने का प्रयत्न अवश्य करते हों किन्तु अपने साथियों के लिए त्याग, उनके उत्थान हेतु निरन्तर प्रयत्नशील न रहने से उनका प्रभाव क्षणिक रह जाता है। ट्रेड यूनियनों में राजनैतिक समावेश से लाभ नहीं होता। उससे मजदूरों को हानि होती है।



"मेरे सपनों का भारत"

नौरतन मल पथरिया

मुख्य लिपिक, चल स्टॉक (कै.) अजमेर

क्या सपने मैंने संजोए, इस सोने के भारत में,
फिर लौटे सत्यता का युग, हो अमन चैन फिर भारत में।
ना ऊँच नीच का भेद बने. फिर सतयुग आए भारत में,
हो मर्यादा श्री राम चन्द्र सी, श्री कृष्ण की नीति भारत में।
हो हरिश्चन्द्र सा सत्य यहाँ, और श्रवण से पुत्र बनें,
मीराँ की वाणी फिर से गूंजे, और तुलसी, सूर से भक्त बनें।
हों दयानन्द से ऋषि, मुनि, हो प्रकाश फिर से भारत में।
सीता सावित्री सी नारी हों, हो झाँसी की रानी भारत में।
राणा प्रताप से शूरवीर हों, राणा सांगा से भारत में।
हों भगत सिंह से राष्ट्र-भक्त, और उद्यम सिंह से भारत में।
हों सभी यहाँ देश भक्त, और आदर हो सब धर्मों का,
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, है यह भारत देश सभी का।
ईश्वर अल्लाह में भेद नहीं, यह समझ में आए भारत में,
हो विक्रमादित्य सा न्याय यहाँ, अन्याय नहीं हो भारत में।
तभी स्वप्न साकार बनेगा, यह सुध बुध आए भारत में

(शेष पृष्ठ 73 का)

सामूहिक सौदेबाजी के लिए एक नेता को अपने समूह जिसका वह नेतृत्व करता है कर्त्तव्य एवं अधिकारों का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है। आज के परिवेश में ट्रेड यूनियन लीडर की मान्यता विभिन्न श्रम कानूनों के ज्ञान के अभाव में अधूरी है। एक समुदाय या समूह अपने नेता की मान्यता उसकी उपलब्धि से आँकता है। अत. नेता को इसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहना पड़ता है।

आज देश में "प्रशासन में श्रमिकों के योगदान" के सिद्धान्त को स्वीकारा अवश्य गया है किन्तु इसकी क्रियान्विति में कई बाधायें हैं। एक स्वतन्त्र देश के चहुंमुखी विकास हेतु योजनाओं की सफल क्रियान्विति में आने वाली बाधाओं को जानना एवं उसे हटाना भी उतना ही आवश्यक है। अतः एक कुशल नेतृत्व देने वाला नेता इनको विश्लेषणात्मक अध्ययन कर अपने समन्वित प्रयास से न केवल श्रमिकों की समस्याओं का समाधान करता है, बल्कि उनके सामाजिक उत्थान हेतु आर्थिक लाभ भी प्राप्त करता है तथा प्रशासनिक समस्याओं के समाधान एवं निराकरण में भी पूर्ण सहयोगी बनकर कार्य करता है। □□

अजमेर कारखानों में राजभाषा हिन्दी के बढ़ते चरण

● श्यामलाल दायमा

प्र. लि हिन्दी कक्ष, (लोको)



इस कारखाना यूनिट में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रशंसनीय कार्य हुआ है। सन् 1982 में हिन्दी स्मारिक का प्रकाशन किया गया, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा की गई और हिन्दी के प्रचार-प्रसार में काफी प्रगति देखने को मिली। इससे उत्साहित होकर सन् 1984 में अर्द्धवार्षिक कारखाना राजभाषा पत्रिका का नियमित प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। जिसके चार अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष सन् 1986 के उपलक्ष में पाचवां व छठा अंक मिलाकर शान्ति विशेषांक प्रकाशित किया गया है।

अजमेर में स्थित इस कारखाना यूनिट में—

[1] अपर मुख्य यांत्रिक इंजी. [का.]
[2] उप मुख्य यांत्रिक इंजी. [कै.[
[3] उप मुख्य बिजली इंजो. [का.]
[4] उप मुख्य लेखा अधिकारी, [का. व. भं.]
[5] प्रणाली तकनीकी विद्यालय,
[6] जिला बिजली इंजीनियर [उत्पा.]
[7] सहायक कारखाना प्रबन्धक [संकेत], अजमेर के सात कार्यालय सम्मिलित हैं। इस संपूर्ण यूनिट में हिन्दी की प्रगति गतांक से आगे निम्नानुसार है:—

हिन्दी पत्राचार/मूल पत्र/धारा 3[3] विशिष्ट दस्तावेजों/तारों का 1.7.85 से 30 6.86 तक का विवरण—

यूनिट का नाम	विषय	हिन्दी में प्राप्त पत्र	उत्तर हिन्दी में	उत्तर अंग्रेजी में	उत्तर देना जरूरी नहीं	प्रतिशत
सभी सातों इकाईयां	पत्राचार	38009	23106	—	14903	100%
	मूलपत्र	कुल जारी	हिन्दी में	अंग्रेजी में		
		3570	3509	61		98%
	धारा 3[3]	कुल	द्विभाषा में	हिन्दी में	अंग्रेजी में	
		2881	55	2826	—	100%
	तार	409	—	405	4	99%

हिन्दी तारों के विषय में इस यूनिट ने विशेष उल्लेखनीय प्रगति की है जो अपने आष में एक रिकार्ड है।

कारखाना राजभाषा शील्ड

वर्ष 1984 में हिन्दी में किये गये कार्य का मूल्यांकन करते हुए महाप्रबंधक चर्चगेट, बम्बई द्वारा इस कारखाने को 'पश्चिम रेलवे कारखाना शील्ड' प्रदान की गई। वर्ष 1985 में कारखाना कर्मचारियों ने हिन्दी के कार्य को और बढ़ाया। परिणाम में वर्ष 1985 की 'कारखाना राजभाषा शील्ड' भी इस कारखाना को प्रदान की गई जो इस कारखाना यूनिट के लिए एक विशेष उपलब्धि है।

पुरस्कार

इस कारखाना यूनिट के हिन्दी भाषी और अहिन्दी भाषी सभी कर्मचारियों ने राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अत्यधिक रुचि लेकर बहुत सराहनीय कार्य किया है। फलतः कई कर्मचारियों को महा-प्रबंधक पश्चिम रेलवे, बम्बई द्वारा तथा स्थानीय स्तर पर अपर मु. यां. इंजी. [का.] द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये हैं। पिछले कई वर्षों से प्रति वर्ष इस यूनिट के कर्मचारी पश्चिम रेलवे स्तर पर तथा अखिल भारतीय रेल स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी होकर पुरस्कृत होते आ रहें हैं।

हिन्दी पुस्तकालय एवं वाचनालय

यूनिट के एक कार्यालय को छोड़कर शेष सभी कार्यालयों में हिन्दी पुस्तकालय एवं वाचनालय हैं। जिनमें राजभाषा के प्रचार-प्रसार से संबंधित पुस्तकों के अलावा उपन्यास, कहानी, नाटक तथा कार्यालय व कारखाना संबंधी साहित्य उपलब्ध हैं। वाचनालयों में मासिक/साप्ताहिक पत्रिकाएं तथा दैनिक अखबार मंगाए जाते हैं जिन्हें अधिकारी/कर्मचारी पढ़कर हिन्दी में काम करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी पुस्तकालयों एवं वाचनालयों का योग भी काफी प्रशसनीय रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कारखाना यूनिट की इकाइयों में हिन्दी की त्रैमासिक समीक्षा करने के लिए इस कार्यालय में एक राजभाषा कार्यान्वियन समिति का गठन किया हुआ है जो बोर्ड के आदेशों/अनुदेशों की अनुपालना के लिए सतत प्रयत्न करने के साथ-साथ उनके क्रियान्वयन पर भी अपनी पूरी देख-रेख रखती है। इस समिति की बैठकें नियमित रूप से होती हैं तथा उनके कार्य-वृत्त समय से प्रसारित किए जाते हैं।

हिन्दी सप्ताह समारोह

इस कार्यालय द्वारा प्रति वर्ष हिन्दी सप्ताह बहुत भव्य और उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। जिसमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निबंध, टिप्पणी, आलेखन, वाक् प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है तथा समापन समारोह के अवसर पर अभूतपूर्व सांस्कृतिक आयोजनों के साथ-साथ विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किए जाते हैं और वे स्वेच्छापूर्वक अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने के लिए संकल्प लेते हैं।

स्पष्ट है कि अजमेर कारखाना में हिन्दी की प्रगति बेजोड़ है और हम सभी अंग्रेजी के स्थान पर पूर्णरूपेण हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए कटिबद्ध है, कृत संकल्प हैं। □□

मुक्तक :

गर्दन फुलाके बांचने लगे कथा अपनी,
अपनो में ही दर्शाने लगे श्रेष्ठता अपनी,
किस्मत से जिनकी टूट करके गिर पड़ा छीका,
वो मानने उसको भी लगे योग्यता अपनी।

गीतिका में से कुछ विशेष पद्यांश

ये मेरी किस्मत थी मेरा साथ दिया मझधार ने,
वरना डूबो दिया होता, वश चलता तो पतवार ने,
वक्त पड़ा तो काम आए जाने-अनजाने ही चेहरे,
अवसर देख उतारे कपड़े तक हर रिश्तेदार ने। ये मेरी किस्मत ...

प्रेम सक्सेना

क्रिया में मुक्ति : प्रतिक्रिया में बन्धन



● राम औतारसिंह

निरीक्षक, रेल सुरक्षा बल

उसने मुझे डांटा, मुझे मारा, मुझे जीत लिया लूट लिया-जो ऐसी गांठ मन में बनाए रखते हैं, उनका वैर शांत नहीं होता।

उसने अर्थात दूसरे पर जिनका सारा जोर है, जो दूसरे पर नजर रखते हैं: ऐसे व्यक्ति वैर पालते हैं, जिनका सुखी-दुःखी होना दूसरे पर निर्भर है, वह नर्क में जीता है, बन्धन में रहता है, वह गुलाम है। उसके मालिक दूसरे हैं। कोई निन्दा कर दे, क्रोधित हो जाये, प्रशंसा कर दे फूल कर कुप्पा हो जाये, किसी ने गाली देकर डांट-फटकार लगा दी मानों क्रोध की बटन दबा दी, अब लगे सुलगने, प्रक्रिया हुई आरंभ। किसी ने बढ़ा-चढ़ा कर थोड़ी तारीफ कर दी, हो गये गद्गद्। आदमी न हुए मशीन हो गये, पूरी तरह दूसरों पर निर्भर। अपने आपको दूसरों पर छोड़ दिया पूरी तरह, अपने मालिक आप न रहे, इससे बढ़कर और कोई दुर्भाग्य नहीं।

मनुष्य होने का सच्चा मकसद ही यह है कि कोई कितना ही बटन दबाए चला जाए और बटन दबाते थक जाए पर वह उत्तेजित, क्रोधित, भयभीत, वासनाग्रस्त न हो पाये, कोई प्रतिक्रिया अनचाहे न हो।

सब प्रतिक्रियाएं बांधती हैं, मात्र क्रिया मुक्त करती हैं, क्रिया में मनुष्य अपना मालिक स्वयं होता है। प्रतिक्रिया दूसरे ने करवा ली, तो वो मालिक हो गया। ऐसा हुआ एक बार जब गौतम बुद्ध एक गांव से विहार करते हुए जा रहे थे, तो उस गाँव के कुछ लोग आये जो पहले ही से बुद्ध से जले-भुने बैठे थे, उनकी पाखंड-पुरोहिताई खतरे में हो गई थी। अतः वे लगे बुद्ध को गालियां देने, बुद्ध मौन-शान्त खड़े रहे, गालियों की बौछार और तेज हुई किन्तु बुद्ध पर कोई असर नहीं। वे स्थित-प्रज्ञ बने रहे, आखिर गाली बकने वाले ही थक गये। बुद्ध ने मौन तोड़ा और शान्त, संयत, मधुर वाणी में बोले, मुझे दूसरे गांव जाना है, आपको कुछ और कहना है तो कह लीजिए। एक सज्जन जो उस भीड़ में खड़े ये सब देख रहे थे, बोले इन्होंने कहा नहीं है, गालियां दी हैं और आपने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। बुद्ध बोले दस वर्ष पूर्व जब मुझे बुद्धत्व प्राप्त नहीं हुआ था तब यदि ये लोग गालियां देते तो मैं प्रतिक्रिया करता, शायद इन्हें तुरन्त ब्याज सहित लौटा देता, लेकिन अब मैंने लेना बन्द

कर दिया है। ये सब लोग दुःखी हैं क्रोध, घृणा से तप्त हैं, बीमार हैं। अतः दया के पात्र हैं। फिर बुद्ध ने उस भीड़ से कहा मित्रों, पिछले गांव में कुछ लोग मिठाई-फलादि भेंट कर रहे थे, मैंने स्वीकार नहीं किए तो बताओ वे किन के पास रहे? उत्तर मिला उन्हीं के पास रह गये। तो मित्रों मैं आपकी गालियों को भी अस्वीकार करता हुं। अब ये किस के पास रह गई? बुद्ध की बात लग गई, वे शर्मिन्दा हुए।

जब भी हम प्रतिक्रिया करते हैं, संस्कार बनाते हैं, संस्कार अच्छा हो अथवा बुरा हो, बन्धन तो बनता ही है, क्या फर्क पड़ता है: हथकड़ियां-बेड़ियां लोहे की हों या सोने की, बन्धन-बन्धन हैं।

जब भी हम दूसरे पर स्वामित्व भाव अपनाते हैं हम भी उसके गुलाम हो जाते हैं, एक अदृश्य डोरी से बंध जाते हैं, जैसे गाय के गले में रस्सी बंधी होती है, रस्सी जिसके हाथ होती है वह मालिक-सा लगता है। लेकिन रस्सी हाथ से छूट जाये तो ये मालिक लगने वाला गाय के पीछे-पीछे क्यों भागता हैं? ये भी गाय से बंधा हुआ है। अदृश्य रस्सी से। बुद्ध इस बन्धन के द्वारा यही समझा रहे हैः दूसरे ने क्या कहा-उसे जानकर सुखी या दुःखी मत होओ, न मन में वैर की गांठ बांधो। कहने वाला तो कहकर चला गया, वह भूल भी जायेगा, क्या कहा कब कहा? तुम व्यर्थ ही मन मैं गांठ बांध कर दुःखी होते रहोगे, अपने में वैर-भाव उत्पन्न कर लोगे। अतः समझदारी इसी में है कि अपने मालिक आप बनो, अपने दीपक स्वयं बनो। □□

□□

विश्व शांति

महेन्द्र शर्मा "रश्मि"
लि, उप मुख्य लेखा अधिकारी (का. व. भं.)

एक सूत्र हो विश्व
ज्योति फिर एक अमर हो ।
बन्धन हो सुदृढ़,
विघटन का कभी न डर हो ।
शान्ति गीत भारत का गूंजे
जन जन की उर पटल भाल पर।
गीता का नवज्ञान व्याप्त हो,
मानवता के वृहद् भाल पर।
तोड़ विवशता जाग !
आज उन्नत यह सर हो ।। एक सूत्र हो विश्व····
एक सूर्य है, एक चन्द्र है
पर उड्गण नभ में सहस्त्र हैं ।
विस्फोटक, घातक दिन प्रति दिन,
बढ़ते जाते विविध शस्त्र हैं ।
ध्वंस इन्हें कर,
अरे ! शांति का लहराता सरवर हो । एक सूत्र हो विश्व....
'शान्तिदूत' भारत है प्यारा,
विश्व विवश हो बलि बलि हारा ।
हर प्रयास संभव हो जावे,
विश्व शांन्ति का जब हो नारा ।
जागरूक जीवन,
धरती के हिम श्रृंगों पर हो । एक सूत्र हो विश्व......
'रश्मि' रवि की स्वर्णिम आभा,
छा जावे मानव के मन में ।
शाति, शांति का गीत, गूंजकर,
रम जावे, नस नस में, तन में ।
विश्व शांति !
यह पाठ पढ़ाने भारत का ही दर हो । एक सूत्र हो विवश ..

□□

सब मिलकर मतभेद मिटायें



ओम प्रकाश शर्मा,

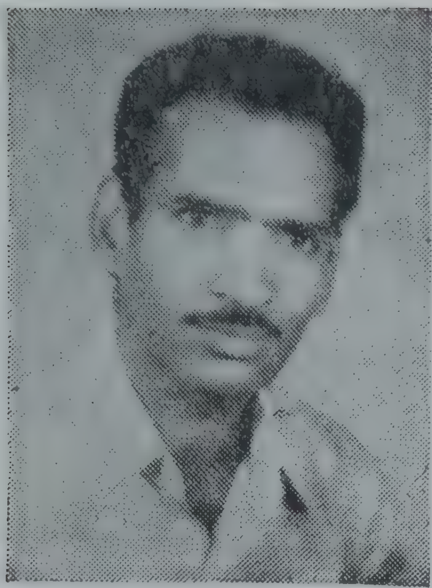
सब हैड, उ. मु. लेखा अधिकारी (का. व. भं.)

हिन्दी है जन-जन की भाषा,
सब मिलकर हिन्दी अपनायें,
भारत जननी एक हृदय है,
सब मिलकर मतभेद मिटायें,
हिन्दी को सब गले लगायें ।

उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम,
संस्कृति सूत्र में बंधा हुआ है,
उसके गौरवमय मस्तक पर
हिन्दी का हम तिलक लगायें
हिन्दी का हम अलख जगाएं ।।

भारत की भाषा और संस्कृति,
सबका हिन्दी ही संगम है ।
तुलसी सूर-चन्द्र की भाषा,
घर-घर गा प्रकाश फैलायें
हिन्दी की जयकार सुनाएं ।

□□



गुमशुदा की तलाश

हुकम सिंह प्रजापति

वरिष्ठ लिपिक, उप मुख्य विद्युत अभियन्ता (का.) का कार्यालय, अजमेर

मेरी माता,
भारत माता।
कुछ दिन पहले,
अचानक चुपचाप,
छोड़कर हमें अकेला,
हो गई है लापता।
बताओ कोई उस का पता।

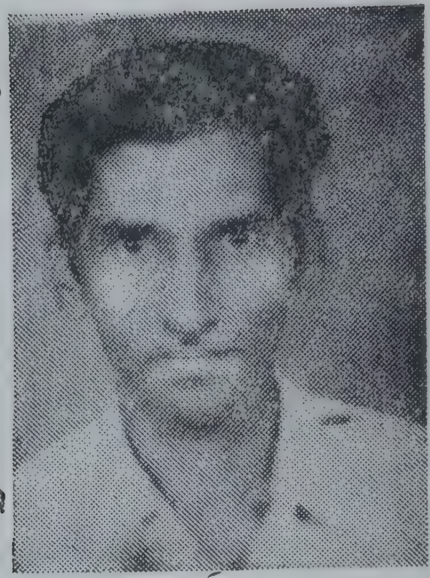
उसका कद है —
काश्मीर से कन्याकुमारी तक लम्बा,
गंगा सा है निर्मल मन
और हिमालय की हिमाच्छिद चोटियों सा,
है उज्जवल तन।
भारत की सभी भाषायें बोलती है,
बात बात में दार्शनिकों की तरह,
बड़े बड़े आध्यात्मिक रहस्य
खोलती है।
सीने में गौरव शाली इतिहास की
मधुर स्मृति समेटे है,
और अब तन ढ़कने के लिए,
विदेशी कर्ज से खरीदी
चादर लपेटे है।

पिछले कुछ दिनों से
वह अनमनी थी,
आतंकवाद के खूनी पंजों से,
डरी सहमी सी थी।
उसके शरीर से फूट रहे थे,
साम्प्रदायिकता के नासूर
और इन सब से ऊपर,
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
हम सब भाई;
उसको आपस में
बांटना चाहते थे।
अपनी अपनी पसन्द के अंग
उसकी देह से
काटना चाहते थे।
इन्हीं सब मानसिक झंझावातों को
सहते झेलते,
देश की आर्थिक स्थिति की तरह
वह हो गई थी बहुत कमजोर;
और इसी हालत में एक दिन
वह हो गई लापता,
बताओ कोई उस का पता।
नहीं तो,
नये शिकार की टोह में मंडराते
ये घिनौने गिद्ध,
उसके शरीर का बचा खुचा-मांस
नोंच खायेंगे,
और उसके कंकाल को भी
स्वार्थी सौदेबाजी में,
कौड़ियों के भाव,
बेच जायेंगे।
इस तरह हम हो जायेंगे अनाथ,
और कल तक शायद
यह भी जायेंगे भूल,
कि हमारी भी थी कोई माता!
भारत माता।

अनुकरणीय

रमचन्द्र सोलंकी

कार्यालय अधीक्षक, (लोको सामान्य)



रामचरित्र मानस पर प्रवचन करने वाले एक विद्वान शास्त्री को चिन्तातुर देखकर स्टेशन पर एक सहयात्री ने पूछा:

पण्डित जी आप वेषभूषा से ज्ञानवान नजर आते हैं फिर भी इतने चिन्तातुर क्यों हैं ?

पण्डित जी बोले:—भाई, हम पति-पत्नी दोनों ही रामचरित्र मानस पर प्रवचन देते हैं और रामायण के प्रकाण्ड पण्डित हैं और आज यहां हमारा दोनों का ही रामायण पर प्रवचन है। पिछले स्टेशन पर गाड़ी रूकने का बहुत कम समय था, मैं तो गाड़ी में सवार हो गया और पत्नी सवार नहीं हो सकी। अतः अब यही चिन्ता है कि पत्नी कब तक और कैसे यहां पहुँचेगी अथवा और कहीं न भटक जाये।

सहयात्री ने सुनकर पण्डित जी को कहा:—

महाराज आप रामायण के ज्ञान का झूठा अभिमान करते हैं। आपको रामायण का कतई ज्ञान नहीं है।

पण्डित जी को अपने ज्ञानी होने की चुनौती पर क्रोध आ गया और रामायण के ज्ञान को बधारने लगे। सहयात्री ने कहा महाराज आप तो सिर्फ इस चौपाई का अर्थ कर दीजिये:—

राम सखा तब नाव मंगाई।
प्रिया चढ़ाई चढ़े रघुराई।।

पण्डित जी ने सहज भाव से उसका अर्थ तो बता दिया, लेकिन शर्म के मारे सिर झुक गया।

अमृत वाणी

बच्चे देश की ही धरोहर नहीं, भगवान की भी धरोहर हैं। उन्हें हर दिशा में आगे बढ़ाना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। *"स्वामी दयानन्द सरस्वती"*

प्रगति के लिए हमें इतिहास को दोहराने की जरुरत नहीं, इसके लिए हमें नए इतिहास का निर्माण करना होगा। *"महात्मा गान्धी"*

कोई भी संस्कृति दूसरों से अलग रहकर जीवित नहीं रह सकती। *महात्मा गांधी*

निम्न श्रेणी के मनुष्य केवल धन की, मध्य श्रेणी के मनुष्य धन और मान दोनों की तथा श्रेष्ठ पुरुष केवल मान की कामना करते हैं। *चाणक्य*

शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य क्या जान गया है, बल्कि यह है कि वह क्या हो गया है। *श्रीमती इन्दिरा गान्धी*

जिस मनुष्य का अपनी जवान पर नियन्त्रण न हो, उसकी संगत मत कीजिए। *सन्त कबीर*

नेहरू ने कहा था

● मनोहर लाल शर्मा

शॉप अधीक्षक सकेत कारखाना, अजमेर



भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है। यह सच है कि हमारी भाषाएँ एक न एक तरीके से संस्कृत से से निकली हैं। अन्य भाषाओं का यद्यपि स्वतन्त्र इतिहास है, लेकिन फिर भी उनमें बहुत से संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं। हमारी सब भाषाओं में एक दूसरे से काफी निकटता है, लेकिन फिर भी यह मानना होगा कि सब अलग-अलग भाषाएं हैं; और महान् भाषाएं हैं। और यह सब इस भारत देश की भाषाएँ है। इसलिए संविधान में हमने भारत की इन महान् भाषाओं को भारत की राष्ट्र भाषाओं के रूप में गिनाया है, लेकिन हिन्दी सरकारी (राजभाषा) एवं एक अखिल भारतीय भाषा की तरह रखी गई है।

अगर हमारे मुल्क में अपनी ही बोली मे बातचीत और बहस-मुबाहसे नहीं किए जाएगे, तो हमारी तरक्की नामुमकिन है। पं. लोगों को अपनी-2 भाषा से मुहब्बत है। जनरल बोथा जब बादशाह से मिलने आए तो वह डच जबान में बोले, हालांकि अंग्रेजी वह बिल्कुल सही और अच्छी तरह बोल सकते थे। जब आयरिश नेता लोग राष्ट्र संघ में आए तो वे गालिक भाषा में बोले, हालांकि उनकी बोली को समझने वाला तीसरा आदमी नहीं था। इसलिए में चाहूंगा कि आप लोग अपनी मातृ-भाषा सीखें और इसी भाषा में बातचीत और बहस मुबाहसे चलावें।

'हिन्दी' का मजहब से कोई सम्बन्ध नहीं, और हिन्दुस्तानी मुसलमान और ईसाई उसी तरह से हिन्दी है—जिस तरह कि हिन्दू मत का मानने वाला। अमरीका के लोग, जों सभी हिस्दुस्तानियों को 'हिन्दू' कहते हैं, बहुत गलती नहीं करते। अगर वे 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग करें, तो उनका प्रयोग बिल्कुल ठीक होगा।

हिन्दुस्तानी के लिए ठीक शब्द 'हिन्दीं' होगा चाहे हम उसे मुल्क के लिए, चाहे संस्कृति के लिए चाहे अपनी भिन्न परम्पराओं के तारीखी सिलसिले के लिए इस्तेमाल करें। यह लफ्ज 'हिन्दी' बना है, जो हिन्दुस्तान का छोटा रूप है। अब भी हिन्दुस्तान के लिए हिन्दी शब्द का आमतौर पर प्रयोग होता है। पश्चिमी एशिया के मुल्कों में हिस्दुतान के लिए बराबर 'हिन्दी' शब्द इस्तेमाल किया जाता है, और इन सभी जगहों में हिन्दुस्तानी को 'हिन्दी' कहते हैं।

जब दुनिया हिल रही है, तो दुनियां से मालूम नहीं क्या मुसीबतें आएं—तब आपका, मेरा हर एक हिन्दुस्तानी का फर्ज है–कि हममें एक दूसरे में जो फर्क हो, उसे मिटा डालें अगर यह मुमकिन नहीं हो जो लोगों में फर्क है, कुछ भले ही रखे रहें; जैसे अगर जी चाहे मुझसे आप लड़ें, लेकिन जब हिन्दुस्तान का मामला उठता हैं, तो आप हिन्दुस्तानी और मैं हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तान का हर एक शख्स हिन्दुस्तानीं है। और अगर इस बात को कोई नहीं मानता तो वह हिन्दुस्तानी नहीं है-वह किसी और मुल्क में जाकर रहे।

सेवापंजिका (सर्विसशीट)

● ताराचन्द ऐरन

मु. लि. (लोको)



सेवा-पंजिका एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जिसके बिना वेतन वृद्धिया पदोन्नतियां और यहां तक कि सेवा-निवृत्ति भी नहीं हो सकती। इसमें कर्मचारी के सेवाकाल (भर्ती की तारीख से सेवा-निवृति की तारीख तक) का पूर्ण ब्यौरा अंकित किया जाता है। इससे एक ही नजर में मालुम किया जा सकता है कि कर्मचारी का आचरण कैसा रहा है, उसकी कार्य-कुशलता, निष्ठा और वह रेलवे के प्रति कितना वफादार रहा है, आदि-ईत्यादि। एक शब्द में यह कर्मचारी की रेल सेवा से सम्बन्धित जन्मपत्री-सी है।

अतएव, प्रत्येक कार्यालय में अराजपत्रित कर्मचारियों की सेवा-पंजिकाओं के लिए एक अलग अनुभाग होता है और उनके समुचित रख-रखाव के लिए सम्बन्धित अधिकारी उत्तरदायी होता है।

राजपत्रित कर्मचारियों की सेवाओं का लेखा-जोखा सम्बन्धित लेखा विभाग द्वारा रखा जाना है। स्थानान्तर की दशा में उनकी सेवा-पंजिका सम्बन्धित नये लेखा अधिकारी को सीधी भेज दी जाती है।

नियम 1931 व 1932 जी. वन के अन्तर्गत श्रेणी 3 व 4 के स्थाई व अस्थाई समस्त कर्मचारियों की सेवा-पंजिकाओं का रख-रखाव निर्धारित फार्म में किया जाता है। प्रधान कार्यालय के आदेशानुसार कर्मचारी की नियुक्ति-पत्र की एक प्रति सेवा-पंजिका में लगाइ जानी अति आवश्यक है।

सेवा-पंजिकाओं की ही तरह सेवा-रजिस्टर भी अनिवार्य रूप से रखा जाता है जिसमें निम्न जानकारी रखी जातीहै---नाम, पिता का नाम, पद, टि. नं. इलाका सं पेंशन सं. जन्मतिथि, भर्तीतिथि, वेतन व वेतनमान, वेतन वृद्धि की तारीख, जाति व शैक्षणिक योग्यता आदि। इस सेवा रजिस्टर में भी कर्मचारी के सम्बन्ध में जारी सभी सूचनाएं जैसे—पदोन्नति, पदावनति, स्थानान्तर, वेतन वृद्धि की तारीख, व्यवसायिक परीक्षा का परिणाम, शास्तियां—परिनिन्दा, वेतन वृद्धि पर रोक, पास, पी टी. ओ. पर रोक, निम्नतर पद पर उतारना, अनिवार्य सेवा निवृत्ति, सेवा से हटाना, बर्खास्त करना आदि-इत्यादि का उल्लेख किया जाना आवश्यक है।

यदि किसी कर्मचारी की सेवा-पंजिका खो जाती है तो सक्षम अधिकारी के आदेश से इस सेवा-रजिस्टर के आधार से उसकी दूसरी प्रति आसानी से तैयार की जा सकती है जिसकी विधि इस प्रकार है—

(क) कर्मचारी की निजी मिसल व अन्य कार्यालयी दस्तावेजों के आधार पर मु. यां. इंजी./म. रे. प्रबन्धक की स्वीकृति लेकर दूसरी प्रति बनाई जा सकती है ।

(ख) यदि किसी कारण कोई भी दस्तावेज उपलब्ध न हो तो कर्मचारी के शपथ-पत्र (एफिडेविट) के आधार पर भी सेवा-पंजिका की दूसरी प्रति तैयार करने का प्रावधान है । किन्तु इसके लिए रेल मंत्रालय, दिल्ली की स्वीकृति ली जानी आवश्यक है ।

उपर्युक्त दोनों स्थितियों में सम्बन्धित लेखा विभाग की टिप्पणी व सहमति आवश्यक है ।

सेवा-पंजिका के रख-रखाव सम्बन्धित नियम 1935, 36, 37, 38 और 42 के साथ प्रधान कार्यालय के अनुदेश सं. ई. 1049/17 दिनांक 26-5-60 की जानकारी भी वांछनीय है जो संक्षेप में इस प्रकार है—

नियम 1935 के अनुसार श्रेणी 5 के कर्मचारियों की प्रत्येक प्रविष्टी राजपत्रित अधिकारी द्वारा सत्यापित की जानी चाहिए । श्रेणी 4 और अकुशल, अर्द्धकुशल कारखाना कर्मचारियों की प्रविष्टियां मुख्य लिपिक द्वारा सत्यापित की जाती है किन्तु सेवा-निवृति, अनुदान एवं भविष्य निधि में विशेष अंशदान अथवा पेंशन की सिफारिश, सेवा प्रारम्भ और सेवा-समाप्ति की प्रविष्टियों पर राजपत्रित अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर किये जाते हैं । उल्लेखनीय है कि प्रधान कार्यालय से प्राप्त अनुदेशों के अनुसार श्रेणी 3 और 4 कर्मचारियों की सेवा-पंजिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में की जानी चाहिए और हिन्दी में ही की जाती हैं ।

नियम 1936 में निलम्बन सम्बन्धित प्रविष्टियों में विवरण देने तथा तत्परता पूर्वक प्रविष्टियां करने के लिए सत्यापन अधिकारी पर दायित्व डाला गया है ।

नियम 1937 के अनुसार जब तक विभागाध्यक्ष इस तरह के आदेश न दें तब तक सेवा-पंजिका में व्यक्तिगत प्रमाण पत्रों की प्रविष्टियां नहीं की जा सकती । तथापि कर्मचारी को मूलरूप से निम्नतर पद पर उतारने के कारण का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए ।

नियम 1938 में कार्यालय प्रधान द्वारा पेंशन योग्य कर्मचारियों की सेवा-पंजिका की वार्षिक जांच (वेरिफिकेशन) का प्रावधान है और जांच के बाद उन पर तत्सम्बन्धी प्रमाण-पत्र दर्ज करने का सम्बन्धित अधिकारी पर दायित्व डाला गया है ।

इन नियमों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नियम 1942 है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक पेंशन योग्य अराजपत्रित कर्मचारी को अपनी सेवा-पंजिका का अवलोकन करने का न केवल अधिकार दिया गया अपितु ऐसा करना उसका कर्त्तव्य (ड्यूटी) बताया गया है । तदनुसार इसके लिए कर्मचारी द्वारा कभी-भी अनुरोध किये जाने पर कार्यालय प्रधान द्वारा उसे सेवा-पंजिका की जांच करने की अनुमति दी जानी चाहिए ।

आपको सेवा-पंजिका के इतने महत्वपूर्ण होने की जानकारी से इसके सही रख-रखाव की चिन्ता का होना भी स्वाभाविक है ।

आपकी खुशी के लिए मैं आपको यह भी बताना चाहूँगा कि रेल मंत्रालय के पत्र सं. ई. (जी) 61/ आर. टी./1/6 दिनांक 23-4-62 के अनुसार यदि कर्मचारी चाहे तो अपनी सेव निवृति अथवा त्याग-पत्र के आधार पर सेवा-मुक्त होने की स्थिति में 5/—रुपये जमा कराकर वह अपनी सेवा-पंजिका की सही प्रतिलिपि प्राप्त कर सकता है ।

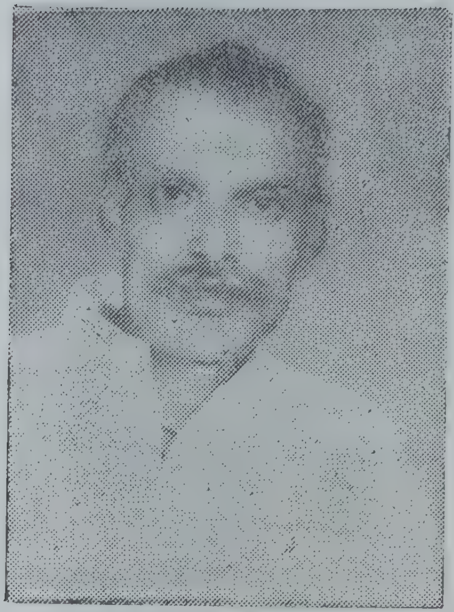
अन्त में अपनी ओर से बस इतना ही कि पाठकगण सेवा-पंजिका के उपर्युक्त नियमों की जानकारी का खूब लाभ उठाएं और अपनी-अपनी सेवा-पजिका के सही रख-रखाव के प्रति जागरुक रहें ।

□□

वेस्टर्न रेलवे मज़दूर संघ

● **रतन चन्द जैन,**

मण्डल उपाध्यक्ष एवं
अध्यक्ष, लोको शाखा



सर्वविदित है कि मजदूरों का मसीहा--वेस्टर्न रेलवे मजदूर संघ भारतीय रेल स्तर पर नेशनल फेडरेशन आफ इण्डियन रेलवेमैन का अंग है जो राष्ट्रीय स्तर पर इन्टक (इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस) से सम्बद्ध है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्टक विशालकाय संगठन है जिसकी इकाइयां देश भर के सभी छोटे-बड़े उद्योगों में कार्यरत हैं।

भारत विश्व में सबसे बड़ा प्रजातन्त्र और समाजवाद-उन्मुख कल्याणकारी राष्ट्र है और इसीलिए इसमें ट्रेड यूनियनों की विशेष भूमिका है; उन पर विशेष दायित्व भी है। भारत सरकार के समक्ष यह मूलभूत प्रश्न था कि श्रमिकों की समस्याओं के निवारण के लिए प्रबन्ध में मजदूरों की भागीदारी की व्यवस्था की जाए जिसमें सौहार्दपूर्ण औद्योगिक सम्बन्धों की स्थापना के साथ जुड़ी उत्पादकता में अपेक्षित अभिवृद्धि देखने को मिल सके। यही मूलभूत प्रश्न वह सूत्र भी बना जिसके फलस्वरूप भारत में ही नहीं अपितु समूचे विश्व में सही माने में ट्रेड यूनियन आन्दोलन का स्वर्णिम युग का सूत्रपात हुआ। अपने विचारों को संक्षिप्त करते हुए अब मैं बिना किसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के सीधा अपनी चर्चा के विषय पर आता हूँ।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डियन रेलवेमैन की स्थापना के साथ समस्त क्षेत्रीय रेलों पर यथा–उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, सेंट्रल, दक्षिण-मध्य, पूर्वोत्तर, दक्षिण-पूर्व और उत्तर-सीमान्त रेलों पर मजदूर संघ के क्षेत्रीय कार्यालय खोले गये और उनके अधीन अपनी-अपनी रेलवे के प्रत्येक मंडल स्तर पर एक शाखा खोली गई, जो मंडल के अधीन अपनी सभी शाखाओं को नियंत्रित करती है।

वे. रे मजदूर संघ का प्रधान कार्यालय बम्बई सेंट्रल के स्टेशन के सामने स्थित है। इसके अध्यक्ष श्री केशव कुलकर्णी तथा महामचिव श्री दशरथ भाई त्रिवेदी हैं। नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डियन रेलवेमैन के अध्यक्ष श्री ए. पी. शर्मा तथा महासचिव श्री केवश कुलकर्णी हैं। शीर्षस्थ स्तर पर इन्टक के अध्यक्ष श्री रामानुजम् हैं।

अजमेर मण्डल पर मण्डल संगठन के अधीन 24 शाखाएँ हैं जिसके अन्तर्गत लोको एवं कैरिज आदि शाखाएँ भी सम्मिलित हैं। मण्डल संगठन, मंडल सचिव श्री पी. एल. कपूर एवं मंडल अध्यक्ष श्री ब्रिजकिशोर शर्मा के कुशल नेतृत्व में कार्यरत है।

संगठन की कार्य प्रणाली में, मण्डल एवं गैर मण्डलीय प्रशासन के साथ वर्ष में 16 पी. एन. एम. की बैठकें की जाती हैं तथा 6 अनौपचारिक बैठकें होती हैं, जिनके माध्यम से श्रमिक समस्याओं का निवारण किया जाता है। इस स्तर पर वार्ता के पश्चात् महाप्रबन्धक के साथ वर्ष में 4 पी. एन. एम. मीटिंग होती हैं तथा मुख्य कार्मिक अधिकारी के साथ अनौपचारिक बैठकें भी होती हैं।

रेलवे बोर्ड स्तर पर भी वार्ता की व्यवस्था है जहाँ जे. सी. एम. [ज्वाइंट कनसलेटेटिव मशीनरी] के माध्यम से श्रमिक समस्याओं का निवारण किया जाता है। जे. सी. एम. में ए. आई. आर. एफ. तथा एन. एफ. आई. आर. दोनों फेडरेशनों के प्रतिनिधि होते हैं। बोर्ड स्तर पर एन. एफ. आई. आर. की वर्ष में तीन बैठकें होती हैं। समय-समय पर इन वार्ताओं के अतिरिक्त भी संस्था के पदाधिकारी श्रमिक समस्याओं के निवारण हेतु प्रशासकों से नियमित रूप से मिलते रहते हैं।

इतना सब होते हुए भी श्रमिक समस्याओं का अथाह भंडार है, जिसके लिए संघ निरन्तर जागरूक एवं संघर्षरत है। कोई कितना ही भ्रामक प्रचार क्यों न करे, हकीकत यह है कि वे. रे. मजदूर संघ, श्रमिकों द्वारा, श्रमिकों के लिए, श्रमिकों का एक विशुद्ध मजदूर संगठन है जिसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इसी तरह आप यह भी स्वयं देख रहे हैं कि वे. रे. मजदूर संघ किसी भी प्रकार की अन्तर ट्रेड यूनियन प्रतिस्पर्धी अथवा अलगाव में विश्वास नहीं रखता।

उल्लेखनीय है कि हमारी विचारधारा गाँधीवादी तथा "सर्वे भवन्तु सुखिन:" पर आधारित है। इसीलिए तो श्रमिकों की उन समस्याओं के लिए ही जिनका निवारण वार्ता द्वारा संभव नहीं हो पाता, आन्दोलन, धरना, असहयोग, अनशन आदि इत्यादि का शाँतिपूर्वक आयोजन किया जाता है।

यहां मैं अधिकारी वर्ग से अनुरोध करना चाहूँगा कि श्रमिकों की समस्याओं के निवारण हेतु और अधिक तत्परता की आवश्यकता है क्योंकि मजदूरों को संतुष्ठ करके ही उनकी शक्ति का राष्ट्रहित में—उत्पादन और उत्पादकता की अभिवृद्धि में अधिक से अधिक उपयोग किया जा सकता है, जिसकी आज राष्ट्र को पहले से कहीं अधिक जरूरत है। हम देख रहे हैं कि हमारे इर्द-गिर्द युद्ध के से बादल मंडरा रहे हैं और इस संदर्भ में देश के भीतर हमें संघठित रहते हुए पूरी शान्ति बनाए रखना है। इसलिए वे कृपया यह सुनिश्चित करें कि इस दिशा में रिकार्ड प्रगति हो रही है जिससे अच्छे औद्योगिक संबंधों की स्थापना और सुदृढ़ हो सके। साथ ही कर्मचारियों से भी अनुरोध है कि वे इस संगठन के माध्यम से अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए अधिक से अधिक लाभ उठाएं और संगठन के हाथ अधिक से अधिक मजबूत करने हेतु इसी संगठन के नेतृत्व में श्रद्धा और विश्वास प्रगट करें और इस संगठन के ज्यादा से ज्यादा तादाद में सक्रिय सदस्य बनें।

——

दोहे—कल्याण मित्र गोयन्का जी

बाहर भीतर एक-सा, सरल स्वच्छ व्यवहार
कथनी करनी एकसी, यह धर्म का सार।
धारे तो ही धर्म है, वरना कोरी बात,
सूरज उगे प्रभात है, वरना काली रात।

नाम जपे कीर्तन करे, भजन करे भरपूर,
जब तक मन निर्मल नहीं, मुक्ति बहुत ही दूर।
धर्म न हिन्दु बौद्ध है, सिक्ख न मुस्लिम जैन,
धर्म चित की शुद्धता धर्म शान्ति-सुखचैन॥

यूनियन के ही सदस्य क्यों बनें ?

● मूलसिंह देवड़ा,

समन्वय सचिव,
वे. रे. ए. यू. [का. शा.]



आपको यह जानकर आश्चर्य मिश्रित आनन्द होगा कि यूनियन की स्थापना अजमेर के रायसाहब चन्द्रिका प्रसाद जी द्वारा सन् 1920 में की गई थी। जो आज भारत की सबसे पुरानी यूनियन है। इसका रजिस्टर्ड नम्बर 5 है। वर्तमान रेलवे यूनियनों में इसकी सदस्यता 135561 है, जो कि पश्चिमी रेलवे के कुल स्वीकृत संवर्ग 2.09 लाख का 65 प्रतिशत है। इतना ही नहीं यह यूनियन, एच. एम. एस. [हिन्द मजदूर सभा] से सम्बद्ध है तथा आल इण्डिया रेलवे मैन्स फेडरेशन की सबसे बड़ी यूनियन है। इस यूनियन की 8 मंडल, 20 कारखानों से संबंधित कुल मिलाकर करीब 150 शाखायें कार्य कर रही हैं।

इस यूनियन का सम्बन्ध किसी राजनैतिक पार्टी से न होकर सीधा सम्बन्ध रेल में काम करने वाले कामगारों से है। इस यूनियन के महामंत्री उमरावमल पुरोहित स्वयं एक रेलवे मैन हैं जो कि आल इण्डिया रेलवेमैन फैडरेशन के अध्यक्ष, हिन्द मजदूर सभा के महामंत्री तथा अन्तर्राष्ट्रीय यातायात एवं रेल कामगारों से सम्बन्धित संगठनों के पदाधिकारी भी हैं।

यूनियन का सदस्य बनने के लिए आजीवन सदस्यता शुल्क 250/- रु. तथा वार्षिक सदस्यता शुल्क 24/- रु. देने पड़ते हैं और बोनस अनुदान 20/- रु. है।

इस यूनियन के मुख्यालय एवं मंडल कार्यालयों में पूरे समय यूनियन का कार्य करने हेतु कुल मिलाकर करीब 15 रेल कामगार प्रतिनियुक्त हैं। यह यूनियन कर्मचारियों द्वारा दिये गये बोनस का अनुदान की रकम का 20 प्रतिशत रेल कर्मचारी एवं उनके परिवार और आश्रित बच्चों के कल्याण हेतु आयोजित गतिविधियों में खर्च करती है, जैसे सिलाई केन्द्र, स्वास्थ्य परीक्षा, नेत्र चिकित्सा शिविर, परिवार नियोजन, प्रौढ़ शिक्षा, बच्चों की पढ़ाई, दहेज विरोधी चित्र प्रदर्शनी, यूनियन कार्यकर्ता शिक्षण शिविर आदि।

यूनियन ने रेल कर्मचारियों को उत्पादकता से जुड़ा हुआ निम्नांकित बोनस दिलाया तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों को बोनस प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया।

वर्ष	दिन	रकम की अधिकतम सीमा
1979-80	15	750
1980-81	24	750
1981-82	31	750
1982-83	32	750
1983-84	32	1600
1984-85	33	1600
1985-86	40	2500

इसी यूनियन ने बोनस की अधिकतम सीमा 750/- रु. से 1600/- तथा 1600/- रु. से 2500/- रु. करवाई।

यह यूनियन अपने रेल कर्मचारियों की दैनिक शिकायतों को सुलझाने व आर्थिक मांगों की स्थाई वार्ता तन्त्र की बैठकों, अनौपचारिक बैठकें तथा संयुक्त सलाहकार समितियों, सी.ई.जी. एवं शॉप कौन्सिलों के माध्यम से पूर्ति कराने के अलावा निम्नलिखित सामाजिक कार्य करना भी अपना कर्त्तव्य समझती है।

इसी यूनियन ने कारखाना कर्मचारियों को 12 दिन का एवं ओपन लाइन के कर्मचारियों को 9 दिन का आकस्मिक अवकाश दिलाया एवं राष्ट्रीय त्यौहार पर क्षतिपूर्ति भत्ता तथा सवेतन छुट्टियों का पैसा भी दिलाया।

इसी यूनियन ने आपको 1.4.56, 1.4.60 1.10.62, 1.1.64, 1.4.76, 1.8,78, 1.10.80, 1.4 83 तथा 1.1.84 से विभिन्न श्रेणियों में 20 प्रतिशत से 90 प्रतिशत उच्च पदों का अपग्रेडेशन दिलाया तथा हाथ से काम करने वाले कारीगर व कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारियों को समान वेतन मान दिलाया।

यूनियन ने ही कारखाना कर्मचारियों को सन् 60 से प्रोत्साहिक बोनस दिलाया तथा समय-समय पर उसमें बढ़ोत्तरी दिलवाई।

मकान किराया भत्ता, महंगाई भत्ता, समयोपरि भत्ता, यात्रा भत्ता, रनिंग अलाउन्स, क्षतिपूर्ति भत्ता, शहरी क्षतिपूर्ति भत्ता, ट्रांसफर भत्ता, हेवी ड्यूटी अलाउन्स आदि दिलाने का कार्य भी यूनियन ने ही किया है साथ ही इसमें समम-समय पर बढ़ोत्तरी भी दिलवाई है।

इसी यूनियन ने 1.6.46, 12.7.60 तथा 19.9.1968 एवं 8 5. 74 की देशव्यापी हड़तालों में अपनी कुर्बानी देकर सरकार को कर्मचारियों के प्रति सहृदय बनने पर विवश किया।

इसी यूनियन ने 1.1.47 के पहले वेतन आयोग, 1.7.59 के दूस रेवेतन आयोग, 1.1.79 के तीसरे वेतन आयोग तथा 1.1.86 के चौथे वेतन आयोग,की सिफारिशों को लागू करवाया तथा विसंगतियों को पुनः ठीक करवाकर रेल कर्मचारियों के हितों की रक्षा की और सेवा निवृत्ति पर 240 दिन की छुट्टियों का पैसा दिलाने का काम किया।

अतः हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम हमारी मुख्य माँग : समस्त औद्योगिक संस्थाओं के समान वेतन प्राप्त करने एवं मौजूद चतुर्थ वेतन आयोग द्वारा उत्पन्न निम्न विसंगतियों को दूर करने हेतु वैस्टर्न रेलवे एम्पलाईज यूनियन/आल इण्डिया रेलवेमैन फैडरेशन/हिन्द मजदूर सभा के निष्ठावान सदस्य बनकर मजदूर एकता का परिचय दें।

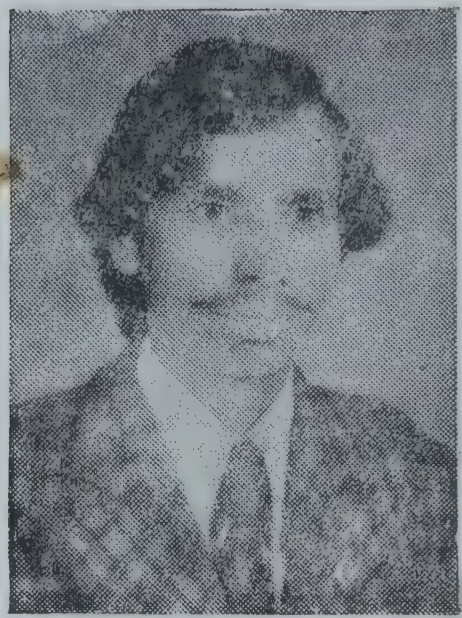
विसंगतियाँ

1. अन्य सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के समान वेतन दिलाने हेतु 600 महंगाई सूचकांक पर 950/- का न्यूनतम वेतन न देना।
2. वेतन आयोग द्वारा सुझाये गये सभी भत्ते दिनांक 1.1.86 से न देना।
3. वेतन निर्धारण सूत्र के अन्तर्गत कम-से-कम 100/- रु. अथवा 20 प्रतिशत को 1.1.86 के बाद के विकल्प पर न देना।
4. प्रशासनिक कार्यालयों में आधा घंटा कार्य समय बढ़ाने का आदेश वापस न लेना।

में आपको पुनः स्मरण करा दूं कि यह यूनियन आल इण्डिया रेलवेमैन फैडरेशन से सम्बद्ध है जिनके पदाधिकारी श्री वी. वी. गिरि भारत के राष्ट्रपति बने तथा श्री जयप्रकाश नारायण लोकनायक के पद पर विभूषित हुए। इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह यूनियन आपकी सच्ची यूनियन है और इसकी गरिमा और शक्ति आपकी गरिमा और शक्ति है।

□□

ऑल इण्डिया एस.सी./एस.टी. रेलवे एम्पलाईज एसोसियेशन- एक परिचय



● लालसिंह खरेरा

महासचिव ऑल इण्डिया एससी/एसटी रेलवें एम्पलाइज एसोसियेशन, (प. रे.) अजमेर।

ऑल इण्डिया एस. सी./एसी. टी. रेलवे एम्पलाईज एसोसियेशन का प्रादुर्भाव सन् 1957 में हुआ तथा यह संस्था रेलवे बोर्ड के पत्र सं.80 ई.(एससीटी) 15/1 भाग 2 दिनांक 5-2-82 एवं 21-9-82 के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त है। इस संस्था की जगह-2 पर शाखायें खुली हुई हैं और इस संस्था के लगभग 3 लाख सदस्य हैं।

संस्था के उद्देश्य:—

1. भारतीय संविधान में दिये गये इस वर्ग के अधिकारों की रक्षा करना।
2. भारतीय रेल की प्रगति हेतु रेल कर्मियों को कड़ी मेहनत करने का आह्वान करना।
3. रेल प्रशासन एवं मजदूरों के बीच सामंजस्य पैदा करके भारतीय रेलों की उन्नति में सहयोग देना।
4. देश की एकता अखण्डता में विश्वास पैदा करना, आदि।

जब कभी रेलवे में अन्य यूनियनों एव संघों द्वारा सरकार के खिलाफ कोई आवाज उठाई गई हैं तथा हड़ताल करने एवं तोड़-फोड़ हेतु रेल कर्मियों को उकसाया गया है तभी इस संस्था ने अनुसूचित जाति एवं जन जाति के रेल कर्मियों तोड़ फोड़ एवं हड़ताल करने वालों का विरोध करने की प्रेरणा दी है, चाहे वह किसी भी की तरह हड़ताल व तालाबन्दी है।

भारतवर्ष का इतिहास साक्षी है कि इस वर्ग के नेताओं एवं मजदूरों ने हमेशा ही देश की एकता अखण्डता को बनाये रखने में विश्वास रखा है तथा बड़ी मेहनत कर रेलवे की प्रगति का साथ दिया है।

आरक्षण कोई भीख नहीं:—

परम पूजनीम स्व. श्री बाबा साहब, डा. बी. आर. अम्बेडकर एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के बीच हुए समझौते (पूना पेक्ट) के परिणामस्वरूप अनु. जाति/जन जाति के लोगों के उत्थान के लिए सरकारी सेवाओं में आरक्षण का प्रावधान किया गया था किन्तु आज तक भी इस आरक्षण का उतना लाभ नहीं मिल पाया जितना कि इस समझौते के अन्तर्गत मिलना चाहिए था। इस आरक्षण को अफसरशाही द्वारा दबाया गया तथा सही माने में जो गरीबों को लाभ होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया। यह देश भर में उच्चतम न्यायालय और केन्द्रीय न्यायाधिकरण सहित विभिन्न न्यायालयों में चल रहे मुकदमों का का परिणाम है।

अगर सही अर्थों में इस आरक्षण की समुचित रूप से गरीबों तक पहुंचाना है तो सरकार को आरक्षण व्यवस्था को पूरी तरह लागू करने की राह में आड़े आ रहे रोड़े अथवा व्यवधान समाप्त करने होंगे अन्यथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा दलितों के मसीहा बाबा भीमराव अम्बेडकर के बीच हुए समझौते के साथ एक विश्वासघात होगा ।

इस प्रकार ऑल इण्डिया एस. सी./एस. टी. रेलवे एम्पलाईज एसोसियेशन अनु. जाति/जन जाति के कर्मचारियों के अधिकारों को रक्षा करती है तथा इन लोगों की आवाज को सरकार तक पहुंचा कर, इनको मिलने वाले अधिकारों को मुहैया कराती है ।

अन्त में, समस्त एस. सी एस. टी कर्मचारियों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे इस संगठन को बलशाली बनाएं और अपनी हर समस्या के समाधान के लिए इसका अधिक से अधिक लाभ उठाएं ।

मुझे फुरसत नहीं है

किसी विषय पर भाषण करूँ घंटों समर्थन में
मुझे फुरसत नहीं हैं
मैं पुर्जों और मशीनों की ड्राइंग बनाकर देश की जय बोलता हूँ ।
निकालूँ दोष दुनियाँ में, किसी की गलतियाँ खोजूँ
मुझे फुरसत नहीं हैं
मैं मशीनें चलाकर देश की जय बोलता हूं ।
रहो खामोश ··· फैलाओ न अफवाहें
तुम्हारे बोलने से हमारा ध्यान बँटता है
नशीले भाषणों का यह असर होता हैं—
मशीनों से वर्करों का हाथ हटता हैं
सुख से रात भर सोकर सुबह बहस फरमाऊँ
मुझे फुरसत नहीं हैं
मैं रेलें धड़धड़ाकर देश की जय बोलता हूं ।
ये एक अहसान हम पर उन हमलावरों का है
जिनने आज हमें गहरी नींद से उठाया है
हमारी मातृभूमि ने अपने सपूतों के खून को आजमाया है
पहन कपड़े नेता के मधुर उपदेश देने की
मुझे फुरसत नहीं हैं
मैं वतन को जगमगाकर देश की जय बोलता हूँ

—भूपेन्द्र झा ड्राफ्ट्समेन
लोको ड्राइंग ऑफिस अजमेर

□□

पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद



● केशव देव शर्मा

मन्त्री, लोको शाखा एवं चार्जमैन लोको उत्पादन आयोजना

औद्योगिक क्रान्ति का सूत्र-पात इग्लैंड में हुआ था और इसी कारण विश्वभर में सभी जगह ट्रेड यूनियन आन्दोलन पश्चिम से न केवल प्रभावित ही हुआ बल्कि उसी शैली में पनपा और पल्लवित हुआ। किन्तु, हमारे यहाँ वह शैली ठीक उसी प्रकार अनुपयुक्त एवं असफल होने लगी थी जिस प्रकार किसी षटकोणी सुराख में चौखुनी चटखनी।

इसके कई दुष्परिणाम सामने आने लगे जो सामान्य आदमी की दृष्टि में तो उजागर नहीं हुए किन्तु, राष्ट्र—दृष्टा महा मनीषी दत्तोपन्त ठेंगड़ी की आंखों में चुभने लगे। वे अपनी संस्कृति के अनुरूप राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित विशुद्ध भारतीय मजदूर संगठन को जन्म देने की साधना में जुट गये।

माननीय ठेंगड़ी जी द्वारा त्याग तपस्या और निस्वार्थ सेवा की भावना रखने वाले सभी भारत मां के सपूतों को परम पवित्र भगवाँ—ध्वज के नीचे एकत्रित होने का आह्वान किया गया और देश भर के लाखों स्वदेश प्रेमी एकत्रित हो गये। परम पूज्य ठेंगड़ी जी ने उनके समक्ष तीन उद्देश्य रखे (1) राष्ट्र-हित, (2) संस्थान हित और (3) मजदूर हित। इन तीनों हितों का आधार—भारत के असंख्य मजदूर—दरिद्र नारायणों की सेवा करना है क्योंकि अगर मजदूर खड़ा है तो राष्ट्र खड़ा है, मजदूर मजबूत हैं तो राष्ट्र मजबूत है और यदि मजदूर गिरेगा तो राष्ट्र भी गिर जायेगा किन्तु मजदूर खड़ा रहा तो राष्ट्र को गिरने नहीं देगा।

अन्ततोगत्वा इन्हीं उद्देश्यों को साकार करने के लिए पर्याप्त चिन्तन—मनन, विचार विमर्श और अथक परिश्रम के बाद उन्होंने सन् 1955 में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की जिसका एक अंग—भारतीय रेल मजदूर संघ है जिससे सम्बद्ध सभी नौ रेलों तथा चारों बड़े कारखानों (उत्पादन यूनिटों) पर कर्मचारी परिषद के क्षेत्रीय कार्यालय हैं और उनके प्रत्येक मण्डल तथा गैर-मण्डलीय स्तर पर शाखाएं मजदूरों की निष्ठा पूर्वक सेवा कर रही है।

आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि भारत सरकार द्वारा सन् 1983 में आपके अपने इसी भारतीय मजदूर संघ का सत्यापन कराया गया और इसी भारत सरकार ने इसे इस देश का दूसरे नम्बर का संगठन घोषित किया।

खेद का विषय है कि इसके उपरान्त भी हमें अपनी मान्यता का अधिकार प्राप्त करने के लिए

अभी भी संघर्ष करना पड़ रहा है और उसके लिए भारतीय रेल मजदूर संघ द्वारा 10 नवम्बर 1986 को न्याय पालिका के सम्मुख याचिका भी प्रस्तुत की जा चुकी है।

आप स्वयं देख रहें हैं कि हमारा दृष्टि-कोण राष्ट्रीय और रचनात्मक है। हमारा विश्वास तोड़ने में नहीं, अपितु जोड़ने में है। हम प्रशासन और मजदूर के बीच पड़ी खाई को पाटने का काम कर रहे हैं। इसीलिए, कर्मचारी परिषद के कार्यकर्त्ताओं से कभी अभद्र आचरण अथवा अप-शब्दों का प्रयोग सुनने में नहीं आता। हमारा नारा भी यही है—"राष्ट्रहित में करेंगे काम और काम के लेंगे पूरे दाम,।" "राष्ट्र भक्त मजदूरों एक हो", "देश भक्त मजदूरों एक हो", एक होकर राष्ट्र की सेवा में जुट जाओ और भारत को पुनः विश्व गुरु होने का गौरव दिलाओ।

आप यह भी जानते हैं कि भारतीय मजदूर संघ ने भारत पर हुए विगत तीनों आक्रमणों में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्र की हर विपत्ति के समय में हमने राष्ट्रीय रक्षा कोष में धन एकत्रित कर जमा कराया है। इस शरीर में जो प्राण है वे भी तो भारत मां के ही दिये हुए हैं और यदि वे भी भारत मां के काम आ सके तो इससे अधिक और क्या सौभाग्य हो सकता है। इसीलिए पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद के कार्यकर्ता सदैव आचार संहिता का पालन करते हुए राष्ट्र हित की चौखट के ही अन्तर्गत सभी विवादों का निपटारा करते हैं। इसी भावना से हम मजदूरों की समस्याओं का निराकरण भी निष्ठा-पूर्वक करने में संलग्न हैं। आपकी आंखों देखी घटनाओं का स्मरण कराना चाहूंगा जिससे आप पश्चिमी रेलवे तथा रेलवे बोर्ड स्तर पर हमारे कार्यकताओं द्वारा क्या कुछ किया जा रहा है उसका आप सही अनुमान कर सकें।

सर्वविदित है, स्थानीय प्रशासन से कतिपय लोगों ने किस प्रकार 126 कर्मचारियों को नौकरी से निकालने के नोटिस दिलवाये और किस प्रकार परिषद ने उनका साथ दिया और आप देख रहे हैं कि आज वे सभी कर्मचारी रेल सेवा में हैं। इसी प्रकार पी. सी. ओ. के मिस्त्रियों के अपग्रेडेशन, अनुदेशकों की पदावनति आदि प्रकरणों को परिषद ने किस खूबी के साथ हल करवाया, कहने की आवश्यकता नहीं है। सन् 1974 की रेल हडताल में भी परिषद के कार्यकताओं की कुर्बानी से आप परिचित हैं। आज उत्पादन से जुड़ा जो बोनस हमें मिल रहा है, वह भी भारतीय रेल मजदूर संघ के हड़ताल के नोटिस का सुपरिणाम है। इसी प्रकार हमारे कार्यकर्ताओं ने अन्तरिम राहत के लिए सफल संघर्ष किया और चतुर्थ वेतन आयोग के सामने अपने तर्क प्रस्तुत किये। न्यायालय के मजदूर विरोधी फेसले (धारा 311/2 ए-बी-सी) के विरोध में सारे देश में हस्ताक्षर अभियान चलाया और माननीय प्रधानमन्त्री जी को भी ज्ञापन प्रस्तुत किया और आज भी भारतीय मजदूर संघ वेतन आयोग की प्रतिकूल सिफारिशों के विरुद्ध संघर्ष की तैयारी में लगा हुआ है। इस कार्य को हम निस्वार्थ भाव से ईश्वरीय कार्य मान कर करते हैं और इसीलिए ईश्वर भी हमारी सदैव सहायता करता है।

स्पष्ट है कि भारतीय मजदूर संघ राजनीति के प्रभाव से मुक्त, व्यक्तिगत नेतागीरि से मुक्त, विदेशी प्रभाव से मुक्त—मजदूरों का, मजदूरों के लिए, मजदूरों द्वारा संचालित संगठन है। अन्त में, मैं सभी रेल कर्मचारी बन्धुओं से अनुरोध करता हूं कि इस राष्ट्रवादी संगठन में शामिल होकर राष्ट्रहित, संगठन हित और मजदूर हित में अपनी शक्ति लगायें और पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद के कार्य को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दें।

हम दिन चार रहें न रहें—माँ
तेरा वैभव अमर रहे—माँ
भारत माता की जय।

□□

दिनांक 15-11-85 को सीनियर रेलवे इंस्टीट्यूट में हिन्दी-सप्ताह के समापन समारोह में



मुख्य अतिथि श्री ललित कुमार सिन्हा, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, चर्चगेट, बम्बई का अध्यक्ष एवं राजभाषा अधिकारी श्री सुभाष गोडबोले द्वारा स्वागत ।



नृत्यमय सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करती हुई कु. अनिता कोटनाला



सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत, कृष्ण-सुदामा प्रसंग में, सुदामा की भूमिका निभाते हुए कु. अनिता कोटनाला एवं कृष्ण की भूमिका में कु. विजय लक्ष्मी जोशी ।



कृष्ण-सुदामा प्रसंग में, सुदामा के आगमन की सूचना देते हुए द्वार-पाल की भूमिका में कु. निधु सेठ, एवं कृष्ण की भूमिका में कुमारी विजय लक्ष्मी जोशी, रुकमणी का अभिनय करती शर्मिला बीजावत एवं परिचारिकाओं के रूप में रुकमणी के समीप कु. सुनीता धिया तथा कृष्ण के समीप कु. विजया शर्मा।



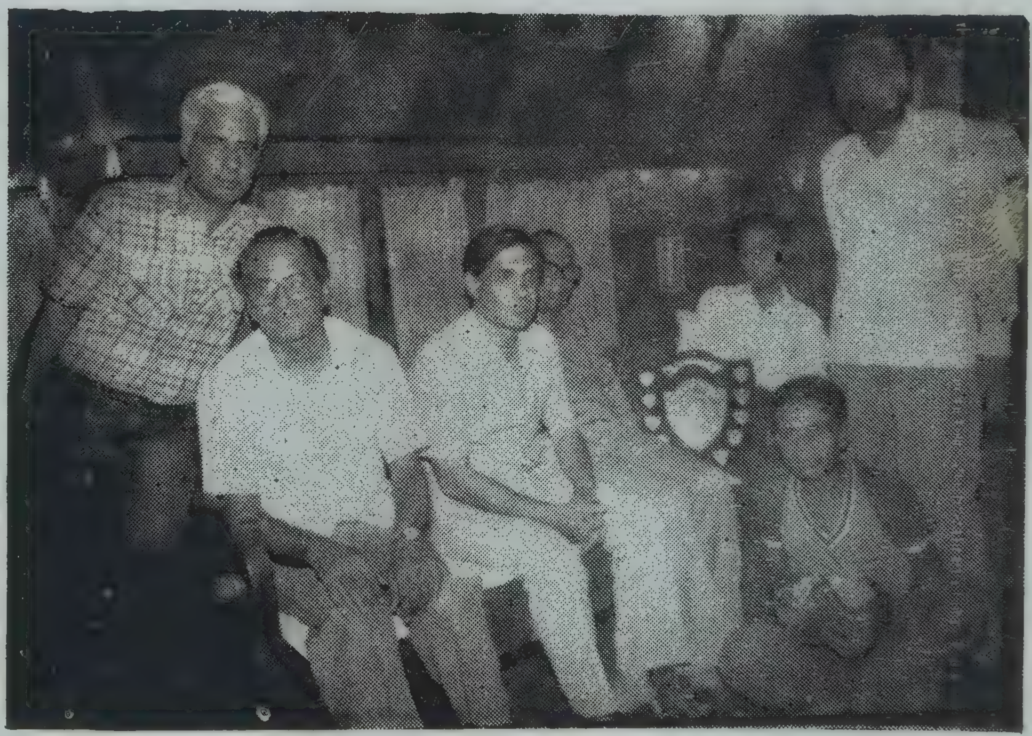
राजस्थानी नृत्य की भाव-भीनी-भंगिमा में नृत्यांगना कु. शर्मिला बीजावत



पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथी श्रीमती सरला हांडा के कर-कमलों से पुरस्कार लेते हुए श्री रमेशचन्द्र अरोड़ा, प्र. लि. एवं मध्य में सहयोग करते श्री श्यामलाल दायमा, प्र. लि. लोको-हिन्दी कक्ष एवं मुख्य अतिथी के पीछे खड़ी श्रीमती मालती तिवारी, हिन्दी सहायक ग्रेड—3



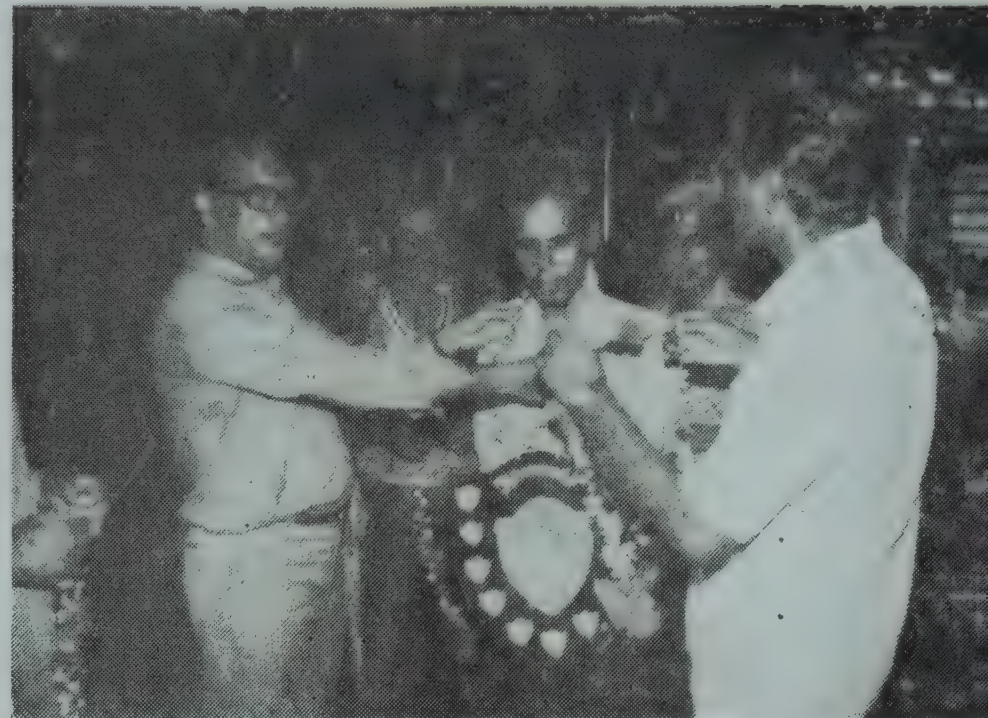
सांस्कृतिक कार्यक्रम की मुख्य कलाकार-नृत्यांगना एवं निदेशिका कु. अनिता कोटनाला, विशेष अतिथी श्रीमती मधुसूदन शर्मा से प्राप्त शील्ड सहित उनके पास मध्य में खड़ी हैं। कु. कोटनाला के नृत्यों एवं नृत्य-निर्देशन से प्रभावित होकर अपनी ओर से रु. 101/- का नगद पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि एवं विधायक श्री ललित भाटी और उनके पीछे कार्यक्रम के संयोजक प्रेमराज जोशी।



हाप्रबन्धक चर्चगेट बम्बई से लगातार दूसरी ार कारखाना राजभाषा शील्ड प्राप्त कर 0-6-86 को 2 डाउन से अजमेर आगमन र श्री गगन प्रकाश हांडा के ए. सी. कोच में वागतार्थ आये : बांये से—सर्वश्री प्रेमराज ोशी, प्रेमसिंह सोनी, नैपालसिंह, बी. आर. ींगा, शील्ड सहित श्री हांडा, श्यामलाल ायमा नीचे बैठे हैं घीसूलाल माथुर।



ए सी. कोच से शील्ड लेकर उतरते हुए श्री गगन प्रकाश हांडा साथ में आजू-बाजू आगे-पीछे, स्वागत में खड़े अधिकारी एवं कर्मचारी-गण।



शील्ड लेकर 2 डाउन से उतरे श्री हांडा का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए बांए श्री बी. आर. मोंगा और दाएँ श्री प्रेमसिंह सोनी ।



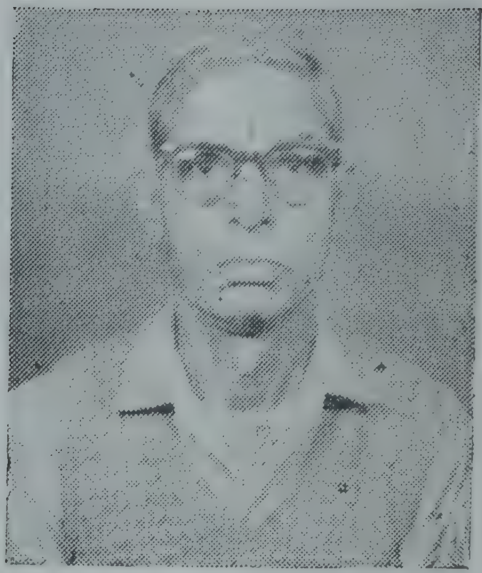
शील्ड सहित श्री हांडा का माल्यार्पण से स्वाग
करते हुए श्री प्रेमराज जोशी ।



हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने में तल्लीन दर्शकों से खचाखच भरे हॉल की एक झांकी ।



मजदूरी भुगतान अधिनियम 1936



● मदनलाल शर्मा

कार्या. अधी. स्था. III (कैरिज)

मजदूरी : - वेतन, भत्ते अथवा अन्य रूप में दिया जाने वाला वह प्रतिफल है जो धन अथवा अन्य माध्यम से किसी व्यक्ति को उसके रोजगार अथवा कार्य के लिए दिया जाता है।

उद्देश्य : - इस अधिनियम का उद्देश्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों व रेलों में कार्यरत कुछ श्रेणियों के कर्मचारियों को नियमित व समय से मजदूरी का भुगतान सुनिश्चित करना है। यह अधिनियम उन सभी कर्मचारियों पर लागू है जिनका वेतन रु. 1600 - प्रति मास तक है।

वेतन अवधि :—मजदूरी भुगतान के लिए उत्तरदायी अधिकारी देय वेतन / मजदूरी के भुगतान की अवधियाँ, जो एक मास से अधिक न हो, निर्धारित करेगा।

मजदूरी भुगतान का समयः—किसी रेलवे अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठान् में, जहाँ एक हजार से कम व्यक्ति सेवारत हैं, मजदूरी का भुगतान मजदूरी अवधि के अन्तिम दिन से सात दिन के अन्दर किसी कार्य दिवस पर किया जावेगा।

(ii) किसी अन्य रेलवे अथवा औद्योगिक प्रतिष्ठान् में मजदूरी का भुगतान, मजदूरी अवधि के अन्तिम दिन से दस दिन के अन्दर किसी कार्य दिवस पर किया जावेगा।

(iii) यदि नियोजक द्वारा किसी कर्मचारी को निकाल (डिस्चार्ज) दिया जाता है तो उसकी मजदूरी का भुगतान उसके निकाले जाने की तारीख से दूसरे कार्य दिवस की समाप्ति से पहले कर दिया जाना चाहिये।

कटौती :— कटौती का क्या अर्थ है? वेतन भुगतान अधिनियम के अन्तर्गत कौन-सी वैध कटौतियाँ की जा सकती है? वह धनराशि जो कर्मचारी द्वारा सेवा योजक अथवा उसके अधिकारी को अपनी मजदूरी में से दी जायेगी, वैध कटौती कहलायेगी यथा (1) फाइन (2) अनुपस्थिति के लिये (3) क्षति अथवा हानि के लिये बशर्ते कि क्षति या हानिग्रस्त वस्तु कर्मचारी के संरक्षण में थी। (4) निलम्बन तथा वेतन वृद्धि पर रोक की कटौती (5) मकान किराया (6) नियोजक द्वारा कर्मचारी को दी गई सुविधाओं व सेवाओं के एवज में वसूली (7) भविष्य निधि अग्रिम कर्जे की किश्तों की वसूली (8) आयकर (9) सहकारी समितियों के बिलों की वसूली (10) कोर्ट द्वारा अधिकृत कटौती (11) कर्मचारी द्वारा लिखित में अधिकृत

किये जाने पर प्रधानमंत्री राहत निधि या निधियों के लिये कटौती जिन्हें केन्द्रीय सरकार द्वारा घोषित किया गया हो ।

अधिकतम कटौती :—किसी भी मजदूरी अवधि में एक कर्मचारी की मजदूरी से की जाने वाली कटौती निम्न राशि से अधिक नहीं होगी—

(1) जहाँ सहकारी समितियों के संदर्भ में भी वसूली की हो, तो अधिकतम, वेतन का 75 प्रतिशत

(2) अन्य मामलों में 50 प्रतिशत

कर्मचारी की मृत्यु के दिन का वेतन :—

यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तो जिस दिन मृत्यु होती है उस दिन का वेतन पूरा दिया जाना चाहिये चाहे मृत्यु उस दिन किसी भी समय हुई हो ।

लिपिकवर्गीय तथा पर्यवेक्षक कर्मचारी एवं 'ए' व 'बी' श्रेणी के कर्मचारियों के भुगतान की निश्चित तिथि :—

जिन कर्मचारियों की वेतन अवधि केलेण्डर मास हो; उन्हें वेतन का भुगतान माह के अन्तिम दिन किया जायेगा । केवल मार्च का वेतन पहली अप्रेल को ही दिया जावेगा । यदि माह का अन्तिम दिन सार्वजनिक अवकाश हो तो महाप्रबन्धक के विवेक पर वेतन का भुगतान सार्वजनिक अवकाश के एक दिन पहले कर दिया जाना चाहिये ।

आवश्यक सूचनायें प्रदर्शित करना :—इस अधिनियम के नियम तथा नियत की गई न्यूनतम मजदूरी की दरें, अधिनियम के अन्तर्गत नियुक्त निरीक्षकों के नाम हिन्दी, अंग्रेजी तथा स्थानीय भाषा के माध्यम से कार्यस्थल पर प्रदर्शित किये जावें ।

शास्ति :—(1) कम भुगतान करने / अधिक काम लेने / साप्ताहिक कार्य घंटों में अनियमितता आदि के लिए कम से कम रु. 200 - और अधिकतम रु. 1000 - और दूसरी बार नियम की अवहेलना पर एक महिने से छः महिने की सजा अथवा रु. 500 से रु. 3000 - के मध्य जुर्माना हो सकता है ।

(2) यदि कामगार को क्षतिपूर्ति का कम भुगतान किया गया है तो कम दी गई राशि के दस गुने तक का जुर्माना किया जा सकता है ।

भुगतान का तरीका :—कर्मचारी की मजदूरी का भुगतान प्रचलित सिक्कों में, या करेन्सी नोट्स अथवा दोनों में ही अनिवार्य रूप से किया जाना है । कर्मचारी के स्वयं के लिखित रूप में देने से ही भुगतान चैक द्वारा बैंक के माध्यम से हो सकेगा ।

कर्मकार प्रतिकर अधिनियम 1923

भूमिका:—औद्योगिक विकास ने स्वयं ही पग-पग पर कर्मकार के लिए एक खतरा पैदा कर दिया है । अतः सन् 1922 के कर्मकार प्रतिकर अधिनियम को विधेयक के रूप में केन्द्रीय विधान मण्डल में प्रस्तुत किया गया जिसे कर्मकार की सुरक्षा की दृष्टि से कुछ संशोधन किये जाने के बाद अधिनियम के रूप में पारित किया गया । इसके तहत कर्मकार को ड्यूटी पर चोट लगने पर मुआवजा दिया जाता है । इस अधिनियम में सन् 1933, 1938, 1939, 1958, 1962, और 1976 में संशोधन किये गये जिनसे सुरक्षात्मक दृष्टि से कर्मकार बहुत लाभान्वित हुआ है ।

अधिनियम के उद्देश्य:—औद्योगिक विकास के सब कर्मकारों को ड्यूटी पर कार्य करते हुये चोट लगना एक सामान्य बात हो गई है । इसलिए यह अधिनियम कर्मकार को उसके अंग-प्रत्यंग की सुरक्षा प्रदान करता है । इसमें सेवा योजकों द्वारा अनिवार्य रूप से कर्मकार को अथवा उसकी मृत्यु की दशा में उसके आश्रितों को मुआवजा देने सम्बन्धी

प्रावधान है। यह अधिनियम प्रशासनिक कार्यालय या सब डिविजनल कार्यालय के सिवाय समस्त रेल कर्मचारियों पर लागू होता हैं जो कि रु.1600/- तक की मजदूरी पर नियोजित हैं।

मजदूरी:—(वेजेज) कर्मकार प्रतिकार अधिनियम की धारा 2 (1) (एम) के अनुसार मजदूरी का अर्थ रूपयों में अनुमानित किया जाता है। इसमें (i) यात्रा भत्ता अथवा (ii) नियोजक द्वारा कर्मकार की भविष्य निधि अथवा निवृति निधि में दिया गया अंशदान (iii) कार्य की प्रकृति के संदर्भ में कर्मकार को विशेष रूप से दी गई राशि सम्मिलित नहीं है।

प्रतिकार भुगतान का दायित्वः—नियोजक पर प्रतिकर का दायित्व तभी होगा जबकि:—

(i) किसी कर्मकार को व्यक्तिगत क्षति पहुँची हो। (ii) इस क्षति के कारण कर्मकार की मृत्यु हो गई हो तीन दिन से अधिक के लिए वह पूर्ण अथवा आंशिक रूप में अंगहीन हो गया हो। (iii) क्षति का कारण कोई दुर्घटना हो। (iv) उक्त दुर्घटना कर्मकार के नियोजन के संदर्भ में हुई हो।

(2) दुर्घटना में होने वाली निम्न क्षतियों के लिये (मृत्यु के अतिरिक्त) नियोजक का कोई दायित्व नहीं होगा :

(i) कर्मकार दुर्घटना के समय मदिरा अथवा किसी औषधी के नशे में हो।

(ii) कर्मकार ने जानबूझ कर ऐसे नियम की अवेहलना की हो जिसकी नियोजक ने सुरक्षा की दृष्टि से व्यवस्था की हो।

(iii) कर्मकार ने जानबूझ कर उसकी सुरक्षा की दृष्टि से लगाये गये सुरक्षा सूचकों को हटा दिया हो।

(3) नियोजक का प्रतिकार भुगतान करने का दायित्व तब भी होगा यदि कर्मकार को नियोजन के क्रम में कोई व्यवसायिक रोग उत्पन्न हो जाता है। इस हेतु व्यवसायिक रोगों की सूची इस अधिनियम की धारा III में दी हुई है जिसके अनुसार प्रतिकर देय होवेगा।

रेलवे नियम के अनुसार दी जाने वाली छुट्टियों का भुगतानः—

(i) रेलवे कर्मकार को इस अधिनियम के तहत दुर्घटना के क्रम में 3 दिन की अवधि से होस्पिटल लीव स्वीकृत की जाती है। छुट्टियाँ अर्द्ध वेतन अवकाश अथवा पूर्ण वेतन पर सक्षम अधिकारी के विवेकाधीन है।

(ii) यदि अस्थायी अंगहानि के क्रम में कर्मचारी की मृत्यु भी हो जाती है। या स्थायी अंगहानि और उसमें कर्मचारी को अर्द्ध मासिक भुगतान पहले ही किये जा चुके हों तो उसका समायोजन एक मुश्त दिये जाने वाले प्रतिकर में से किया जाता है। इसके साथ स्वीकृत की गई हास्पिटल लीव की भी कटौती कर ली जाती हैं।

(iii) हास्पिटल लीव कर्मचारी को रेल सेवा से निकाले जाने की तारीख व इसके बाद से नहीं मिलती है। केजुअल लेबर को किसी प्रकार की भी हास्पिटल लीव देय नहीं हैं।

(iv) यदि कोई कर्मचारी हास्पिटल लीव पर रहते हुए रेल सेवा से त्याग-पत्र देता है तो इस प्रकार दी हुए छुट्टियों पर उसका कोई हक नहीं होता। अतः उसका भुगतान काट लिया जाता है जब तक कि महाप्रबन्धक द्वारा उसे मुक्त नहीं किया हो। महाप्रबन्धक को अराजपत्रित कर्मचारियों को हास्पिटल लीव स्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार है।

दुर्घटना में अंगहानि:—अंगहानि निम्न रूपों में हो सकती है—

(i) **अस्थायी आशिक अंगहानिः**—जिस अंगहानि से कर्मकार की उस समय के उसके नियोजन में अर्जित करने कमाने की क्षमता कम हो जाये अस्थायी आशिक अंगहानि कहलायेगी। आशिक अंगहानि का निर्धारण मेडिकल बोर्ड द्वारा ही किया जाता है।

(ii) **स्थायी आँशिक अंगहानि**-स्थायी प्रकृति की वह अंगहानि जिससे प्रत्येक प्रकार के नियोजन में कर्मकार के कार्य करने की क्षमता में कमी आ जाती है जिसे वह उस समय करने में समर्थ था; स्थायी आंशिक अंगहानि कहलायेगी। यह 100 प्रतिशत तक अंकित की गई हैं। चिकित्सा बोर्ड उसकी हानि का जिस प्रतिशत का उल्लेख करता है उसी अनुसार कर्मकार को क्षति पूर्ति दी जाती है। इसका विवरण अनुच्छेद (1) में दिया जा रहा है।

(iii) **पूर्ण अंगहानि**:—इसमें ऐसी स्थायी अथवा अस्थायी प्रकृति की हानि आती है जिससे कर्मकार ऐसे समस्त कार्यों को करने में असमर्थ हो जाता है जिनको करने के लिये वह उस दुर्घटना से पूर्व समर्थ था-जिसके फलस्वरूप ऐसी अंग-हानि हुई है। इसमें दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति आगामी जीवन में कुछ भी कर सकने में असमर्थ हो जाता है। विवरण अनुच्छेद (i) में प्रस्तुत हैं-

अनुच्छेद I

कर्मकार की स्थायी आंशिक अंगहानि और पूर्ण अंगहानि होने पर उसके वेतन के आधार पर उसे प्रकार से मुआवजा दिया जा सकता है :—

चोट ग्रस्त कामगार का मासिक वेतन	रु. 60 से अधिक किन्तु रु. 1000 से अधिक नहीं	मृत्यु की राशि	स्थाई पूर्ण अंगहानि के लिए मुआवजा	अस्थाई अंगहानि में अर्ध मासिक वेतन का भुगतान-उसके मासिक वेतन का आधा
0	60	7,200	10,080	मासिक वेतन का आधा
60	90	9,720	14,608	36,00
90	120	11,520	16,128	42,00
120	150	13,500	18,900	48,00
150	200	16,800	23,520	60,75
200	300	18,000	25,200	82,50
300	400	19,200	26,880	100,00
400	500	21,000	29,400	118,75
500	600	21,600	30,240	135,00
600	700	23,100	32,340	148,75
700	800	24,000	33,600	160,75
800	900	27,000	37,800	168,00
900	1000	30,000	42,000	175,00

रेलों पर विभिन्न श्रेणियों में भर्ती

● **सूरजमल मीना,**

कार्यालय अधीक्षक

(लोको स्था-2, अजमेर)



भारतीय रेलों में लगभग 18 लाख रेल कर्मचारी कार्यरत हैं। रेलों में कर्मचारियों की विभिन्न श्रेणियां हैं जिसमें समय-समय पर रिक्तियाँ होती हैं जिसकी पूर्ति केवल पूर्व योजना से ही सम्पन्न की जा सकती है। अतएव विभिन्न श्रेणियों में भर्ती की सुविधाग्ति प्रक्रिया है जो इस प्रकार है—

ग्रुप "ए" और ग्रुप "बी"—भारतीय रेलों के प्रबन्ध संवर्ग में ग्रुप "ए" व ग्रुप "बी" में राजपत्रित अधिकारी होते हैं। ग्रुप "ए" में भर्ती संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं द्वारा की जाती हैं। इन सेवाओं में सभी नियुक्तियां संघ लोक सेवा आयोग की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा की जाती हैं।

ग्रुप "ए" में होने वाली रिक्तियों का 40 प्रतिशत ग्रुप "बी" के उन अधिकारियों से भरे जाने का प्रावधान है जिन्होंने ग्रुप "बी" में नियमित 3 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है और जो सेवा अभिलेखों व गोपनीय रिपोर्टों के आधार पर उपयुक्त पाये जाते हैं।

ग्रुप "बी" के पद ग्रुप "सी" के कर्मचारियों की पदोन्नति द्वारा भरे जाते हैं। ग्रुप "बी" में सीधी भर्ती केवल रेलवे बोर्ड के अनुभाग अधिकारियों के पदों के लिए की जाती हैं।

ग्रुप "सी"—ग्रुप 'सी' के पदों के लिए सीधी भर्ती अखिल भारतीय आधार खुली प्रतियोगिता द्वारा रेल सेवा आयोगों/रेल भर्ती बोर्डों के माध्यम से की जाती है। क्षेत्रीय प्रशासन द्वारा रिक्तियों का आकलन: अपंग, भूतपूर्व सैनिक, अनुसूचित जाति/जन जाति के लिए आरक्षित पदों सहित किया जाता है और रेल सेवा आयोगों को आवश्यकता सम्बन्धी आंकड़े व अन्य विवरण निर्धारित प्रपत्रों पर भेजे जाते हैं।

सामान्यत: ग्रुप 'सी' के पदों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक पास है। विभिन्न श्रेणियों में आरम्भिक भर्ती के समय निम्न प्रकार से आरक्षित कोटे पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

1. ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी' में पदोन्नति का कोटा सामान्यत: 33, 1/4 प्रतिशत है (लेखा अनुभाग में 25 प्रतिशत)
2. अनुसूचित जाति, जन जाति का आरक्षण कोटा क्रमश: 15 प्रतिशत व 7, 1/2 प्रतिशत है।
3. भूतपूर्व सैनिकों के लिए ग्रुप 'सी' में आरक्षित कोटा 10 प्रतिशत व ग्रुप 'डी' में .0 प्रतिशत है।

4. शारीरिक तौर पर अपंग व्यक्तियों के लिये ग्रुप 'सी' व ग्रुप 'डी' की निर्धारित कोटियों व पदों में 15 प्रतिशत कोटा निर्धारित है (5 प्रतिशत अंधे व्यक्तियों के लिये, 5 प्रतिशत आर्थोपेडिकल अपंग 5 प्रतिशत बहरे व्यक्तियों के लिये।)

5. **खेलकूद का कोटा**:—इसके अन्तर्गत ऐसे खिलाड़ियों को नियुक्ति दिये जाने का प्रावधान है है जो इण्टर क्लब, इण्टर डिस्ट्रिक्ट, इण्टर कॉलेज या अखिल भारतीय/राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में भाग ले चुके हों और जिनका खेलकूद का स्तर सक्षम हो।

ग्रुप सी' में—प. रे. पर एक वर्ष में अधिकतम 24 नियुक्तियाँ की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय प्रधान कार्यालय एक वित्तीय वर्ष में ग्रुप 'डी' में चार नियुक्तियाँ देने के लिये समक्ष है। प्रत्येक डिविजन में मण्डल रेल प्रबन्धक, ग्रुप 'डी' में चार नियुक्तियाँ करने में समक्ष है।

प्रत्येक कारखाना इकाइयों के प्रमुख जो कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड या इससे ऊपर के हों, एक वित्तीय वर्ष में ग्रुप 'डी' में तीन नियुक्तियाँ देने के लिये सक्षम है।

6. सांस्कृतिकों एवं कलात्मक दृष्टि से योग्य व्यक्तियों की प्रत्येक क्षेत्रीय रेल प्रशासन द्वारा एक वर्ष में ग्रुप 'सी' या 'डी' में अधिकतम 4 व्यक्तियों की नियुक्ति की जा सकती है।

ग्रुप "डी" में सीधी भर्ती की प्रक्रिया:— रेलों में ग्रुप "डी" के लिए सीधी भर्ती रेल सेवा आयोग के माध्यम से नहीं होती बल्कि विभागीय आधार पर की जाती हैं।

ग्रुप "डी" में स्पष्ट रक्तियां होने पर सीधी भर्ती की जा सकती हैं। सर्व प्रथम वर्तमान रिक्तियां व अगले एक वर्ष में होने वाली रिक्तियों की नामिका [पेनल] बनाने के लिए आंकलन तैयार किया जाता है। आंकलन करके अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति के लिए क्रमशः 11 प्रतिशत व 14 प्रतिशत स्थानीय आधार पर आरक्षण है। रिक्तियों के आंकलन का सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदन किया जाता है।

रिक्तियों की घोषणा—एक परिपत्र विज्ञप्ति जारी की जाती है जिसकी प्रतियां स्थानीय नियोजन कार्यालयों, श्रमिक संगठनों, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति की संस्थाओं व अन्य सभी सम्बन्धित कार्यालयों को दी जाती हैं। इस परिपत्र में पेनल बनाने के लिए रिक्तियों की संख्या, अनुसूचित जाति/जन जाति व भूतपूर्व सैनिकों के लिए आरक्षित कोटे के अनुसार रिक्तियां व कमियां, उम्मीदवार की आयु सीमा, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, अन्तिम तिथि आदि के स्पष्ट उल्लेख सहित आवेदन के लिए एक विशेष प्रपत्र विज्ञापित किया जाता है।

न्यूनतम योग्यता 1. बिजली/यांत्रिक/संकेत व दूर संचार विभाग के कारखानों सहित अन्य सभी शाखाओं में [सफाई वालों को छोड़कर] रिक्तियां भरने के लिए न्यूनतम योग्यता आई. टी. आई. अथवा अप्रेन्टिस अधिनियम के तहत पाठ्यक्रम की पूर्णता आवश्यक होगी।

2. संकेत एवं दूर संचार विभाग में [वर्कशॉप को छोड़कर] खलासियों (चतुर्थ श्रेणी) के लिए न्यूनतम योग्यता दसवीं पास होगी।

3. यांत्रिक/चिकित्सा और अन्य विभागों में सफाई वालों के लिए न्यूनतम योग्यता पांचवी पास होगी।

4. चिकित्सा और सिविल इंजीनियरी सहित अन्य सभी विभागों में ग्रुप 'डी' के पदों को भरने के लिए न्यूनतम योग्यता आठवीं पास होगी।

इस मंत्रालय अथवा संम्बन्धित स्थानीय रेल प्रशासनों द्वारा जहां कहीं किसी विशेष कोटि/कोटियों के लिए पहले से ही ऊंची शैक्षणिक योग्यता निर्धारित की हुई है वहां उनका अनुसरण जारी रहेगा।

समय-समय पर लागू अनुदेशों के अन्तर्गत जहां भी सीधी भर्ती या नए आदमी रखने की अनुमति हो हो वहां ग्रुप 'डी' में सीधी भर्ती तथा एवजी या नैमित्तिक मजदूर के रूप में नये आदमी रखने के लिए

उपर्युक्त न्यूनतम योग्यताएं लागू होंगी ।

चयन समिति—सक्षम अधिकारी द्वारा चार सहायक अधिकारियों की समिति नामांकित की जाती है । जिसमें एक सदस्य अनुसूचित जाति या अनुसूचित जन-जाति, एक सदस्य सहायक कार्मिक अधिकारी, एक सदस्य अल्पसंख्यक समुदाय और एक सदस्य सम्बन्धित विभाग का सहायक अधिकारी होता है ।

नियोजन कार्यालयों व अन्य स्थानों से आवेदन प्राप्त होने पर उनकी छानबीन करके पंजीयन किया जाता है । वर्तमान प्रचलित नियमानुसार रिक्तियों की तीन से पांच गुनी संख्या के बराबर उम्मीदवारों को साक्षात्कार हेतु बुलाया जाता है । साक्षात्कार व योग्यता के आधार पर पेनल बनाया जाता है जिसका सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदन किया जाता है । पेनल को अनुमोदन की तिथि से ही प्रभावी मानते हुये घोषित कर दिया जाता है । इसकी प्रति नोटिस बोर्ड पर लगाना आवश्यक है व एक-एक प्रति मान्यता प्राप्त श्रमिक संगठनों को भेजी जानी चाहिए । पैनल की अवधि उसके घोषित होने की तिथि से एक वर्ष है किन्तु प्रधान कार्यालय की स्वीकृति से बढ़ाई जा सकती है ।

यांत्रिक कारखानों में ग्रुप 'डी' के पद निम्न प्रक्रिया द्वारा भरे जाते हैं—

[क] 50 प्रतिशत रिक्तियां उक्त रीति से चयन द्वारा कारखाने से बाहर के उम्मीदवारों से भरी जाती हैं ।

[ख] 10 प्रतिशत रिक्तियां गैंगमैन, स्टोर्स, खलासी व सभी विभागों में कार्यरत सफाई वालों से भरी जाती हैं और ऐसे कर्मचारियों को सेवा का 50 प्रतिशत लाभ (वेटेज) दिया जाता है ।

[ग] बाकी की 40 प्रतिशत रिक्तियां अन्य विभागों के उन कर्मचारियों से भरी जाती हैं, जो निम्नतम वरिष्ठता स्वीकार करते हुए अपनी इच्छा से आवेदन देते हैं ।

यदि 40 प्रतिशत रिक्तियों के लिए पर्याप्त संख्या में कर्मचारी आवेदन न दें तो यह कमी बाहर के उम्मीदवारों से पूरी की जा सकती है, चाहे बाहर के उम्मीदवारों की संख्या 50 प्रतिशत सीमा से अधिक ही क्यों न हो जावे ।

ग्रुप 'डी' में एवजी एवं नैमितिक श्रमिकों की भर्ती—नये व्यक्ति एवजी या नैमेतिक श्रमिक के रूप में नहीं लिये जा सकते लेकिन पुराने एवजी या श्रमिकों को लिया जा सकता है जिनके पास इसके पूर्व काम करने का पीला श्रमिक कार्ड है । यदि बहुत विशेष परिस्थितियों में बाजार से नये व्यक्ति नैमेतिक श्रमिक के रूप में लेने की आवश्यकता पड़े तो महा-प्रबन्धक की पूर्व निजी स्वीकृति आवश्यक है ।

अस्थाई दर्जा—जो नैमेतिक श्रमिक [प्रोजेक्ट श्रमिकों को छोड़कर] या एवजी उसी कार्य पर या अन्य उस जैसे कार्य पर 120 दिन से अधिक अवधि की सेवा पूरी कर लेते हैं, वे अस्थाई दर्जा प्राप्त करने के हकदार हो जाते हैं । जिनके लिए कार्यालय द्वारा जांच पड़ताल के बाद इस आशय के आदेश निकाले जाते हैं । उसके पश्चात उन्हें वे सभी लाभ व हक मिलते हैं । जो सामान्यतः एक अस्थाई कर्मचारी को देय होते हैं ।

अस्थाई दर्जा प्राप्त नैमेतिक श्रमिक को यदि कार्य के प्रति दोषी या दुराचार के फलस्वरूप सेवा से निकालने की आवश्यकता पड़े तो अनुशासन एवं अपील नियमों के अन्तर्गत दी गई प्रक्रिया को अपनाना आवश्वक है अन्यथा कर्मचारी का सेवा से निकाला जाना अनियमित माना जाता है ।

प्रोजेक्ट [परियोजना] नैमितिक श्रमिक—उक्त प्रकार के श्रमिक 180 दिन लगातार सेवा के पश्चात् स्केल दर से भुगतान प्राप्त करने के हकदार हो जाते हैं ।

परियोजना [प्रोजेक्ट] श्रमिकों को अस्थाई दर्जा—प्रोजेक्ट श्रमिकों को 360 दिन की लगातार सेवा के बाद अस्थाई दर्जे का पात्र मान लिया जाता है ।



आलू-चिप्स की भी एक कहानी है

श्रीमती निर्मला लाल चन्दानी

वरिष्ठ लिपिक, (संकेत कारखाना)

यद्यपि यह एक साधारण-सी घटना है, किन्तु यह प्रसंग आपके विचारों को उद्वेलित कर सकता है, इस दृष्टि से विचारणीय यह प्रसग आपकी सेवा में प्रस्तुत है। —सम्पादक

कभी-कभी संयोग से अथवा आकस्मिक रूप से प्रकाश मे आने वाली बातें मनुष्य जाति के लिए वरदान सिद्ध होती हैं कई नई खोजों और आविष्कारों के मूल में यही बात पायी जायेगी।

पोटेटो चिप्स या आलू से बनाये जाने वाले वेफर्स की विधि का भी एक दिन इसी प्रकार एक संयोग से ही पता लगा था।

1850 ई, की बात है। न्यूयार्क राज्य के सरटीना सिप्रिंग्ल नामक स्थान की एक महिला आण्ट कैंट एक भोजनलय में खाद्य पदार्थ तलने के काम में लगी हुई थी। इसी बीच वह आलू काटने बैठ गई। किसी प्रकार संयोग से चीरे गये आलू का एक पतला टुकड़ा कढ़ाई में जा गिरा। सुश्री केंट के एक साथी जाजेक्रूम ने जो इस समय रसोई घर में उपस्थित था-भट से कढ़ाई से यह टुकड़ा निकाल लिया। उसने देखा कि आलू का यह पतला टुकड़ा तला जाने के बाद आकर्षक गुलाबी रंग का और बड़ा ही खस्ता बन गया है। उसने केंट से अनुरोध किया कि वह इस प्रकार के कुछ और चिप्स तले। खुद केंट ने ये तले हुए चिप्स जब चखकर देखे तब उसे भी बड़े ही स्वादिष्ट लगे।

बस उसी दिन से सुश्री केंट के भोजनालय के मेनू या खाद्य पदार्थों की सूची में इस नये व्यंजन को भी शामिल किया जाने लगा। फिर भी अमरीका भर में इस नये व्यंजन के लोकप्रिय बनने में और छोटे-छोटे पैकेटों में उसकी बिक्री की प्रथा चालू होने में अर्द्ध शताब्दी से भी अधिक समय लगा। अमरीका में 1925 या 1930 ई. से पोटेटो चिप्स की खपत धड़ से बढ़ गयी। आज यह न केवल लोकप्रिय खाद्य पदार्थ बन गया है बल्कि कई सामाजिक समारोहों की शोभा बढ़ाने में भी इसका अच्छा उपयोग हो रहा है।

अमेरिका में इसकी वार्षिक खपत 1963 ई में 50 करोड़ पौंड थी। खाने के काम में लाए जाने वाले आलू की कुल मात्रा का 8 प्रतिशत पोटेटो चिप्स बनाने में खर्च होता है।

अमेरिका में अब पोटेटो चिप्स बनाने के लिए ऐसी-ऐसी मशीनें सुलभ हैं जो प्रति घन्टे पांच सौ पौण्ड चिप्स तैयार कर सकती हैं। आलुओं के उबालने छीलने, धोने आदि से लेकर चिप्स तैयार करने तक के सभी काम स्वचालित मशीनें ही करती हैं।

जादू क्या है ?

● श्याम सुन्दर केशवानी (जादूगर)

(मु. लि. स्था. I लोको)



विज्ञान-कुछ विशेष उपकरण,बोलने की कला एवं हाथ की फुर्ती, इन चारों के समन्वय से जो कुछ भी जादूगर बतलाता है, एक पढ़े लिखे, विज्ञान के ज्ञाता तक को भी देखने के बाद समझ में न आये, जादू या मैजिक कहलाता है।

यहाँ एक बात का उल्लेख करना पसन्द करूंगा कि मैजिक तभी तक मैजिक होता है जब तक कि इसका भेद छिपा रहता है, जहां यह पता चला कि यह ऐसे किया गया है, बस उसी क्षण उसका सारा आकर्षण खत्म हो जाता है।

जादू प्रदर्शन में बोलने की कला का अपना अलग ही महत्व है। अपने प्रदर्शन के दौरान परिस्थिति अनुसार कुछ जोड़ने व घटाने की क्षमता रखने वाला ही हमेशा सफलता व सराहना का हकदार होता है। बोलने की कला प्रत्येक व्यक्ति की अपनी निजि सम्पत्ति है। उस खजाने की चाबी उसके अपने हाथों में हैं। कई बार की सफलता से मिला उत्साह सिर्फ एक बार की असफलता में ठंडा हो जाता है। आपको एक छोटा सा जादू का खेल बतलाने जा रहा हूँ। ट्रिक देखने में आसान है पर उसकी सफलता इसी में है कि उसे कितनी कुशलता एवं चतुराई से पेश किया जाता हैं कि देखने वाले की पकड़ में न आये। इसके लिए दर्शकों के ध्यान को घुमाना पड़ता है। जो जादूगर बातों की जादूगरी से दर्शकों का ध्यान घुमाने में जितना माहिर होगा वह उतना ही सफल जादूगर होगा। लीजिए अब एक आईटम देखिये:—

ट्रिक.—कई बार तोड़ी पर जादू से जोड़ी—

माचिस की एक तीली को रुमाल में लपेटकर उसे कई भागों में तोड़ने के बाद भी रुमाल को झटककर समूची तीली रुमाल से गिराना।

आवश्यक सामग्रीः—माचिस की दो तीलियां, एक ऐसा रुमाल जिसके किनारे चौड़े मोड़कर सिये गये हों।

पूर्व तैयारीः—माचिस की एक तीली को रुमाल के चौड़े मुड़े हुए किनारे के बीच में इस प्रकार डाल दो कि उसका किसी को पता न लग सके।

कृतिः—रुमाल में छिपी तीली के अलावा अब तुम्हारे पास सिर्फ एक और तीली है इसे दर्शकों को दिखाकर मेज पर फैले रुमाल के बीचों बीच रख दो। रुमाल को सावधानी से इस प्रकार समेटो कि पहले से छिपाकर रखी गई तीली ऐसा एहसास दे मानो वह वही तीली है जो अभी दर्शकों के सामने रुमाल में रखी गई है।

किसी दर्शक को बुलाकर उसको रुमाल में लिपटी पहली तीली को छूकर उसकी उपस्थिति का अनुभव करने दो, फिर उससे कहो कि वह इस तीली को दो टुकड़ों में बांट दें। ऐसा करते समय वह यही समझेगा कि उसने दर्शकों के सामने रखी गई दूसरी तीली तोड़ी है। जबकि दूसरी तीली उस वक्त रुमाल में लिपटी तुम्हारे अंगूठे के नीचे दबी होती है और तुम धोखा देकर उससे पहली तीली तुड़वा लेते हो जो वास्तव में रुमाल की सिलाई में छिपा दी गई थी।

इस तीली को अन्य एक दो और दर्शकों से तुड़वाकर तुम जादुई मंत्र पढ़ते हुए रुमाल को जब तक झटका दोगे तो पूरी की पूरी तीली दर्शकों के सामने आ गिरेगी।

स्पष्ट है कि हकीकत में जादू जैसी कोई चीज नहीं होती। हम जिसे जादू समझते हैं वह केवल हाथ की सफाई है। इस संबन्ध में यदि किसी को कोई शंका हो तो वह लेखक से संपर्क कर सकते हैं।

□□

जवान ?

● **रविन्द्र भारतीय**

कार्यालय अधीक्षक, लोको स्था. I
सचिव, एम्प. यूनियन (लोको)

किस काम का वह दरिया, जिसमें नहीं रवानी,
जब जोश ही नहीं है, किस काम की जवानी।
सबक कोई हम से सीखे जवानीं का ······ ···

हम जवान उसको कहते हें जो जोश से भर जाये,
दिल का हो मर्द, आन पे अपनी मर जाये,
झुके न गरदन, चाहे धड़ से शीश उतर जाये।
दहशत न माने शैतान की, ना खौफ हैवान का—
सबक कोई हमसे सीखे जवानी का··········

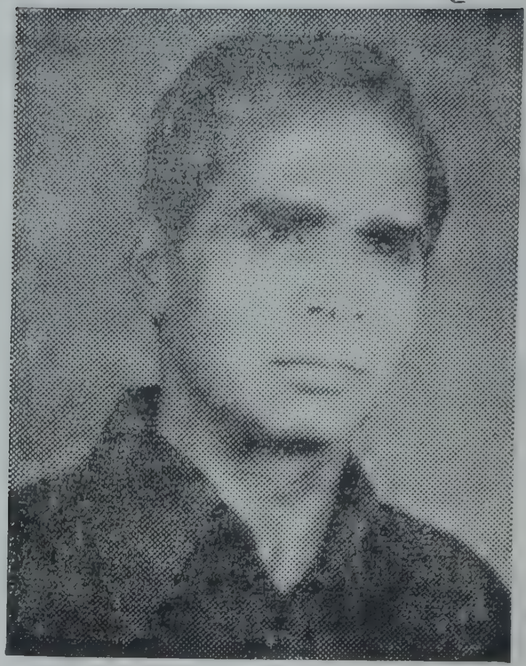
है युवा वही कोई न कोई धुन, सर पर चढ़ी नजर आये,
है युवक वही जो जोश और होश से भर जाये।
चले अकेला ही, ना किसी का इन्तजार करे,
पूरब को जल बहे तो, पश्चिम को रफ्तार करे।
ना डर मानों आँधी का, ना डर मानें तूफानों का-
सबक कोई हमसे सीखे जवानो का··········

□□

घर सुधरे जग सुधरे

मदनसिंह चौहान

सह सम्पादक एवं लिपिक संकेत कारखाना, अजमेर



श्री चौहान के सौजन्य से रु. 4000/–से अधिक के विज्ञापन प्राप्त हुए हैं। राजभाषा-हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु इस पत्रिका के सम्पादन मुद्रण के प्रति इनकी रुचि व सेवाएं सराहनीय हैं —सम्पादक

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः समनस्कृणोमि ।।

अथर्ववेद 3.30.5

वेद के इस मन्त्र में आदर्श गृह के लिए, सात उत्तम वचन, निर्देश किए हैं। घर-गृहस्थी संसार की सबसे श्रेष्ठ व ज्येष्ठ संस्था है। सब आश्रमों की यह जननी है. पालक पोषक और बुनियाद है। परिवारों के जोड़ का नाम ही समाज, राष्ट्र और विश्व है। इस एक को साधे सब सध सकता है। गृहों के सुधार से समाज राष्ट्र और जगत का सुधार स्वयमेव हो जाएगा। गृहस्थ— विज्ञान से बढ़ कर कोई विज्ञान नहीं है। **'नहि गृहात् परं विज्ञानम्।'** घरों में ही प्रजा का जन्म होता है। **प्र-जा** अर्थात् **प्रकृष्ट सन्तान।** यहीं देश के सुनागरिकों का निर्माण होता है। सुसन्तान, सुनागरिक बन कर राष्ट्र को उन्नत करेगी—इस से बढ़ कर और क्या राष्ट्र सेवा होगी! **'मनुर्भव जनया दैव्यं जन्म'** मनुष्य बन और उत्तम सन्तान का निर्माण कर। **सब कुछ हो रहा है तरक्की के इस जमाने में, पर क्या गजब है कि होता नहीं है आदमी इन्सां।** घर ही है जहां सु-सम्कारों की शुरुआत होती हैं, चरित्र की बुनियाद रखी जाती है। आदर्श घर के निर्माण हेतु ही वेदमाता के ये शाश्वत सत्य वचन प्रत्येक गृही के लिए हैं। आओ! विचारें।

1) **ज्यायस्वन्तः आ इत्त**—परिवार जनों! बड़ों का मान करने वाले बनो।

जिस परिवार में बड़ों का मान होता है, उसमें सबका कल्याण होता है। जो हम से आयु, पद, अनुभव या ज्ञान में बड़े हैं, हमें उनका आदर करना चाहिए। आदरणीय हो सम्बोधन, शिर नमा कर हो प्रणाम, उनकी यथा संभव करें सेवा-सुश्रुषा और आज्ञा का करें पालन। **मात-पिता, गुरु, प्रभु की वाणी, बिन्हीं सोच करें शुभ जानी।** श्रवण कुमार का नाम इसीलिए अमर है। राम सदा बड़ों का मान करते थे, इसीलिए महान हैं। जिस घर, समाज व राष्ट्र में बड़ों का मान नहीं होता वहां उत्पात् होते हैं। हम यदि घटिया लोगों को मान देंगे तो घटियापन बढ़ेगा। अतः उत्तमजनों को आदर देना है, गुरजिएफ ने अपने द्वार पर लिखा रखा था **जो अपने माता—पिता का आदर न करते हों उन्हें प्रवेश निषेद्ध है।** बड़ों का भी कर्त्तव्य हैं कि बडप्पन को धारण

करें। आयु, पद के अनुसार गुण भी ग्रहण करें अन्यथा दिखावटी आदर के पात्र रह जायेंगे। मात-पिता की वन्दना, गुरुजन का सत्कार। समता होवे भाई से, पत्नी से हो प्यार। कहावत प्रसिद्ध है—बा-अदब बा-नसीब, बे-अदब, बे नसीब। बड़ा कोई हो, किसी धर्म जाति, देश का हो—घर का हो या पड़ोस का हो—हमें मान देकर आशीष ग्रहण करनी चाहिए। यह पहली आज्ञा वेद की हुई गृहियों के लिए।

2) चित्तिनः आ इत—समझदार बन कर काम करो।

आहार, निद्रा, भय और मैथुन की दृष्टि से मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं है। भेद है तो सिर्फ बुद्धि का, समझ का। समझ से काम न लेकर यदि ना-समझ ही बना रहता है मनुष्य, तो वह पशुवत् ही है। समझदार विष को अमृत कर लेता है ना-समझ अमृत का विष बना लेता है।

प्रत्येक कार्य सोच-समझ कर करें। मानुष सोई जानिए जामे विवेक विचार जामे विचार नहीं ते नर ढ़ोर गंवार। आहार कब, कैसा, कितना लेना है ये समझ हमें रोग से बचाकर पुष्ट करेगी। आहार जीवन का आधार है। आहार शुद्धों सत्व शुद्धि। आहार की पवित्रता से। अन्तस् निर्मल होता है। जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन।

घर बिना धन के चल नहीं सकता। धन कमाने में जितनी समझ चाहिए उससे अधिक समझ खर्च की चाहिए। हम गरीब इसलिए अधिक हैं कि हममें, न कमाने की समझ है, न खर्च करने का विवेक। झूठी शान में हजारों कर्ज लेकर खर्च करना नासमझी है। ते ते पांव पसारिये जेती लम्बी सौर।

छोटा परिवार सच में ही सुख का आधार है। परिवार को सीमित रखने में ही समझारी है। उपाय चाहे संयम से हो अथवा साधन से हो। राष्ट्र के सामने बढ़ती जन-संख्या प्रमुख समस्या है। इसे गृहियों की समझ ही सुलझा सकेगी।

घर के प्रत्येक छोटे-बड़े कार्य को पूर्ण समझदारी से करें। इससे घर में सुव्यवस्था, सज्जा और शालीनता आयेगी। जो समाज व राष्ट्र के कल्याण का आधार बनेगी। यह हुई वेद की दूसरी आज्ञा।

3) मा वि यौष्ट आ इत—रूठो मत, विलग मत होओ। मिल कर रहो।

स्नेह जोडता है और अहं तोड़ता है। परिवार स्नेह सूत्र से जुड़ा रहेगा, बन्धा रहेगा तो इसमें घर की शान है। स्नेह से सेवा उपजती है और संगठन बनता है। संगठन से शक्ति आती है और शक्ति से श्री व सम्पन्नता उपलब्ध होती हैं। एक ही छत और चार दिवारी में रहें और एक दूसरे से रूठे रहें, बोल-चाल बन्द करलें तो यह घर नहीं कैदखाने से भी बदत्तर है। विचारों का भेद हो, मन का भेद न हो। संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। समान हो व्यवहार, समान हो मन। कभी किसी बात पर अनबन भी हो जाए तो मिल बैठकर उसे शान्त भाव से दूर किया जाए। अपनी भूल को स्वीकार करने से कभी आदमी छोटा नहीं बनता है। क्षमा, सहिष्णुता और उदारता ऐसे गुण है जो न केवल व्यक्ति को ऊंचा उठाते हैं अपितु परिवार और समाज को भी आगे बढ़ाते हैं। ध्यान रहे—वैर वैर से नहीं मित्र भाव से समाप्त होते हैं। अतः मिलकर रहना चाहिए यह वेद की तीसरी आज्ञा गृहियों के लिए हुई।

4) संराध्यन्तः आ इत—सब सम्यक् संवृद्धि करें।

परिवार तो एक होता है उसमें सदस्य अनेक होते हैं। वे सब उसके अभिन्न अंग हैं। स्वस्थ मनुष्य वह होता है जिसके सब अंग पुष्ट हों। परिवार भी वही सम्यक् है जिसके सब सदस्य संवृद्धि में जुटे हों। परिवार एक छोटा सा समाज है। इसकी चहुमुखी प्रगति हो। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक एवं आत्मिक

समुन्नति हो। सबको मिलकर अपनी-अपनी क्षमता दक्षता से आलस त्याग कर प्रयत्न करने चाहिए। इससे घर में सुख शान्ति व समृद्धि आती हैं। घर ही स्वर्ग बन जाता है। जिस घर में एक दो लगे हों बहबूदी में और दो चार लगे हों बर्बादी में तो वह घर नरक सा बन जाता है। सब को पूरी लग्न से संवृद्धि में संलग्न होना चाहिए—यह है वेद का चौथा वचन।

5) **सधुराश्चरन्तः आ इत**—जुए में जुड़कर जैसे बैल चलता है—तुम भी एक धुरी से जुड़ो।

परिवार एक रथ के समान है। इसके घोड़े अनेक हैं। सब यदि विपरीत दिशा में अपनी-अपनी मर्जी से दोडेंगे तो क्या गति होगी। सब शक्ति व्यर्थ नष्ट हो जायेगी गति तो क्या दुर्गति होगी विघटन होगा, बिखराव होगा। सब मिलकर खींचेंगे तो चढ़ाई भी आसान लगेगी। आपस में मन्त्रणा करके, उत्तम ध्येय की ओर मिलकर इस गाड़ी को आगे ले जाना है। परिवार के द्वारा ही समाज का निर्माण होना है। सब को स्वस्ति पथ का ही अनुगमन करना है। **स्वस्ति पंथा अनुचरेम**। जो मार्ग कल्याण की ओर जाए उसी पर चलो। **महाजनो येन गत्वा सः** पन्थाः। सम्यक् मार्ग पर सम्यक् भाव से साथ-साथ चलो, बढ़ो—वेद का यह पांचवां आदेश है गृहस्थों को।

6) **अन्यो अन्यस्मैं वल्गु वदन्तः आ इत**—परस्पर सुसत्य मधुर वाणी बोलो।

जिस घर में वाणी सत्य, मधुर और शिष्ठ होती है वहां शान्ति और आनन्द विराजते हैं। जहां वाणी में कटुता, व्यंग, असत्यता और अभद्रता होती है वहां झगड़े, फसाद और बेचैनी रहती है। **वाणी तो अमोल हैं जो कोई जाने बोल, हिय तराजू तोल कर तब मुख बाहिर खोल**। वाणी के कारण ही महाभारत हो गया था। गोली का घाव भर जाता है बोली का नहीं भरता। **शब्द सम्हारे बोलिए शब्द के हाथ न पांव, एक शब्द औषध बने, एक करे घाव**। इसलिए जो बात कहो साफ हो, सुथरी हो भली हो कड़वी न हो, खट्टी न हो मिश्री की ढ़ली हो। अपनी वाणी को सम्यक् बनाए। पर निन्दा, चुगली, गप्प बकवास, ताने व्यंग और असत्य वचन न बोलें। सब से यथा योग्य विनम्र व शिष्ठ भाषा में बोलें। अपनी मातृ व राष्ट्र भाषा के गौरव को समझें, उसमें आत्मीयता होती है। परदेश की भाषा का भी मान करें पर अपनी भाषा कि उपेक्षा न करें। वाणी का वरदान मात्र मनुष्य प्राणी को ही प्राप्त है इसका सदुपयोग करें—यह हुई वेद की छठी शिक्षा।

7) **सध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोमि**—सहगमन करने वाले संमन करता हूं।

अन्त में वेद कहता है—तुम सम्यक् मन वाले बन कर साथ-साथ रहो। तुम्हारे मन आपस में मिले रहें। तुम्हारी रीतियां नीतियां आपस में न टकराएं। तुम्हारे मन निर्मल हों। विचार पवित्र हों और आचरण शुद्ध हों। तुम्हारे संकल्प शिव हों। तुम एक दूसरे के सहायक रहो, बाधक न बनो। तुम्हारी भावनाएं कल्याणकारी हों। तुम पर-सेवा में आनन्द जानो, पर पीड़ा को मौत मानो। अपने मन को वश में रखो ये तुम्हारा परम मित्र होगा। यदि तुम उसके गुलाम बने तो इससे बढ़कर कोई तुम्हारा शत्रु नहीं है। मनों के मेल का नाम ही मैत्री है। मनो का भेद भय लाता है। आत्मा की गवाही में सोच समझ कर व्यवहार करो। तुम्हारी बुद्धि आत्मा द्वारा अनुशासित हो। आचरण में परिष्कृत विवेक की छाया हो। तुम गृहियों बड़ों का मान करो, समझदार बनो, मिलकर रहो, संवृद्धि करो, सहयोगी बनो, मधुर सुसत्य वाणी बोलो और अपने मन को शुद्ध पवित्र करके साथ-साथ गमन करो। इससे तुम्हारे घर में सुख आएगा, सुसन्तानों का निर्माण होगा। शुभ संस्कारों की धारा प्रवाहित होगी—इससे घर भी सुधरेगा और जग भी सुधरेगा।

□□



सबसे सुन्दर वस्तु ?

पुष्पा दुलानी

टंकक (उत्पादन कार्यालय)

एक कलाकार ने संसार की सुन्दर से सुन्दर वस्तु का चित्र बनाना चाहा। उसने धर्म गुरु से जाकर पूछा, 'संसार में सबसे सुन्दर वस्तु कौनसी है ?'

"श्रद्धा !" धर्म गुरु ने कहा। इसका दर्शन तुम्हें सभी धर्म -स्थानों में होगा।

कलाकार को संतोष न हुआ। वह एक नववधू के पास जा पहुँचा। नववधू ने कहा, इस संसार में प्रेम सबसे सुन्दर वस्तु है। प्रेम निर्धनता में समृद्धि मानता है, आंसुओं को मीठा बनाता है।

कलाकार को तब भी पूरा संतोष नहीं हुआ। उसने यही प्रश्न एक सैनिक से किया। सैनिक ने कहा, 'इस संसार में युद्ध से भयानक कुछ नहीं और शान्ति से सुन्दर कुछ नहीं।'

कलाकार ने तीनों की बात गांठ बांधली श्रद्धा प्रेम और शान्ति।

जब वह घर पहुँचा पत्नी बच्चे दौड़े-दौड़े आये और उससे लिपट गये। कलाकार के मन में विचार आया। अरे ! जिसकी मुझे खोज थी वह तो मेरे घर में ही है। मेरे बच्चों की आखों में श्रद्धा है, पत्नी की आंखों में प्रेम है। इस श्रद्धा और प्रेम से घर में शान्ति है।

कलाकार ने तुरन्त सबसे सुन्दर वस्तु का चित्र बना दिया और नाम दिया "घर"।

दो रास्ते

जूनागढ़ के राजा राखेगार को शिकार का बहुत शौक था। एक दिन खरगोश के पीछे जंगल में भागते-भागते खरगोश तो मार लिये, पर रास्ता भूल गये। ऊंचे वृक्ष पर चढ़ कर देखने लगे कि कहीं कोई आदमी या कुटिया है या नहीं। बहुत दूर एक छोटी सी कुटिया दिखाई दी तो वृक्ष से उतर कर उसी दिशा में दोनों हाथों में चारों खरगोश लटकाये चल पड़े। कुटिया के पास पहुंच कर आवाज लगाई तो एक वृद्ध महाशय बाहर आये।

वृद्ध ने हाथों में मरे हुए खरगोश देखे तो आँखें डबडबा आयीं। राजा द्वारा मार्ग पूछने पर बोले, दो ही रास्ते जानता हूं बेटा ! एक जीव दया का, जो स्वर्ग जाता है। दूसरा हिंसा का, जो नर्क जाता है। तीसरा रास्ता मैं नहीं जानता। दोनों में जो अच्छा लगे वह पकड़ लो।

वृद्ध के मूक आंसुओं ने राजा के हृदय पर गहरी चोट की और भविष्य में शिकार न खेलने की प्रतिज्ञा की।

अनुकम्पा के आधार पर रेल कर्मचारियों के बच्चों/आश्रितों को नौकरी : समेकित नीति नियम



● मन्सूर अली बोहरा

मु. लि. लोको प्रधान कार्यालय अजमेर

नियमित सेवारत कर्मचारियों की दुर्घटना / बीमारीवश अचानक मृत्यु पर या गम्भीर बीमारियों जैसे—केन्सर, हृदय रोग आदि के कारण आगे सेवा के लिये अयोग्य घोषित किये जाने पर, उनके आश्रितों को निम्नलिखित परिस्थितियों में रेलसेवा में नियुक्तियां दी जा सकती हैं।

1. जब रेल कर्मचारी ड्यूटी के दौरान मर जाये अथवा स्थायी रूप से विकलांग हो जाय जिससे उसकी पूर्ण कार्य क्षमता समाप्त हो जाए।
2. जब रेल सेवा में रहते कर्मचारी की सेवा-निवृत्ति से पूर्व मृत्यु हो जाए।
3. जब रेल कर्मचारी लापता हो जाय व सात वर्ष की अवधि तक उसका पता न चले तथा उसके अन्तिम निपटारे की राशि का उसके परिवारजन को भुगतान कर दिया जाये (यह सात वर्ष की सीमा महाप्रबन्धक की अनुमति से गुणा व गुण के आधार पर कम कर तीन वर्ष तक की जा सकती है।
4. जब रेल कर्मचारी सेवा में रहते विकलांग हो जाय अथवा अन्य गम्भीर रोग से पीड़ित होने के कारण डाक्टरी रूप से अक्षम घोषित कर दिया जाय (बशर्ते कि उस समय कर्मचारी की आयु 55 वर्ष से कम हो अथवा महाप्रबन्धक की व्यक्तिगत अनुमति आवश्यक है)।

नियुक्ति के पात्र व्यक्ति—

कर्मचारियों के पुत्र/पुत्रियां/विधवाएं/विधुर अनुकम्पा के आधार पर उपरोक्त परिस्थितियों में नियुक्ति के पात्र हैं। निम्नलिखित परिस्थितियों में नियुक्ति का लाभ निकट सम्बन्धी को भी दिया जा सकता है—

(क) कर्मचारी/स्व. कर्मचारी के कोई पुत्र/पुत्री न हो अथवा वे अव्यस्क हों और पत्नी/विधवा/विधुर स्वयं नौकरी करने की स्थिति में न हों।

(ख) निकट सम्बन्धी से तात्पर्य उसी व्यक्ति से है जिसका खून का रिश्ता हो व जो परिवार का पालक-पोषक माना जा सके।

(ग) विधवा/विधुर/पत्नी एक स्पष्ट प्रमाण पत्र दे कि निकट सम्बन्धी परिवार के पालक—पोषक का कार्य करेगा। यदि बाद में परिवार यह प्रमाणित करे कि निकट सम्बन्धी जिसे अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति दी गई वह उसका पालन-पोषण नहीं कर रहा है तो उसकी

सेवाएं समाप्त की जा सकती है ।

नियुक्ति की समय सीमा—

अनुकम्पा के आधार पर सभी नियुक्तियां सामान्यत: घटना घटने की तिथि से पांच वर्ष के भीतर ही की जाती हैं किन्तु निम्नलिखित शर्तों पर महाप्रबन्धक के व्यक्तिगत अनुमोदन पर इस पांच वर्ष की समय सीमा में, लेकिन दस वर्ष से अधिक नहीं, छूट दी जा सकती है—

1. जहां पुत्र/पुत्री अव्यस्क हो तथा विधवा/विधुर नौकरी करने में असमर्थ हो ।
2. कर्मचारी की विधवा ने दूसरी शादी न की हो ।
3. वे कारण/परिस्थितियां स्पष्टतया प्रगट की जायें जिसके फलस्वरूप 5 वर्ष की समय सीमा में छूट प्राप्त करना आवश्यक हो जाए एवं,
4. अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति की प्रार्थना पुत्र/पुत्री के व्यस्क होने के अधिक से अधिक 6 माह के भीतर रेल प्रशासन को प्राप्त हो जाए ।

नियुक्ति की आयु सीमा—

सभी सरकारी नौकरियों के वास्ते 18 वर्ष की न्यूनतम आयु सीमा निर्धारित है किन्तु अनुकम्पा के आधार पर नियुक्तियों में गुणा व गुण के आधार पर अधिकतम आयु सीमा में मुख्य कार्मिक अधिकारी द्वारा छूट प्रदान की जा सकती है—

महाप्रबन्धक की व्यक्तिगत अनुमति से परिस्थिति विशेष में एक वर्ष तक न्यूनतम आयु सीमा में भी छूट प्रदान की जा सकती है ।

शैक्षणिक योग्यता—

श्रेणी 'सी'–मेट्रिक या उसके समकक्ष व विभिन्न भर्ती ग्रेडों के लिये समय-समय पर निर्धारित अन्य शैक्षणिक योग्यताएं अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति के लिये भी अनिवार्य हैं । मध्यवर्ती ग्रेडों में जो पद केवल पदोन्नति द्वारा भरे जाते हैं, अनुकम्पा के आधार पर नियुक्तियां नहीं दी जाती हैं ।

श्रेणी 'डी'-(क) रेल कारखानों में खलासी पद के लिये आई. टी. आई. अथवा अप्रेन्टिस एक्ट कोर्स पास (फिलहाल बोर्ड के 4-9-86 के पत्रानुसार आई. टी. आई. की न्यून्तम शैक्षणिक योग्यता के आदेश रोक दिये गये हैं ।)

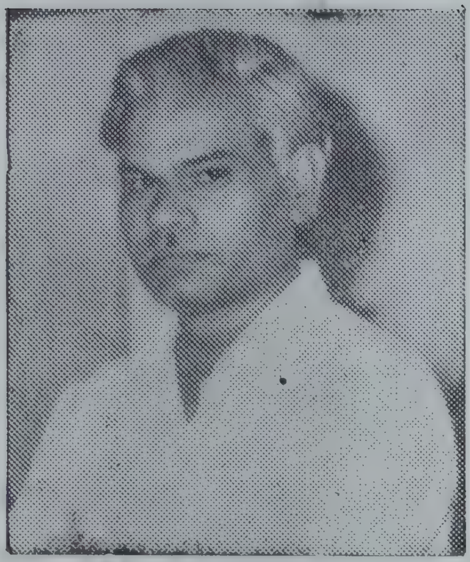
(ख) आठवीं कक्षा पास व्यक्तियों को अनुकम्पा के आधार पर मेसेन्जर/हमाल/चपरासी के लिए पद अन्यथा योग्य पाये जाने पर नियुक्ति दी जा सकती है ।

(ग) इसी प्रकार पाँचवी पास व्यक्तियों को सफाई वाला के पद पर नियुक्त किया जा सकता है ।

(घ) अनपढ़ विधवाओं को (1) पानीवाली (2) रिटायरिंग रूम अटेन्डेन्ट (3) सफाइवाली (4) सिंदर पिकिंग वूमन (5) कैरिज खलासी (केवल वेस्ट पेकिंग वास्ते) (6) आया व महिला सेनेटेरी क्लीनर रेल्वे अस्पताल/स्कूल तथा (7) ए. ई. एन., आई. ओ. डब्ल्यू., पी. डब्ल्यू. आई. आदि उप मण्डलीय कार्यालयों से सम्बद्ध खलासी के पद पर नियुक्ति दी जा सकती हैं ।

अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति से पूर्व उम्मीदवार की पद विशेष के लिये उपयुक्तता की जाँच वास्ते प्रशासन द्वारा एक आसान परीक्षा ली जाती है ताकि उसकी अभिरुचि का पता चल जाय ।

अनुकम्पा के आधार पर नियुक्ति वास्ते आवेदन करते समय ध्यान रखने के बिन्दु—



गणिका की सीख

● रामनिवास शर्मा

हिन्दी अधीक्षक (मं. रे. प्रबन्धक कार्यालय)

"कोशा, मैं तुम पर अपनी आसक्ति को अब रोक नहीं पा रहा हूँ। मेरे संयम का बांध टूट चुका है। मगध की हे श्रेष्ठ सुंदरी, मेरा प्रणय निवेदन स्वीकार कर मेरी वासना भूख को तृप्त करो।"

"हे मुनि, आप एक दीर्घावधि से मेरे पास हैं, पहले तो आप को कभी ऐसा नहीं हुआ ! खैर, आप यह तो जानते ही हैं कि मैं गणिका हुं और उसी को अपनी देह सौंपती हूं, जो मुझे धन देता है।"

"धन के नाम पर तो, तुम जानती हो, मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

"तो आप किसी से याचना कर के ले आओ। सुना है नेपाल नरेश मुनियों को रत्न देते हैं, उनसे मांग लाओ।"

बड़ा लम्बा और खतरनाक रास्ता तय कर मुनि नेपाल नरेश से रत्न प्राप्त कर पाए। रास्ते में लुटेरों ने घेर लिया। बड़ी अनुनय-विनय करने पर छोड़ दिया।

मुनि बड़े खुश होकर कोशा से सहवास की कल्पना लिए आ पहुंचे। कोशा को रत्न दिए। कोशा ने रत्नों से पैर पोंछे और नाली में फिकवा दिए।

"यह क्या किया कोशा ? कितने मूल्यवान थे रत्न फिर कितने कष्ट पा-कर लाया था।"

"हे मुनि, इन साधारण रत्नों के लिए इतनी चिन्ता ! जब आपने संयम व ब्रह्मचर्य जैसे अमोल रत्न खो दिए, फिर इनके लिए क्यों दु:खी होते हो ? चलो सेज पर अब मैं तैयार हूँ।"

मुनि को तत्काल बोध हुआ। वह अपने आचार्य के द्वारा चातुर्मास हेतु क्यों गणिका के पास भेजे गए थे ? संयम की शिक्षा और परीक्षा के लिए ही तो।

स्वयं पर उपजे क्षोभ से अवनत हो मुनि गणिका के चरणों में जा गिरे। "कोशा, तुमने मेरी आंखें खोल दी, सत्मार्ग दिखा दिया, तुम भी मेरी गुरु हो, मेरे अपराध क्षमा करो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।" □□

(शेष पृष्ठ 108 का)

1. कर्मचारी/विधवा/विधुर की ओर से व्यक्ति विशेष वास्ते आवेदन-पत्र सक्षम अधिकारी के नाम मय पूर्ण विवरण के दो प्रतियों में प्रेषित करें।
2. व्यक्ति, जिसे नौकरी चाहिये, की ओर से पद नाम अंकित करके आवेदन-पत्र (दो प्रतियों में) संलग्न करें।
3. कर्मचारी का मृत्यु प्रमाण—पत्र अथवा डाक्टरी रूप से अयोग्यता का प्रमाण-पत्र नत्थी करें।
4. उम्मीदवार की जाति, जन्म तिथि व शैक्षणिक योग्यता की प्रमाणित प्रतियां नत्थी करें (दो-दो प्रतियां)।
5. अन्तिम निपटारे से प्राप्त होने वाली समस्त राशि का अलग–अलग ब्यौरा मय पेन्शन की निश्चित की गई राशि के।
6. अन्य तकनीकि अनुभव योग्यता यदि कोई हो के प्रमाण–पत्रों की प्रतियां भी आवेदन पत्र के साथ नत्थी किये जायें।



'त्याग'

● इन्दिरा माथुर

व. टंकक (लोको)

(कु. इन्दिरा जी के सौजन्य से रु. 2500/- के विज्ञापन प्राप्त हुए। हिन्दी प्रचार एवं पत्रिका मुद्रण में आपके सहयोग सराहनीय हैं। —सम्पादक)

जिधर देखा चहुं ओर दिशाएं घटाटोप अन्धकार में लिपटीं,
क्या सकुचा रहीं उजाले की किरणें अपने में ही सिमटीं ?
डर न लगा कहीं कृपण होने का आरोप लग जाए ?
अंधेरों को हमदर्द होने का सुनहरा तमगा मिल जाए !
दूषित भावनाओं का फैला था कडुवा जहर,
जानकर भी अनजान क्यों किस सीमा तक ढाया था कहर।
चक्रव्यूह का जाल बिछा बना रहे शिकार,
मलिन हृदय में आवास जैसे केवल कुपित विचार।
निर्मम उद्देश्य, विवेकहीन शंकाएँ, नजरें आतंकित,
खिल्लियों से गूँजा मलय तक आतंकित।
शूल चुभे, रक्त बहा,
किसको किसको परवाह ?
आग की लपटें झुलसा गई,
दिल टूक-टूक कर बिखरा गई।
झूठ और हिंसा का साम्राज्य कदम कदम पैं,
वीभत्स रूप विराट होता रहा पल पल में।
इन्सानियत व प्यार का व्रत लिया सुबह शाम ढलें,
चिन्ता न की कभी यदि होम करते हाथ जले।
सजल नयन हृदय विचारक यंत्रणा से धूमिल,
उठे कुछ ढूँढने, शायद मिल जाए साहिल।
काँप उठा, भूमण्डल भी दारुण व्यथा देखकर,
उदासीन रहा फिर भी रचयिता, गगनभेदी चीत्कार सुनकर।

ऐसा क्यों ? उसमें क्षमता का अभाव था ।
या वह भी तमाशा देखने का स्वयं इच्छुक था ।
पग पग पर था केवल भयभीत भटकाव,
जीवन का एक अंग बन गया पथराव ।
परिस्थितियों से लेना था टकराव,
मृगमरीचिका सा हो गया ठहराव।
किन्तु नहीं, क्षितिज के किसी छोर से उज्जवल किरण जगमगाई
खुले आम जीवन जीने का सन्देश साथ लाई ।
द्रवित हुआ त्याग का मन, आश्रय दिया अपने आंचल में,
अमानवीय तत्वों से तुरन्त रक्षा की ढाल रूप में ।
त्याग का मर्म जान लिया जिसने,
परमानन्द जैसे पा लिया उसने ।
फूलों की तरह कष्ट झेले अब तक, त्याग में विसर्जित किए,
अब रहा केवल हर्षोल्लास, विवाद-विषाद विलीन हुए ।

□□



तू खुद तो बदल

● कु सरला शर्मा

व. लि. (डिजल. कार्या.)

गंगा की कसम यमुना की कसम, ये ताना बाना बदलेगा,
तू खुद तो बदल, तू खुद तो बदल, तब तो यह जमाना बदलेगा,
रावी की रवानी बदलेगी, सतलज का मुहाना बदलेगा।
गर शौक में तेरे जोश रहा, तो तस्बीह का दाना बदलेगा।
तू खुद तो बदल..................

ये मुर्दा नुमाइश भूखों की, ये उजले चमन बेकारों के,
जूठन के सड़क पर जीते हुये, शहजादे सुर्ख बहारों के,
होली खून–पसीनों की, नीलामी हुस्न हसीनों की,
बेजार न हो, बेजार न हो, ये सारा जमाना बदलेगा।
तू खुद तो बदल,..................

ऊँचे हैं इतने महल कि इन्सान का जीना मुश्किल है,
मन्दिर मस्जिद को बस्ती में, ईमान का बचना मुश्किल है,
रफ्तार जरा कुछ और बढ़ा, आवाज जरा कुछ और चढ़ा,
शीशा ही नहीं साकी ही नहीं, सारा मयखाना बदलेगा।
तू खुद तो बदल..................

सूरज की मशालें थामे हुये, जिस दम को जवानी चलती है,
पूरब से लगाकर पश्चिम तक, सबकी तकदीर बदलती है।
तूफान को आंख दिखाने दे, बिजली को तड़प कर आने दे,
महफिल ही नहीं मजलिस ही नहीं, पूरा ही तराना बदलेगा।
तू खुद तो बदल..................

□□

उष्मा उपचार हीट ट्रीटमेन्ट

● एस. बी. शर्मा,

व्याख्याता, प्रणाली तक. विद्या. अजमेर



धातुओं और मिश्र धातुओं में आवश्यक गुणों का समावेश करने के लिए नियन्त्रित परिस्थितियों के अन्तर्गत ठोस अवस्था में गर्म तथा ठंडा करने की विधि को "उपचार" कहते हैं।

उष्मा उपचार उपयुक्त साइज की मफ्ल फर्नेस में विद्युत से गर्म करके करते हैं। उष्मा उपचार में फेराइट सीमेंन्टाइट और आस्टेनाइट ही स्टील रुपान्तर में होने वाली तीन मूल प्रावस्थायें हैं। जिससे ही प्राथमिक तथा द्वितीयक घटक इन प्रावस्थाओं में बनते हैं। स्टील को क्रान्तिक तापमान के ऊपर गर्म करने से आस्टेनाइट में बदलता है जिसे भिन्न-भिन्न दरों पर ठंडा करने से कठोरी करण में मार्टेन्साइट व निर्मली करण व अनीलीकरण में पियर-लाइट व फैराइट या सीमेन्टाइट में रुपान्तरण होता हैं। जबकि पायनी करण में स्टील को निम्न क्रान्तिक तापक्रम तक गर्म करने पर मारन्टैंन साइट आंशिक रूप से अन्य ट्रस्टा इट, सोरबाइट या गोलमित सीमेन्टाइट के द्वितीयक घटकों में रूपान्तरित हो जाता है।

उष्मा उपचार निम्नलिखित गुणों में से एक या एक से अधिक गुणों का समाबेश करने के लिए करते हैं।

1. धातु में उत्पन्न भंगुरता तथा आन्तरिक प्रतिबलों को समाप्त करने के लिए।
2. धातु के कणों को शुद्ध (रिफाइन) करने के लिए।
3. चिमड़ापन (टफनेस) तथा तन्यता बढ़ाने के लिए।
4. धातु को कठोर बनाने के लिए।
5. उष्मा, संक्षारण (कोरोजन), क्षति आदि प्रतिरोधी बनाने के लिए।
6. धातु की मशीनन क्षमता बढ़ाने के लिए।
7. विद्युतीय तथा चुम्बकीय गुणों को सुधारने के लिए
8. उत्पादक के नाप व आकृति स्थायी करने के लिए।

प्रमुख-उष्मा उपचार 10-11 तरह के हैं, जिन्हें धातु संगठन में परिवर्तन या बिना परिवर्तन के आधार पर फिर दो भागों में बांटा गया है।

(अ) अपरिवर्तित धातु संघटन :—इन उष्मा उपचार में धातु के संघटन में परिवर्तन नहीं होता है।

1. निर्मलीकरण (नार्मलाइजिग):—उनमें ठंडा या गर्म अवस्था में कार्य करने से उसकी आन्तरिक संरचना विकृत हो जाने से उत्पाद भंगुर व अविश्वसनीय हो जाता है। इस उष्मा उपचार में उत्पाद को उसके उपयुक्त क्रान्तिक तापमान से 30-50° सेन्टीग्रेड़ पर लगभग 15 मिनिट तक गर्म करने के पश्चात रुकी

हुई हवा में खुला ठंडा होने के लिए छोड़ दिया जाता है । इससे भंगुरता व आन्तरिक बल समाप्त होने के साथ साथ कण भी शुद्ध हो जाते हैं । उपयुक्त क्रान्तिक ताप मान का तात्पर्य है 0.9% कार्बन तक वाली स्टील के लिए उच्च क्रांतिक ताप मान जब कि 0.9% कार्बन से अधिक वाली स्टील के लिये निम्न क्रान्तिक ताप मान ।

(2) **अनीलीकरण (अनीलिंग)**:— उत्पादों पर विशेष कर ठंडी अवस्था में कार्य या ढ़लाई में असमान संकुचन के कारण उत्पन्न आन्तरिक प्रतिबलों को समाप्त करने, तन्यता तथा नरम करके मशीनन क्षमता बढ़ाने के लिए दो तरह के अनीलीकरण करते हैं ।

(अ) निम्न ताप अनीलीकरण:— (स्ट्रेस रिलीविंग):—इसमें उत्पाद को निम्न तापक्रय 500-650 सेन्टीग्रेट पर पर्याप्त समय तक गर्म करके भट्टी में ही मन्द गति से ठंडा करते हैं । पर्याप्त समय का अर्थ है एक सैकण्ड प्रति मि, मी. मोटाई के अनुसार ।

(ब) **पूर्ण अनीलीकरण**:—इसमें उत्पाद को उपयुक्त क्रान्तिक तापक्रम से 20-30° सेन्टीग्रेट अधिक तापक्रम पर पर्याप्त समय तक अवशोषित करने के पश्चात उसे मन्द गति से भट्टी में या किसी कुचालक पदार्थ जैसे–राख, रेत, चूना आदि में दबाकर ठंडा करते हैं ।

(3) **कठोरीकरण (हार्डनिंग)**:—यह स्टील को घिसाव प्रतिरोधी और अन्य धातुओं की काटने की क्षमता बढ़ाने के लिए आबदारी लगाई जाती है । स्टील उत्पाद को उपयुक्त क्रान्तिक तापक्रम से 30-50° सेन्टीग्रेट तापक्रम पर पर्याप्त समय तक गर्म करने के पश्चात उपयुक्त तरल माध्यम (साल्ट-बाथ, आइल बाथ या पानी) में डुबोकर 150°–200° सेन्टीग्रेट/सैकण्ड तक ही ठंडा करते हैं । हाई स्पीड स्टील को 1260–1450° सेन्टीग्रेट के तापक्रम पर पर्याप्त अवशोषित करते साल्ट बाथ में 500° सेन्टीग्रेट पर डुबोकर ठंडा करते हैं ।

(4) **पायनीकरण (टेम्परिंग)** :—स्टील का कठोरीकरण करते समय तरल माध्यम में डुबोकर तेज गति से ठंडा करने से उसमें अत्यधिक कठोरता से भंगुरता तथा तापीय प्रतिबल उत्पन्न हो जाते हैं अतः उन्हें हटाकर उपयोग लायक बनाने के लिए पानी चढ़ाते (पायनीकरण) करते हैं । इसके कार्बन स्टील व टूल स्टील को 280° सी और हाई कार्बन स्टील और एलोय स्टील को 560° सी पर पर्याप्त समय तक गर्म करके उसे निश्चित गति से उपयुक्त तरल माध्यम में ठंडा करके करते हैं ।

वैसे हार्डनिंग और टेम्परिंग दोनों एक-दूसरे की पूरक है, एक के बाद दूसरी करना आवश्यक है ।

(5) **स्थिरीकरण(स्टेबलाइजिंग)**:—यह विशेष कर घर्षण वाले उत्पाद का नाप आकृति, अलाइन्मेट आदि स्थिर करने के लिए किया जाता है । इसमें माल टेम्परिंग आइल बाथ में उन्हें 140° सी के तापक्रम पर 8 घण्टे रखकर अन्दर ही कमरे के तापक्रम तक ठंडा करते हैं ।

2. परिवर्तित धातु संगटनः— इसमें स्टील उत्पाद का बाहरी पृष्ट (केस) में कार्बन या नाइट्रोजन या दोनों के अवशोषण से स्टील के संघठन में परिवर्तन होने से कठोर हो जाती है । मशीनों के ऐसे पुर्जे जिनकी सतत घिसावट होती है का यह इस उष्मा उपचारों से पृष्ट कठोरीकरण करते हैं ।

(1) **काबुर्रीकरण (कारबुराइजिंग)** :—इसमें निम्न कार्बन स्टील के उत्पादों को कार्बनयुक्त पदार्थों के साथ मिलाकर वायुरोधी जगह में उच्च कांतिक तापमान पर पर्याप्त समय तक गर्म करके ठंठा करके करते हैं । ठोस कारबुराईजिंग में पीट कोक द्रव्य कार्बुराइजिंग में आइसो पर पाइल-आइल आदि का उपयोग करते हैं ।

2. **नाइट्राडीकरक [नाइट्राइडिंग]**:-उष्मा उपचार वायुरोधी चेम्बर में उत्पाद को उपयुक्त तापक्रम पर 72 घंटे तक गर्म करके अन्दर ही ठंडा करके किया जाता है । इससे अत्यधिक कठोर पृष्ठ प्राप्त होता है । जिसे ग्राइन्डर पर घिसना भी मुश्किल होता हैं ।

(3)साइनाइडीकरण[साइनाइडिंग] -इस उष्मा उपचार को सोडियम साइनाइड जैसे पिघले नमक के साथ गर्म करके किया जाता है।

(4)बाहरी सतह कठोरीकरण सरफ़ेसहार्डजिंग यह बड़े व भारी उत्पादों को गैस फ्लेम या प्रेरण [इन्डक्शन] से गर्म करके पानी की फुआर से बुझाकर ठण्डा करके करते हैं। उससे 0.1 से 0.8 मि.मी. तक की गहराई की कठोरीकरण सतह प्राप्त हो सकती है।

(5)कालप्रभावित या अवक्षेप कठोरीकरण-यह अधिकतर एल्यूमिनियम, मैग्नीशियम व निकिल तथा ताबें की मिश्र धातुओं की एज हार्डनिंग की जाती है। इस उष्मा उपचार के बाद उत्पाद को काल प्रभावित होने दिया जाता है जिससे उसकी कठोरता व सामर्थ्य में उल्लेखनीय वृद्धि हो जाती है जिस पर तापक्रम के अनुसार ही समय लगता है जैसें 20° सी. पर 500 घन्टे में होता है तो 80° सी. पर केवल 10 घन्टे में ही हो जायेगा।

(6)काला करना [ब्लेकनिंग]:– इसमें कास्टिक सोडा बेस के साल्ट बाथ में उत्पाप को 140° सी. पर उपयुक्त समय 3-60 मिनट तक रखकर यह किया जाता है इससे वह संक्षारण प्रतिरोधी व देखने में सुन्दर हो जाता है।

□□

बनिये का गुस्सा

कन्हैयालाल शर्मा

प्र. लि. (कैरिज हिन्दी कक्ष)

हजामत बनाने के बाद सर पर मालिश करते-करते एक नाई खूब मस्ती में आकर ग्राहक के सर पर जोर से टिकोरा मार दिया करता था। ग्राहकों को बुरा लगता था किन्तु उसकी मालिश में कुछ ऐसा आनन्द था कि वे उसे बर्दाश्त कर लेते थे।

एक दिन एक बनिया पहली बार वहां हजामत बनवाने पहुंचा और अन्त में जब वही टिकोरा लगा तो उसे मन ही मन क्रोध आया कि नाई की यह मजाल अगर में सच्चा महाजन हूँ तो इसे सबक सिखा कर ही मैं चैन लूगा। परन्तु बाहर से महाजन ने यही कहा कि वाह भाई खवास जी, मजा तो तुम्हारे टिकोरे में आया। ये लो एक रुपया इस टिकोरे का इनाम। आगे से टिकोरा जरा जोर से मारा करो। यह कहकर महाजन उसकी दुकान से कुछ दूर गली के मोड़ पर बैठ गया और ज्योंहीं शराब में धुत तलवार लिये एक ठाकुर साहब उधर से निकले, महाजन ने उनसे कहा, हुजूर इस नाई की सेवा का कमाल तो देखते जाइये-ठाकुर को नाई की दुकान में प्रवेश कराकर महाजन उसी मोड़ पर आकर बैठ गया।

उधर नाई ने इनाम के लालच में टिकोरा जरा जोर से ही मारा तो ठाकुर की खोपड़ी झल्लाई और उसने आव देखा न ताव तलवार निकाली और नाई की टिकोरा मारने वाली ऊंगलियां काट डालीं।

बाहर जब महाजन ने यह सुना तब जरा उसे चैन आया।

□□



सच्चा आभूषण

○ अंजु शर्मा

लिपिक (उत्पादन कार्यालय लोको)

बंगाल के मेदिनीपुर जिले में एक गांव है, वीरपुर। पहले यह गांव अत्यत पिछड़ा हुआ था। आज इसी गांव में 'भगवती विद्यालय नामक एक आदर्श विद्यालय है। इस विद्यालय के बारे में सुनो!

इसी गाँव में एक लग्नशील बालक एक निर्धन परिवार में रहता था। वह रात-दिन अपनी मां, भगवती देवी की सेवा-टहल में लगा रहता था। मां भी बालक को बहुत प्यार करती थी।

गाँव में एक विवाह में बेटे ने देखा कि सब औरतों ने गहने पहने हुए हैं। उसकी मां को गहने नहीं है, ये जान कर उसे दुख हुआ। उसने मन में तय किया वह मां के लिए अवश्य गहने बनवायेगा।

एक दिन मां के पैर दबाते हुए उसने अपने मन की बात स्पष्ट करने के लिए सवाल किया, "मां, तुम्हारे पास कोई आभूषण नहीं है न?" "नहीं तो! मगर बात क्या हैं बेटा?" मां ने अचरज से पूछा।

"मां, मेरी इच्छा है कि तुम गांव की अन्य औरतों की तरह गहने पहनों" साथ ही कहा, 'मैं' तुम्हें गहने बनवाना चाहता हूं।"

भगवती देवी ने मुस्कराते हुए कहा, "बेटा यदि तुम्हें अपनी मां से इतना ही प्यार है, तो मेरे लिए बस तीन गहने बनवा देना"

"बस तीन गहने ही, मां? मगर कौन-कौन से?" बालक ने अधीरता से प्रश्न किया।

"बेटे, इस गांव में एक भी विद्यालय नहीं है। एक स्कूल खुलवा दो। मरीजों की दवा-दारु की कोई व्यवस्था नहीं है यहां, अतः एक अस्पताल बनवा देना। गरीब अनाथों के रहने-खाने के लिए एक अनाथालय बनवा देना, बस यही तीन गहने बनवा देना।

बालक ने मां के पैर छूकर आश्वासन दिया और तब से जी-जान से जुट गया, मां की इच्छाएं पूरी करने में।

एक दिन सपना साकार हुआ उसने अपनी मां के नाम से भगवती विद्यालय, चिकित्सालय व अनाथालय बनवा दिया—वही बालक आगे चलकर ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ।

□□

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे मरते ही संसार तुम्हें न भूल जाए तो या तो पढ़ने योग्य रचनाओं की सृष्टि करो या वर्णन करने योग्य कर्म करो।

— फ्रैंकलिन

संविधान की हिदायत का जमकर दुरुपयोग

● श्रीमती चन्द्रावती वर्मा

वरिष्ठ लिपिक, (डीजल कार्यालय)



26 जनवरी, 1950 को संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया किन्तु इन 37 वर्षों में हिन्दी को राजभाषा बनाने में जो कुछ किया गया, वस्तुत: उससे हिन्दी की अवमानना ही हुई है। अभी भी केन्द्रीय कार्यालयों में अंग्रेजी ही राज कार्य की भाषा बनी हुई है। तब तक हिन्दी में कर्मचारी पारंगत नहीं होते जब तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में कार्य होता रहेगा—संविधान की इस हिदायत का जमकर दुरुपयोग हो रहा है।

देश की आजादी के 39 वर्ष बाद भी हिन्दी भाषा को लेकर सवाल उठाना क्या लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक त्रासदी नहीं है ? वस्तुस्थिति यह है कि केवल दो प्रतिशत भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली अंग्रेजी आज भी ऊंची नौकरियों के लिए परीक्षाओं की भाषा है, दंभ की भाषा है, तरक्की-तरावट की भाषा है। जब कि भारत की अपनी भाषायें विशेषकर हिन्दी धूलभरी सड़कों और घिसी हुई चप्पलों की भाषा मानी जा रही है। वह मजबूरी और बेरोजगारी की भाषा है। इसी कारण शहर ही नहीं छोटे-छोटे कस्बे भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं जबकि सत्य यह है, कि जिस प्रकार समाज का मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग पूंजीवादी हथकण्डों से कभी उपर नहीं उठ पाता और अमीरों की टक्कर में हार जाता है उसी प्रकार यह राजभाषा की लड़ाई भी इस देश का बहुसंख्यक वर्ग इन गिने-चुने किन्तु राजसत्ता विभूषित अंग्रेजी के भक्तों से नहीं जीत पायेगा और अन्तत: टूट जायेगा। इसीलिये भाषा के इस सवाल पर एक गंभीर पूर्नविचार आवश्यक है।

यद्यपि अपने सांस्कृतिक गर्व एवं तकनीकी विकास में बुलन्दियों को छूने वाले रूस, जापान, जर्मनी, अमेरिका आदि देश भी इस बात को महत्व देते हैं कि अपने सांस्कृतिक कक्ष में एक खिड़की को अवश्य खुला रखना चाहिए ताकि विदेशी भाषाओं के ज्ञान के झौंके भी आ सके और उसके लिए इन देशों में विदेशी भाषाओं के साहित्य को अतिशीघ्र अपनी भाषा में अनुवाद करवा लिया जाता है। किन्तु वे हमारी तरह यह नहीं करते कि अपने कमरे के दरवाजे से आने जाने में तो शरमाएं और खिड़की से ही दूसरों की छतों पर कूदते-फांदते रहने में गर्वमहसूस करें।

एक बच्चे के लिए भाषा को सीखना अपने आपको धीरे-धीरे विश्व के साथ वाचिक संवाद में डुबोते जाना है; वाचिक संवाद के साथ ही बच्चे की चेतना का विश्व बोध के साथ अपना रूप ग्रहण

करते जाना है। इसलिए मनुष्य का विश्व–बोध और भाषा-बोध न केवल समान्तरण प्रक्रियाएं हैं बल्कि एक ही प्रक्रिया के दो छोर हैं। जो भाषा बालक की चेतना को अंगुली पकड़कर चलना सिखाती है। वह उसकी मातृभाषा ही है और बालक अपनी मातृभाषा में ही इस दुनिया को समझने का सारा तर्क विकसित करता है। मातृभाषा का पक्का स्वरूप तय हो जाने के बाद एवं विश्व बोध का आधारभूत रूप प्राप्त हो जाने के बाद एक दूसरी भाषा का साक्षात्कार उसको दत्तक पुत्र की तरह प्राप्त होता है जो उसका खुद का सहज विकास नहीं है।

हम सत्तर करोड़ जनता के बीच खड़े हैं और चंद अपवादों के जरिये न तो नियमों को बदल सकते हैं और न उस विशाल जनता की सृजनशीलता पर अंग्रेजी की कुल्हाड़ी चलाने के अन्याय को ही झुठला सकते हैं। ये आंकड़े तो जुटाये जा सकते हैं कि अंग्रेजी के माध्यम से कितना विकास किया गया किन्तु क्या यह अध्ययन भी किया गया है, कि अंग्रेजी के माध्यम के कारण कितनी भारतीय प्रतिभाओं को कुचला गया गया है। यहां तथाकथित तकनीकी विकास की कहानी यह है कि 39 वर्ष की आजादी के बाद भी अंग्रेजी की कमर तोड़ गुलामी के कारण आई. आई. टी. और मेडिकल कॉलेज कितनी भारतीय प्रतिभाओं अर्थात् 'कच्चे माल' का निर्यात कर रहे हैं और भारी मात्रा में विदेशी तकनीकी अर्थात् "पक्के माल" का आयात कर कर रहे हैं। गुलामी का अंधापन इस कदर हावी है कि आज भी अगर किसी आई. आई टी. का छात्र हिन्दी में परीक्षा देना चाहे तो उसके शोध ग्रन्थ को जाँचा तक नहीं जाता। विडम्बना की बात यह है कि यहा तकनीकी शोध के लिए हिन्दी की सामर्थ्य की कोई समस्या नहीं है, यहां तो समस्या एक अछूत हिन्दी का उद्धार करने की है। संकट तो यह है कि एक तरफ इस समाजवादी लोकतांत्रिक देश की बहु–संख्यक जनता की अछूत भाषा–हिन्दी है और दूसरी तरफ उसी जनता के पैसे से बने और उसी जनता के लिए बने ये तकनीकी एवं चिकित्सा संस्थान हैं जो कि हिन्दी को अपनाने में लज्जा महसूस कर रहे हैं।

इसलिए विदेशी भाषाओं की बैसाखियों पर विकास करने का रूमानीपन अब समाप्त किया जाये और अंग्रेजी जो 2 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है वह हिन्दी भाषी जनता पर जबरन न लादी जाये।

□□

माना कि श्रेष्ठ कार्य में परिश्रम करना पड़ता हैं, परिश्रम शीघ्र समाप्त हो जाता है, परन्तु कीर्ति अमर रहती है, जबकि नीच काम में चाहे उसके करने में मजा भी आता रहा हो, आनन्द शीघ्र चला जाता है, लेकिन कलंक सदैव लगा रहता हैं। ***जॉन स्टुअर्ट.***

यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरु करो। ***साइरस***

जहां कायरता, घृणा और भय का वास होता है, वहाँ भगवान नहीं आते।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस

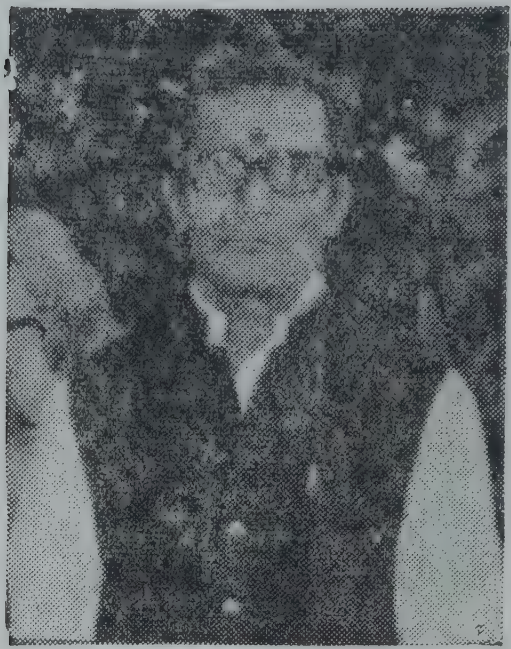
दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपातकाल में, स्त्री की निर्धनावस्था में, प्रेम की परदेश में और सत्य की परीक्षा संकट के समय होती है। ***महामुनि वेद व्यास***

कई लोग असाधारण अवसरों की बाट जोहा करते हैं, किंतु वास्तव में कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं हैं, छोटे से छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसमें खपा देने से वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है। ***स्वेट मार्डेन***

वासना का भूत

● भीमराज रंगा

व. लि. स्था. 3 (लोको)



आप, राजा होकर मुझ गरीब-गांवरी से क्यों विवाह रचाना चाहते हैं ?''

''मैं तुम्हारे अपूर्व सौन्दर्य और अल्हड़ जवानी का दीवाना हो गया हूं, विवाह करके भोग आनन्द लेना चाहता हूँ, सुन्दरी !''

''तब ठीक है मैं अपना निर्णय आठ दिन बाद सुनाऊंगी राजन !''

आठ दिन बाद राजा आया। उसने देखा, सामने एक खटिया पर, बीमार, पीली पड़ी हुई कृष काया लेटी हुई है, आंखें अन्दर धसी हुई निस्तेज, निढ़ाल क़मज़ोर, मक्खियां भिनभिना रही हैं। पूछा राजा ने, आप कौन हैं ? वही जिससे आप विवाह करना चाहते हैं, भोगना चाहते हैं।'' उत्तर दिया कृष काया ने।

''पर आपका वह सौन्दर्य-यौवन का क्या हुआ ? कहां गया वो ?'' राजा ने प्रश्न किया।

युवती ने इशारे से बन्द किए घड़ों की ओर अंगुली की। ''इन मटकों में बन्द है वह सौन्दर्य और यौवन''।

राजा ने जैसे ही मटके के मुँह खुलवाए। बूदबू से वातावरण भर गया। मल-मूत्र की सडांध से सर चकराया, पुनः बन्द कर पूछा, ''ये क्या मज़ाक है ?''

ये मजाक नहीं सच्चाई है, जो इस चमड़े के मटके में था और जिसे आप सौन्दर्य यौवन समझे थे, अब वही मिट्टी के मटके में है।''

राजा की आँखें खुल गई, वासना का भूत भाग गया, और वैराग्य वृत्ति जाग गई।

प्रेम और वासना में उतना ही अन्तर है जितना कंचन और कांच में।

—प्रेमचन्द

जुगनू तभी तक चमकता है, जब तक उड़ता है। वही हाल मन का है। जब हम रुक जाते हैं तो अंधकार में पड़ जातेहैं

—बेली



भुल्लकड़ वैज्ञानिकों के रोचक प्रसंग

● अहमद नूर

मु. लि. स्था II (लोको)

वैज्ञानिकों, विचारकों व कलाकारों की दुनियां ही कुछ ऐसी होती है कि वे अपनी उधेड़बुन में इस कदर डूबे रहते हैं कि जैसे कोई समाधिस्त साधु। तो लीजिए आप इन भुलकक्ड़ों के रोचक प्रसंग पढ़कर अपना मनोरन्जन कीजिए-

रोगाणु का पता लगाने वाले लुई पाश्चर की यह घटना उस दिन की है जिस दिन उनकी शादी होनी थी। शादी के लिए दुल्हन भी तैयार और पादरी महोदय भी बैठे थे। मगर शादी के ऐन मौके पर दूल्हे जी गायब। जब खोज आरम्भ हुई तो लुई पाश्चर साहब अपनी प्रयोगशाला में बोतलों के बीच पाये गये। उन्हें अपनी शादी की तारीख भी याद नहीं रही।

[क] आईजक न्यूटन के साथ भी बड़ी मजेदार घटना घटित हुई। उनका नौकर उन्हें घड़ी व अन्डे लाकर दे गया और वह अपने काम से चला गया और कहता गया कि इतने समय बाद अण्डे उबाल कर नाश्ता कर लेना। मगर न्यूटन साहब ने अण्डों के बजाय घड़ी को ही उबाल मारा।

[ख] न्यूटन साहब की आदत की एक घटना और पढ़िये। वे एक बार घोड़े पर बैठकर किसी गाँव जा रहे थे। रास्ते में पहाड़ी पड़ी तो घोड़े पर से उतर गये और उसकी रास पकड़कर पैदल चलने लगे। रास्ते में ही उस समय उनके मस्तिष्क में कोई गणित सम्बन्धि समस्या आ गई और वे उसी को हल करने में व्यस्त हो गये। जब सवाल हल हो गया और उनकी तंद्रा टूटी तो उन्होंने देखा कि घोड़ा घर की ओर लौट रहा है और वह पीछे-पीछे घोड़े को पकड़े हुए चल रहे हैं।

3. एडीसन ने लगभग 2000 छोटे बड़े आविष्कार किये हैं। इनकी घटना भी बड़ी मजेदार है। एडीसन साहब के दोस्त उनके सिगार मजे से पीते रहते थे। इससे तंग आकर उन्होंने सेल्समैन से दुर्गन्धयुक्त पदार्थों से बने सिगार बनवाने का आर्डर दिया ताकि वे अपने दोस्तों को मुफ्त माल उड़ाने का मजा चखा सकें। कुछ दिनों बाद उन्होंने सेल्समैन को सिगारों के अब तक न भिजवाने की शिकायत की और शीघ्र भेजने का आग्रह किया तो सेल्समैन हैरान रह गया और बोला, लेकिन सर, मैंने तो आज से तीन सप्ताह पूर्व ही सिगारों के पैकेट भेज दिये थे।

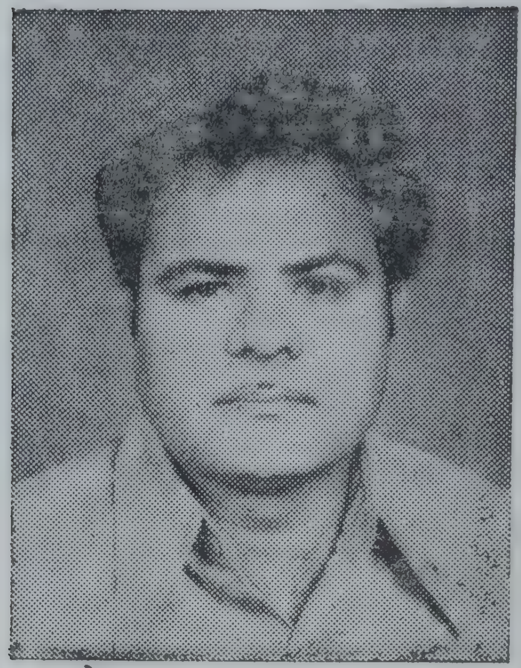
ओफ-तो क्या उन दुर्गन्धपुक्त सिगारों को····

□□

स्वामी विवेकानन्द की बेटी

● टी. वी. ज्ञान चंदानी

आशुलिपिक (बिजली कारखाना)



स्वामी विवेकानन्द के भाषणों ने शिकागो में धूम मचा दी। अखबारों के प्रथम पृष्ठ उनके भव्य-चित्रों एवं ओजस्वी विचारों से भरे हुए थे। उनकी लोक प्रियता से कुछ धर्मान्ध लोग दुःखी भी थे। ऐसे ही लोगों ने एक षड़यन्त्र रचा।

स्वामी जी एकान्त में एक वृक्ष के नीचे ध्यान में बैठे हैं। एक सुन्दर युवती आकर उनकी गोद में बैठकर उन्हें चूमती है, उधर षड़यन्त्रकारी कैमरा क्लिक करते हैं, ताकि अखबारों के जरिये स्वामी को बदनाम किया जा सके।

स्वामी जी की मधुर मुस्कान और अपनी धृष्टता से वह वेश्या सकुचाती हुए पूछती है।

'आपकी गोद में बैठकर मेरा चूमना आपको कैसा लगा ?'

'वैसा ही जैसा बच्ची अपने पिता की गोद में बैठकर उसे चूमती है।'

स्वामी जी के इस उत्तर को सुनकर, वह वेश्या लड़की, जिसने अपने पिता को न जाना था, न उसका प्यार पाया था, रो पड़ी बिलख-बिलखकर। स्वामी के पाँव पकड़ लिए। स्वामी जी ने उठो बेटी ! कहकर उसे स्नेह किया। उसका जीवन बदल गया।

स्वामी विवेकानन्द एक महफिल में

भारतीय सन्यासी स्वामी विवेकानन्द के विदेश जाने के उपलक्ष में खेतड़ी के महाराजा ने उनके स्वागत में जश्न का इन्तजाम किया।

राजाओं की दृष्टि में जश्न का अर्थ था, नाच-गाना, भोजन, रोशनी सजावट आदि।

देश की मशहूर मंहगी नर्तकी वेश्या उन्होंने बुलाई।

स्वामी जी को पता चला तो बड़े खिन्न हुए। 'अब ये क्या तरीका है सन्यासी के स्वागत के लिए वेश्या, नाच-गाना !' ऐसा राजा को कहा, और उस महफिल में जाने से इन्कार कर दिया।

स्वामी जी महफिल में नहीं आ रहे हैं यह जानकर वेश्या दुःखी हुई। वह अच्छे-अच्छे भजनों की तैयारी करके आई थी। शास्त्रीय गान-नृत्य में वह प्रवीन थी। बड़ी उदास हुई।

वेश्या ने एक भजन गाना आरंभ किया। उस की आवाज स्वामी जी के कमरे तक पहुंची। भजन-गान में वह इतनी तल्लीन हुई कि अपनी सुध-बुध खोकर आत्मा की गहराई से गाने लगी। सारी सभा जैसे शान्त आनन्द के सागर में तैर रही हो। भजन

का भाव था–'परमात्मा ! तुम दयालु हो, पारस हो! तुम्हारी दृष्टि में कसाई के छुरे और वणिक के बांट में कोई भेद नहीं है अपने स्पर्श से दोनों को सोना कर देते हो। मुझे भी उबारो ! मेरा उद्धार करो।'

स्वामी जी ने जब ये गीत सुना, भाव समझे, अपने लिए सोचने लगे,मुझ में ही कोई कमी है अन्यथा वेश्या से क्या भय था। चल पड़े कमरे से महफिल में आकर वेश्या से कहा, 'तुमने मुझे जगा दिया। भूला था रास्ता दिखा दिया तुम भी मेरी पथ प्रदर्शिका हो।'

स्वामी प्राय: इस घटना का वर्णन अपने जीवन में करके उसके प्रति आभार व्यक्त करते रहे।

□□

नज़र अपनी-अपनी

● **दयाराम**

स. शॉप अधीक्षक (संकेत कारखाना)

एक महात्मा के चार शिष्य थे। पहला आलसी दूसरा चोर, तीसरा बातूनी और चौथा विद्वान।

एक सुबह महात्मा ने चारों शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा, "आश्रम से कुछ दूर एक बगीचा है, तुम चारों वहां जाओ और शाम को मुझे बताना कि बगीचे में तुमने क्या-क्या देखा?"

आलसी शिष्य ने बाग में घनी छाँह देखी तो वह एक वृक्ष के नीचे जाकर सो गया। चोर ने वृक्षों पर पके आम देखे,तो उसके मुँह में पानी भर आया। उसने पत्थर मार कर आम गिराये और उनका रस चूस कर बैठ गया। बातूनी शिष्य ने वृक्षों की गिनती कर दी। विद्वान बगीचे के हर वृक्ष और उन पर लगे आमों को ध्यान मग्न हो कर देखता रहा।

शाम को जब वे आश्रम लौटे, तो आलसी शिष्य की भारी पलकें देखकर महात्मा भांप गये कि इसने सोने के अलावा कुछ नहीं किया, चोर शिष्य के शरीर पर माली की मार के निशान थे, बातूनी सारी राह आम और वृक्षों की संख्या रटता रहा, लेकिन आश्रम आकर वह भी भूल गया। चौथा शिष्य शांत मुद्रा में गुरु के सामने खड़ा था।

महात्मा ने पूछा, "वत्स तुमने बगीचे में क्या देखा?

विद्वान शिष्य बोला, "गुरुजी वृक्षों की उन टहनियों पर सब से अधिक फल थे जो झुकी हुई थी। जो तनी खड़ी थी, उन पर कोई फल नहीं थे।"

महात्मा ने कहा "बगीचे में जाकर तुमने ही सच्चा ज्ञान प्राप्त किया है। जो नम्र और शालीन होते हैं, उसी को अपनी मेहनत का फल मिलता है। अभिमानी व्यक्ति तनी हुई टहनी के समान कोई फल प्राप्त नहीं कर पाता है।"

□□

विश्व विजेता की भ्रान्ति



● गोपाल शर्मा

प्रधान टंकक (सर्वे व निर्माण
अध्यक्ष एम्प. युनि. (इंजी. शाखा)

"मैं तुम्हें हीरे-जवाहरात दूंगा हकीमों ! बस कुछ सांसे दिला दो, यूनान पास ही है अपनी माँ की गोद याद आ रही है उस गोद में सोना चाहता हूं।" सिकन्दर महान् ने बड़ी दीनता से अरदास की।

"यह संभव नहीं है दुनिया के विजेता सिकन्दर।" चिकित्सकों ने विवशता प्रकट की। "ऐसा मत कहो ! मेरा सारा राज्य, धन-दौलत वैभव सब ले लो, मुझे अपनी मां तक पहुंचाने के लिए बस कुछ श्वासें बख्श दो, मैं तुम से भीख मांगता हूँ।" "राजन ! ये राज्य तो क्या तीनों लोक के राज्य दो तो भी कुछ क्या, एक श्वांस भी नहीं खरीद सकते हो !" चिकित्सकों ने अन्तिम बार कह दिया।

"तो क्या ये सब धन, राज्य, लूट, हत्याएं एवं विश्व-विजय व्यर्थ है जो एक श्वांस भी न दिला सके ? मेरा जीवन व्यर्थ गया- मैं इसी भ्रांति में रहा कि ताकत और धन से सब खरीदा छीना जा सकता है— सिकन्दर ने उदास स्वर में कहा।

सिकन्दर ने मरने से पूर्व अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट की "मेरे दोनों हाथ अर्थी के बाहर निकाल देना ताकि जुलूस में लोग देख सकें कि सिकन्दर मुट्ठी बाँधे आया और खाली हाथ जा रहा है—शायद मेरी इस मूर्खता से ही लोग सबक ले सकें।" और ऐसा ही किया गया।

कहता हूँ कहि जात हूं, बजा बजा कर ढोल।
श्वासाँ खाली जात है, तिनका तीन लोक का मोल ॥ कबीर ◻◻

पं. जवाहरलाल नेहरू ने 1958 में मद्रास में कहा था कि : "मेरा ख्याल है कि हमें बिलकुल भी यह शोभा नहीं देता कि भारत एक विदेशी जुबान को राजभाषा की शक्ल में अपनाए। कई मर्तबा मैं बड़ी अजब परेशानी में पड़ गया। कुछ दूसरे लोगों की भी, जो बाहर के मुलकों में गए, यही हालत हुई। हमें वहां अपने ही भाईयों से, देशवासियों से अंग्रेजी में गुफ्तगू करनी पड़ी। लोग हैरत से हमें देखते हैं। हमसे सवाल करते हैं। आपकी अपनी कोई जुबान नहीं है क्या जो आपको विदेशी जुबान में बोलना पड़ता है।"



फाँसी से हाँसी

● हरिशंकर यादव

हिन्दी टंकक (लोको)

किशोर युवक खुदीराम बोस को फांसी होने वाली थी अगली सुबह पूर्व संध्या ो वह व्यायाम कर रहा था। निश्चिन्त था, प्रसन्न भी। जेल अधीक्षक मुसलमान बुजुर्ग वार्डर सहित आए। पूछा—खुदीराम अब भी र्वजिश? हाँ जब तक हूँ तब तक दैनिक नियमों की पालना तो करनी ही है, संस्कार नहीं छूटने चाहिए, ये ही तो मृत्यु के पार जायेंगे—उत्तर दिया खुदीराम ने।

जेल अधीक्षक की आंखें भर आई। घर से लाकर उसे आम दिए–स्नेह पूर्वक कहा-सौगात है बेटे! खा लेना। बोस ने कहा-अच्छा! धन्यवाद बाबा।

अगली सुबह फांसी के लिए ले जाने को, अधीक्षक पुन: वार्डर सहित आए। बोस ब्राह्म मुहूर्त में प्रार्थना कर रहे थे। प्रतीक्षा की। देखा आम वैसे ही रखें हैं। प्रार्थना पूरी हुई।

बेटा आम खाये नहीं ?

खुदीराम ने उदास स्वर मे कहा-फांसी का फंदा याद आ गया; नहीं खा सका।

जेल अधीक्षक ने वार्डर से कहा-आम उठालो किसी और को दे देना।

वार्डर आम उठाने लगा तो सब पिचक गए। खुदीराम ठहाके मार कर हंस पड़ा। उसने आम चूसकर फूंक से फूला कर रख दिए थे। जेल अधीक्षक रो पड़ा—उफ! फांसी के वक्त हांसी! मौत से भी मजाक। क्या गजब के थे लोग-

शूद्र कौन ?

परमहंस रामानुजाचार्य एक बार अपने कुछ ब्राह्मण शिष्यों के साथ नदी स्नान कर रहे थे। स्नान करने के बाद उनकी दृष्टि दूर खड़े दो अछूतों पर पड़ी, जो उनके दर्शन के लिए खड़े थे और श्रद्धापूर्वक उन्हें निहार रहे थे। रामानुजाचार्य ने तुरन्त उन्हें बुलाया और उनके कन्धों का सहारा लेकर चल पड़े।

यह देखकर ब्राह्मण शिष्य बड़े क्रोधित हुए। वे बोले—स्नान के बाद शूद्रों का स्पर्श! फिर स्नान करने से क्या लाभ हुआ ?

रामानुजाचार्य मुस्काये, बोले—'वत्स' स्नान से तो शरीर शुद्धि हो गयी। पर मन पर अछूतों के प्रति घृणा का जो मैल जमा है वह भी दूर करना है। यह तुम्हारा भ्रम है कि शूद्र कुल में जन्म लेने से कोई शूद्र होता है। व्यक्ति अपने सत्कर्मों से महान् बनता है और दुष्कर्मों से शूद्र बनता है। इनके प्रति घृणा भाव रखना पाप है।

□□



अन्ध भक्ति

● श्याम बिहारी भटनागर

अध्यक्ष, एम्प. यूनियन (लेखा शाखा)

आदिपुरुष ने उसकी सेवा के लिए दो सेब उत्पन्न किये। वे दोनों एक दूसरे से अधिक सेवा करने की होड़ में नोंक-झोंक कर बैठते थे। आदिपुरुष ने उन दोनों को सेवा के लिए अपना एक-एक पाँव बांट दिया तदनुसार वे अपने-अपने पाँव की सेवा-सुश्रुषा में लगे रहे।

एक दिन आदिपुरुष अपना एक पाँव दूसरे पाँव पर रखकर लेटे हुऐ विचार निमग्न थे। उसी समय एक सेवक आया और अपने पाँव के ऊपर दूसरे का पाँव देखकर क्रोध में भर गया। उसने ऊपर के पाँव को झटके से नीचे गिरा दिया और दो-चार प्रहार करते हुए भविष्य में ऐसी गलती न करने की चेतावनी देकर चला गया।

तत्पश्चात् दूसरा सेवक पहुंचा और उसने अपने पाँव पर चोट के निशान देखे और उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि यह सब दूसरे पाँव वाले की काली करतूत है। उसमें भी प्रतिशोध भड़का और तलवार से दूसरे पाँव को ही काटने पर उतारू हो गया।

आदिपुरुष अपने सेवकों की अन्ध भक्ति देखकर अवाक् रह गए। उन्होंने बहुत दुःखी होकर दोनों को समझाया कि न यह पाँव तुम्हारा है और न वह पाँव उसका। दोनों ही पाँव मेरे हैं तुम दोनों अज्ञान के वशिभूत जिसे पाना चाह रहे हो, उसी को नष्ट करने में लगे हुए हो।

कैसी विडम्बना है। इस तरह पाँवों की सुरक्षा तो हो गई किन्तु उनका परस्पर मन-मुटाव दूर नहीं नहीं किया जा सका और तब ही से वे अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग अलापते एक से अनेक होकर भटक रहे हैं। अपनों से ही गैर हो रहें हैं। जिस डाली पर बैठे हैं, उसी को काट रहें हैं।

एक अटल सत्य

एक समय की बात है स्विट्जरलैण्ड के राजा ने विश्व के जाने-माने विद्वानों को आंमत्रित कर उनसे केवल एक वाक्य में एक अटल सत्य प्रगट करने का आग्रह किया।

कई वर्षों के मस्तिष्क-मंथन के बाद जिस जिस वाक्य को पुरस्कृत किया वह है-"यह भी नहीं रहेगा" (This too shall pass away).

इस वाक्य को राजा ने अपने महलों तथा सभा-गृह आदि में सर्वत्र टँकवा दिया और प्रत्येक सुख और दुःख के क्षणों में इस वाक्य का अवलोकन कर सहज, सार्थक और सफल जीवन जीते हुए परम शांति का सर्वोपरि लाभ प्राप्त किया। □□



पहले की कमाई : अब काम आई

● रामजीलाल कुलचाण्या

हिन्दी सहायक ग्रेड I (म. रे. प्र. कार्यालय)

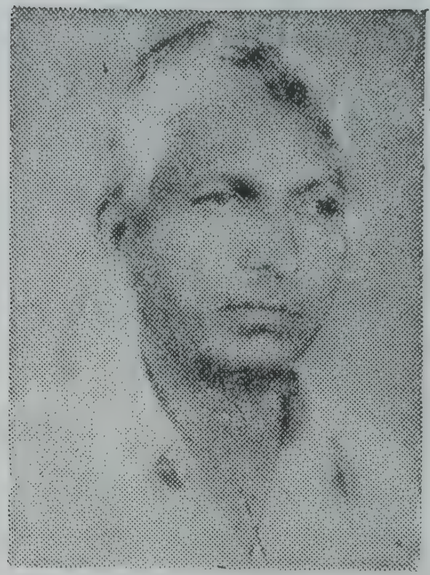
बस अड्डे पर परेशानी में खड़े प्रोफेसर के सामने एकाएक इम्पाला कार रुकी। कार में बैठे सेठ ने प्रोफेसर को लिफ्ट देकर रास्ते में पूछा क्या वे उसे पहचान पाए। प्रोफेसर की असमर्थता पर उन्होंने बताया कि हम दोनों एक ही कक्षा में साथ पढ़े थे, किन्तु तुम होशियार थे और मैं था ठोटी। तुम आये और एक ही वर्ष में पास होकर आगे चले गये। किन्तु मैं पांच साल तक उसी कक्षा में फेल होता रहा और परेशान होकर प्रधानाध्यापक ने मुझे स्कूल से निकाल दिया। पिता ने भी दुखी होकर घर से निकाल दिया। फालतू भटकते हुए मैं रास्ते में पड़े लोहे के टुकड़े इकट्ठे करता रहा और विश्वयुद्ध के फलस्वरूप उस लोहे के अच्छे दाम मिल गये। इसी प्रकार कबाड़ी गतिविधियों से मालोमाल होकर आज कई नगरों में भारी–भारी उद्योगों का मालिक हूं। अब आप भी तो अपनी बात बताइये।

प्रोफेसर ने कहा कि भारत में पढ़ाई समाप्त कर मैंने आक्सफोर्ड, केलिफोर्निया, कैम्ब्रिज आदि विश्व की नामी-ग्रामी सात यूनिवर्सिटियो से पी. एच. डी. की डिग्रियां प्राप्त की। विदेश में अच्छी-अच्छी नौकरियां भी मिल रही थी किन्तु स्वदेश सेवा के लिए यहाँ आ गया हूँ और इसी यूनिवर्सिटी में रीडर हूँ। भाई मुझे 1200 रुपये के लगभग पगार मिलती है किन्तु एक के बाद दूसरी शादी में दहेज के कर्ज से ही ऊपर नहीं उठ पाता हूँ। आज बस भी देर से चल रही है। अच्छा हुआ, आपकी मदद से नौकरी पर सही समय पहुँच रहा हूँ—धन्यवाद करते हुए प्रोफेसर यूनिवर्सिटी पर उतर गया किन्तु सेठ की यह समझ में आ गया कि न तो बुद्धि कमाती है और न ही परिश्रम। पैसे का सम्बन्ध पिछले सत्कर्मों यानि भाग्य से है। क्योंकि बड़े-बड़े गुणवान-बुद्धिमान भी हम जैसे निरश्रम सेठों का मुंह ताकते हैं तो उधर काली मजदूरी (घोर परिश्रम) करने वाले भी कोरे प्याज–रोटी-पानी पर ही जीवित हैं। पैसा-पिछले पुण्य कर्मों का फल है। जितना सत्कर्मों का योग है, उतना ही मिलेगा- न कम न जायदा। चालाकी-बेईमानी-पाप करोगे तो भी उतना ही मिलेगा और चालाकी-बेईमानी-पाप नहीं करोगे किन्तु सम्यक परिश्रम करोगे तो भी उतना ही मिल जाएगा। अतएव, पैसे के लिए पाप-कर्म करने में लाभ नहीं महाहानि है। □□

उल्लू बनाम पंचायती न्याय

● देवी प्रसाद शर्मा,

मुख्य नक्शानवीस (बिजली) अजमेर।



एक छोटा-सा गांव था जिसमें अधिकतर गरीब किसान अथवा बन्धुआ मजदूर रहते थे। कुछ लोग प्रतिदिन दिन-दानगी पर कार्य करने जाते और जो कुछ मिल जाता उसी में अपना गुजर-बसर करते थे। अज्ञान-अन्याय-अकाल की छाया से अभिशापित ग्रामिणों की दशा बहुत ही दयनीय थी।

गांव की सीमा पर एक बहुत बड़ा वट वृक्ष था, जिसकी शाखायें दूर-दूर तक अपनी बाहें फैलाकर पथिकों को राहत प्रदान करती थीं। उस वट वृक्ष में एक उल्लू रहा करता था जो गांव वालों की तरह अपनी जिन्दगी का बोझा ढ़ो रहा था।

एक दिन हंस का जोड़ा उधर से उड़ता हुआ जा रहा था। हंस अपनी हंसनी से कह रहा था-देख, इस गांव की सीमा के प्रहरी-उस वट वृक्ष में एक उल्लू रहता है जिसके कारण यह गांव इतना संकटग्रस्त और सत्यानाश के कगार पर है।

उल्लू ने उनकी बातें सुनी और अपनी बुराई सुनकर बेचैन हो उठा। वह बाहर निकला और तुरंत उस हंस के जोड़े को निमंत्रण देकर अपने यहां बुला लाया। और दो-चार दिन रोककर उनकी खूब मेहमानी की और उनका मन मोह लिया।

हंस का जोड़ा जब उल्लू से विदा लेकर जाने लगा तब उल्लू ने हंसनी का हाथ पकड़ते हुये कहा, भैया तुम जा रहे हो, ठीक है, लेकिन मेरी इस हंसनी को कहां ले जा रहे हो, यह तो मेरी घरवाली है। मैंने अच्छी मेहमानी की तुम्हारी कि तुम मेरा घर ही उजाड़ने पर उतारु हो गये।

हंस घबरा गया और बहुत ही अनुनय-विनय करने लगा, मगर उल्लू ने एक न सुनी और कहने लगा आप पंचायत बुला लीजिये और जो भी पंच फैसला होगा वह हम दोनों को मान्य होगा।

हंस गांव-गांव में घूमता फिरा और पंचों को निमंत्रण देकर आया। शाम तक पंच इकटठे हुये। जो भी पंच वहां आता मंत्र-मुग्ध सा यही सोचता कि हंसनी अति-सुन्दर है और उसे इस गांव से नहीं जाने देना है।

पचों ने दोनों तरफ की बातें सुनी और फैसला सुनाया—भाई तुम कहते हो कि दो चार दिन पहले ही आकर तुमने आतिथ्य ग्रहण किया है जबकि हम खुद इस हंसनी को इस उल्लू के साथ बरसों से देख रहे हैं। तुम झूठ बोलते हो। अतः यह हमारा पंच फैसला है कि यह हंसनी इस उल्लू के पास ही रहेगी।

पंचायत समाप्त हुई और हंस बेचारा एक हारे हुये जुआरी की तरह मुंह लटकाये हुये जाने लगा। उल्लू ने पुनः हंस को बुलाया। बेचारा लाचार हंस कहने लगा-भैया तुमने मेरा सर्वस्व छीन लिया, अब मुझसे और क्या चाहते हो ?

उल्लू ने हँसकर कहा-भैया अपनी हंसीनी को ले जाओ। मुझे तुम्हारी हंसनी से कोई प्रयोजन नहीं है। मैं तो तुम्हें सिर्फ यह बताना चाहता था कि इस गांव की बरबादी का मूल कारण उल्लू नहीं, पंचायती न्याय है !



होम्योपेथी-एक वरदान

● डा. श्यामसुन्दर लाल रंगा

से. नि. प्रधान टिकिट संग्राहक

के. डी. एम. अजमेर



आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हाम्यों-पेथी का आविष्कार एक जानेमाने एलोपेथी के डाक्टर क्रिश्चयन फेडरिक सेम्युअल हैनीमेन ने किया था। आपको यह जानकर और अधिक आश्चर्य के साथ प्रसन्नता भी होगी कि एलोपेथी के विद्वान डा. हेनीमेन को जब एलोपेथी के दोष दृष्टिगत होने लगे तो उन्हें कई प्रकरणों में रोग का उल्टा असर देखकर बहुत दुःख हुआ कि अगर सही जांच न की जा सकी तो यह चिकित्सा पद्धति रोगी को भयंकर रूप से उलझा सकती है। अतएव ये स्वयं अपने शरीर पर कई प्रकार के विषों (पोइजनों) का प्रयोग कर उसका इलाज ढूंढने में लग गए और एक दीर्घ साधना के बाद उन्होंने मानव समाज को एक वरदान स्वरूप "होम्यो-पेथी" एक नई चिकित्सा प्रदान की। कृपया इसे ध्यान में कर लें कि होम्योपेथी का आविष्कार एलोपेथी के ही बहुत बड़े डाक्टर (हैनीमेन) का एलोपेथी से विश्वास उठ जाने के कारण उन्हीं के द्वारा किया गया था। अतः इस सम्बन्ध में आगे कुछ कहने से पहले डाक्टर हैनीमेन का संक्षिप्त परिचय करा देना आवश्यक है।

डा. हैनीमेन का जन्म 10 अप्रेल 1755 को जर्मनी के माईमेन नगर में हुआ था। इनके माता-पिता गरीब थे किन्तु ये प्रतिभा के धनी थे। केवल 24 वर्ष की आयु में इन्होंने एलोपेथी में एम. डी. पास कर दस साल तक एलोपेथी डाक्टर के रूप में सफलता-पूर्वक कार्य किया और 1790 में एलोपेथिक मटेरिया मोडिका का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
इन्होंने एलोपेथी से निराश कई असाध्य रोगियों का होम्योपेथी से सफलतापूर्वक इलाज किया और 1810 में अपना ग्रंथ "आर्ग्रेनन" प्रकाशित किया जिससे आप संसार भर में डॉक्टर के स्थान पर महात्मा हेनीमोन के नाम से विख्यात हुए। आपने काडेन के राजा को असाध्य रोग से मुक्त किया और 14 वर्ष वहां रहे और "क्रोनिक डीजेज" नामक पुस्तक प्रका-षित की। तदुपोरान्त 1830 में पेरिस गए और 2 जुलाई 1843 में उनका स्वर्गवास हुआ।

निस्सन्देह इस महामहीम महात्मा (भूतपूर्व एलीपेथी के प्रसिद्ध डाक्टर) के परिचय से आप में होम्योपेथी के प्रति श्रृद्धा और विश्वास जागेगा और इस लेख का प्रयोजन भी यही है कि आप होम्योपेथी से अधिक से अधिक लाभ उठायें।

लगे हाथ इस लेख को समाप्त करने से पूर्व में आपको होम्योपेथी की थोड़ीसी जानकारी भी दे दूं।

जैसा कि ऊपर लिखा है कि डॉ. हैनीमेन ने खुद अपने शरीर पर विभिन्न प्रकार के विषों (पाईजन) का प्रयोग कर उनके असर मिटाकर यह नतीजा निकाला कि जो औषधियां अपने गुणधर्म के कारण जिन रोगों को उत्पन्न करती हैं वे ही उन रोगों को नष्ट करने की सामर्थ्य भी रखती हैं। अत: रोगों के लक्षणों के समान गुण-धर्म वाली औषधियों का चिकित्सा के रूप में प्रयोग करना ही होम्योपेथी चिकित्सा है।

एलोपेथी का सिद्धान्त इससे विपरीत है। उसमें रोग के लक्षणों के विपरीत गुण-धर्म वाली औषधियों का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए, उसे एलोपेथी-विपरीत पद्धति कहते हैं। उसमें चीर-फाड़, अंग-भंग भी किया जा सकता है जबकि प्राकृतिक रूपों को नष्ट करना होम्योपेथी के उसूलों के खिलाफ माना जाता है।

यों तो आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति बहुत पुरानी है और उसके कई सिद्धान्त होम्योपेथी से मेल खाते हैं, यथा-"विषस्य विशमौषधम्" तथापि होम्योपेथी अधिक आसान, सस्ती और सटीक (सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्) देव-दुर्लभ चिकित्सा पद्धति है।

होम्योपेथी में विभिन्न रोगों के लिए कई शक्तियों में सैकड़ों दवाइयां हैं जिन्हें हिन्दी में शक्ति और अंग्रेजी में पोटेन्सी कहते हैं, जो एक लाख पौटेन्सी तक होती हैं।

होम्योपेथी में भी रोगों के वही नाम हैं, जो एलोपेथी में हैं क्योंकि होम्योपेथी का आविष्कार एलोपेथी के डाक्टर द्वारा ही किया गया था। ये दवाएं अमरीका, जर्मनी और इंग्लैण्ड से तैयार होकर आती हैं। जिन रोगों के लिए एलोपेथी में चीर-फाड़ (ओपरेशन) किये जाते हैं, उन रोगों को इन दवाइयों से बिना चीर-फाड, बिना अंग-भंग किये ठीक किया जाता है। जिन लोगों को एलोपेथी में असाध्य माना जाता है उनका होम्योपेथी में सफलता पूर्वक इलाज होता है।

होम्योपेथी-औषधि की थोड़ी सी मात्रा भी बहुत लाभ पहुंचाती है और रोग को जड सहित समाप्त करती है। देखने में आपको कुछ अजीब सा लगता होगा कि इसमें स्वच्छ शक्कर की तीन आकार की छोटी-छोटी गोलियों में अर्क डालकर दी गई औषधि से क्या हो सकेगा, किन्तु स्मरण रहे-

"रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजे डार
जहां काम आवे सुई कहा करे तरवार"

महात्मा हैनीमेन ने जन साधारण (मानव-मात्र) की भलाई के लिए होम्योपेथी का न केवल आविष्कार किया बल्कि अपने शिष्यों के माध्यम से संसारभर में इसे लोक प्रिय भी बनाया। आज की इस बढ़ती हुई महंगाई के युग में होम्योपेथि जैसा सस्ता और सरल इलाज देकर महात्मा हैनीमेन ने मानवता पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

अतएव, सरकार को भी गरीब जनता की भलाई के लिए इस चिकित्सा पद्धति को खूब प्रोत्साहन देना चाहिए।

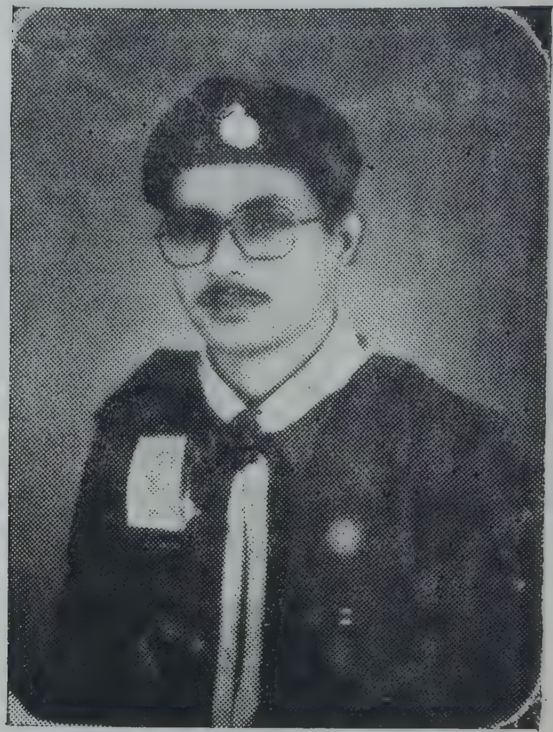
□□

मासूम

अशोक सक्सेना 'साहिल'
कार्यालय अधीक्षक, रेलवे भर्ती बोर्ड

पाक दामन तेरे ये लोग बने फिरते हैं,
रात की स्याही में कितने गुनाह करते हैं।
और सुबह कोई फेरता तस्बीह, कोई पढ़ता है कुरान
कोई देता है सदा मंदिर में, कोई देता है मस्जिद में अजान
फकत एक गुनाह है जो रोज किये जाऊँगा
मासूम हूं मासूमियत को प्यार किये जाऊँगा।

स्काउटिंग में पद यात्रा व पर्यटन



● मुकेश मोहन गौतम

राष्ट्रपतिरोवर व रोवर लीडर

मेडिलियन (फर्स्ट-एड)

मण्डल कार्यालय, अजमेर

वास्तव में प्रकृति की गोद में खुले स्थान में पैदल यात्रा करना और कार्य करना स्काउटिंग का तीन चौथाई भाग है। हाइक व कैम्प पर बहुत बल दिया जाता है, इन दोनों को यदि स्काउटिंग से निकाल दिया जाए तो स्काउटिंग नीरस बन कर प्राण विहीन हो जाएगी। स्काउटिंग की लोक प्रियता और सफलता का श्रेय उन कार्यक्रमों को है जो दैनिक जीवन की चार दिवारी से हट कर प्रकृति के निकट आनन्द प्रदान करते हैं। हाईकिंग एक ऐसा ही कार्यक्रम है। यह आजकल बालकों में ही नहीं बलिक वयस्को में भी अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। आधुनिक काल का व्यस्त जीवन एक मशीन बन गया है। जिसमें अपना जन्मदाता प्रकृति के साथ दो क्षण बिताने को मन की व्याकुलता अतृप्त रह जाती है।

यदि स्काउटिंग के हाईकिंग कार्यक्रमों के द्वारा उसे घर से बाहर जाकर प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करने, अपनी शारीरिक क्षमता की परीक्षा करने और कुछ सीख कर सुखद अनुभूति का आभास प्रदान करने का अवसर हम उसे दें सकें तो यह उसके चारित्रिक विकास में अतुलनीय सेवा होगी।

स्काउटिंग में हाईकिंग केवल बाहर घूमने जाना मात्र नहीं होता, बल्कि यह एक योजना बद्ध कार्यक्रम होता है, जिसके प्रत्येक पहलू पर पूर्व ही निश्चय कर लिये जाते हैं, जैसे इसके उद्देश्य, साधन, गन्तव्य तथा अपेक्षित उपलब्धि आदि। अतः हाइक द्वारा स्काउट में ज्ञान वृद्धि, निरीक्षण शक्ति का विकास, आत्मरक्षा की क्षमता में वृद्धि और प्रकृति अवलोकन के लिए उत्साह आदि गुणों का विकास किया जाता है।

स्काउट के लिए हाइक, (पदयात्रा पर्यटन) का प्रावधान प्रशिक्षण के पहले चरण 'कोमल पद' से ही प्रारम्भ हो जाता है, जिसमें कि उसे केवल 6 किमी. की पद यात्रा पर ले जाया जाता है। तत्पश्चात उसकी आयु प्रशिक्षण तथा अनुभव में वृद्धि के साथ हाइक दूरी बढ़ती जाती है। 'हाइकर' के दक्षता बैज को प्राप्त करने के लिए 160 कि.मी की एक हाइक अथवा 40-40 कि.मी की चार यात्रायें करनी आवश्यक है। हाइक साइकिल द्वारा भी की जाती है किन्तु उसमें भी आधी दूरी पैदल यात्रा आवश्यक है। रोवर्स के लिए "रैम्बलर्स" प्राप्त करने के लिए भी 160 किमी. की पैदल या 640 कि.मी. साइकिल द्वारा यात्रा करनी होती है।

हाइक कार्यक्रम की योजना "मानसभा" (कोर्ट आफ आनर) अथवा 'क्रयू इन कौंसिल' में

तैयार की जानी चाहिए, जिसमें निम्न बातों पर निर्णय लेना चाहिए—

1. हाइक का उद्देश्य—जैसे, प्रकृति का अवलोकन या खोज, स्काउट जांच, दक्षता बैज प्राप्त करना, अन्य स्काउटों अथवा व्यक्तियों से सम्पर्क करना स्काउट कला के अभ्यास या प्रशिक्षण, साहसिक कार्य और खेल कूद आदि।

2. स्थान का चुनाव—हाइक के लिए ऐसा स्थान चुना जाए जहां आवश्यक सुविधायें जैसे जल, विश्राम स्थल, सुरक्षा आदि उपलब्ध हो तथा अपेक्षित उद्देश्य प्राप्त हो सके। बालकों की क्षमता के अनुसार स्थान की दूरी हो। गन्तव्य स्थान तक जाने और वापसी का रास्ता भी सुरक्षित तथा भीड़-भाड़ वाले व्यस्त मार्ग से हट कर हो।

3. हाइक का दिन, तिथि तथा अवधि निश्चित करना—यदि दिन छुट्टी का हो तो सर्वोतम है, किन्तु ऐसी छुट्टी जो महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व या त्यौहार न हो। हाइक की दूरी के अनुसार हाइक की अवधि स्पष्ट रूप से निश्चित की जानी चाहिए कि वह कितने दिन या कितने समय के लिए है और वापसी कब होगी। एकत्र होने का स्थान और समय तथा वापसी का दिन, स्थान और समय भी निश्चित करें।

4. हाइक में आने वाले व्ययं की व्यवस्था—इस व्यय को वहन का वर्गीकरण-स्वय स्काउट अच्छा क्रयू/ट्रुप अथवा संयुक्त रूप से।

5. हाइक में ले जाने वाले सामान की सूची—सामान तीन प्रकार का होगा।

(अ) प्रत्येक स्काउट द्वारा ले जाया जाने वाला।

(ब) टोली के द्वारा ले जाने वाला।

(स) पूरे दल के द्वारा ले जाया जाने वाला आवश्यक सामान।

6. हाइक के दौरान कार्यक्रमों की सूची बनाना।

7. हाइक के नेता—पथ प्रदर्शक, प्राथमिक चिकित्सक के नामों का निश्चय एवं कार्य विभाजन।

विशेष ध्यान रखने वाली कुछ बातें—

1. पैरों की रक्षा—नये जूते, चप्पल आदि न पहनें। पुराने जूते, हंटर शू मोटे तले के जूते पहनें। लम्बी हाइक में पैरों की रोज सफाई करिए। नमक वाले गुनगुने पानी से धोने से थकान उतर जाती है। जुर्राब मोटे व मजबूत हों। पैरों को छालों से बचाइए।

2. सारा सामान बंधा हुआ—केवल अत्यन्त आवश्यक वस्तुएं साथ लें। सामान पैक बनाकर लावें। अच्छा रूक सेक में ले जायें। पानी की बोतल, कम्पास, टार्च, कापी पैन अवश्य रखें। सामान पीठ पर लें जाना चाहिए न कि हाथों,सिर या कन्धों पर।

3. कुछ दवाइयाँ साथ रखें।

4. अपने साथी का साथ न छोडें।

5. समय पर निश्चित स्थान पर एकत्र होकर हाइक प्रारम्भ करें।

6. सड़क अच्छा मार्ग पर ट्रेफिक से बचकर चलें। एक स्काउट पथ-प्रदर्शक के रूप में आगे चलें। एक सबसे पीछे चले जो अपने से पीछे किसी को न रहने दे। लीडर अपने दल से आगे चलें। प्रत्येक दल के बीच कुछ अन्तर रहे।

7. हाइक के लिए निर्धारित कार्यक्रम भरसक पूरे करें।

8. हाइक से लौटने के बाद सारे कार्यक्रम पर विचार कर कमियों और कठिनाइयों को लिखते हुये एक लॉग बुक बनायें।

□□

राष्ट्र धर्म—आज की आवश्यकता

● सुरेन्द्र कुमार गोयल
पर्यवेक्षक मिलराइट (लोको)

अपने देश भारत को स्वतन्त्र हुवे 39 वर्ष पूरे हो गये हैं। देश ने सभी क्षेत्रों में उन्नति की है। भारत विकास शील देशों में प्रमुख स्थान रखता है। कृषि में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। औद्योगिक क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की है। लगभग सभी वस्तुओं का उत्पादन देश में हो रहा है। बहुत सी वस्तुओं का निर्यात भी कर रहे हैं। अब इलेक्ट्रोनिक एवं अन्तरिक्ष में मे भी द्रुत गति से प्रगति कर रहा है। देश में धन भी बढ़ा है। परन्तु फिर भी देश में शान्ति अनुभव नहीं की जा रही है। आज देश में साम्प्रदायिक दंगे जिस प्रकार अंग्रेजों के काल में होते थे, अब भी हो रहे हैं। कहीं भाषा के नाम पर, जाति के नाम पर धर्म के नाम पर आगजनी, मारकाट, आन्दोलन, दंगे ही रहे हैं। अपनी-अपनी मांगे मनवाने के लिये मनमाने हथकंडे अपनाने में कोई भी संकोच नहीं करता। इन सबके पीछे कौनसी विचार धारा कार्य कर रही है। इसके साथ ही साथ यह भी विचार करना चाहिये कि इस महामारी का इलाज क्या है।

आज देश के कर्णधार, राष्ट्रवादी विचार के बुद्धिवादी नेता एवं नागरिक सभी चिन्तित हैं। चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हैं। सरकार की ओर से राष्ट्रीय एकता के नाम पर छोटे-बड़े विविध आयोजन होते ही रहते हैं किन्तु कोई लाभ नहीं। शायद यही कहावत चरितार्थ हो रही है। "मर्ज बढता गया ज्यों ज्यों दवा की"। अंग्रेजों के समय में धर्म के नाम दंगे होते थे, अब धर्म के नाम पर, भाषा और प्रान्त के नाम पर हो रहे हैं। सभी इस देश के नागरिक हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख ईसाई धर्मों में बटे हुवे हैं। उत्तर, दक्षिण के नाम पर बटे हुवे है। परन्तु कोई भी अपने आपको भारतीय नहीं कहते हैं।

इस कारण आज देश में सबसे बड़ी आवश्यकता है राष्ट्र धर्म की। इस लेख में राष्ट्र के साथ धर्म को मैंनें क्यों जोडा। इसका बड़ा कारण यह है कि भारत में अनेक वर्षों से नागरिक धर्म शब्द पर अति श्रद्धा रखते आये हैं। धर्म शब्द से प्रेम है। धर्म के नाम पर झगडे करते हैं। खून की नदियां बहा देते हैं। बड़े से बड़ा बलिदान कर देते हैं। जितना रोजी, रोटी या किसी अन्य प्रयोजना के लिये नहीं। यदि राष्ट्र धर्म के प्रति भी यहां के सभी नागरिकों में प्रेम जाग जाय। वही दीवानापन पैदा हो जाय तो सभी झगड़े समाप्त हो जाए। आर्य समाज के विद्यालयों मे वैदिक धर्म की शिक्षा, मुस्लिम मदरसों में इस्लाम धर्म की शिक्षा, ईसाई मिशनरी स्कूलों में क्रिश्चियन धर्म की शिक्षा दी जाती है। परन्तु पूरे देश में एक भी विद्यालय ऐसा नहीं है, जिसमें एक माह में, एक घन्टे भी राष्ट्र धर्म की शिक्षा दी जाती हो। किसी परिवार में भी नहीं। इसके अभाव में आज देश अनेक रोगों से ग्रस्त है। आग लगी हुई है। स्वार्थ, धन पिपासा, बेईमानी बढ गई। दंगे फिसाद और हत्यायें बढ़ गई। यहां तक कि धन के लोभ में दूसरे देशों के लिये जासूसी करने में भी शर्माते नहीं। तस्करी करना, चाहे नशीले पदार्थों की

ही क्यों न हो, करने में हिचकिचाहट नहीं। देश और देश के नागरिकों का क्या होगा, इसकी परवाह नहीं केवल अपना लाभ हो, यही चिन्ता है।

इस कारण आज देश के लिये महती आवश्यकता है तो केवल राष्ट्र धर्म को नागरिकों में समझाया जाये, पढ़ाया जाय, और उन्हें उसे अपनाने की प्रेरणा दी जाए। सभी प्रकार के धर्मों, प्रान्तों को महत्व देते हुवे, प्रथम राष्ट्र को मान्यता दें। यह देश मेरा है, मेरे द्वारा कोई भी अराष्ट्रीय-कार्य न हो। कोई भी हानि मेरे द्वारा राष्ट्र को न हो। देश के प्रत्येक विद्यालय में, राष्ट्र क्या है राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों की शिक्षा देना अनिवार्य विषय बनाया जाय। जिससे आगे आने वाली पीढी तो यह पुनीत कार्य समझे। प्रत्येक नागरिक में इस देश के प्रति श्रद्धा व सम्मान जागे। सभी नागरिकों में यह भाव जागे कि हम हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई से पहले भारतीय हैं। सब धर्मों से बड़ा राष्ट्र धर्म है।

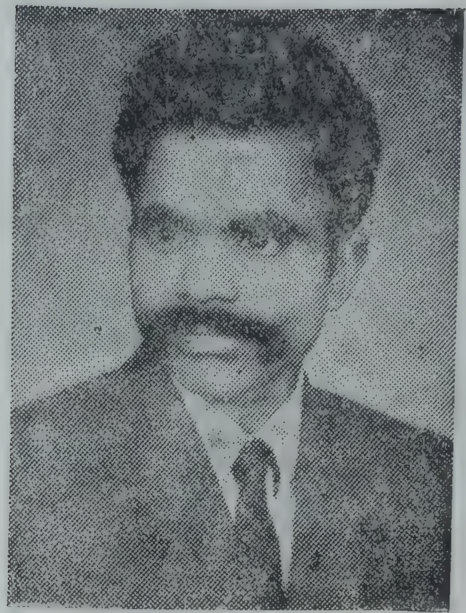
इस राष्ट्र धर्म के, देश में उदय होने से सभी प्रकार के झगड़े, फूट समाप्त हो जायेगें। चरित्र-हीनता देश से समाप्त हो जायेगी। देश एक महा-शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरेगा। पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन होगा। सभी विकास कार्य अनु-मानित समय से पूर्व पूरे होंगे। राष्ट्र एक वैभवशाली, सम्पन्न राष्ट्र के रूप में विश्व में चमकेगा।

"तेरा वैभव अमर रहे माँ।
हम दिन चार रहे न रहे।।

हास्य-विनोद

एन. आर. नम्बियार

व. चार्जमैन (डीजल)



दो शराबी नशे में धुत होकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक मकान के अन्दर कुछ आदमियों में झगड़ा हो रहा था। एक शराबी ने कहा, "मैं अभी मकान के अन्दर जाकर एक-एक को बाहर फेंकता हूं, तुम गिनते रहना।" इतना कहकर वह शराबी घर के अन्दर घुस गया। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति बाहर आकर गिरा। दूसरे शराबी ने गिना—"एक"। पहले वाला शराबी बोला, "अभी नहीं, अभी तो मैं खुद आकर गिराहूँ।"

OO

अमेरिका में सब काम कितने जल्दी होते हैं,
इस की एक बानगी:—
न्युयार्क टाइम्स में पहले दिन का विज्ञापन :
"हमारी फर्म को आवश्यकता हैं एक खजांची की"
दूसरे दिन का विज्ञापन
"मिस्टर स्मिथ हमारे खजांची नियुक्त हुए।
तीसरे दिन का विज्ञापन :
"तलाश है मिस्टर स्मिथ की।"

OO

एक पत्नि अपने लड़के को अपनी सास के पास छोड़कर कुछ दिनों के लिए अपने मायके चली गई। कुछ दिन बाद सास ने अपनी बहू को पत्र लिखवाया, "बहू जल्दी घर आ जावो लड़का उदास रहता है।" बहू ने पत्र का जवाब देते हुवे पूछा, "कौन सा लड़का—मेरा या आप का ?"

OO

एक फिल्मी अभिनेता दूसरे से,
"यार मेरी पत्नि प्रेगनेंट है।"
दूसरा अभिनेता:—
"अच्छा ! तो तुम्हें किसके ऊपर शक है ?"

OO

पत्नी ने शिकायत भरे स्वर में कहा, तुम्हें मेरे रिश्तेदार फूटी आंख न सुहाते।

पति ने कहा, मुझे अपने रिश्तेदारों की अपेक्षा तुम्हारे रिश्तेदार ज्यादा पसंद हैं, अब यही देखो मैं अपने सास-ससुर की बजाय तुम्हारे सास-ससुर को ज्यादा चाहता हूं।

○○

बनार्डशा ने अमेरिका की एक सभा में कहा, इस सभा में 50% मूर्ख बैठे हैं। बड़ा शोर मचा—शब्द वापस लो!

शा ने कहा—अच्छा शब्द वापस लेता हूँ, यहां 50% बुद्धिमान बैठे हैं। बात तो वही थी पर लोग खुश हो गये।

○○

एक पत्रिका में छपी संपादकीय सूचना:—

इस पत्रिका में छपी गल्तियां छापे की भूल नहीं है, जानबूझ कर रखी गयी हैं—

कुछ लोगों की रुचि छापे की भूलों में ही होती है।

○○

मैं जब तुम्हारी तरह पांचवीं कक्षा में था तो गणित में प्रथम आता था। अध्यापक ने छात्र से कहा।

सर, आपको होशियार मास्टर मिला होगा!

○○

दुख के वक्त, मित्र ही मित्र के काम आता है।

इसीलिए तो हर मित्र अपने मित्र की शादी में जाता है।

○○

एक सवाल—मेरे मां-बाप की एक ही सन्तान है, जो न मेरा भाई है न बहन, बताओ वह कौन है?

(मैं खुद हूं)

○○

एक राजनेता चुनाव में भाषण दे रहा था—भाइयो! जिस पार्टी को आप बीस साल से जिताते आ रहे हैं, उसने तुम्हें चूसा, लूटा और बरबाद किया। अब एक अवसर हमें भी दो।

○○

राजनेता को 11 माला डलीं, तो नाराज़ होकर पूछने लगा—

रुपये तो 15 माला के दिये थे; 11 ही क्यों डलीं?

○○

पत्नी ने पति से कहा, अरे, वो चांदी के चम्मच क्यों नहीं रखे?

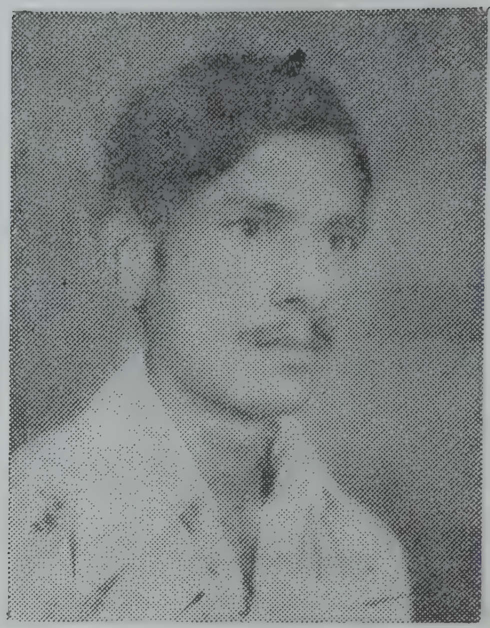
क्या दोस्त चोर लेंते?

नहीं वे अपने चम्मच पहचान लेंगे।

□□

ज्योतिष विज्ञान : एक परिचय

रामकिशन गुर्जर
वरिष्ठ लिपिक
समय कार्यालय (लोको) अजमेर



प्राचीन काल में ज्योति-पदार्थों या ग्रह, नक्षत्रादि के स्वरूप ज्ञान को ही ज्योतिष कहा जाता था। उस समय गणित का समावेश इस शास्त्र में नहीं हुआ था। केवल दृष्टि पर्यवेक्षण द्वारा नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त था। कालान्तर में इस शास्त्र के दो भेद, गणित एवं फलित, स्वतन्त्र रूप से विकसित हुए। ग्रहगति, स्थिति, अयनांश आदि गणित ज्योतिष के अन्तर्गत तथा यज्ञादि शुभ कार्य करने के लिए समय और स्थान का निर्धारण फलित ज्योतिष का अंग माना गया।

पूर्वार्ध काल के अन्त में ज्योतिष के पांच आधार स्तम्भ विकसित हुये जिन्हें "स्कन्ध पंच" की संज्ञा दी गई। 'स्कन्ध पंच' के मुख्य अंग सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन माने गये। इस विराट पंच स्कन्ध की परिभाषा का विश्लेषण किया जाय तो आज का मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्भूत हो जाते हैं।

सिद्धान्त या गणित—अंकगणित के माध्यम से अहर्गण-मान साधकर ग्रहों का आनयन करना इस शास्त्र का प्रधान विषय है।

होरा—होरा का दूसरा नाम जातक शास्त्र है। जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति के लिए फलाफल का निरूपण इसमें किया जाता है। इस शास्त्र में जन्म कुण्डली के द्वादश भावों के फल उनमें स्थित ग्रहों का निरूपण तथा दृष्टि रखने वाले ग्रहों के अनुसार विस्तार पूर्वक प्रतिपादित होता है। होरा ग्रन्थों में फल निरूपण के दो प्रकार हैं। प्रथम में जातक के जन्म नक्षत्र से तथा दूसरे में जन्म लग्नादि द्वादश भावों पर फल कथन की प्रणाली बतलाई गई है। इस शास्त्र में अनेक संशोधन एवं परिवर्तन होते रहे हैं।

संहिता—इस शास्त्र में भू-शोधन, दिक् शोधन, शल्योद्वार, गृहोपकरण, गृहारंभ, गृह प्रवेश, जलाशय निर्माण, मांगलिक कार्यों के मुहूर्त, उल्कापात, वृष्टि, ग्रहों के उदयास्त का फल, ग्रहण फल आदि का निरूपण विस्तार पूर्वक किया गया है। संहिता का उद्भव सर्वाधिक पुराना माना जाता है। इसके अन्तर्गत क्रियाकांड, आयुर्वेदिक चर्चायें, औषध निर्माण आदि भी रखे गये थे। बारहवीं शताब्दी में सभी उपयोगी लौकिक कार्य इसी शास्त्र के विधि विधान से संपादित किये जाने लगे।

प्रश्न शास्त्र—यह तत्काल फल बताने वाला शास्त्र है। इसके मुख्य तीन सिद्धान्त हैं— प्रश्नाक्षर सिद्धान्त, प्रश्न लग्न सिद्धान्त और स्वर विज्ञान सिद्धान्त। इस

शास्त्र का अन्वेषण वाराहमिहिर के पुत्र पृथुशया ने किया था। चेष्टा हाव-भाव आदि द्वारा मनोगत भावों का विश्लेषण करना भी इसी शास्त्र के अन्तर्गत आता है।

शकुन शास्त्र—शकुन शास्त्र को निमित्त शास्त्र भी कहा जाता है। प्रत्येक कार्य के पूर्व में होने वाले शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त करने का पूर्ण विवरण इस शास्त्र में दिया गया है। इस शास्त्र के मुख्य ग्रन्थ वसन्तराज शकुन एवं अद्भुत सागर हैं।

सिद्धान्त और होरा—सिद्धान्त और होरा एक दूसरे के पूरक हैं। सिद्धान्त या गणित द्वारा जन्म कुण्डली का निर्माण सूर्यादि ग्रहों के संचार, प्रमाण, वर्ण आदि आधार पर किया जाता है, तथा होरा शास्त्र के माध्यम से राशि देवकाल, नवांश, द्वादशांश, त्रिशांश, राशियों के बलाबल परिग्रह, सूर्यादि ग्रहों के दिग्बल, स्थानबल, काल बल, चेष्टा बल आदि द्वारा जीवन के घटना-क्रम का विश्लेषण किया जाता है।

धर्म के अनुसार आत्मा के साथ कर्म प्रवाह होने से लिंग-शरीर, कार्मण शरीर और स्थूल शरीर में संबंध है। जब आत्मा भौतिक शरीर का त्याग करती है तो लिंग शरीर उसे अन्य स्थूल शरीर की प्राप्ति में सहायता करता है। भौतिक शरीर में विशेषता यह है कि इसमें प्रवेश करते ही आत्मा पूर्व जन्मों की स्मृति खो देती है। इसलिये प्राकृतिक ज्योतिष के आधार पर माना है कि मानव का भौतिक शरीर प्रधानत: ज्योति, मानसिक और पौद्गौलिक, इन तीन उप-शरीरों में विभक्त है। मनुष्य का ज्योति उप शरीर द्वारा नक्षत्र जगत से मानसिक उपशरीर द्वारा मानसिक जगत से तथा पौद्गौलिक उपशरीर द्वारा भौतिक जगत से सम्बन्ध रहता है। इसी प्रकार मानव शरीर में निहित पंच तत्व ब्रह्माण्ड के पंच तत्वों से भी प्रभावित रहते हैं। अत: ज्योतिष में तत्व विज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है। पश्चिमी देशों के ज्योतिषी एल० एन० लियो, स्फेरियल, चारूवेल आदि ने भी मानव जीवन के घटनाक्रम में ब्रह्माण्डीय तत्वों का प्रभाव होना स्वीकार किया है कि मानव जीवन प्रत्येक तत्व से प्रभावित होता है तथा अपने भाव, विचार और क्रिया द्वारा ब्रह्माण्डीय तत्वों को भी प्रभावित करता है।

सौर मण्डलीय ग्रह मानव के ज्योतिष शास्त्र की मान्यता अनुसार निम्न प्रकार से प्रभावित करते हैं—

(1) बाह्य व्यक्तित्व के प्रथम रूप 'विचार' का प्रतीक बृहस्पति माना जाता है। यह प्रणीमात्र के शरीर का प्रतिनिधित्व करता है तथा शरीर के संचालन के लिए रक्त प्रदान करता है। प्राणी के रक्त में शरीर वाले कीटाणुओं की चेतना से इसका सीधा सम्बन्ध रहता है। बृहस्पति पर अन्य विचार निम्नत: है।

अनात्मा—इस दृष्टि से बृहस्पति का सम्बन्ध धर्म, कानून, मन्दिर, पुजारी, मंत्री, न्यायालय, विश्वविद्यालय धारा सभा, दान, सहानुभूति आदि से रहता है।

आत्मा—इस दृष्टि से बृहस्पति का सम्बन्ध उदारता, सौन्दर्य, प्रेम, भक्ति, व्यवस्था, बुद्धि, ज्ञान, ज्योतिष, तंत्र मंत्र, इत्यादि आत्मिक भावों से रहता है।

शरीर—इस दृष्टिकोण से बृहस्पति पैर, जंघा, जिगर, पाचन क्रिया, रक्त एवं नसों का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) बाह्य व्यक्तित्व के दूसरे रूप "अनुभव" का प्रतीक मंगल ग्रह माना जाता है। यह इन्द्रिय ज्ञान, आनन्देच्छा, आवेग आदि का प्रधान केन्द्र माना जाता है तथा बाह्य आनन्ददायक वस्तुओं द्वारा प्रेरित होकर उनकी प्राप्ति के उपायों की क्रिया को शक्ति प्रदान करता है।

अनात्मिक दृष्टि से मंगल सैनिक, डाक्टर, इन्जीनियर, रासायनिक, नाई, बढ़ई, लुहार, खेल-खिलाड़ी आदि का प्रतीक है।

आत्मिक दृष्टि से मंगल साहस, दृढ़ता, आत्मविश्वास

क्रोध, लड़ाकू, प्रवृत्ति, प्रभुत्व आदि का प्रतीक है।

शारीरिक दृष्टिकोण से मंगल खोपड़ी, नाक एवं गाल का प्रतीक है। इसके द्वारा संक्रामक रोग, घाव, खरोंच, आपरेशन, रक्तदोष की अभिव्यक्ति होती है।

(3) बाह्य व्यक्तित्व के तीसरे रूप "क्रिया" का मुख्य प्रभाव मन मस्तिष्क, चेतना तथा भाव परिवर्तन के रूप में पड़ता है।

अनात्मिक दृष्टि से चन्द्रमा श्वेत रंग, जहाज, बन्दरगाह, मछली, जल, तरल पदार्थ, नर्स, दासी, भोजन, रजत रंग के पदार्थ, आदि का प्रतीक माना गया है।

आत्मिक दृष्टि से चन्द्रमा संवेदन, आन्तरिक इच्छा, उतावलापन, भावना, कल्पना, सतर्कता, लोमेच्छा आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

शारीरिक दृष्टि से चन्द्रमा पेट, पाचन शक्ति, आंतें, स्तन, गर्भाशय, आंख आदि पर प्रभाव डालता है।

(4) आन्तरिक व्यक्तित्व के प्रथम रूप "विचार" का प्रतीक शुक्र माना गया है। यह सूक्ष्म मानव चेतनाओं एवं क्रियाओं का प्रतिनिधित्व करता है। पूर्ण बली शुक्र नि:स्वार्थ प्रेम, मातृत्व भावना का विकास करता है।

अनात्मिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध कलात्मक सुन्दर वस्तुओं, आभूषणों, आनन्ददायक कार्यों, भोगोपभोग सामग्री आदि माना गया है।

आत्मिक दृष्टिकोण से शुक्र का सम्बन्ध स्नेह, सौन्दर्य ज्ञान, आराम, प्रेम, स्वच्छता, कार्यक्षमता आदि से रहता है।

शारीरिक दृष्टिकोण से शुक्र गला, गुर्दा, आकृति, वर्ण, केश, पैर, देह का संचालन करने वाले अंग आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

(5) आन्तरिक व्यक्तित्व के दूसरे रूप "अनुभव" का प्रतीक बुध माना जाता है। यह प्रधान रूप से आध्यात्मिक शक्ति देता है। इसके द्वारा आन्तरिक प्रेरणा, निर्णयात्मक बुद्धि, वस्तु परीक्षण आदि का विश्लेषण किया जाता है।

अनात्मिक दृष्टिकोण से बुध शिक्षण संस्था, विज्ञान, साहित्य-प्रकाशन, संपादन, लेखक, व्यापारी एवं बुद्धिजीवियों पर प्रकाश डालता है। यह पीले रंग एवं पारा धातु का प्रतीक माना गया है तथा हरित रंग से प्रभावित होता है।

आत्मिक दृष्टि से बुध स्मरण शक्ति, वाद-विवाद, तर्क, सूक्ष्मकला शक्ति का प्रतिनिधि है।

शारीरिक दृष्टि से बुध मस्तिष्क, स्नायु क्रिया, वाणी हाथ तथा जीभ पर प्रभाव डालता है।

(6) आन्तरिक व्यक्तित्व के तीसरे रूप "क्रिया" का प्रतिनिधि सूर्य है। यह पूर्ण देवत्व की चेतना का प्रतीक हैं। मनुष्य के विकास में सहायक चेतनाओं को संतुलित रखता है। यह इच्छाशक्ति, ज्ञान, सदाचार, विश्राम, जीवन की उन्नति का द्योतक माना गया है।

अनात्मिक दृष्टिकोण से यह शासक, मंत्री, आविष्कारक, पुरातत्वता आदि को प्रभावित करता है।

आत्मिक दृष्टिकोण से सूर्य प्रभुता, ऐश्वर्य-प्रेम, उदारता, महत्वाकांक्षा, आत्म-विश्वास, आत्म नियंत्रण, सहृदयता आदि का प्रतीक माना जाता है।

शारीरिक दृष्टि से सूर्य हृदय, रक्त संचालन, नेत्र, रक्तवाहक नसें, दांत, कान आदि अंगों का प्रतिनिधित्व करता है।

(7) अन्त:करण का प्रतीक "शनि" माना गया है। यह बाह्य और आन्तरिक चेतना के मिलन का कार्य करता है। यह इच्छा एवं कार्यों को संतुलित रखता है। जीवन रहस्यों को अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान

करता है। तुला राशि का शनि विचार तथा भावों की समानता का द्योतक है।

अनात्मिक दृष्टि से शनि कृषक, पत्रवाहक, चरवाहा, कुम्हार, माली, मठाधीश, कृपण, साधु सन्यासी, पहाड़ी स्थान, श्मशान आदि का प्रतीक है। इसे कोलाहलपूर्ण वातावरण अप्रिय लगता है।

आत्मिक दृष्टि से शनि तात्विक ज्ञान, विचार अभिव्यक्ति, नायकत्व, मननशीलता, कार्य परायणता, आत्म संयम, त्याग आदि प्रदान करता है।

शारीरिक दृष्टि से शनि हड्डियां, बड़ी आंत, मांसपेशियों आदि पर प्रभाव डालता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सौर जगत के ग्रह मानव जीवन के विभिन्न अवयवों के प्रतीक हैं। इन ग्रहों की काल गति द्वारा जीवन का संचालन होता है। मानव जीवन नियमित सरल रेखा की गति से नहीं चलता बल्कि इस पर विश्वजनीत काल कलापों के घात-प्रतिघात निरन्तर लगते रहते हैं। सरल रेखा गति से गमन करने पर जीवन की विशेषता भी नहीं रह जाती। सुख एवं दुख ही मानव जीवन को गतिशील बनाते हैं। इन तमाम भावों की उत्पत्ति बाह्य और आन्तरिक जगत की संवेदनाओं से होती है, इसीलिये मानव जीवन अनेक समस्याओं जैसे उन्नति, अवनति, आत्म विकास, पतन आदि विभिन्न रहस्यों से परिपूर्ण रहता है। ज्योतिष शास्त्र आत्मिक एवं अनात्मिक भावों के रहस्य को व्यक्त करने के साथ-साथ जीवन में घटने वाली घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण कर देता है। इस शास्त्र का रहस्य इसी कारण अतिगूढ़ होता है क्योंकि यह जीवन के आलोच्य सभी विषयों का विश्लेषण करने में सक्षम है।

अतः ज्योतिष शास्त्र एक प्रकार का विज्ञान है जिसका पूर्ण ज्ञान मानव अपने जीवन के अल्पकाल में प्राप्त करने में स्वयं को असमर्थ पाता है। तथापि ज्योतिष के नाम पर कई लोग ठगी करते हैं उनसे सावधान रहना चाहिए। ऐसे ही ढोंगी, पाखंडियों ने इस उत्कृष्ट विद्या के प्रति अनास्था का चक्र भी चलाया है यह दुर्भाग्य की बात है।

***

दो रास्ते

जूना गढ़ के राजा राखेगार को शिकार का बहुत शौक था। एक दिन खरगोश के पीछे जंगल में भागते-भागते खरगोश तो मार लिये, पर रास्ता भूल गये। ऊंचे वृक्ष पर चढ़ कर देखमे लगे कि कहीं कोई आदमी या कुटिया है या नहीं। बहुत दूर एक छोटी सी कुटिया दिखाई दी तो वृक्ष से उतर कर उसी दिशा में दोनों हाथों में चारों खरगोश लटकाये चल पड़े। कुटिया के द्वार पर पहुँच कर आवाज लगाई तो एक वृद्ध महाशय बाहर आये।

वृद्ध वे हाथों में मरे हुए खरगोश देखे तो आंखें डबडबा आयीं। राजा द्वारा मार्ग पूछने पर बोले, दो ही रास्ते जानता हूँ बेटा! एक जीव दया का, जो स्वर्ग जाता है। दूसरा हिंसा का, जो नर्क जाता है। तीसरा रास्ता मैं नहीं जानता। दोनों में जो अच्छा लगे वह पकड़ लो।

वृद्ध के मूक आंसूओं ने राजा के हृदय पर गहरी चोट की और भविष्य में शिकार न खेलने की प्रतिक्षा की।

(जैन जगत से)

कथा कुछ शब्दों की

★ कृष्ण गोपाल पाराशर
फिटर मिलराइट (लोको)



आकाशवाणी

संस्कृत में आकाशवाणी का अर्थ है देववाणी। भारत में जब पहला रेडियो स्टेशन बना था उसके उद्घाटन पर रवीन्द्रनाथ टैगोर को कविता पढ़ने हेतु आमन्त्रित किया गया। चूंकि रेडियो में आकाश के माध्यम से ही ध्वनि आती है, अतः टैगोर ने उस समय जो कविता पढ़ी थी उसका शीर्षक था 'आकाशवाणी' उसी आधार पर आल इण्डिया रेडियो के लिए आकाशवाणी शब्द चल पड़ा।

अमेरिका

अमेरिका एक महाद्वीप है जिसके उत्तर और दक्षिण दो भाग हैं, इसका इतिहास बड़ा विचित्र है। अमेरिका का पता कोलम्बस ने 12 अक्टूबर 1492 को लगाया था। कोलम्बस ने इसका नाम 'सेन सल केडर' रखा पर इस नाम का प्रचलन नहीं हो सका। कोलम्बस का ही एक मित्र इतालवी मल्लाह अमेरिकस वेस्पुसियस था जो कोलम्बस के 9 वर्ष बाद 1501 ई. में अमेरिका गया। उसने 1503 में अपनी यात्रा-वृतांत यूरोप भेजा। इसी अमेरिकस वेसपुसियस के नाम के आधार पर इसका नाम अमेरिका रख दिया गया।

कोलम्बस स्पेन का था अतः स्पेनिश लोग अमेरिका देश के नाम से अप्रसन्न थे लेकिन जब पूरी दुनियां अमेरिका कहने लगी तो इन्हें भी स्वीकार करना पड़ा।

अरब

यह अरबी भाषा का शब्द है, इसका मूल अर्थ है 'वे लोग जो स्पष्ट बोले'। अरब लोग पुराने जमाने में विदेशियों मुख्यतः ईरान के लोगों को अजम कहते थे। अरबी में अजम का अर्थ है—जिसकी भाषा स्पष्ट न हो। अजम के विपरीत ये लोग अपने को 'अरब' अर्थात् स्पष्ट बोलने वाला कहते थे, इस आधार पर इनका तथा इनके देश का नाम 'अरब' पड़ गया।

खुदा

यह फारसी शब्द है इस शब्द के दो घटक हैं—खुद + आ, 'खुद' तो स्वयं से, 'आ' फारसी 'आमदन' अर्थात् 'आना' यानी जो स्वयं ही आये वही 'खुदा' है।

ननंद

पति की बहिन। यह शब्द संस्कृत का ननद है।

ननंद का अर्थ है न+नन्द अर्थात् न+आनन्द यानी जो प्रसन्न न हो, ननदें प्रायः अपनी भाभीयों से असन्तुष्ट ही रहती हैं, अतः उसे ननद या ननंद कहा गया।

उल्लेखनीय है कि कालान्तर में यह शब्द अपने पति की बहन के सम्बोधन के रूप में रूढ़ हो गया।

हिन्दुस्तान

इस नाम में स्तान तो फारसी शब्द जो संस्कृत का सम स्त्रोत्तीय है हिन्दुस्तान हिन्दु+स्तान, इसमें हिन्दु क्या है यह विवादास्पद है, हिन्दु की लोगों ने तरह-तरह से समझा है। हमारे परम्परावादी संस्कृत के पण्डित (हिन=नष्ट करना)+(दु=दुष्ट) अर्थात् हिन्दु वह है जो दुष्टों का संहार करे। दूसरे मतानुसार इनकी व्युत्पत्ति है– 'यो हिंसाया दुष्टते सः हिन्दु।' अर्थात् हिंसा को देख कर दुःखी हो वह हिंदु है।

—×—

सारगर्भित और जीवनोपयोगी प्रेरक प्रसंग

सत्य नारायण व्यास
प्र० लि० (अनुशासन-लोको)

उसकी नजर

यह सत्य घटना है। नाथद्वारा में एक अन्धा व्यक्ति श्रीनाथ जी के दर्शन में ठोकरें खाता जैसे-तैसे हर रोज पहुँच ही जाता और वहां भी भारी भीड़ में हर बार धक्के खाकर गिरता और 'बचाओ' की चीख भरता। उसी की तरह रोज आने वाले एक दर्शनार्थी ने उससे झल्लाकर कहा कि तुम क्यों रोज अपने आपको कुचलवाने के लिए आते हो? तुम तो अन्धे हो, तुम्हें क्या दीखता है?

अन्धे ने गम्भीर होकर कहा—इन भौतिक चक्षुओं से तुम्हें क्या दीखता है? ईश्वर तो अन्तर के ज्ञान चक्षुओं से ही देखा जा सकता है, जैसे विराट स्वरूप दिखाने से पहले ही श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान-चक्षु प्रदान किये थे। सुनो–मैं यहां श्रीनाथ जी के दर्शन करने नहीं आता, मैं तो श्रीनाथ जी की निगाह में आने के लिए आता हूँ। इसलिए आता हूं कि भगवान यह देख लें कि मेरे मन में उनके लिए कितनी तड़फ है, कितना प्यार है। मैं यहां श्रद्धा और विश्वास लेकर आता हूँ कि भगवान मुझे देखते हैं इसलिए मेरा यहां आना सार्थक है। मेरी तो यही समझ है कि हम अन्धे हों. चाहे सूझते, भगवान को देखने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए यह पर्याप्त है कि भगवान हमें देखलें। दर्शन के लिए आने में अन्दरूनी भाव यही होना चाहिए।

वह दर्शनार्थी यह दलील सुनकर दंग रह गया और यह सोचते हुए अन्धे के पांवों में पड़ गया—ईश्वर की नजर में रहने वाला व्यक्ति ही सही जीवन जीता है। सामान्यतः वह किसी को नहीं सता सकता और ना ही उससे हिंसा या कुकर्म हो पाते हैं।

काश, हम सभी सतत् यह अनुभव करें कि ईश्वर हमें देख रहा है।

(शेष पृष्ठ 144 पर देखें)

एक खौफनाक महामारी 'एड्स' (A. I. D. S.)

अमरसिंह राठौड़
टंकक
संकेत कार्यालय, अजमेर

चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान एवं रोगों के निदान में सदैव प्रयत्नशील रहा है। प्रकृति न जाने कितने रहस्यों को अपने गर्भ में छिपाये हुए है जिन्हें वह एक-एक कर हम पर प्रकट करती जा रही है। एक तरफ केन्सर जैसी प्राण घातक बीमारी पहले ही सुरसा सो मुंह बाये मानव को निगलने खड़ी है तो दूसरी तरफ मानव स्वयं अपने द्वारा निर्मित परमाणु हथियारों के ढेर पर बैठा है, जिसमें न जाने कब आग लग जावे और सब कुछ नष्ट हो जावे। ऐसे में प्रकृति ने एक और प्राणलेवा बीमारी को अपने गर्भ में से प्रकट किया है।

पिछले कुछ वर्षों में इस नये रोग का पता चला है जिसे 'एड्स' के नाम से पुकारा जाता है। एड्स अंग्रेजी के अक्षर ए० आई० डी० एस० का लघुकृत रूप है। अंग्रेजी में इसे "Acquired immune defficiency Syndrome" कहते हैं, जिसका आशय है—मानव की रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति का नाश होना। इस बीमारी को फैलाने वाले जीव का नाम "Human T cell Hymphotropic Virus type III" यानि "श्वेत रक्त कोशिका वायरस तृतीय" है। यह वायरस श्वेत कणों पर परजीवी होते हैं एवं उन्हें नष्ट करते रहते हैं। ये जीवित एवं निर्जीव के बीच की कड़ी माने जाते हैं। ये जीव जब कोशिका में परजीवी रहते हैं तब जीवित जैसा व्यवहार करते हैं। किन्तु जब कोशिकाओं के बाहर रहते हैं, तब मृत प्राय होते है। ये जीव अपना आकार भी बदलते रहते हैं, जिससे इनको पहचानने में भी बहुत कठिनाई होती है।

हमारे शरीर की सुरक्षा प्रणाली का निर्माण श्वेत रक्त कण करते हैं। श्वेत रक्त कणों की कई प्रजातियां होती हैं। इन सबके अपने-अपने स्थान निश्चित होते हैं। ये श्वेत रक्त कण हमारे शरीर में सिपाही का कार्य करते हैं। जैसे ही कोई हानिकारक बाहरी जीवाणु हमारे शरीर में प्रविष्ट होता है, श्वेत रक्त में प्रविष्ट होता है, श्वेत रक्त कणों के सिपाही उससे लड़ने की तैयारी शुरू कर देते हैं। श्वेत रक्त कणों के सिपाही बहुत संगठित होते हैं। शरीर की प्रतिरोधक शक्ति इन सिपाहियों पर व इनकी कार्य क्षमता पर निर्भर करती है। ये श्वेत कण अपने में एक प्रकार की विशिष्टता लिए होते हैं, एवं अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। इन कणों को शत्रु व मित्र की अच्छी पहचान रहती है क्योंकि प्रकृति में हर वस्तु की अपनी एक विशिष्ट अणु रचना रहती है। इस परिचय पत्र के आधार पर श्वेत कणीय सुरक्षा कर्मचारी किसी बाहरी तत्व को शरीर में

प्रवेश को अनुमति देते हैं। श्वेत रक्त कणीय कर्मचारी दो प्रकार के होते हैं। पहले में 'टी'' श्वेत कणीय कर्मचारी व द्वितीय श्रेणी में 'बी'' श्वेत कणीय कर्मचारी होते हैं।

एड्स एक वायरस से फैलने वाली बीमारी है। इससे पहले कुछ समय बुखार आता है व मरीज शीघ्र ही ठीक भी हो जाता है। काफी समय तक इस रोग के कोई लक्षण नजर नहीं आते हैं, किन्तु कुछ समय पश्चात् बीमारी का दूसरा दौर शुरू होता है और इसके बीमार को बार-बार दस्त लगना, वजन एक दम कम होना, लिम्फ ग्रन्थि खराब होना, धीमा-हल्का बुखार बना रहना क्षय रोग के लक्षण दिखाई देना, रात में पसीना आना आदि इस रोग के खतरनाक रूप धारण करने के चिन्ह हैं, जो मरीज के लिए प्राण घातक हैं। मरीज के मुंह एवं मल द्वार पर केन्सर जैसे घाव भी दिखाई देने लगते हैं एवं मरीज मानसिक रोग से ग्रसित हो जाता है।

एड्स के फैलने के कारण मरीज से, स्पर्श से, कपड़े से, खाने-पीने के पदार्थों से, कागज के माध्यभ से या हवा से नहीं फैलता है। इसके फैलने के कारण एड्स के रोगी के शरीर से निकले हुए रक्त, लार, नाक का पानी वगैरह पसीना, अगर कटी हुई चमड़ी के स्पर्श में तुरन्त आ जाये या मरीज के किसी से सेक्स सम्बन्ध हो जायें तो एड्स फैलने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार समलैंगिक क्रिया व हीरोइन जैसे मादक द्रव्य के आदी व्यक्ति इस बीमारी के अधिक शिकार होते हैं।

आज पश्चिम में फैल रही इस बीमारी के हो सकता है भारत में भी एक दो मरीज मिल जायें। परन्तु अभी तक भारतवासियों का सौभाग्य ही मानना चाहिए कि इसका मरीज अभी तक नहीं मिला परन्तु होने की संभावना से मना भी नहीं किया जा सकता क्योंकि भारत भी बहुत समय से विदेशों से खून इत्यादि का आयात करता रहा है।

इस बीमारी को कैंसर से भी भयंकर माननी चाहिए क्योंकि अभी तक वैज्ञानिक इसका कोई भी इलाज या इसकी औषधी नहीं ढूंढ पाये हैं।

× — ×

सच्चा बादशाह

एक बादशाह किसी सन्त के पास पहुँचा और बोला, "आप मुझे सेवा का अवसर दीजिये, आप जो चाहें सेवा में हाजिर कर दूंगा।"

सन्त ने हंसकर कहा, "मुझ से यह कौन बात कर रहा है ?" तुम मुझे क्या दे सकते हो ? तुम तो मेरे गुलामों के भी गुलाम हो।"

बादशाह चौंका, "मैं आपका मतलब नहीं समझा, मैं तो राजा हूँ।"

सन्त ने कहा, "मैंने काम-क्रोध पर विजय पा ली है वे मेरे गुलाम हैं। और तुम उनके गुलाम हो। हो न गुलामों के गुलाम ?"

बादशाह अपने आप को सच्चा बादशाह बनाने का निश्चय कर चला गया।

* * *

ऋणानुबन्ध

O मदनलाल उपाध्याय
मुख्य लिपिक (संकेत)

एक मोची महात्माओं की खूब सेवा करता और उनसे उनकी पत्नी की सूनी गोद भरने का आशीर्वाद मांगता । एक अतिवृद्ध महात्मा ने उसे ज्ञान दिया कि सन्तान की उत्पत्ति ऋणानुबन्ध के कारण होती है और इसीलिए उसके कोई सन्तान नहीं हो सकती क्योंकि उसने पिछले जन्म में किसी को अपना कर्जदार नहीं बनाया और न ही वह स्वयं किसी का कर्जा लेकर मरा था । अगर वह किसी को कर्जदार बनाएगा तो उस आदमी के मरने पर उसकी आत्मा उसके यहां जन्म लेगी ।

गरीब मोची के पास कर्ज देने के लिए कुछ नहीं था । अतः उसने एक जूता जोड़ी बनाकर अच्छे लोगों को मुफ्त देने की कोशिश की किन्तु किसी ने नहीं ली । थक-हार कर वह जून की तपती दुपहरी में वह जूता जोड़ी रेतीले रास्ते में छोड़ आया । उधर से वही बूढ़े महात्मा निकले तो उन्होंने उसे पांवों में डाल ली । कस्बे में पहुंचकर उसके मालिक को ढूढ़ा किन्तु किसी ने हाँ नहीं की । कुछ दिनों में महात्मा चल बसे और उनकी आत्मा मोची के यहां पुत्र रूप में प्रगट हुई । पुत्र बड़ा हुआ और एक रात पिता को बुखार होने के कारण राजमहलों की चौकीदारी निभाने वह गया । जैसे ही रात का एक पहर समाप्त हुआ, उसने संस्कृत का श्लोक गाया कि जागते रहो, जीवन का एक पहर (बचपन) समाप्त हुआ । इसी तरह रात के हर पहर की समाप्ति पर वह एक श्लोक गाता और दुनियां वालों को आगाह करता कि इसी तरह तुम्हारे जीवन के पहर समाप्त हो रहे हैं । सोकर (लापरवाही)में जीवन जीना ठीक नहीं । होश में जागो । राजा पूरी रात जागता रहा और नए चौकीदार की विद्धवता से प्रभावित होकर उसे स्वर्ण अशर्फियां का ईनाम दिया ।

पुत्र ने घर पहुंचकर उन अर्फाफियों को अपनी माँ को देना चाहा तो उसने नहीं ली; पिता ने भी नहीं ली । क्योंकि उन्हें यह विश्वास था कि जूता जोड़ी जैसे मामूली ऋण के बन्धन में ही यह उच्च आत्मा उनके घर जन्मी है । वे उस आत्मा को ऋण-मुक्त करने का खतरा नहीं उठाना चाहते थे । एक दिन मोची के घर में आग लग गई । बेटे ने माँ-बाप को बाहर निकाला और एक-एक करके सभी चीजें बाहर निकालने लगा । बुढ़े माँ-बाप मना करते रहे; वह नहीं मानता । अन्त में वह अशर्फियों का थैला हड़बड़ी में माँ के हाथों में थमा कर फिर कुछ वस्तु लेने घर में घुस गया तो बूढ़ा अपनी पत्नी को डांटने लगा कि यह क्या किया तुमने ? उसकी अशर्फियों का थैला क्यों ग्रहण कर लिया ? अब क्या होगा ? बूढ़े-बुढ़ी चिल्लाते रहे–बेटा लौट आओ ....हमें कुछ नहीं चाहिए.......... केवल तुम लौट आओ ! किन्तु वह बेटा कब लौटने वाला था—ऋणानुबन्ध से मुक्त हुई आत्मा उस आग की लपटों में सदा-सदा के लिए शान्त हो चुकी थी ।

यह दुनिया ऋणानुबन्ध का ही मेला है । इसमें कौन अपना और कौन पराया ? काश, दूसरों को सताने वाले और पाप की कमाई से पीढ़ियों का इन्तजाम करके अपने लिए नर्क निर्मित करने वाले धन लोलुप लोग—यह छोटी सी बात समझ पाएँ ।

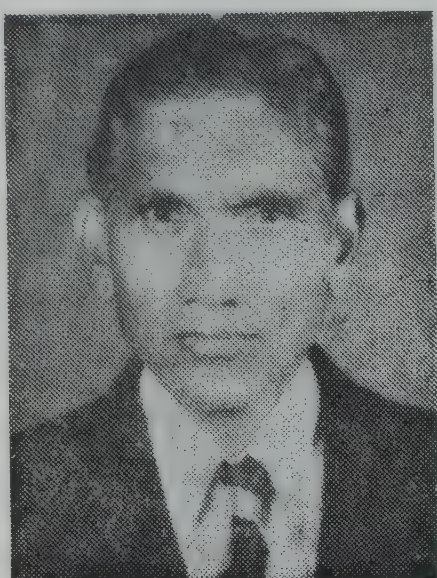
OO

शुभकामनाओं सहित--

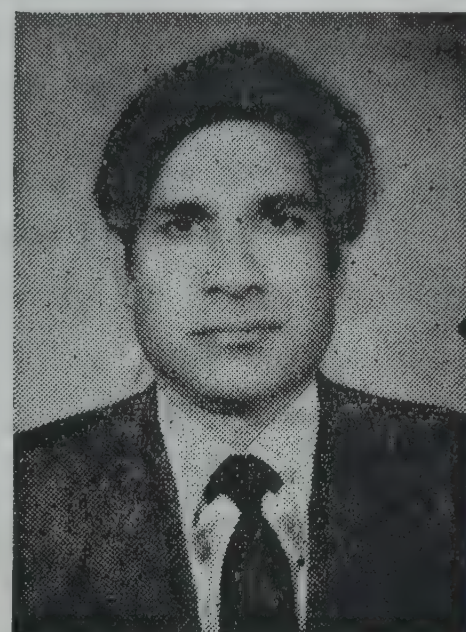
लोको खेलकूद एवं मनोरंजन क्लब, अजमेर

में

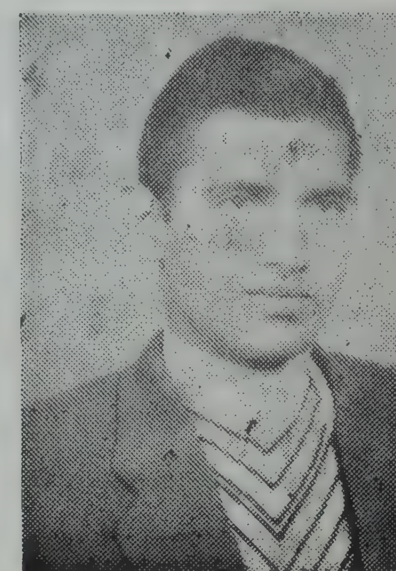
आपका हार्दिक स्वागत है ।



डालचन्द जनूटिया
सचिव



नैपालसिंह
अध्यक्ष



श्रीनाथ व्यास
कोषाध्यक्ष

ए. ए. रामन
खेल अधिकारी

आर. सी. गुप्ता
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

चन्द्र प्रकाश गौड़
उपाध्यक्ष

संयोजक
मोरिस ली
गुलाबसिंह चित्तोड़िया
गोपाललाल
दौलतराम
शान्तीलाल
मदनसिंह
सूआलाल तेजावत
पी. के. माथुर
आर. पी. शर्मा
मोहनसिंह

डी. एन. माथुर
सह सचिव

प्रतिनिधि
जे. सी. वाधवा
पी. दास
लालचन्द
पारसमल घाबरी
आर. एस. यादव
मोहम्मद रऊफ
रामबाबू

संस्मरण

O कृष्ण मोहन भटनागर
हिन्दी टंकक (लोको)

1 फ्रांस के बादशाह की सवारी आ रही थी। रास्ते में एक भिखारी मिला और उसने अपना टोप उतार कर बादशाह को झुककर अभिवादन किया, बादशाह ने उसी प्रकार अपना टोप उतार कर सर नीचा करके भिखारी के अभिवादन का उत्तर दिया।

बादशाह को इस प्रकार अभिवादन करते देखकर एक अंगरक्षक ने कहा हजूर एक भिखारी को इस प्रकार टोप उतार कर अभिवादन करना आपको शोभा नहीं देता।

बादशाह ने तुरन्त कहा 'क्या फ्रांस का नरेश यह साबित करे कि उसमें एक भिखारी जितनी भी तमीज नहीं।'

2 एक बार एक कार्यकर्ता ने महात्मा गांधी जी से कहा बापू जी आप गौ-सेवक संघ चला रहे हैं किन्तु एक प्राणी तो बेचारा इससे भी बहुत निरीह और दयनीय हालत में है।

गांधी जी ने तुरन्त उत्तर दिया, ठीक है, हमने गौ-सेवक संघ चलाया, आप 'गधा सेवक संघ' की स्थापना कर देना।

3 एक प्रोफेसर जी ने बड़ी ही चतुराई से बालकों को उपदेश देते हुए कहा हम जब पढ़ते थे तब हम इतनी मेहनत करते थे कि यूनिवर्सिटी में हमारी दूसरी पोजीशन आई थी।

एक बालक ने बड़ी ही सादगी से पूछा सर, परीक्षा में कितने परिक्षार्थी बैठे थे? सर ने मुस्कराते हुए बताया, सिर्फ दो।

4 एक शायर ने खलीफा की शान में कसीदा लिखा और उसे सुनाया। खलीफा ने खुश होकर कहा, तुम्हें इसका क्या इनाम दूँ।

"एक लाख मुहरें।"

'यह तो बहुत बड़ी रकम। कम से कम बताओ।'

'एक सौ मुहरें दे दीजिए।'

'तुमने दोनों रकमों में इतना बड़ा अन्तर क्यों रखा?'

'जब आपने पूछा क्या लोगे, तब मैंने आपके रुतबे का ख्याल रखा और जब आपने उसे घटाने को कहा तो मैंने अपनी हैसियत ध्यान में रखी।'

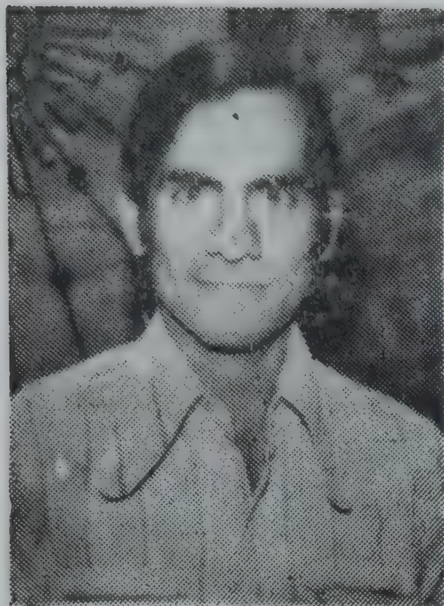
'कसम खुदा की हम अपनी ना-कदरी नहीं करेंगे।' एक लाख मुहरें दे दीं।

卐

प्रेमिका प्रेमी से : आंख में तिनका गिर गया है। डाक्टर को दिखाना पड़ेगा।
प्रेमी : कोई आवश्यकता नहीं। झील-सी गहरी आखें हैं, डूबने वाले को तिनके का सहारा मिलेगा।

* * *

मेजबान मेहमान से : श्रीमान् जी आप यहां अकेले ही आये हैं, श्रीमती जी को साथ नहीं लाये।
मेहमान मेजबान से : आपके शहर में विस्फोटक पदार्थ साथ रखने की मनाही जो है।



जीवन क्या है ?

△ पुरषोत्तम देवनानी
लिपिक, समय कार्यालय (लोको)

जीवन एक संघर्ष है,	इसे स्वीकार करो ।
जीवन एक चुनौती है,	इसका डटकर सामना करो ।
जीवन एक दुःख है,	इसे हंसते हुए सहन करो ।
जीवन एक समझौता है,	इसे निरन्तर करते रहो ।
जीवन एक रहस्य है,	रहस्योद्घाटन करो ।
जीवन एक नाटक है,	इसे बखूबी खेलो ।
जीवन एक कर्त्तव्य है,	इसको खूब निभाओ ।
जीवन एक गीत है,	इसे झूमके गाओ ।
जीवन एक सुअवसर है,	इसका सदुपयोग करो ।
जीवन एक यात्रा है,	इसे यात्री-भावना से पूरी करो ।
जीवन : गिरजा—गुरुद्वारा— मस्जिद और मन्दिर है,	इसे अपवित्र मत करो ।
जीवन एक सौन्दर्य है,	इसकी रक्षा करो ।
जीवन एक पुस्तक है,	इसका अध्ययन करो ।
जीवन एक पुरुषार्थ है,	धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष प्राप्त करो ।
जीवन के दूसरे नाम सेवा— परोपकार और प्रेम है,	इन्हें सार्थक करो ।

※ ※ ※

डाक्टर मरीज से : आप को मैंने जो खिड़की खोल कर सोने की सलाह दी थी उससे आप की बीमारी गायब हो गई होगी ।

मरीज : जी हाँ । उसके साथ-साथ घर का टी. वी., फ्रिज, अलमारी भी गायब हो गई है ।

※ ※ ※

किसी दुनियां की ख्वाहिश ने है बन्दा कर दिया मुझको,
वरना हम खुदा थे, गर दिले बे आरजू होता ।

शून्य से विस्तार

/\ **राजेन्द्र कुलश्रेष्ठ**
कारखाना लेखा कार्यालय, अजमेर



अभी विगत 20 वर्षों की गहन खोज ने विज्ञान को एक नई धारणा दी है, एक फैलते हुए विश्व 'द एक्सपेंडिग यूनिवर्स' की। सदा से ऐसा समझा जाता था कि विश्व अविस्तारित है; परन्तु नई विज्ञान की खोज कहती है कि विश्व का निरन्तर फैलाव हो रहा है। इस विस्तरित विश्व का अर्थ हुआ कि एक क्षण ऐसा भी रहा होगा जब यह विश्व बिलकुल सिकुड़ा हुआ एक शून्य बिन्दु रहा हो। वैज्ञानिक भी ब्रह्माण्ड की रचना अणुओं का पिण्ड में एकत्रित होना ही मानते हैं। अणु सूक्ष्मतर केन्द्र बिन्दु, जिसमें न्यूट्रोन और प्रोटोन का निरन्तर विकीर्ण होता रहा है—जो ऊर्जा स्रोत भी है, वही ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म रूप है। विश्व के इस निरन्तर और अन्तहीन विस्तार को वैज्ञानिकों ने एक्सपेंडिग यूनिवर्स का नाम दिया है। परन्तु भारतीय-दर्शन के उपनिषद उसे ब्रह्म कहते हैं। उस ब्रह्म का अर्थ होता है—फैलता हुआ 'द एक्सपेंडिंग' जो सदा विस्तीर्ण होता चला जाता हैं। ब्रह्म और विस्तार एक ही मूल धातु से निर्मित होते हैं--एक ही शब्द के रूप हैं। उपनिषद का ऋषि जिसे असम्भूत (शून्य ब्रह्म) कहता है—जब वह फैला नहीं था, जिसे बीज रूप ब्रह्म अथवा बिन्दु (अणु) रूप ब्रह्म कहा गया है— इसी शून्य की व्याख्या सौ वर्ष पूर्व भारत के महानतम संन्यासी स्वामी विवेकानन्द ने अमेरीका के सर्व धर्म सम्मेलन में प्रस्तुत कर सारे संसार को आश्चर्य चकित कर दिया था। परन्तु हम सम्भूत ब्रह्म जो विस्तरित रूप में दिखाई पड़ रहा है उसी को जानते हैं जो निरन्तर फैलता चला जा रहा है। आधुनिक वैज्ञानिक भी इस विश्व का स्वरूप 'एक्सपेंडिग यूनिवर्स कन्सीवेबल' नहीं होना ही मान रहे हैं। इसीलिए आइंस्टीन और प्लांक जैसे वैज्ञानिक भी इस विस्तार को प्रकृति का चमत्कार (मिरैकिल) कहकर मौन हो गये।

तदेजति तन्नेजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्या बाह्यतः॥
(ईशावास्य उपनिषद)

वह गतिमान है। वह गतिमान नहीं है। वह सुदूर है, तो भी सबसे अधिक निकट है हम जिन वस्तुओं को देखते हैं वह उन सबकी अन्तरात्मा है।

यन्मनसा न मनुते येना हुर्मनोमृतम्।
तदैव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।
यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदि दमुपासते॥
(फेन उपनिषद)

ब्रह्म के तत्व को न तो इन्द्रियों के द्वारा समझ पाने की आशा कर सकते हैं और न मानवीय तर्क के द्वारा। ब्रह्म से ही स्वयं ज्ञान की ओर आँखों को देखने की शक्ति प्राप्त होती है।

पश्चिम का पूरा विज्ञान ग्रीक फिलासफी यूनानी दर्शन से विकसित हुआ है। यूनानी दर्शन की मान्यता है कि समय सदा सीधी रेखा में गति करता है। भारतीय दर्शन की व्याख्या बड़ी भिन्न है। भारतीय दर्शन की धारणा है कि सभी गति वर्तुलाकार है, सीधी रेखा के समान नहीं। यह जो एक्सपेंडिंग यूनिवर्स है वह उसी तरह का है जैसे मनुष्य जीवन का चक्र, बच्चे से युवा, युवा से बूढ़ा, बूढ़े से मृत्यु, लगभग 70 वर्ष का चक्र। वैज्ञानिकों की भाषा में पृथ्वी का भी जीवन वर्तुल लगभग 5 अरब वर्ष का है। अभी लगभग 4 अरब वर्ष पहले यह पृथ्वी पैदा हुई थी जो अब बुढ़ापे के वर्तुल में है—आबादी का बढ़ना, खाद्य पदार्थों और कोयला, पेट्रोल तथा अन्य रसायनिक द्रव्यों का कम होता जाना, पृथ्वी का बूढ़ा होना प्रदर्शित करता है। हमारे जीवन में, मनुष्य के शरीर में भी लगभग सात करोड़ जीवाणु हैं जो कब बनते और समाप्त होते रहते हैं—हमें पता नहीं है—इसी प्रकार पूरे ब्रह्म, ब्रह्माण्ड (सम्भूत ब्रह्म) का जीवन कितने वर्षों का है, कहना अत्यन्त कठिन है; परन्तु एक बात तय है कि इस जगत में नियम का कोई भी उल्लंघन नहीं है और एक वर्तुल (सर्किल) में नियम पूरा होता है। इसलिए उपनिषद के ऋषि कहते हैं कि ब्रह्म के दो रूप असम्भूत (शून्य) एवं सम्भूत (विस्तरित) को जो जान लेते हैं वे अमृत को उपलब्ध होते हैं।

बिन्दु ब्रह्म जन्म और बिस्तीर्ण ब्रह्म मृत्यु का प्रतीक है। जन्म से मृत्यु तक एक जीवन का मण्डलाकार घेरा है। जन्म प्रारम्भ और मृत्यु अन्तिम छोर है। जीवन के सर्किल (चक्र) को और मृत्यु की अनिवार्यता एवं नियति को जो जान लेता है वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। उसी तरह जो समस्त विस्तीर्ण (सम्भूत) ब्रह्म को यानी जीवन की समस्त प्रक्रिया को जानकर असम्भूत ब्रह्म (शून्य) बिन्दु रूप अणु तक पहुंच जाता है वह मृत्यु के पार अमृत को उपलब्ध हो जाता है।

जीवन को जानने का अर्थ क्या है? यह जान लेना भी अत्यन्त उपयुक्त होगा। जन्म में स्त्री और पुरुष के आधे-आधे अणुओं से यौगिक शरीर निर्मित होता है। इन आधे-आधे तत्वों का आकर्षण इतना गहरा है कि सब विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त दर्शनीय रह जाते हैं। गहराई में दोनों अणु जुड़ने के लिए खिंचते हैं जो मिलते ही नये शरीर को निर्मित कर देते हैं। जैसे ही पूरे शरीर का निर्माण होता है उसमें आत्मा अपने अनुकूल गर्भ को खोज कर प्रवेश कर जाती है। क्योंकि आत्मा की आकांक्षायें शरीर से ही पूरी होती हैं।

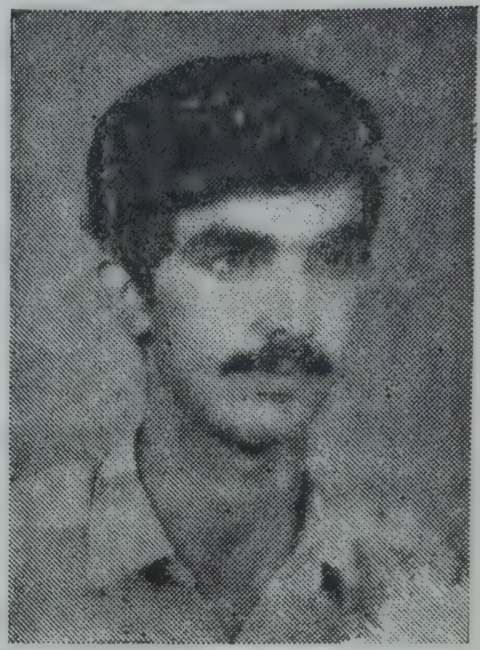
तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोभात्पर्जन्य औषधयः पृथ्व्याम्। पुमान रेतः सिन्चति योषितायां ब्रह्वीः प्रजा पुरुषात्सं प्रसूता ।। (मूण्डक उपनिषद)

जो सूर्य को समिधा की भांति जलाकर उसे प्रकाशित कर रहा है, उसी के द्वारा हमें सूर्य ताप और प्रकाश देता है—चन्द्रमा, पृथ्वी तथा औषधियों को मेघों द्वारा सिंचन करता है। उसी प्रकार पुरुष के रेतस (शुक्र) से योषिता (नारी) में जीव संयोग द्वारा वही बहुरूप धारण करते है।

मृत्यु में आधे-आधे तत्ववापस बिखरने लगते हैं। अतः जुड़ने (जन्म) से बिखरना (मृत्यु) वैज्ञानिक ढंग से तय की गई प्रक्रिया है। इस यौगिक शरीर को स्त्री पुरुष के अणु मिलकर संयुक्त करते हैं और मृत्यु उसे वियुक्त करती है। इस प्रकार यह सम्भूत ब्रह्म अपने विस्तरित रूप में [बिल्ट इन प्रोसेस] में प्रत्यक्ष होता है। अतः इस प्रकृति जन्य यथार्थ को सहज ग्रहण कर जन्म और मृत्यु को वर्तुलाकार जीवन चक्र जानते हुए जीना और संकीर्णता से ऊपर उठकर विस्तार की ओर अग्रसर होना ही सम्भूत ब्रह्म को जानना है।

अन्तरराष्ट्रीय शांति के लिए कैसे राष्ट्राध्यक्ष होने चाहिएँ

O **राकेश कौशल**
लिपिक (डीजल लोको)



अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा रचनात्मक कार्यों का सराहनीय क्रम सन् 1983 में घोषित "विकलाँग वर्ष" के साथ आरम्भ हुआ। सन् 1984 को "महिला वर्ष" एवं सन् 1985 को "युवा वर्ष" के रूप में मनाया गया।

संयुक्त राष्ट्र ने 24 नवम्बर सन् 1985 को विश्व में व्याप्त तनाव दूर करने तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से यह प्रस्ताव पारित किया कि वर्ष 1986 को "अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष" के रूप में मनाया जाये अर्थात् विभिन्न देशों में हो रहे अनेकानेक संघर्षों, मतभेदों को समाप्त कर विश्व में शान्ति-स्थापना के प्रयत्न किये जायें।

साम्राज्यवाद की प्रवृत्ति, शस्त्रों की प्रतिस्पर्धा, अमेरिका व रूस जैसी महाशक्तियों की आपसी परमाणु होड़, उपनिवेश वाद, और शक्ति संतुलन की लालसा में महाशक्तियों द्वारा अन्य देशों में सैनिक अड्डों की स्थापना अन्तरिक्ष युद्ध की तैयारियाँ, रंगभेद की नीति, साम्प्रदायिकता, धर्मांधता एवं आतंकवाद आदि इत्यादि विश्व अशान्ति के मुख्य तत्व हैं। इस परिपेक्ष्य में नवभारत टाइम्स में छपे समाचार का निम्न उद्धहरण पठनीय है —

<u>'विश्व शान्ति वर्ष में शान्ति वृक्ष मुरझाया'</u>

"संयुक्त राष्ट्र 6 अगस्त (ए. पी.) अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष में संयुक्त राष्ट्र शान्ति वृक्ष मुरझा गया है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता जी सिल्स ने इस वृक्ष के 'मर' जाने की सूचना देते हुए कहा कि यह किसी राजनैतिक घटनाक्रम का पूर्वाभास नहीं माना जाना चाहिए।

दो माह पूर्व ही संयुक्त राष्ट्र महासचिव जेवियर पेरेज द क्वैया ने बड़ी धूमधाम से संयुक्त राष्ट्र विश्व शान्ति वर्ष के उपलक्ष में यह पौधा रोपा था।

संयुक्त राष्ट्र वर्ष जिस अशान्तिपूर्ण माहौल में मनाया जा रहा है, मध्य अमरीका, इराक-ईरान, लेबनान व दक्षिण अफ्रीका जिस तरह हिंसा में झुलस रहे हैं, उसे देखते हुए अनेक लोगों ने शान्ति वृक्ष का मुरझाना अनिष्ट का सूचक माना है।

यह पौधा कोस्टारिका से लाया गया था। कोस्टारिका के राजदूत एमीलिया कास्त्रों के अनुसार वैसे यह पौधा काफी 'सख्त' माना जाता है जो हर मौसम के थपेड़े सह सकता है।

संयुक्त राष्ट्र इस वर्ष को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष के रूप में मना रहा है।"

अन्तरराष्ट्रीय शान्ति के मार्ग में जितनी बाधक दोनों शक्तियां : रूस व अमरीका हैं उतनी शायद ही कोई और हो। दोनों ही महाशक्तियां सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्षरत हैं।

अपनी सुरक्षा तथा विश्व के छोटे देशों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिये सभी विकसित देश नये अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में लगे हुए हैं एवं अपनी राष्ट्रीय आय का एक बड़ा अंश इनमें व्यय करते हैं। इसका उदाहरण अमेरीका द्वारा घोषित 'स्टारवार' कार्यक्रम है जो कि विश्व शान्ति का सबसे बड़ा खतरा है।

दोनों महाशक्तियां विश्व स्तर पर अपनी-अपनी पताका फहराने पर कृतसङ्कल्प हैं। जैसे अमेरीका अनेक देशों में अपने सैनिक अड्डे बना चुका है। मिस्त्र, ओमान, गार्सियो सोमालिया, पाकिस्तान आदि में भी अमेरीका ने अपनी सामरिक नाकाबन्दी पूरी कर ली है। इसी प्रकार रूस ने भी अफगानिस्तान में सैन्य हस्तक्षेप करके कठपूतली सरकार की स्थापना कर ली है।

दोनों महाशक्तियां समझौता वार्ताओं में कई बार शान्ति के लिये निर्णय तो लेती हैं; परन्तु अवसर देखने में आया है कि निर्णय तो महत्वपूर्ण होते हैं; पन्रतु उनके अमल में आने के पहले ही एक न एक पक्ष अपने घमण्डी रवैये पर आकर रूकावटें डालना शुरू कर देते हैं, जिससे अन्तरराष्ट्रीय शान्ति को बनाये रखने के लिये, लिए गये निर्णयों पर अमल नहीं हो पाता।

अन्तरराष्ट्रीय शान्ति की दिशा में विभिन्न प्रयास और उनकी सफलता :

विश्व शान्ति के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा गुट निरपेक्ष देश आपसी समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढग से हल करते हैं तथा विश्व शान्ति के लिए प्रयास करते हैं। इस आन्दोलन का सूत्रधार/कर्णधार होने का गौरव भारत को प्राप्त है।

तत्कालीन अमेरीकी राष्ट्रपति एफ. डी. रूसोवेल्ट के निर्देशन में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की स्थापना कर अन्तरराष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को बनाये रखने की दिशा में सराहनीय कार्य किया गया था। हांलाकि संगठन कुछ हद तक सफल भी हुआ परन्तु पूर्ण सफलता अभी भी दिवा- स्वप्न है।

सन् 1954 में बांडुग सम्मेलन द्वारा पंचशील सिद्धान्त भी विश्व शान्ति की दिशा में एक अच्छा कदम था जिसका श्रेय भी भारत को ही प्राप्त था; परन्तु चीन ने भारत पर आक्रमण कर इसको दफना दिया।

विश्व की दोनों महाशक्तियों के घातक हथियारों के निर्माण को रोकने के लिए वियना (आस्ट्रिया) में साल्ट संधि हुई; परन्तु अमेरीका के घमण्डी रवैये के कारण इसकी पुष्टि न की जा सकी।

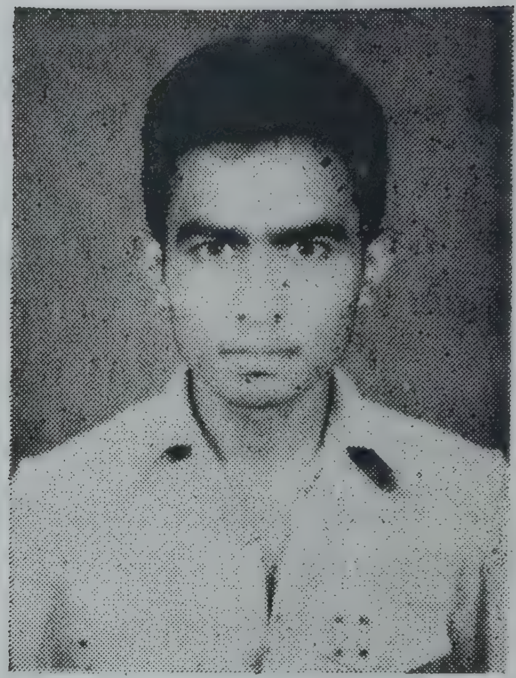
विश्व शान्ति वर्ष 1986 में प्रत्येक देश अपने संसाधनों का मानव कल्याण हेतु प्रयोग करने का सङ्कल्प करे व प्रतिज्ञा करे कि वह अन्य देशों की राष्ट्रीयता अखण्डता एवं प्रभुसत्ता का आदर पूरी सच्चाई के साथ करेगा तथा किसी अन्य देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षप नहीं करेगा। यदि किसी देश में इस प्रकार के झगड़े हैं जो विश्व शान्ति को प्रभावित कर सकते हैं तो उनके साथ मिलकर समस्या को सुलझाना चाहिए। साथ ही गुटबन्दी सन्धियों पर पूरी रोक लगा दी जाए।

अन्त में बस यही कि इस समय प्रत्येक राष्ट्र को अशोक महान जैसे राष्ट्राध्यक्षों की आवश्यकता है जिसने कलिंग युद्ध के पश्चात् प्रायश्चित स्वरूप अपनी तलवार को सदैव के लिए म्यान में रख दिया।

卐卐卐

राष्ट्रभाषा व अंग्रेजी

△ गोपाल बाबू शर्मा
(लिपिक संकेत)



राष्ट्रभाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे देश की बहुसंख्यक जनता जानती हो और जो लोग उसे न जानते हों, वे उसे आसानी से सीख सकें। यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय ही नहीं अपितु जनतान्त्रिक भी है क्योंकि बहुसंख्यक जनता द्वारा बोली-समझी जाने वाली भाषा के पक्ष में दिये जाने वाले तर्क के पीछे भावना यह है कि राष्ट्रीयता मुट्ठी भर अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की बपौती नहीं है, उसका सम्बन्ध देश की बहुसंख्यक जनता से है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने बीस-बाईस साल पहले लिखा था। 'प्रान्तीय भाषाओं के अधिकार-क्षेत्र की सीमाओं का जरा भी उल्लङ्घन किए बिना हमारे लिए आवश्यक है कि अखिल भारतीय व्यवहार की एक सामान्य भाषा हो। कुछ लोग सोचते हैं कि अंग्रेजी ऐसी भाषा बन सकती है; एक हद तक हमारे उच्च वर्गों के लिए अंग्रेजी एक ऐसी भाषा बनी भी हो; किन्तु यदि हम आम जनता को ध्यान में रखकर सोचें तो यह बात स्पष्ट ही असम्भव प्रतीत होगी। हम करोड़ों लोगों को एक नितान्त विदेशी भाषा द्वारा शिक्षित नहीं कर सकते।

जिस भाषा को देश की जनता का दो प्रतिशत भाग समझता है, उससे विशाल जनता की सेवा कैसे हो सकती है ? आज भी बंगाल, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में, पंजाब और कश्मीर की तो बात ही क्या—जितने लोग हिन्दी समझते हैं, उतने अंग्रेजी नहीं। अंग्रेजी न जानने वाले इन करोड़ों अहिन्दी भाषियों की सेवा ऊँची सरकारी नौकरियाँ पाने वाले सज्जन हिन्दी के माध्यम से अधिक कर सकते हैं या अंग्रेजी द्वारा ?

जिस राष्ट्र की अपनी भाषा न हो, जो राष्ट्र भाषा के पद पर एक विदेशी भाषा को बिठाये हो, उसके नागरिकों में राष्ट्रीय गौरव की भावना कैसे दृढ़ हो सकती है ?

अंग्रेजी के पक्ष में जो मुख्य तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी एक विकसित और समृद्ध भाषा है; किन्तु हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाएँ अविकसित और दरिद्र हैं—यह राष्ट्रीय गौरव की भावना पर कुठाराघात है। अंग्रेजी के विकास और समृद्धि के गीत गाकर राष्ट्रीय गौरव को जगाने और भावात्मक एकता दृढ़ करने वाले मेधावी लोग विषपान करके अमर होने के स्वप्न देख रहे हैं। यदि सुब्रह्मण्यम् भारती, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, वल्लत्रोल, प्रेमचन्द आदि साहित्यकार अंग्रेजी की समृद्धि से इसी तरह आतंकित होते तो भारतीय साहित्य का बेड़ा मझधार में कभी का डूब चुका होता।

प. यूरोप ने विज्ञान में अधिक उन्नति की है किन्तु साहित्य में हम यूरोप से बढ़कर नहीं तो घटकर भी नहीं है। विशेषकर पिछले सौ वर्षों में भारतीय साहित्य

ने जो उन्नति की है, वह प. यूरोप के किसी भी देश के लिए स्पृहणीय हो सकती है। वास्तव में समस्या साहित्यिक समृद्धि की नहीं है, समस्या है—राष्ट्रीय सम्मान और जनता की सेवा-भावना की।

मिश्र देश हमसे अधिक विकसित नहीं है किन्तु वहाँ की राष्ट्रभाषा अरबी है। सोवियत संघ में कजाक, उजबेक, ताजिक आदि भी अपनी भाषाओं को शिक्षा, राजनीतिक कार्यों आदि के लिए प्रयुक्त करते हैं। चीन तक ने चीनी को राष्ट्रभाषा बना रखा है। संसार में सबसे प्राचीन संस्कृति का धनी भारत स्वाधीन होने पर भी अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाये रहे, इससे अधिक लज्जास्पद बात और क्या हो सकती है। अंग्रेजी से सभी भारतीय भाषाओं के हित टकराते हैं, हिन्दी से किसी भी भारतीय भाषा के हित नहीं टकराते; अंग्रेजी के जानने समझने वाले मुट्ठी भर हैं, हिन्दी बोलने समझने वाले करोड़ों हैं।

अंग्रेजी राष्ट्रीय गौरव की भावना पर कुठाराघात करती है। राष्ट्रीय आत्मसम्मान को जागृत और पुष्ट करती है। इसलिए हमें दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि अंग्रेजी अनिश्चित काल के लिए एक मात्र या सह राष्ट्रभाषा नहीं रह सकेगी। सीमित अवधि में ही उसे अपना स्थान छोड़ना होगा।

अंग्रेजी-प्रेमी शासकों में भय है कि अंग्रेजी के राष्ट्रभाषा न रहने पर राज्य सत्ता उनके हाथ न रहेगी। यह वर्ग इस समय काफी प्रभावशाली है किन्तु देश की विशाल जनता के सामने उसकी शक्ति नगण्य है। जो भी अपनी मातृभाषा से प्रेम करते हैं उनकी मातृभाषा चाहे हिन्दी हो, चाहे कोई अहिन्दी भाषा-उनका कर्तव्य है कि विभिन्न प्रदेशों में अंग्रेजी की जगह वहाँ की प्रादेशिक भाषाओं को प्रतिष्ठित करे और केन्द्रीय भाषा के रूप में अंग्रेजी की जगह हिन्दी में व्यवहार करें।

आज से पैंतीस वर्ष पहले अंग्रेजी भाषाविद् ग्रियर्सन ने हिन्दी के बारे में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे की भूमिका में लिखा था' ''इट हैज ऐन एनारमसनेटिव वकैबुलेरी एण्ड ए कम्पलीट अपैरेट्स फॉर द एक्सप्रेशन ऑफ ऐब्स्ट्रेक्टटर्म्स'' देशी शब्दों का उसका विशाल शब्द भण्डार है और सूक्ष्म धारणाएँ प्रकट करने के लिए पूर्ण पारिभाषिक शब्दावली है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम हिन्दी में काम न करके देश का कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं। बस बहुत हो गया। जब जागे तब ही से सवेरा हुआ। अब तो जाग जाइये और तत्काल से अपना सम्पूर्ण कार्य केवल हिन्दी में करने का सङ्कल्प लेकर अपना राष्ट्रप्रेम प्रगट कीजिये।

卐卐

समझ

बाल गंगाधर तिलक किसी बड़े नेता से बात कर रहे थे। एक विद्यार्थी गणित का सवाल पूछने आया। तिलक ने बात-चीत रोक दी। नेता से कहा—थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए। बालक को और भी काम करने होंगे।

सवाल बता दिया। तभी एक और विद्यार्थी आ गया। उससे बोले – तुम परांजपे जैसे गणितज्ञ के शिष्य हो। उनसे ही सवाल पूछ लेते।

विद्यार्थी बोला—बहुत कोशिश की उन्होंने भी। पाँच दिन हो गये। हल सूझ ही नहीं रहा।

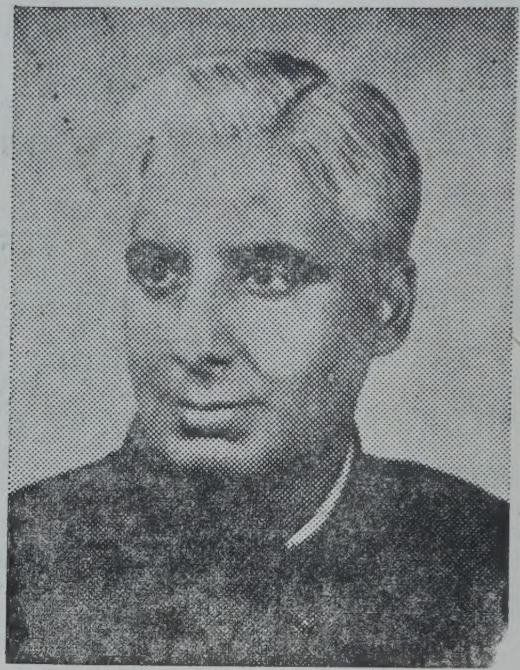
तिलक ने सवाल देखा और उसे हल कर दिया। बोले—डॉ. रघुनाथ पुरुषोत्तम परांजपे को सवाल न आए, यह मैं नहीं मान सकता। उनको समय नहीं मिला होगा।

छात्र चला गया। उसने कक्षा में सवाल हल कर दिया तो परांजपे कहने लगे—अच्छा, तिलक दादा के पास पहुंच गए। मुझे जो सवाल न आए उसे उनके अलावा कोई हल नहीं कर सकता।O

धर्म के नाम पर

प्रेमराज जोशी

सम्पादक एवं हिन्दी सहायक ग्रेड I (लोको)



धर्म के नाम पर इतना अधर्म हुआ है जिसका कोई हिसाब नहीं। बड़े-बड़े युद्ध हुए, खून-खराबा हुआ, लाखों करोड़ों लोग जान से मारे गए—और नाम दिया गया 'धर्म-युद्ध' !

धर्म के नाम पर ठगी-बेईमानी, ढ़ोंग-पांखण्ड और अन्ध-विश्वास पनपे। शायद इसीलिए मार्कस को कहना पड़ा होगा, 'धर्म अफीम का नशा है जो मनुष्य को सुस्त और विचारहीन बनाता है।'

धर्म के नाम पर खूब दुकानदारी चल पड़ी। स्वर्ग जाने के टिकट तक बिके, लोग आरे से कटने भी लगे। इसी धर्म के नाम पर युवतियों जबरन पति के साथ चिता पर जलाया जाता रहा। सारी उम्र विधवा बने रहने की मजबूरियां पैदा की गईं।

धर्म के नाम पर मनुष्य-मनुष्य में भेद पैदा किए गए। एक वर्ग विशेष को इतना दबाया गया कि उसे मन्दिर में चढ़ने की इजाजत तक नहीं दी गई, पशु-पक्षी तो जा सकते थे मन्दिर में परन्तु इन्सान की छाया तक का प्रवेश निषेध रहा।

धर्म के नाम पर स्त्री गुलाम दासी, भोग की वस्तु या पैर की जूती समझा गया। पुरुष बन बैठा 'पति परमेश्वर' ! और नारी बताई गई नरक का द्वार ! देवदासी नाम देकर बना दी वेश्या।

धर्म के नाम पर चल पड़े कर्मकाण्ड, बाह्याचार और चल पड़े छापे-तिलक, अलग-अलग निशान, प्रतीक खडे कर दिए गए। इसी धर्म के नाम पर हवनों-यज्ञों में न केवल पशुबलि दी गई अपितु नर-बलि भी खूब हुई।

धर्म के नाम पर भाषा को बांटा गया और बांटे गए भाई-भाई और बांटी गयी धरती। टुकड़े किए गए देश के, और फिर टुकड़े के भी टुकड़े करने को आतुर है धर्म के नाम पर।

धर्म के नाम पर खडे हो गए सम्प्रदाय, पंथ, जातियां और फिर जातियों में भी उपजातियां। नीच-ऊँच के फिरके बन गए। इन्सान तो बंटे ही सन्त व भगवान तक को भी बांटने से नहीं चूके ये बंटे हुए इन्सान।

सन्तों प्रवतकों के नाम पर धर्म चलाए अन्धे अनुयायियों ने। फिर शाखा पर शाखाएं बनालीं।

अब स्थिति यह है कि प्रवर्तक के नाम पर अनेक खण्ड हो गए। अपने आपको ही सच्चा बताने की चेष्टा में आपस में लड़ाई आज भी जारी है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध सब में अनेक शाखाएं हो गईं।

धर्म व्यक्ति का, आत्मा का न होकर भीड़ का हो गया–भीड़ ने धर्म के नाम पर मन्दिर गिराये, मस्जिदें जलाईं, क्योंकि भीड़ में जिम्मा किसी का नहीं होता। धर्म के नाम पर पशु तो क्या आदमी को काटा गया।

यह सब क्यों हुआ, हो रहा है ? फिर सच्चा धर्म क्या है ?

समय-समय पर सन्त-महात्माओं का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने देश, काल और स्थिति के अनुसार कुछ उपयोगी निशान, प्रतीक, पूजा-पद्धति, कर्मकाण्ड आरंभ किए। वे सब उस समय उपयोगी थे, आवश्यक थे। लेकिन इस पर वे सब थे आपद् धर्म ही। सब सन्तों ने शाश्वत धर्म और सत्याचरण पर विशेष ध्यान देने को कहा। दुर्भाग्य से धर्म का शाश्वर रूप-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, शौच, करुणा, सेवा और मैत्री आदि अंग तो छूटते गए और कसकर पकड़ बैठे आपद् धर्म को। "कर्मकाण्ड न धर्म है धर्म न बाह्यचार, धर्म चित्त की शुद्धता करुणा सेवा प्यारा"

आज समूचे विश्व में अशांति व्याप्त है। सारे प्राणियों के संहार के साधन हैं। इसीलिए राष्ट्र सघ ने अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष की घोषणा की है। शान्ति जो सन्देश रहा है सब सन्तों, महात्माओं, पीर-पैगम्बरों का। उसे मुखरित करने की दिशा में ही यह 'वाणी' 'शांति-अंक' के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसमें प्रयास किए गए हैं कि आपको जीवनोपयोगी विचार मिलें जो अलगाव के स्थान पर प्रेम-प्यार को पनपा सके।

हिन्दी के अनन्य भक्त, राष्ट्र कवि, श्रद्धेय मैथलि शरण गुप्त की स्मृति में यह उनकी जन्मशती पर समर्पित की गई हैं।

इसकी खूबियों व खराबियों से आप हमे अवगत करायेंगे तो हमे लगेगा कि आपने हमें ध्यान में लिया और आगे इससे भी बेहतर सेवा देने के लिए प्रेरित किया---इसी प्रार्थना, कामना के साथ हम आप के प्रति प्रकट करते हैं अनेकानेक हार्दिक—



धन्यवाद !



प्रकाशक : गगन प्रकाश हांडा, राजभाषा अधिकारी एवं अपर मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (का.) पश्चिम रेलवे, अजमेर
मुद्रक : अनूप कुमार माथुर, ए. के. प्रिण्टर्स, राजा साईकिल, श्रीनगर रोड, अजमेर